کرامات صحابہ

KARAMAT-E-SAHABA

करामाते सहाबा رضی اللہ عنہ



KARAMAT-E-SAHABA

शैखुल हदीस हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अलैहिर्रहमा

हज़रत अबू बकर सिद्दीक رضی اللہ عنہ | हज़रत उमर फ़ारूक رضی اللہ عنہ | हज़रत उसमान ग़नि رضی اللہ عنہ | हज़रत अली رضی اللہ عنہ | हज़रत हम्ज़ा رضی اللہ عنہ | हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ | हज़रत इमामे हसन رضی اللہ عنہ | हज़रत इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ | हज़रत अमीर मुआविया رضی اللہ عنہ | हज़रत ज़ैद बिन हारिस رضی اللہ عنہ | हज़रत जाफ़र رضی اللہ عنہ | हज़रत बिलाल رضی اللہ عنہ | हज़रत अबू ज़ैद अन्सारी رضی اللہ عنہ | हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र رضی اللہ عنہ | हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ | हज़रत अनस رضی اللہ عنہ | हज़रत सअ्द رضی اللہ عنہ | हज़रत साबित बिन कैस رضی اللہ عنہ | हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ | हज़रत सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ | हज़रत मआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ | हज़रत अबू उबैदा رضی اللہ عنہ | हज़रत अबू अय्यूब अंसारी رضی اللہ عنہ | हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ | हज़रत सुलेमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ | हज़रत तलहा رضی اللہ عنہ

नाशिर : मकतबा ईमामे आज़म दिल्ली

शैतान सबसे ज्यादा खुश तब होता है जब वो किसी को इल्मे दीन हासिल करने से रोकता है

एक रोज़ अस्र के बाद शैतान ने अपना तख़्त बिछाया, और शयातीन ने अपनी अपनी कार गुज़ारी की रिपोर्ट पेश करना शुरू की किसी ने कहा कि मैंने इतनी शराब पिलाई, किसी ने कहा मैंने इतने ज़िना कराए, शैतान ने सब की सुनी, एक ने कहा कि मैने एक तालिबे इल्म को पढ़ने से बाज़ रखा, शैतान सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उस को गले से लगा लिया और कहा, "अन् त तूने काम किया तूने काम किया, दूसरे शयातीन यह कैफियत देख कर जल गए कि उन्होंने इतने बड़े काम किये, उन पर तो शैतान खुश नहीं हुआ और इस मअमूली से काम करने वाले पर इतना खुश हो गया। शैतान बोला तुम्हें नहीं मलूम जो कुछ तुमने किया सब इसी का सदक़ा है उन्हें इल्म होता तो वह गुनाह नहीं करते, लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ, वह कौनसी जगह है जहाँ सब से बड़ा आबिद रहता है मगर वह आलिम नहीं और वहाँ एक आलिम भी रहता हो तो उन्होंने एक मक़ाम का नाम लिया, सुबह को सूरज निकलने से पहले शयातीन को लिए हुए शैतान उस मकाम पर पहुँचा, शयातीन छुपे रहे और यह इन्सान की शक्ल बनकर रास्त में खड़ा हो गया, आबिद साहिब की नमाज़ तहज्जुद के बद फर्ज़ के वास्ते मस्जिद की तरफ तशरीफ लाए रास्ते में शैतान खड़ा था, अस्सलामु अलैकुम, व अलैकुम सलाम के बद कहा हज़रत मुझे एक मसला पूछना है आबिद साहिब ने जल्दी पूछों, मुझे नमाज़ के लिए मस्जिद में जाना है, शैतान ने जेब से एक छोटी सी शीशी निकाली और पूछा, क्या अल्लाह क़ादिर है कि उन सारे आसमानों और ज़मीनों को इस छोटी सी शीशी में दाखिल करदे, आबिद साहिब ने सोचा और कहा कहाँ इतने बड़े आसमान और ज़मीन और कहाँ यह छोटी सी शीशी बोला बस यही पूछना था तश्रीफ़ ले जाईए और शयातीन से कहा, देखो मैंने इस की राह मार दी उसको अल्लाह की कुदरत पर ही ईमान नहीं इबादत किस काम की, फिर सूरज निकलने के क़रीब एक आलिम जल्दी जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए शैतान ने कहा अस्सलामु अलैकुम मुझे एक मसला पूछना है आलिम ने फ़रमाया, पूछो जल्द पूछो नमाज़ का वक़्त कम है, उसने शीशी दिखाकर वही सवाल किया, आलिम साहिब ने फ़रमाया मलऊन तू शैतान मालूम होता है, अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सुई के नाके के अंदर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाखिल करदे, "इन्नल्लाह अला कुल्लि शै इन क़दीर आलिम साहिब के तशरीफ़ ले जाने के बद शैतान ने शयातीन से कहा, देखा यह इल्म ही की बरकत है और वह जिसने इल्म हासिल करने वाले को पढ़ने से रोका उसने बहुत बड़ा काम किया ताकि वह न पढ़े और न आलिम बन सके।
(मलफूजाते आला हज़रत जि:3, स:21-22)

सबक: अब तो शैतान को खुश करने वाला न बनो दीन कि किताबो को पढो शैतान से इल्म के जरिये लड़ो, ईमान बचने के लिए दीन का इल्म बहुत बड़ी जरूरी और मुफीद चीज़ है, शैतान ऐसे इल्म वालो से बहुत डरता है क्यों कि इल्म वाले अपने इल्म की वजह से शैतान के जाल में नहीं फंसता, बिगैर इल्म के जुहद व इबादत भी ख़तरे में रहती है, खूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है
"फ़क़ीहुन वाहिदुन अशद्दु अल-शैतानि मिन-अल्फि आबिदिन" यअ़नी शैतान पर एक आलिम हज़ार आबिद से भी ज़्यादा भारी है।"

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

करामाते सहाबा

رضی اللہ عنہم

लेखक

हज़रत अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आज़मी अलैहिर्रहमा

पब्लिशर

मक्तबा इमामे आज़म

425,2-मटिया महल,जामा मस्जिद दिल्ली-6

मोबाईल नं0- 09958423551, 09560054375

रज़वी किताब घर

423, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली.6 फोन 011.23264524

नाम किताब	:	करामाते सहाबा रज़िअल्लाहो अन्हुम
लेखक	:	हज़रत अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी
नाशिर	:	मक्तबा इमामे आज़म दिल्ली-6
बएहतेमाम	:	मोहम्मद जलालुद्दीन निज़ामी
कम्पोज़िगं	:	निज़ामी ग्राफिक्स दिल्ली-6
प्रूफरीडिंग	:	मन्ज़ूरुलहक़ जलाल निज़ामी
सेटिंग	:	निज़ामुद्दीन निज़ामी.
सन्ने इशाअत	:	2014
तादाद	:	1100
सफ़हात	:	256
कीमत	:	

पब्लिशर

मक्तबा इमामे आज़म
425,2-मटिया महल,जामा मस्जिद दिल्ली-6
मोबाईल नं0- 09958423551, 09560054375

रज़वी किताब घर
423, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-6
फोन 011.23264524 मोबाईल 9350505879

e-mail : maktabaimameaazam@gmail.com, nizamuddinnizami@gmail.com

करामाते सहाबा

फेहरिस्त मज़ामीन

☆☆☆

☆☆

☆

शर्फ़े इन्तिसाब

हज़राते सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम
के दरबारे फ़ज़ीलत में एक नियाज़ मन्द मुसलमान का

मुहब्बत का नज़राना

मेरे आक़ा के जितने भी असहाब हैं
उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम

ख़ाकपाए सहाबा:-

अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अफ़ी अन्हु
करीमुद्दीनपुर, पोस्ट घोसी, ज़िला आज़मगढ़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मन्क़बते सहाबा किराम

दो आलम न क्यों हो निसारे सहाबा
कि है अर्श मन्ज़िल वक़ारे सहाबा
अमीं हैं यह कुरआन व दीने ख़ुदा के
मदारे हुदा एतबारे सहाबा
रिसालत की मंज़िल में हर हर क़दम पर
नबी को रहा इंतेज़ारे सहाबा
ख़िलाफत, इमामत, विलायत, करामत
हर एक फज़्ल पर इक्तेदारे सहाबा
नुमायाँ है इस्लाम के गुलसितां में
हर एक गुल पे रंगे बहारे सहाबा
कमाले सहाबा, नबी की तमन्ना
जमाले नबी है क़रारे सहाबा
यह मोहरें हैं फरमाने ख़ात्मुर्रुसुल की
है दीने ख़ुदा शाहकारे सहाबा
सहाबा हैं ताजे रिसालत के लश्कर
रसूले ख़ुदा ताजदारे सहाबा
उन्हीं में हैं सिद्दीक़ व फारुक़ व उसमाँ
उन्हीं में अली शहसवारे सहाबा
उन्हीं में है बद्र व उहद के मुजाहिद
लक़ब जिनका है जाँनिसारे सहाबा
उन्हीं में हैं अस्हाब शिजरा नुमायाँ
जिन्हें कहते हैं राज़दारे सहाबा
उन्हीं में हुसैन व हसन, फातिमा हैं
नबी के जो हैं गुल अज़ारे सहाबा
पसे मर्ग ऐ आज़मी यह दुआ है
बनूँ मैं गुबारे मज़ारे सहाबा

☆☆☆

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तमहीदी तजल्लियाँ

مَـا عَـلَـيْـنَـا يَـا اَخـى الا البلاغ	پند ها داديم حاصل شد فراغ

बुजुर्गाने दीन की करामतों का नूरानी ब्यान यूँ तो हर दौर में हमेशा होता रहा और इन उनवान पर तक़रीबन हर ज़बान में किताबें भी लिखी जाती रहीं मगर इस ज़माने में इस का चर्चा बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। चुनान्चे तजरबा है कि अक्सर तकरीर करने वाले अपनी तकरीरों की महफ़िलों में और बेशतर पिराने केबार अपने मुरीदीन की मजलिसों में बुज़ुर्गाने दीन के करामात के ज़िक्र से महफिलों को गर्म किया करते हैं और सुनने वाले एक ख़ास जज़्बे के साथ सुनते रहते हैं और कुछ मुसन्नफ़ीन और मज़मून लिखने वाले भी इस उनवान पर अपनी क़लम कारियों के जौहर दिखा कर लोगों से ख़ेराजे तहसीन हासिल करते रहते हैं और इस में ज़रा भी शक नहीं कि बुज़ुर्गाने दीन की करामतों का ब्यान एक ऐसा असरदार और दिल कश मज़मून है कि इस से रूह की नापाकी, दिल में नूरे ईमान और दिल दिमाग़ के गोशा गोशा में ईमानी तजल्लियों का सामान पैदा हो जाता है जिस से अहले ईमान की इस्लामी रगों में एक तूफ़ानी लहर और बदन की बोटी बोटी में जोशे आमाल का एक इरफ़ानी जज़्बा उभरता महसूस होता है, इस लिए मेरा नज़रिया यह है कि इस ज़माने में बुजुर्गाने दीन की इबादतों, रियाज़तों और उन की करामतों का ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र व ब्यान और उन का चर्चा मुसलमानों में जोशे ईमान और जज़्बाए अमल पैदा करने का बहुत ही असरदार ज़रिया और निहायत ही बेहतरीन तरीक़ा है।

लेकिन करामात के ज़िक्र के सिलसिले में मेरे नज़दीक एक वाक़िआ बहुत ही हैरत नाक बल्कि इन्तेहाई तकलीफ देने वाला है कि मुतअख़्ख़रीन औलियाए कराम ख़ास कर मजज़ूबों और बाबाओं के कश्फ़ व करामात और ख़ास कर दौरे हाज़िर के पीरों की करामतों का

तो इस क़दर चर्चा है कि हर गली व बाज़ार बल्कि हर मकान व दुकान, होटलों और चाएख़ानों में, किताबों और रिसालों के पन्नों में हर जगह इस का डंका बज रहा है और हर तरफ़ इस की धूम मची हुई है मगर अफ़सोस कि उम्मते मुस्लेमा का वह औलिया का गरोह जो यक़ीनन तमाम उम्मत में **"अफ़ज़लुल औलिया"** है यअनी "सहाब-ए-किराम लउन की विलायत व करामत का कहीं भी कोई तज़्किरा और चर्चा न कोई सुनाता है न कहीं सुनने में आता है, न किताबों और रिसालों के पन्नों में मिलता है, हालांकि उन बुजुर्गों की विलायत व करामत का दर्जा इस क़दर बलन्द व बाला है कि अगर तमाम दुनिया के अगले व पिछले औलिया को उन के नक़्शे क़दम चूम लेने की खुश क़िस्मती नसीब हो जाए तो उन की विलायत व करामत और बलन्द हो जाए। क्योंकि हक़ीक़त में यही हज़रात तो विलायत व करामती हैं कि उन के नक़्शे क़दम पैरवी के बेग़ैर विलायत व करामत तो दूर किसी को ईमान भी नसीब नहीं हो सकता। यह लोग बिला वास्ता आफ़ताबे रिसालत से विलायत का नूर हासिल करके आसमाने विलायत में सितारों की तरह चमकते और करामत के बाग़ में गुलाब के फूलों की तरह महकते हैं और तमाम दुनिया के औलिया उन की विलायत के शाही महलों की चौखट पर भिकारी बन कर विलायत के नूर की भीक मांगते रहते हैं।

अल्लाहो अक्बर! यह वह बड़ी और मुक़द्दस हस्तियाँ हैं जो हुज़ूरे अनवर ﷺ जलाल व जमाले नुबुवत को अपनी ईमानी नज़रों से देख कर और हबीबे खुदा ﷺ के शर्फ़े सुहबत से सरफ़राज़ होकर तमाम औलियाए उम्मत में इसी तरह नज़र आ रहे हैं जिस तरह टिमटमाते हुए चिराग़ों की महफ़िल में हज़ारों पावर का जगमगाता हुआ बिजली का बल्ब या सितारों की बारात में चमकता हुआ चाँद।

अफ़सोस कि न तो हमारे मुकर्ररीने किराम ने अपनी तक़रीरों में सहाबा-ए-किराम की करामतों को बयान किया न हमारे बुज़ुर्गों ने अपने मुरीदों को इस से खबरदार किया न हमारे उलमाए अहले

सुन्नत ने इन उनवान पर कभी क़लम उठाने की ज़हमत गवारा की, हालाँकि राफ़ज़ियों के मुक़ाबला में ज़्यादा से ज़्यादा इन उनवान पर लिखने और इस का तज़्किरा और चर्चा करने की ज़रूरत थी और आज भी है क्योंकि हमारी ग़फ़लतों का यह नतीजा हुआ कि हमारे अवाम जानते ही नहीं कि सहाब-ए-किराम भी औलिया हैं और उन बुज़ुर्गों से भी करामतों का ज़ुहूर हुआ है।

हक़ीक़त में एक मुद्दत से मेरा यह तअस्सुर मेरे दिल का कांटा बना हुआ था। चुनान्चे यही वह जज़्बा है कि जिस से मुतअस्सिर हो कर मैं अपनी कम हिम्मती और कम इल्मी के बावजूद फ़िलहाल एक सौ (100) सहाबा-ए-किराम ल के मुक़द्दस हालात और उन के कमालात व करामात का एक मजमूआ गुल्दस्ता की सुरत में नाज़रीने किराम की ख़िदमत में नज़र करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ जो **"करामाते सहाबा"** के सीधे सादे नाम से मौसूम है। گر قبول افتد زهے عـــزو شـــرف सच पूछिए तो दर हक़ीक़त मेरी नज़र में यह किताब इस क़ाबिल ही नहीं थी कि इस को मंज़रे आम पर लाऊँ। क्योंकि इतने अहम उनवान पर इतनी छोटी सी किताब हरगिज़ अज़्मते सहाबा के शान के लायक़ नहीं है। मगर फिर यह सोच कर कि हज़राते सहाबा किराम ؓ के दरबारे अज़्मत में फूल न सही तो कम से कम फूल की एक पंखड़ी ही नज़र करने की सआदत हासिल कर लूँ। इस किताब को छापने की हिम्मत कर ली है। फिर यह भी ख़्याल आया कि शायद मुझे कम इल्म की इस कोशिश को देख कर दूसरे अहले इल्म मैदाने तसनीफ़ में अपनी क़लम कारी के जौहर देखाएं तो اَلـدَّالُّ عَـلَى الْـخَـيْـرِ كَـفَـاعِـلِـهٖ (नेक काम की रहनुमाई करने वाला उस काम के करने वाले की तरह है) की नेक बख्ती मुझे नसीब हो जाएगी।

मैं ने इस किताब में हज़राते ख़ुलफ़ाए राशेदीन व हज़राते अशरए मुबश्शरह रिज़्वानुल्लाह अलैहिम के सिवा दूसरे सहाबए किराम के नामों और तज़्किरों में जान बूझ कर किसी ख़ास तरतीब का ख़्याल नहीं किया है। बल्कि दौराने मुताला जिन जिन सहाबा-ए- किराम की

करामतों पर नज़र पड़ती रही उन को नोट करता रहा। यहाँ तक कि मेरी नोट बुक बढ़ते बढ़ते एक किताब बन गई। क्योंकि मेरा असल मक़सद तो सहाबा-ए-किराम की करामतों का तज़्किरा था। चाहे छोटे सहाबा का ज़िक्र पहले हो या बड़े सहाबा का। इस से असल मक़सद में कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता।

तदवीन किताब लिखने के बारे में अज़ीज़े मुहतरम मौलाना कुदरतुल्लाह साहब दारूल उलूम फ़ैजुर्रसूल बराओं शरीफ़ का शुक्र गुज़ार होकर उन के लिए दुआ़ करता हुँ कि उन्होंने किताब के कुछ हिस्सों के मसव्वदों को देखकर सही करके मेरे क़लम के बोझ को कुछ हलका कर दिया।

इसी तरह अपने दूसरे मुख़्लिस शागिरदे खास कर असअदुल उलमा मौलाना अलहाज मुफ़्ती सैय्यद अहमद शाह बुख़ारी मुबल्लिग़े अफ़्रीका साकिन वझुहान ज़िला कछ और मौलाना सैय्यद मुहम्मद यूसुफ़ शाह ख़तीब जामा मस्जिद चौक भुज ज़िला कछ और मौलाना अब्दुर्रहमान साहब मुदर्रिस मदरसा अहले सुन्नत कोठार ज़िला कछ का भी बहुत शुक्र गुज़ार हूँ कि उन मुख़्लिस अज़ीज़ों ने हमेशा मेरी किताबों को कद्र की निगाहों से देखा और मेरी किताबों के छपवाने में काफ़ी हिस्सा लिया। فجزاهم الله تعالى احسن الجزاء आख़िर में दुआ़ करता हूँ कि ख़ुदा वन्दे करीम अपने हबीब अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के सदक़े में मेरी इस हक़ीर इल्मी व क़लमी ख़िदमत को अपने फ़ज़्ल व करम से शर्फ़े क़बूलियत अता फ़रमाए और इस को मेरे लिए और मेरे वालिदैन व असातज़ा व शागिर्द व अहबाब सब के लिए सामाने आख़िरत व ज़रिए मग़्फ़िरत बनाए। آمين بجاه سيد المرسلين عليه وعلى اله وصحبه الصلوة والتسليم آمين يا رب العالمين

तालिबे दुआ

अब्दुल मुस्तफ़ा अअ्ज़मी रहमुल्लाह अलैह

शैखुल हदीस दारूल उलूम अहले सुन्नत फ़ैजुर्रसूल बराओं शरीफ़ ज़िला बस्ती 25 शव्वाल 1398 हिजरी

तहक़ीक़े करामात

ज़मान-ए-नुबूवत से आज तक कभी भी इस मस्ला में अहले हक़ के बीच इख़्तिलाफ़ नहीं हुआ कि औलिया-ए -किराम की करामतें हक़ हैं और हर ज़माने में अल्लाह वालों की करामतों का सुदूर व ज़हूर होता रहा और इन्शाअल्लाह क़यामत तक कभी भी इस का सिलसिला बन्द नहीं होगा। बल्कि हमेशा औलिया-ए-किराम से करामात सादिर व ज़ाहिर होती ही रहेंगी।

और इस मस्ला के सुबुत में कुरआन मजीद की मुक़द्दस आयतें और अहादीसे करीमा और सहाबा व ताबईन का इतना बड़ा ख़ज़ाना किताबों में महफ़ूज़ है कि अगर इन सब बिखरी मोतियों को एक लड़ी में पिरो दिया जाए तो एक ऐसा कीमती हार बन सकता है जो तअलीम व तअल्लुम के बाज़ार में निहायत ही अनमोल होगा और अगर इन बिखरे पन्नों को किताब में जमा कर दिया जाए तो एक भारी भरकम और बड़ा दफ़्तर तैयार हो सकता है।

करामत क्या है: मोमिन परहेज़गार से अगर कोई ऐसा अजीब व गरीब तअज्जुब ख़ेज़ चीज़ सादिर व ज़ाहिर हो जाए जो आम तौर पर नहीं हुआ करती तो उस को ''करामत'' कहते हैं इसी क़िस्म की चीज़ें अगर अंबिया व से ऐलाने नुबुव्वत करने से पहले ज़ाहिर हों तो ''इरहास'' और ऐलाने नुबुव्वत के बाद हों तो ''मुअजेज़ह'' कहलाती हैं और अगर आम मोमिनीन से इस क़िस्म की चीज़ों का ज़हूर हो तो उस को ''मऊनत'' कहते हैं और किसी काफ़िर से कभी इस की ख़्वाहिश के मुताबिक़ इस क़िस्म की चीज़ ज़ाहिर हो जाए तो इस को ''इस्तदराज'' कहा जाता है।

मुअजेज़ह और करामत: ऊपर ज़िक्र की हुई तफ़सील से मालूम हो गया कि मुअजेज़ह और करामत दोनों की हक़ीक़त एक ही है। बस दोनों में फ़र्क़ सिर्फ़ इस क़दर है कि ख़िलाफ़े आदत व तअज्जुब ख़ेज़ चीज़ें अगर किसी नबी की तरफ़ से जाहिर हों तो यह ''मुअजेज़ह''

कहा जाएगा। चुनान्चा हज़रत इमाम याफ़ई अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब "**नश्रूल महासिनिल ग़ालिया**" में तहरीर फ़रमाया कि इमामुल हरमैन अबू बकर बाक़लानी व अबू बक्र बिन फ़ौरक और हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली व इमाम फ़ख़्रूद्दीन राज़ी व नासिरूद्दीन बैज़ावी व मुहम्मद बिन अब्दुल मलिक सलमी व नासिरूद्दीन तौसी व हाफ़िज़ुद्दीन सफ़ी व अबुल क़ासिम कुशैरी इन तमाम बड़े उलमाए अहले सुन्नत व मुहक़्क़क़ीने मिल्लत ने एक साथ यही तहरीर फ़रमाया कि मुअजेज़ह और करामत में यही फ़र्क़ है कि आदत के खिलाफ़ का सदूर व ज़हूर किसी नबी की तरफ़ से हो तो उस को "मुअजेज़ह" कहा जाएगा और अगर किसी वली की तरफ़ से हो तो उस को "करामत" के नाम से याद किया जाएगा। हज़रत इमाम याफ़ई ने इन दस इमामों के नाम और उन की किताबों की इबारतें नक़्ल फ़रमाने के बाद यह इरशाद फ़रमाया कि इन इमामों के इलावा दूसरे बुज़ुर्गाने मिल्लत ने भी यही फ़रमाया है लेकिन इल्म व फ़ज़ल और तहक़ीक़ व बारीकी के उन पहाड़ों के नाम ज़िक्र कर देने के बाद और मुहक़्क़ेक़ीन (**Research scholors**) के नामों के ज़िक्र की कोई ज़रूरत नहीं।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जिल्द 2, स़ 849)

मुअजेज़ह ज़रूरी करामत ज़रूरी नहीं: मुअजेज़ह और करामत में एक फ़र्क़ यह भी है कि वली के लिए करामत का होना ज़रूरी नहीं है मगर हर नबी के लिए मुअजेज़ह का होना ज़रूरी है क्योंकि वली के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह अपनी विलायत का ऐलान करे या अपनी विलायत का सुबूत दे। बल्कि वली के लिए तो यह भी ज़रूरी नहीं है कि वह खुद भी जाने कि मैं वली हूँ चुनान्चे यही वजह है कि बहुत से औलिया अल्लाह ऐसे भी हुए कि उन को अपने बारे में यह मालूम ही नहीं हुआ कि वह वली हैं। बल्कि दूसरे औलिया-ए-किराम ने अपने कश्फ़ व करामत से उन की विलायत को जाना पहचाना और उन के वली होने का चर्चा किया। मगर नबी के लिए

अपनी नुबुव्वत को साबित करना ज़रूरी है और चूँकि इन्सानों के सामने नुबुव्वत का सुबुत बेग़ैर मुअजेज़ह दिखाए हो नहीं सकता इस लिए नबी के लिए मुअजेज़ह का होना ज़रूरी और लाज़मी है।

करामत की क़िस्में: औलिया-ए-किराम से सादिर व ज़ाहिर होने वाली करामतें कितने तरह की हैं और उन की तादाद कितनी है? इस बारे में अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब **"तबक़ात"** में तहरीर फ़रमाया है कि मेरे ख़्याल में औलिया-ए-किराम से जितनी क़िस्मों की करामतें सादिर हुई हैं उन क़िस्मों की तादाद (100) एक सौ से भी ज़ायद है। इस के बाद अल्लामा मौसूफ ने कुछ तफसील के साथ करामत की (25) पचीस क़िस्मों का बयान फ़रमाया जिन को हम नाज़रीन की ख़िदमत में कुछ तफसील के साथ पेश करते हैं।

(1) मुर्दों को ज़िन्दा करना: यह वह करामत है कि बहुत से औलिया-ए-किराम से इस का ज़ुहूर हो चुका है। चुनान्चे सही रिवायतों से साबित है कि अबू उबैद बसरी जो अपने दौर के बड़े औलिया में से हैं एक मर्तबा जिहाद में तशरीफ़ ले गए जब उन्होंने वतन की तरफ़ वापसी का इरादा फ़रमाया तो अचानक उन का घोड़ा मर गया। मगर उन की दुआ से अचानक उन का मरा हुआ घोड़ा ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया और वह उस पर सवार होकर अपने वतन "बसर" पहुँच गए और नौकर को हुक्म दिया कि उस की ज़ीन और लगाम उतार ले। ख़ादिम ने जूँ ही ज़ीन और लगाम को घोड़े से अलग किया फ़ौरन ही घोड़ा मर कर गिर पड़ा।

इसी तरह हज़रत शैख़ मुफ़रज जो इलाक़ा मिस्र में "सईद" के रहने वाले थे उनके दस्तरख़्वान पर एक परिन्दा का बच्चा भुना हुआ रखा था। तो आप ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआला" के हुक्म से उड़ कर चला जा। उन अलफ़ाज़ का उन की ज़बान से निकलना था कि एक लमहा में वह परिन्दा का बच्चा ज़िन्दा हो गया और उड़ कर चला गया।

इसी तरह हज़रत शैख़ अहदल ने अपनी मरी हुई बिल्ली को

पुकारा तो वह दौड़ती हुई शैख़ के सामने हाज़िर हो गई।

इसी तहर हज़रत गौसे अअ्ज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी ने दस्तरख़्वान पर पकी हुई मुर्ग़ी को खा कर उस की हड्डियों को जमा करके फरमाया और यह इरशाद फ़रमाया कि ऐ मुर्ग़ी! तू उस अल्लाह तआला के हुक्म से ज़िन्दा हो कर खड़ी हो जा जो सड़ी गली हड्डियों को ज़िन्दा फ़रमाएगा। ज़बाने मुबारक से इन अलफ़ाज़ के निकलते ही मुर्ग़ी ज़िन्दा हो कर चलने फिरने लगी।

इसी तरह हज़रत शैख़ ज़ैनुद्दीन शाफ़ई मुदर्रिस मदरसा शामिया ने उस बच्चे को जो मदरसे के छत से गिर कर मर गया था ज़िन्दा कर दिया। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स़856)

इसी तरह आम तौर पर यह मशहूर है कि बग़दाद शरीफ़ में चार बुजुर्ग ऐसे हुए जो माँ के पेट से ही वली पैदा हुए। अंधों और कोढ़ियों को ख़ुदा तआला के हुक्म से शिफ़ा देते थे और अपनी दुआओं से मुर्दो को ज़िन्दा कर देते थे। शैख़ अबू सअद क़ैलवी व शैख़ बक़ा बिन बतू व शैख़ अली बिन अबी नसर हैती व शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी। (बहजतुल असरार शरीफ़)

(2) **मुर्दो से कलाम करना:** करामत की यह क़िस्म भी हज़रत शैख़ अबू सईद ख़राज़ और हज़रत ग़ौसे अअ्ज़म रहमुल्लाह वग़ैरह बहुत से औलिया-ए-किराम से बारहा और बहुत ज्यादा ब्यान किया गया है। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 856)

शैख़ अली बिन अबी नसर हैती का बयान है कि मैं शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के साथ हज़रत मअरूफ़ करख़ी के मज़ारे मुबारक पर गया और सलाम किया तो क़ब्रे अनवर से आवाज़ आई कि وعليك السلام يا سيد اهل الزمان (बहजतुल असरार)

शैख़ अली बिन अबी नसर हैती और बक़ा बिन बतू यह दोनों बुजुर्ग हज़रत ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के साथ हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल अलैहिर्रहमा के मज़ार पर हाज़िर हुए तो अचानक हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल अलैहिर्रहमा क़ब्र शरीफ़

से बाहर निकल आए और फ़रमाया कि ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी! मैं इल्मे शरीअत व तरीक़त और इल्म काल व हाल में तुम्हारा मुहताज हूँ।
(बहजतुल असरार)

(3) दरियाओं पर कब्ज़ा: दरिया का फट जाना, दरिया का सूख जाना, दरिया पर चलना बहुत से औलिया-ए-किराम से उन करामतों का ज़ुहूर हुआ। खास कर सय्यदुल उलमा हज़रत तक़ीयुद्दीन बिन दक़ीकुल ईद के लिए तो इन करामतों का बार बार ज़ुहूर आम तौर पर लोगों में मशहूर है। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स़ 856)

(4) हक़ीकत का बदल जाना: किसी चीज़ की हक़ीक़त का अचानक बदल जाना यह करामत भी कई बार औलिया-ए-किराम से हुआ है। चुनान्चे शैख़ ईसा हितार यमनी के पास बतौर मज़ाक़ के किसी गुस्ताख ने शराब से भरी हुई दो मशकें तोहफ़ा में भेज दीं। आप ने दोनों मश्कों का मुँह खोल कर एक दूसरे में शराब को उडेल दिया। फिर वहाँ पर मौजूद लोगों से फ़रमाया कि आप लोग इस को खायें। हाज़िरीन ने खाया तो इतना अच्छा और इस क़दर बेहतरीन घी था कि ताउम्र लोगों ने भी इतना उमदा घी नहीं खाया।
(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 स 856)

(5) ज़मीन का सिमट जाना: सैकड़ों हज़ारों मील की दुरी का कुछ लमहों में तैय होना यह करामत भी इस क़दर ज़्यादा अल्लाह वालों से हुई है कि इस की रिवायत हद्दे तवातुर (किसी बात को इतने लोग ब्यान करें की उतने लोगों का एक ही बात पर झूठ बोलना ना मुम्किन हो)तक पहुँची हुई हैं। चुनान्चे तरतूस की जामा मस्जिद में एक वली तशरीफ़ फ़रमा थे। अचानक उन्होंने अपना सर गिरेबान में डाला और फिर चन्द लमहों में गिरेबान से सर निकाला तो वह एक दम कअ़बा में पहुँच गए। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स़ 856)

(6) पेड़ पौधों से बात चीत: बहुत से जानवर,पेड़ पौधे और कंकड़ पत्थरों ने औलिया-ए-किराम से बात की। जिन की कहानियाँ बहुत किताबों में हैं। चुनान्चे हज़रत इब्राहीम अदहम अलैहिर्रहमा बैतुल

मुक़द्दस के रास्ते में एक छोटे से अनार के पेड़ के साया में उतर पड़े तो उस पेड़ ने बआवाज़े बुलन्द कहा कि ऐ अबू इस्हाक़ आप मुझे यह शर्फ़ अता फ़रमाइए कि मेरा एक फल खा लीजिए। इस पेड़ का फल खट्टा था मगर दरख़्त की तमन्ना पूरी करने के लिए आप ने इस का एक फल तोड़ कर खाया तो वह बहुत ही मीठा हो गया। और आप की बरकत से साल में दो बार फल देने लगा और वह पेड़ इस क़दर मशहूर हो गया कि लोग इस को रूमानतुल आबेदीन (नेकों का अनार) कहने लगे। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 856)

(7) **शिफ़ाए अमराज़:** औलिया-ए-किराम के लिए इस करामत का सुबूत भी बकस्रत किताबों में लिखा है। चुनान्चे हज़रत सिर्री सक़ती अलैहिर्रहमा का ब्यान है कि एक पहाड़ पर मैंने एक ऐसे बुजुर्ग से मुलाक़ात की जो अपाहिजों, अंधों और दूसरे क़िस्म क़िस्म के मरीज़ों को खुदा के हुक्म से शिफ़ायाब फ़रमाते थे।

(हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स 857)

(8) **जानवरों का फ़रमाँबरदार हो जाना:** बहुत से बुजुर्गों ने अपनी करामत से ख़तरनाक दरिन्दों को अपना फ़रमाँबरदार बना लिया था। चुनान्चे हज़रत अबू सईद बिन अबुल ख़ैर सीनी अलैहिर्रहमा ने शेरों को अपना फरमाँ बरदार बना रखा था। और दूसरे बहुत से औलिया शेरों पर सवारी फ़रमाते थे जिन की हिकायात मश्हूर हैं।

(हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स 857)

(9) **ज़माना का कम हो जाना:** यह करामात बहुत से बुजुर्गों से मन्कूल है कि उन की बारगाह में लोगों को ऐसा महसूस हुआ कि पूरा दिन इस क़दर जल्दी गुज़र गया कि गोया घंटा दो घंटा का वक़्त गुज़रा है।

(हुज्जतुल्लाह ज़ि 2,स 857)

(10) **ज़माना का लम्बा हो जाना:** इस करामत का ज़ुहूर सैकड़ों उलमा व मशाइख़ से इस तरह हुआ कि उन बुजुर्गों ने कम से कम वक़्तों में इस क़दर ज़्यादा काम कर लिया कि दुनिया वाले इतना काम महीनों बल्कि सालों में भी नहीं कर सकते। चुनान्चे इमाम शाफ़ई व

हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली व अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती व इमामुल हरमैन मुहियुद्दीन नौवी वग़ैरह। और चौदहवीं सदी हिजरी के इमाम अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी अलैहिर्रहमा जिन्हों ने तक़रीबन एक हज़ार किताबें पच्चास उलूम में लिखीं।

उलमा-ए-दीन ने इस क़दर ज़्यादा तअदाद में किताबें लिखी हैं कि अगर उन की उम्रों का हिसाब लगाया जाए तो रोज़ाना इतने ज़्यादा सफहें उन बुज़ुर्गों ने तसनीफ़ फ़रमाए हैं कि कोई इतने ज़्यादा सफहों को इतनी कम मुद्दत में नक़ल भी नहीं कर सकता। हालाँकि यह अल्लाह वाले तसनीफ़ के इलावा दूसरे काम भी करते थे और नफ़ली इबादतें भी ख़ूब अदा करते रहते थे इसी तरह मन्क़ूल है कि कुछ बुज़ुर्गों ने दिन रात में आठ आठ ख़त्मे क़ुरआन मजीद की तिलावत की है। ज़ाहिर है कि उन बुज़ुर्गों के औक़ात में इस क़दर और इतनी ज़्यादा बरकत हुई है कि जिस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है? (हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स़ 857)

(11) मक़बूलियत की दुआ: यह करामत भी बहुत ज़्यादा बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है।

(12)ख़ामूशी व कलाम पर क़ुदरत: कुछ बुज़ुर्गों ने बरसों तक किसी इंसान से कलाम नहीं किया और बाज़ बुज़ुर्गों ने नमाज़ों और ज़रूरियाते ज़िन्दगी के इलावा कई कई दिनों तक मुसलसल नसीहत फ़रमाया और दरस दिया है।

(13) दिलों को अपनी तरफ़ खींच लेना: सैकड़ों औलिया-ए-किराम से यह करामत जाहिर हुई कि जिन बस्तियों या मजलिसों में लोग उन से दुश्मनी व नफ़रत रखते थे जब उन हज़रात ने वहाँ क़दम रखा तो उन की तवज्जुहात से नागहाँ सब के दिल उन की मुहब्बत से भर गए और सब के सब परवानों की तरह उन के क़दमों पर निसार होने लगे। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स़ 857)

(14) ग़ैब की ख़बरें: उस की बे शुमार मिसालें मौजूद हैं कि औलिया-ए-किराम ने दिलों में छुपे हुए ख़्यालात व शुब्हों को जान

लिया और लोगों को ग़ैब की ख़बरें देते रहे और उनकी पेशीनगोइयाँ सौ फ़ीसद सही होती रही।

(15) **खाए पीए बग़ैर ज़िन्दा रहना:** ऐसे बुज़ुर्गों की फेहरिस्त बहुत ही लम्बी है जो एक लम्बी मुद्दत तक बेग़ैर कुछ खाए पीए ज़िन्दा रह कर इबादतों में मसरूफ़ रहे और उन्हें खाना या पानी छोड़ देने से ज़र्रा बराबर कोई कमज़ोरी नहीं हुई।

(16) **दुनिया के निज़ाम पर क़ब्ज़ा:** मन्क़ूल है कि बहुत से बुज़ुर्गों ने सख़्त सुखे के ज़माने में आसमान की तरफ़ उँगली उठा कर इशारह फ़रमाया तो फ़ौरन आसमान से मोसलाधार बारिश होने लगी। और मशहूर है कि हज़रत शैख़ अबुल अब्बास शातिर अलैहिर्रहमा तो दिरहमों के बदले बारिश बेचा करते थे।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स़ 857)

(17) **बहुत ज़्यादा खाना खा लेना:** बाज़ बुज़ुर्गों ने जब चाहा बीसियों आदमियों की ख़ुराक अकेले खा गए और उन्हें कोइ तकलीफ़ भी नहीं हुई।

(18) **हराम खानों से महफ़ूज़:** बहुत से औलिया-ए-किराम की यह करामत मशहूर है कि हराम ग़िज़ाओं से वह एक ख़ास क़िस्म की बदबू महसूस करते थे। चुनान्चे हज़रत शैख़ हारिस महलबसी अलैहिर्रहमा के सामने जब भी कोई हराम ग़िज़ा लाई जाती थी तो उन्हें उस ग़िज़ा से ऐसी ख़राब बदबू महसूस होती थी कि वह उस को हाथ नहीं लगा सकते थे और यह भी मन्क़ूल है कि हराम खाने को देखते ही उन की एक रग फड़कने लगती थी।

चुनान्चे मन्क़ूल है कि हज़रत शैख़ अबुल अब्बास मुरसी के सामने लोगों ने इम्तिहान के तौर पर हराम खाना रख दिया। तो आप ने फ़रमाया कि अगर हराम ग़िज़ा को देख कर हारिस महलबसी अलैहिर्रहमा की एक रग फड़कने लगती थी तो मेरा यह हाल है कि हराम खाने के सामने मेरी सत्तर रगें फड़कने लगती हैं।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 857)

(19) दूर की चीज़ों को देख लेना: शैख़ अबू इसहाक़ शिराज़ी अलैहिर्रहमा की यह मश्हूर करामत है कि वह बग़दाद शरीफ़ में बैठे हुए कअबा मुकर्रमा को देखा करते थे।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 857)

(20) हैबत व दबदबा: कुछ औलिया-ए-किराम से इस करामत का सुदूर इस तौर पर हुआ कि उन की सूरत देख कर बाज़ लोगों पर इस क़दर ख़ौफ़ व डर हुआ कि उन का दम निकल गया। चुनान्चे हज़रत ख़्वाजा बा यज़ीद बुस्तामी अलैहिर्रहमा की हैबत से उन की मजलिस में एक शख़्स मर गया। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 857)

(21) मुख़्तलिफ़ सूरतों में ज़ाहिर होना: इस करामत को सुफ़िया-ए-किराम की इस्तलाह में "**ख़लअ व लबस**" कहते हैं यअनी एक शक्ल को छोड़ कर दूसरी शक्ल में ज़ाहिर हो जाना। हज़रते सुफ़िया का क़ौल है कि रूहों की जिन्दगी और आलमे अजसाम के बीच एक तीसरी दुनिया भी है। जिस को आलमे मिसाल कहते हैं। इस दुनिया में एक ही शख़्स की रूह मुख़्तलिफ़ जिस्मों में ज़ाहिर हो जाया करती है। चुनान्चे उन लोगों ने कुरआन मजीद की आयते करीमा فتمثل لها بشرا سويا से दलील ली है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हज़रत बीबी मरयम के सामने एक तन्दुरूस्त जवान आदमी की सूरत में ज़ाहिर हो गए थे। यह वाक़िआ आलमे मिसाल में हुआ था।

यह करामत बहुत से औलिया ने दिखाई है। चुनान्चे हज़रत क़ज़ीबुलबान मोसली अलैहिर्रहमा जिन का औलिया के तबक़ा-ए-अबदाल में शुमार होता है। किसी ने आप पर यह तुहमत लगाई कि आप नमाज़ नहीं पढ़ते। यह सुन कर आप जलाल में आ गए और फ़ौरन ही अपने आप को उस के सामने चन्द सूरतों में ज़ाहिर किया। और पूछा कि बता तू ने किस सूरत में मुझ को नमाज़ छोड़ते हुए देखा है। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 858)

इसी तरह ब्यान किया गया है कि हज़रत मौलाना यअक़ूब चरख़ी अलैहिर्रहमा जो मशाइख़े नक़्शबन्दिया में बहुत ही बड़े बुज़ुर्ग हैं। जब

हज़रत ख़्वाजा उबैदुल्लाह इहरार अलैहिर्रहमा उन की ख़िदमत में मुरीद होने के लिए हाज़िर हुए तो हज़रत ख़्वाजा मौलाना यअक़ूब चरख़ी अलैहिर्रहमा के चेहरे अक़दस पर उन को दाग़ धब्बे नज़र आए जिस से उन के दिल में कुछ ना पसन्दीदगी पैदा हुई तो अचानक आप उन के सामने एक ऐसी नूरानी शक्ल में ज़ाहिर हो गए कि बे इख़्तियार ख़्वाजा उबैदुल्लाह इहरार अलैहिर्रहमा का दिल उन की तरफ़ झुक गया और वह फ़ौरन ही मुरीद हो गए। (रुशहातुल उयून)

(22) **दुश्मनों की मक्कारियों से बचना:** ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने कुछ औलिया-ए-किराम को यह करामत भी अता फ़रमाई है कि ज़ालिम हाकिम व बादशाह ने जब उन के क़त्ल या तकलीफ पहुँचाने का इरादा किया। तो ग़ैब से ऐसे असबाब पैदा हो गए कि वह उन के शर से महफ़ूज़ रहे जैसा कि हज़रत इमाम शाफ़ई अलैहिर्रहमा को ख़लीफ़ा बुग़दाद हारून रशीद ने तकलीफ पहुँचाने के ख़्याल से दरबार में तलब किया। मगर जब वह सामने गए तो ख़लीफ़ा ख़ुद परेशानियों में मुब्तला हो गया कि उन का कुछ न बिगाड़ सका।

(हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स 858)

(23) **ज़मीन के ख़ज़ानों को देख लेना:** कुछ औलिया-ए-किराम छुपे हुए ख़ज़ानों को देख लिया करते थे और उस को अपनी करामत से बाहर निकाल लेते थे। चुनान्चे शैख़ अबू तुराब अलैहिर्रहमा ने एक ऐसे मक़ाम पर जहाँ पानी नहीं था ज़मीन पर एक ठोकर मार कर पानी का चश्मा (सोता) जारी कर दिया। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 858)

(24) **परेशानियों का आसान हो जाना:** यह करामत बुज़ुर्गाने दीन से बार बार और बेशुमार मर्तबा ज़ाहिर हो चुकी है जिस की सैकड़ों मिसालें "तज़्किरतुल औलिया" वग़ैरह मुस्तनद किताबों में हैं।

(25) **जान लेवा चीज़ों का असर न करना:** मशहूर है कि एक कमीने बादशाह ने किसी ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग को गिरफ़्तार किया और उन्हें मजबूर कर दिया कि वह कोई तअज्जुब ख़ेज़ करामत दिखाएँ। वरना उन्हें और उन के साथियों को क़त्ल कर दिया जाएगा आप ने

ऊँट की मेंगनियों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि उनको उठा लाओ और देखो कि वह क्या हैं? जब लोगों ने उन को उठा कर देखा तो वह खालिस सोने के टुकड़े थे फिर आप ने एक ख़ाली प्याले को उठा कर घुमाया और उलटा करके बादशाह को दिया तो वह पानी से भरा हुआ था। और उलटा होने के बावजूद उस में से एक क़तरा भी पानी नहीं गिरा। यह दो करामतें देख कर वह बद अक़ीदा बादशाह कहने लगा कि यह बस नज़र बन्दी के जादू का करिश्मा है। फिर बादशाह ने आग जलाने का हुक्म दिया। जब आग के शोअले बलन्द हुए तो बादशाह ने मजलिसे सिमाअ लगवाई। जब उन बुज़ुर्गों को सिमाअ सुन कर जोशे वज्द में हाल आ गया तो यह सब लोग जलती हुई आग में दाख़िल हो कर नाचने लगे। फिर एक दरवेश बादशाह के बच्चे को गोद मे ले कर आग में कूद पड़ा और थोड़ी देर तक बादशाह की नज़रों से ग़ायब हो गया। बादशाह अपने बच्चे की जुदाई में बे चैन हो गया। मगर फिर चन्द मिन्टों में दरवेश ने बादशाह के बच्चे को उस हाल में बादशाह की गोद में डाल दिया कि बच्चे के एक हाथ में सेब और दूसरे हाथ में अनार था। बादशाह ने पुछा बेटा! तुम कहाँ चले गए थे? तो उस ने कहा कि मैं एक बाग़ में था जहाँ से मैं यह फल लाया हूँ। यह देख कर भी ज़ालिम व बद अक़ीदा बादशाह का दिल नहीं पसीजा और उस ने एक बुज़ुर्ग को बार बार ज़हर का प्याला पिलाया। मगर हर मर्तबा ज़हर के असर से उस बुज़ुर्ग के कपड़े फटते रहे और उन की ज़ात पर ज़हर का कोई असर नहीं हुआ। (हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, स 858)

करामत की यह वह पच्चीस क़िस्में हैं और उन की चन्द मिसालें हैं जिन को हज़रत अल्लामा ताजुद्दीन सबकी अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब "तबक़ात" में तहरीर फ़रमाया है, वरना इस के इलावा करामात की बहुत सी क़िस्में हैं और उन की मिसालें इस क़दर ज़्यादा तअदाद में हैं कि अगर उन को जमा किया जाए तो हज़ारों पन्नों का एक भारी भरकम दफ़्तर तैयार हो सकता है मगर बतौर मिसाल जिस

क़दर हम ने यहाँ तहरीर कर दिया वह हक़ की तलाश करने वाले की तसकीने रूह और दिल के इत्मिनान के लिए बहुत काफ़ी हैं। रह गए बद अक़ीदा मुन्करीन तो उन की हिदायत के लिए दलाइल तो क्या? दौरे रिसालत में उन को मुअजेज़ा **"शक़्कुल क़मर"** भी फ़ायदा मन्द नहीं हुआ। मिसाल मश्हूर है कि:-

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
मर्दे नादाँ पर कलामे नरम व नाज़ुक बे असर

सहाबी

जो मुसलमान बहालते ईमान हुज़ूर अनवरमक ﷺ मुलाक़ात से सरफ़राज़ हुए और ईमान ही पर उन का ख़ातमा हुआ उन ख़ुश नसीब मुसलमानों को "सहाबी" कहते हैं। उन सहाबियों की तअदाद एक लाख से ज़्यादा है। चुनान्चे हज़रत इमाम बैहक़ी की रिवायत है कि हज्जतुल विदाअ में एक लाख चौबिस हज़ार सहाबा-ए-किराम हुज़ूर ﷺ के साथ हज के लिए मक्का मुकर्रमा में जमा हुए और कुछ दूसरी रिवायत से पता चलता है कि हुज्जतुल विदाअ में सहाबा-ए-किराम ﷺ की तअदाद एक लाख चौबिस हज़ार थी। **(वल्लाह अअ्लम)**

(ज़रक़ानी जिल्द 3, स 106 मदारिज जिल्द 2 स 387)

अफ़ज़लुल औलिया

तमाम उलमाए उम्मत व बड़े उलमा का इस मस्ला पर इत्तेफाक़ है कि सहाबा-ए-किराम ﷺ **"अफ़ज़लुल औलिया"** हैं। यअनी क़यामत तक के तमाम औलिया अगरचे वह दर्जा-ए-विलायत की बुलन्द तरीन मंज़िल पर पहुँच जाएँ। मगर हरगिज़ हरगिज़ कभी भी वह किसी सहाबी के कमालाते विलायत तक नहीं पहुँच सकते। ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने अपने हबीब ﷺ की शमए नुबूवत के परवानों को मर्तबए विलायत का वह बलन्द व बाला मुक़ाम अता फ़रमाया है और उन मुक़द्दस हस्तियों को ऐसी ऐसी बड़ी बड़ी करामतों से सरफ़राज़

फ़रमाया कि दूसरे तमाम औलिया के लिए उस बलन्दी को तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। उस में शक नहीं कि हज़राते सहाबा-ए-किराम से इस क़दर ज़्यादा करामतों का सुदूर नहीं हुआ जिस क़दर कि दूसरे औलिया-ए-किराम से करामतें मन्कूल हैं। लेकिन वाज़ेह रहे कि करामत का ज़्यादा होना बड़ा होने की दलील नहीं। क्योंकि विलायत असल (वास्तव) में कुर्बे इलाही का नाम है। यह कुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़्यादा हासिल होगा उसी क़दर उस की विलायत का दर्जा बलन्द होगा। सहाबा-ए-किराम चूँकि निगाहे नुबूवत के अनवार और फ़ैज़ाने रिसालत के फ़ुयूज़ व बरकात से माला माल हैं इसलिए बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन बुज़ुर्गों को जो कुर्ब व मर्तबा हासिल है वह दूसरे औलिया अल्लाह को हासिल नहीं। इस लिए अगरचे सहाब-ए-किराम से बहुत कम करामतें जाहिर हुई लेकिन फिर भी सहाबा-ए-किराम का मर्तबा दूसरे औलिया-ए-किराम से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल व आला और बलन्द व बाला हैं।

बहर हाल अगरचे तअदाद में कम सही लेकिन फिर भी बहुत से सहाबा-ए-किराम से करामतों का सुदूर व ज़ुहूर हुआ है। चुनान्चे हम अपनी इस मुख़्तसर सी किताब में कुछ सहाबा-ए-किराम की चन्द करामत का ब्यान तहरीर करने की सआदत हासिल करते हैं ताकि अहले ईमान प्यारे हबीब ﷺ की शमअे नबुवत के उन परवानों की करामत के ईमान अफ़रोज़ तज़्किरों से अपनी दुनियाए दिल को मुहब्बत व अक़ीदत से भर लें और दुश्मनाने सहाबा या तो आफ़ताबे रिसालत के नूर से चमकने वाले उन रौशन सितारों से हिदायत की रोशनी हासिल करें या फिर अपनी गुस्से की आग में जल भुन कर जहन्नम का आग (ईंधन) बन जाएँ।

अशरह मुबश्शेरह

यूँ तो हुज़ूर रहमतुल लिलआलमीन ﷺ ने अपने बहुत से सहाबियों को अलग अलग समय में जन्नत की ख़ुशख़बरी दी और दुनिया ही में

उन के जन्नती होने का ऐलान फ़रमा दिया। मगर दस ऐसे बड़े और खुश नसीब सहाबा-ए-किराम हैं जिन को आप ने मस्जिदे नबवी के मिम्बर शरीफ़ पर खड़े होकर एक साथ उन का नाम लेकर जन्नती होने की खुश ख़बरी सुनाई। तारीख़ में उन खुश नसीबों का लक़ब "अशरह मुबश्शेरह" है। जिन की मुबारक फेहरिस्त यह है।

(1) हज़रत अबू बकर सिद्दीक़	(2) हज़रत उमर फ़ारूक़
(3) हज़रत उस्मान ग़नी	(4) हज़रत अली मुर्तज़ा
(5) हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह	(6) हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम
(7) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़	(8) हज़रत सअद बिन अबी वक़ास
(9) हज़रत सईद बिन ज़ैद	(10) हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह

(रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन)

(तिर्मिज़ी जिल्द 3, स 216, मनाक़िब अब्दुर्रहमान बिन औफ़)

हम सब से पहले उन दस जन्नती सहाबियों की चन्द करामतों का तज़्किरा तहरीर करते हैं। उस के बाद दूसरे सहाबा-ए-किराम की करामतें भी तहरीर की जाएँगी और असहाबे किराम की करामतों के साथ साथ चन्द मुक़द्दस ख़्वातीने इस्लाम की करामात भी पेश की जाएँगी जो सारी दुनिया की मोमिनात सालिहात में "**सहाबियात**" के मोअज़्ज़ज़ खेताब के साथ मुमताज़ हैं ताकि अहले ईमान पर उस हक़ीक़त का ज़हूर (ज़ाहिर) हो जाए कि फ़ैज़ाने नुबुव्वत के अनवार व बरकात और आफ़ताबे रिसालत की रोशनी से सिर्फ़ मर्दों ही का तबक़ा फायदा नहीं उठाया बल्कि औरतों पर भी आफ़ताबे नुबुवत की नूरानी शुआएँ इस तरह जलवा रेज़ हुई कि वह भी मर्दों के दोश ब दोश मज़हरे कमालात व साहिबे करामात हो गईं। अल्लाहु अक्बर!

सच है कि:-

ज़ुल्मत को उन के नूर ने काफ़ूर कर दिया
जिस पर निगाह डाली उसे नूर कर दिया

☆☆☆

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

करामाते सहाबा رضی اللہ عنہم

सरकारे दो आलम से मुलाक़ात का आलम
आलम में है मेअराजे कमालात का आलम
यह राज़ी खुदा से हैं खुदा उन से है राज़ी
या कहिए सहाबा की करामात का आलम

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ

ख़लीफ़-ए-अव्वल जानशीने पैग़म्बर अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अक्बर رضی اللہ عنہ का नामे नामी **"अब्दुल्लाह"** **"अबू बकर"** आप की कुन्नियत और **"सिद्दीक़ व अतीक़"** आप का लक़ब है। आप कुरैशी हैं और सातवीं पुश्त में आप का नसब रसूलुल्लाह ﷺ के ख़ानदानी शजरह से मिल जाता है। आप आमुलफ़ील के ढाई साल बाद मक्का में पैदा हुए। आप इस क़दर कमाल और फज़ीलतों वाले हैं कि अंबिया علیہم السلام के बाद तमाम अगले और पिछले इंसानों में सब से अफ़ज़ल व आला हैं। आज़ाद मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया और सफ़र व वतन के तमाम हालात व इस्लामी जिहादों में मुजाहिदाना कारनामों के साथ शामिल हुए और सुलह व जंग के तमाम फ़ैसलों में आप शहंशाहे मदीना ﷺ के वज़ीर व मुशीर बन कर नुबुव्वत के मंज़िलों के हर हर मोड़ पर आप के दोस्त व जाँ निसार रहे। दो साल तीन माह ग्यारह दिन मस्नदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रह कर 22 जमादिल आख़िर 13 हिजरी मंगल की रात वफ़ात पाई। हज़रते उमर رضی اللہ عنہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुनव्वरह में हुज़ूर रहमते आलम के पहलू में दफ़न हुए।

(अकमाल व तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

करामात

खाने में बड़ी बरकत: हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ का बयान है कि एक मर्तबा हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ बारगाहे रिसालत के तीन मेहमानों को अपने घर लाए और खुद हुज़ूरे अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गए और बात चीत में व्यस्त रहे। यहाँ तक कि रात का खाना आप ने दस्तर ख़्वाने नुबुवत पर खा लिया और बहुत ज़्यादा रात गुज़र जाने के बाद मकान पर वापस तशरीफ़ लाए। उन की बीवी ने अर्ज़ किया कि आप अपने घर पर मेहमानों को बुला कर कहाँ ग़ायब रहे? हज़रत सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि क्या अब तक तुम ने मेहमानों को खाना नहीं खिलाया? बीवी साहिबा ने कहा कि मैंने खाना पेश किया। मगर उन लोगों ने साहिबे ख़ाना की ग़ैर मौजूदगी में खाना खाने से इन्कार कर दिया। यह सुन कर आप साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रहमान رضی اللہ عنہ पर बहुत ज़्यादा नाराज़ हुए और वह ख़ौफ़ व दहशत की वजह से छुप गए और आप के सामने नहीं आए फिर जब आप का गुस्सा ख़त्म हो गया तो आप मेहमानों के साथ खाने के लिए बैठ गए और सब मेहमानों ने खूब पेट भर कर खाना खा लिया। उन मेहमानों का बयान है कि जब हम खाने के बरतन में से लुक़्मा उठाते थे तो जितना खाना हाथ में आता था। उस से कहीं ज़्यादा खाना बरतन में नीचे से उभर कर बढ़ जाता था। और जब हम खाने से फ़ारिग़ हुए तो खाना बजाए कम होने के बरतन में पहले से ज़्यादा हो गया। हज़रते सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ ने हैरान हो कर अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया कि यह क्या मामला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ ज़्यादा नज़र आता है। बीवी साहिबा ने क़सम खा कर कहा वाक़ई यह खाना तो पहले से तीन गुना बढ़ गया है। फिर आप उस खाने को बारगाहे रिसालत में ले गए। जब सुबह हुई तो अचानक मेहमानों का एक क़ाफ़िला दरबारे रिसालत में उतरा जिस में बारह क़बीलों के बारह सरदार थे और हर सरदार के साथ दूसरे सत्तर

सवार थे। उन सब लोगों ने यही खाना खाया और क़ाफ़ला के तमाम सरदार और तमाम मेहमानों का गरोह उस खाने से शिकम सैर होकर आसूदह हो गया। लेकिन फिर भी उस बरतन में खाना ख़त्म नहीं हुआ। **(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द 1, स 506 मुख़्तसर)**

माँ के पेट में क्या है?: हज़रते उरवह बिन ज़ुबैर ﷺ ब्यान करते हैं कि अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ ने अपने मरज़े वफ़ात में अपनी साहबज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा ﷺ को वसीयत फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि मेरी प्यारी बेटी! आज तक मेरे पास जो मेरा माल था वह आज वारिसों का माल हो चुका है और मेरी औलाद में तुम्हारे दोनों भाई अब्दुर्रहमान व मुहम्मद और तुम्हारी दोनों बहनें हैं इस लिये तुम लोग मेरे माल को कुरआन मजीद के हुक्म के मुताबिक़ तक़सीम करके अपना अपना हिस्सा ले लेना। यह सुन कर हज़रते आइशा ﷺ ने अर्ज़ किया कि अब्बा जान! मेरी तो एक ही बहन "**बीबी असमा**" हैं यह मेरी दूसरी बहन कौन है? आप ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी बीवी "**बिन्ते ख़ारजा**" जो हामिला है। उस के पेट में लड़की है। वह तुम्हारी दूसरी बहन है। चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि लड़की पैदा हुई जिन का नाम "उम्मे कुलसूम" रखा गया। **(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा स 57)**

इस हदीस के बारे में हज़रत अल्लामा ताजुद्दीन सबकी अलैहिर्रहमा ने तहरीर फ़रमाया कि इस हदीस से अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ की दो करामतें साबित होती हैं।

पहला: यह कि आप को वफात से पहले यह इल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में दुनिया से कूच करूँगा। इसलिए वक़्ते वसियत आप ने यह फ़रमाया "कि मेरा माल आज मेरे वारिसों का माल हो चुका है।"

दुसरा: यह कि हामला के पेट में लड़का है या लड़की और ज़ाहिर है कि उन दोनों बातों का इल्म यक़ीनन ग़ैब का इल्म है जो बिला शुब्हा व बिल यक़ीन पैग़म्बर के जानशीन हज़रत अमीरूल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ की दो बड़ी करामतें हैं। **(इज़ालतुल ख़िफ़ा**

मक्सद नम्बर 2 स 21 व हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स 860)

ज़रूरी तम्बीह: ब्यान की गई हदीस और अल्लामा ताजुद्दीन सबकी अलैहिर्रहमा की तक़रीर से मालूम हुआ कि मा फ़िल अरहाम (जो कुछ माँ के पेट में है उस का इल्म हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को हासिल हो गया था। इसलिए यह बात दिमाग़ में बिठा लेनी चाहिए कि कुरआन मजीद की सूरह लुक़्मान में जो "يعلم ما فى الارحام" आया है यअनी ख़ुदा के सिवा कोई इस बात को नहीं जानता कि माँ के पेट में क्या है?) इस आयत का यह मतलब है कि बग़ैर ख़ुदा के बताए हुए कोई अपनी अक़्ल व समझ से नहीं जान सकता कि माँ के पेट में क्या है? लेकिन ख़ुदावन्दे तआला के बता देने से दूसरों को भी इस का इल्म हो जाता है। चुनान्चे हज़राते अंबिया वही के ज़रिए और औलिया-ए-उम्मत कश्फ़ व करामत के तौर पर ख़ुदा वन्दे कुद्दूस के बता देने से यह जान लेते हैं कि माँ के पेट में लड़का है या लड़की? मगर अल्लाह तआला का इल्म बग़ैर किसी के अता किए हुए, हमेशा रहने वाला और खत्म न होने वाला है और अंबिया व औलिया का इल्म अताई व खत्म होने वाला और दुसरे का अता किया हुआ है। अल्लाहु अकबर! कहाँ ख़ुदा वन्दे कुद्दूस का इल्म और कहाँ बन्दों का इल्म? दोनों में बहुत फ़र्क़ है।

निगाहे करामत: हुज़ूरे अक़्दस की वफ़ात के बाद जो क़बाइले अरब मुरतद होकर इस्लाम से फिर गए थे। उन में क़बीलए कुन्दह भी था। चुनान्चे अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ ने उस क़बीला वालों से भी जिहाद फ़रमाया और मुजाहिदीने इस्लाम ने उस क़बीला के बड़े सरदार यअनी अशअस बिन क़ैस को गिरफ़्तार कर लिया और लोहे की ज़ंजीरों में जकड़ कर उस को दरबारे खिलाफ़त में पेश किया। अमीरूल मोमिनीन के सामने आते ही अशअस बिन क़ैस ने बुलन्द आवाज से अपने जुर्म का इक़रार कर लिया और फिर फ़ौरन ही तौबा करके सच्चे दिल से इस्लाम क़बूल कर लिया। अमीरूल मोमिनीन ने ख़ुश होकर उस का क़ुसूर मआफ़ कर दिया

और अपनी बहन हज़रत "उम्मे फ़रदा" رضی اللہ عنہا से उस का निकाह करके उसको अपनी क़िस्म क़िस्म की इनायतों और नवाज़िशों से सरफ़राज़ कर दिया। तमाम हाज़रीने दरबार हैरान रह गए कि मुर्तद का सरदार जिस ने मुर्तद होकर अमीरूल मोमिनीन से बग़ावत और जंग की और बहुत से मुसलमानों का ख़ून किया ऐसे ख़ुंख्वार बाग़ी और इतने बड़े ख़तरनाक मुजरिम को अमीरूल मोमिनीन ने इस क़दर क्यों नवाज़ा? लेकिन हज़रत अशअस बिन क़ैस رضی اللہ عنہ ने सच्चे मुसलमान होकर इराक़ के जिहादों में अपना सर हथेली पर रख कर ऐसे ऐसे मुजाहदाना कारनामे अंजाम दिए कि इराक़ की जीत का सेहरा उन्ही के सर रहा और फिर हज़रते उमर رضی اللہ عنہ के दौरे ख़िलाफ़त में जंगे क़ादसिया और क़िला मदाइन व जलूला व निहावन्द की लड़ाइयों में उन्होंने सर फ़रोशी व जाँबाज़ी के जो हैरतनाक कारनामे पेश किए उन्हें देख कर सब को मानना पड़ा कि वाक़ई अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की निगाहे करामत ने हज़रते अशअस बिन क़ैस رضی اللہ عنہ की ज़ात में छिपे हुए कमालात के अनमोल जौहरों को सालों पहले देख लिया था वह किसी और को नज़र नहीं आए थे। यक़ीनन यह अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की एक बहुत बड़ी करामत है।

(इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद नम्बर 2 स 39)

इसी लिये मशहूर सहाबी हजरते अबदुल्लाह इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہ आम तौर पर यह फरमाया करते थे कि मेरे नज़दीक तीन लोग ऐसे गुज़रे हैं जो अक़्ल व समझ के बहुत ऊँचे मकाम पर थे।

पहला: अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ कि उन की निगाहे करामत की नूरी समझ ने हज़रते उमर رضی اللہ عنہ के कमालात को ताड़ लिया और आपने हज़रते उमर को अपने बाद ख़िलाफ़त के लिए चुना जिस को तमाम दुनिया के तारीख लिखने वाले और दानिशवरों ने बेहतरीन क़रार दिया।

दुसरा: हज़रते मूसा علیہ السلام की बीवी हज़रते सफूरा رضی اللہ عنہا कि उन्होंने हज़रते मूसा علیہ السلام के रोशन मुस्तक़्बिल को अपनी समझ से भांप लिया और

अपने वालिद हज़रत शुऐब عليه السلام से अर्ज़ किया कि आप इस जवान को बतौर मजदूर अपने घर पर रख लें जब कि इन्तिहाई परिशानी के आलम में फ़िरऔन के जुल्म से बचने के लिए हज़रते मूसा عليه السلام अकेले हिजरत करके मिस्र से "मदयन" पहुँच गए थे। चुनान्चे हज़रत शुऐब عليه السلام ने उन को अपने घर पर रख लिया और उन की ख़ूबियों को देख कर और उन के कमालात से मुतअस्सिर होकर अपनी बेटी हज़रत बीबी सफूरा का उन से निकाह कर दिया और उस के बाद ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने हज़रते मूसा عليه السلام को नुबूवत व रिसालत के शर्फ़ से सरफ़राज़ फ़रमा दिया।

तीसरा: मिस्र के बादशाह कि उन्होंने अपनी बीवी हज़रते ज़ुलेख़ा को हुक्म दिया कि अगरचे हज़रते युसुफ़ عليه السلام हमारे खरीदे गुलाम बन कर हमारे घर में आए हैं मगर ख़बरदार! तुम उन की इज़्ज़त व इकराम का ख़ास तौर पर एहतमाम व इन्तज़ाम रखना। क्योंकि अज़ीज़े मिस्र ने अपनी निगाहे फ़रासत (समझ) से हज़रत युसुफ़ عليه السلام के शानदार मुस्तक़बिल को समझ लिया था कि गोया आज गुलाम हैं मगर यह एक दिन मिस्र के बादशाह होंगे। **(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा स 57, व इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद नम्बर 2, स 33)**

कलमए तैयबा से क़िला चूर चूर: अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में क़ैसरे रूम (रूम का बादशाह) से जंग के लिए मुजाहिदीने इस्लाम की एक फौज रवाना फ़रमाई और हज़रते अबू उबैदा رضي الله عنه को उस फ़ौज का कमान्डर मुक़र्रर फ़रमाया। यह इस्लामी फ़ौज क़ैसरे रूम की लश्करी ताक़त के मुक़ाबले में ज़ीरो के बराबर थी मगर जब उस फ़ौज ने रूमी क़िला का घेराव किया और (لا اله الا اللـه محمد رسول الله)का नअ्रा मारा तो कलमए तैयबा की आवाज़ से क़ैसरे रूम के क़िला में ऐसा ज़लज़ला आ गया कि पूरा क़िला चूर चूर होकर उस की ईंट से ईंट बज गई और एक ही लम्हे में क़िला फ़तह हो गया। बिला शुब्हा यह अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه की बहुत ही शानदार करामत

है क्योंकि आप ने अपने दस्ते मुबारक से झण्डा बांध कर और फ़तह की खुशखबरी दे कर उस फौज को जिहाद के लिए रवाना फ़रमाया था। (इज़ालतुल ख़िफ़ा मक्सद नम्बर 2, स 40)

ख़ून में पेशाब करने वाला: एक शख़्स ने अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ से अर्ज़ किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं ने ख़्वाब में यह देखा है कि मैं ख़ून में पेशाब कर रहा हूँ। आप ने इन्तिहाई गुस्से और जलाल में तड़प कर फ़रमाया कि तू अपनी बीवी से हैज़ की हालत में सोहबत करता है। इस लिये उस गुनाह से तौबा कर और ख़बरदार! आगे हरगिज़ हरगिज़ कभी भी ऐसा मत करना। वह शख़्स अपने उस छुपे हुए गुनाह पर नादिम व शरमिन्दा होकर हमेशा हमेशा के लिए तौबा कर लिया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा स 72)

सलाम से दरवाज़ा खुल गया: हज़रते अमीरूल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ का जनाज़ा लेकर लोग जब रौज़ए मुनव्वरह के पास पहुँचे तो लोगों ने अर्ज़ किया कि अस्सलामु अलैका या रसुलल्लाह यह अबू बकर का जनाज़ा है यह अर्ज़ करते ही रौज़ए मनव्वरह का बन्द दरवाज़ा एक दम ख़ुद बख़ुद खुल गया और तमाम हाज़िरीन ने क़ब्रे अनवर से यह ग़ैबी आवाज़ सुनी। (ادخلوا الحبيب الى الحبيب) (यअनी हबीब को हबीब के दरबार में दाख़िल करदो)

(तफ़सीरे कबीर ज़िल्द 5, स़ 478)

आगे की बात जान लेना: हुज़ूरे अकरम ﷺ ने अपनी वफ़ाते अक़्दस से सिर्फ़ चन्द दिन पहले रूमियों से जंग के लिए एक लश्कर की रवांगी का हुक्म फ़रमाया और अपनी बीमारी ही के दौरान अपने दस्ते मुबारक से जंग का झण्डा बांधा और हज़रत उसामा बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ के हाथ में यह निशाने इस्लाम दे कर उन्हें उस लश्कर का कमांडर बनाया। अभी यह लश्कर मक़ामे **"जर्फ़"** में ख़ेमा ज़न था और फौजियों का इज्तेमा हो ही रहा था कि वफात की ख़बर फैल गई और यह लश्कर मक़ामे **"जर्फ़"** से मदीना मुनव्वरा वापस आ गया। विसाल के बाद ही बहुत से क़बाइले अरब मुर्तद और इस्लाम से फिर

कर काफ़िर हो गए। साथ ही मुस्लिमतुल कज़्ज़ाब ने अपनी नुबुव्वत का दअवा करके क़बाइले अरब में कुफ़्र की आग भड़का दी और बहुत से क़बाइल काफिर हो गए।

इस बिखराव के दौर में अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर क़दम रखते ही सब से पहले यह हुक्म फ़रमाया कि "**जैशे उसामा**" यअनी इस्लाम का वह लश्कर जिस को हुज़ूरे अकरम ﷺ ने हज़रत उसामा ﷺ की निगरानी में रवाना फ़रमाया और वह वापस आ गया है दोबारा उस जिहाद के लिए रवाना किया जाए। हज़राते सहाबा-ए-किराम बारगाहे ख़िलाफ़त के इस ऐलान से बहुत डर गये और किसी तरह भी यह मामला उन की समझ में नहीं आरहा था कि ऐसी ख़तरनाक सूरते हाल में जब कि बहुत से क़बाइल इस्लाम से फिर कर मदीना मुनव्वरा पर हमलों की तैयारियाँ कर रहे हैं और झूठे नुबुव्वत के दावा करने वालों ने अरब के पहाड़ में लूट मार और बग़ावत की आग भड़का रखी है इतनी बड़ी इस्लामी फ़ौज का जिस में बड़े बड़े नामवर और लड़ाकू सहाबा-ए-किराम मौजूद हैं मुल्क से बाहर भेज देना और मदीना मुनव्वरा को बिलकुल फौजियों से ख़ाली छोड़ कर ख़तरात मोल लेना किसी तरह भी अक़्ले सलीम के नज़दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता। चुनान्चे सहाबा-ए-किराम की एक चुनी हुई जमाअत जिस के एक फ़र्द हज़रते उमर बिन ख़त्ताब ﷺ भी हैं बारगाहे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ जानशीने पैग़म्बर! ऐसे ख़तरनाक माहौल में जब कि मदीना मुनव्वरा के चारो तरफ़ मुर्तदीन ने बग़ावत फैला रखी है यहाँ तक कि मदीना मुनव्वरा पर हमला के ख़तरात दरपेश हैं। आप हज़रत उसामा के लश्कर को जाने से रोक दें ताकि उस फ़ौज की मदद से काफ़िरों का मुक़ाबला किया जाए और उन पर जीत हासिल की जाए।

यह सुन कर आप ने गुस्से में तड़प कर फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! मुझे परिन्दे उचक ले जाएँ यह मुझे गवारा है लेकिन मैं उस फ़ौज को जाने से रोक दूँ जिस को अपने दस्ते मुबारक से झण्डा बांध

कर हुज़ूरे अकरम ने रवाना फ़रमाया था यह हरगिज़ हरगिज़ किसी हाल में भी मेरे नज़दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता। मैं उस लश्कर को ज़रूर रवाना करूँगा और उस में एक दिन की भी देरी बरदाश्त नहीं करूँगा चुनान्चे आपने तमाम सहाबा-ए-किराम को मना करने के बावजूद उस लश्कर को रवाना कर दिया। ख़ुदा की शान कि जब जोशे जिहाद में भरा हुआ लश्करे इस्लामिया का यह समन्दर मौजें मारता हुआ रवाना हुआ तो इर्द गिर्द के तमाम क़बाइल में शौकते इस्लाम का सिक्का बैठ गया और मुर्तद हो जाने वाले क़बाइल या वह क़बीले जो मुर्तद होने का इरादा रखते थे मुसलमानों का यह भयानक लश्कर देख कर ख़ौफ़ व दहशत से काँप गए और कहने लगे कि अगर ख़लीफ़ए वक़्त के पास बहुत बड़ी फ़ौज रिज़र्व मौजूद न होती तो वह भला इतना बड़ा लश्कर मुल्क के बाहर किस तरह [illegible] सकते थे? इस ख़्याल के आते ही उन जंगजू क़बाइल ने जिन्हों ने मुर्तद होकर मदीना मुनव्वरा पर हमला करने का पलान बनाया था ख़ौफ़ व दहशत से अपना इरादा ख़त्म कर दिया। बल्कि बहुत से फिर तौबा करके आग़ोशे इस्लाम में आ गए और मदीना मुनव्वरा काफ़िरों के हमलों से महफ़ूज़ रहा और हज़रत उसामा बिन ज़ैद का लश्कर मक़ामे "इब्नी" में पहुँच कर रूमियों के लश्कर से जंग करने लगा और वहाँ बहुत ही ख़ूँरेज़ जंग के बाद लश्करे इस्लाम कामियाब हो गया और हज़रते उसामा बेशुमार माले ग़नीमत लेकर चालीस दिन के बाद फ़ातेहाना शानो शौकत के साथ मदीना मुनव्वरा वापस तशरीफ़ लाए और अब तमाम सहाबा-ए-किराम अन्सार व मुहाजिरीन पर यह राज़ खुल गया कि हज़रते उसामा के लश्कर को रवाना करना हिकमत के मुताबिक़ था क्योंकि इस लश्कर ने एक तरफ़ तो रूमियों की फौजी ताक़त को तहस नहस कर दिया और दूसरी तरफ़ मुर्तदीन के हौसलों को भी पस्त कर दिया।

यह अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ की एक बड़ी करामत है कि आगे भी होने वाले वाक़िआत आप पर वक़्त से

पहले ही जाहिर हो गए और आपने उस फौजेकशी के मुबारक इक़्दाम को उस वक़्त अपनी निगाहे करामत से नतीजे के तौर पर देख लिया था जब कि वहाँ तक दूसरे सहाबा-ए-किराम को वहम व गुमान भी नहीं पहुँच सकता था। (तारिख़ुल ख़ुलफ़ा स़51, मदारिजुन्नबुवह ज़ि 2, स 409 वग़ैरह)

मदफ़न के बारे में गै़बी आवाज़: हज़रते आइशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ के विसाल के बाद सहाबा-ए-किराम में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया कि आप को कहाँ दफ़न किया जाए? कुछ लोगों ने कहा कि उन को शुहदा-ए-किराम के क़ब्रस्तान में दफ़न करना चाहिए और कुछ हज़रात चाहते थे कि आप की क़ब्र शरीफ़ जन्नतुल बक़ीअ में बनाई जाए। लेकिन मेरी दिली ख़्वाहिश यही थी कि आप मेरे उसी हुजरा में दफनाए जाएँ जिस में हुज़ूरे अकरम की क़ब्र मुनव्वर है। यह बात चीत हो रही थी कि अचानक नींद लग गई और ख़्वाब में यह आवाज़ मैंने सुनी कि कोई कहने वाला कह रहा है कि ضموالحبيب الى الحبيب (यअनी हबीब को हबीब से मिला दो) ख़्वाब से उठ कर मैंने लोगों से उस आवाज़ का ज़िक्र किया तो बहुत से लोगों ने कहा कि यह आवाज़ हम लोगों ने भी सुनी है और मस्जिदे नबवी के अन्दर बहुत से लोगों के कानों में यह आवाज़ आई है। उस के बाद तमाम सहाबा-ए-किराम का इस बात पर इत्तेफाक़ हो गया। आप हुज़ूरे अनवर के पहलूए अक़दस में मदफून होकर अपने हबीब के कुर्बे ख़ास से सरफ़राज़ हो गए। (शवाहिदुन्नबुवह स 150)

"दुश्मन" खिन्ज़ीर व बन्दर बन गए: हज़रत इमाम मस्ग़फ़री ने बड़े रावीयों से नक़ल किया है कि हम लोग तीन आदमी एक साथ यमन जा रहे थे हमारा एक साथी जो कूफ़ी था वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर की शान में बद ज़बानी कर रहा था। हम लोग उसको बार बार मना करते थे। मगर वह अपनी इस हरकत से बाज़ नहीं आता था। जब हम लोग यमन के क़रीब पहुँच गए और हम

ने उस को नमाज़े फ़ज्र के लिए जगाया तो वह कहने लगा कि मैंने अभी यह ख़्वाब देखा है कि ﷺ मेरे सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा हुए और मुझ से फ़रमाया कि "ऐ फ़ासिक़! ख़ुदा वन्दे तआला ने तुझको ज़लील व ख़्वार फ़रमा दिया और तेरा उसी तरह में चेहरा बदल दिया जाएगा" उस के बाद फौरन ही उस के दोनों पावों बन्दर जैसे हो गए और थोड़ी देर में उस की सूरत बिल्कुल ही बन्दर जैसी हो गई। हम लोगों ने नमाज़े फ़ज्र के बाद उस को पकड़ कर ऊँट के पालान के ऊपर रस्सियों से जकड़ कर बांध दिया और वहाँ से रवाना हुए। सूरज डूबने के वक़्त जब हम एक जंगल में पहुँचे तो कुछ बन्दर वहाँ जमा थे। जब उस ने बन्दरों के झुंड को देखा तो रस्सी तोड़ का ऊँट के पालान से कूद पड़ा और बन्दरों के झुंड में शामिल हो गया। हम लोग हैरान हो कर थोड़ी देर वहाँ ठहर गए ताकि हम यह देख सकें कि बन्दरों का झुंड उस के साथ किस तरह पेश आता है तो हम ने यह देखा कि यह बन्दरों के पास बैठा हुआ हम लोगों की तरफ़ बड़ी अफसोस से देखता था और उस की आँखों से आँसू जारी थे घड़ी भर के बाद जब सब बन्दर वहाँ से दूसरी तरफ़ जाने लगे तो यह भी उन बन्दरों के साथ चला गया। (शवाहिदुन्नबुवा स 153)

इसी तरह हज़रत इमाम मस्ग़फ़री رحمة الله عليه ने एक नेक आदमी से नक़्ल किया है कि कूफ़ा का एक शख़्स जो हज़रते अबू बकर व हज़रते उमर رضي الله عنهما को बुरा भला कहा करता था हर चन्द हम लोगों ने उस को मना किया मगर वह अपनी ज़िद पर अड़ा रहा तंग आकर हम ने उस को कह दिया कि तुम हमारे क़ाफ़िला से अलग हो कर सफ़र करो। चुनान्चे वह हम लोगों से अलग हो गया। जब हम लोग मंज़िले मक़सूद पर पहुँच गए और काम पूरा करके वतन की वापसी का इरादा किया तो उस शख़्स का ग़ुलाम हम लोगों से मिला। जब हम ने उस से कहा कि क्या तुम और तुम्हारा मालिक हमारे क़ाफ़िले के साथ वतन जाने का इरादा रखते हो? यह सुन कर ग़ुलाम ने कहा कि मेरे आक़ा का हाल तो बहुत ही बुरा है। ज़रा आप लोग मेरे साथ चल कर

उस का हाल देख लीजिए। ग़ुलाम हम लोगों को साथ लेकर एक मकान में पहुँचा वह शख़्स उदास होकर हम लोगों से कहने लगा कि मुझ पर तो बहुत बड़ी मुसीबत पड़ गई। फिर उस ने अपनी आसतीन से दोनों हाथों को निकाल कर दिखाया तो हम लोग यह देख कर हैरान रह गए कि उस के दोनों हाथ ख़िन्ज़ीर के हाथों की तरह हो गए थे। आख़िर हम लोगों ने उस पर तरस खा कर अपने क़ाफ़िला में शामिल कर लिया लेकिन सफ़र ही में एक जगह चन्द ख़िन्ज़ीरों का एक झुन्ड नज़र आया और यह शख़्स बिल्कुल ही अचानक बदल कर आदमी से ख़िन्ज़ीर बन गया और ख़िन्ज़ीरों के साथ मिल कर दौड़ने भागने लगा। मजबूरन हम लोग उस के ग़ुलाम और सामान को अपने साथ कूफ़ा तक लाए। (शवाहिदुन्नबुवा स 154)

शैख़ैन (हज़रते अबु बकर व उमर) का दुश्मन कुत्ता बन गया: इसी तरह हज़रत इमाम मसग़फ़री एक बुज़ुर्ग से नक़्ल करते हैं कि मैंने मुल्के शाम में एक ऐसे इमाम के पीछे नमाज़ अदा की जिस ने नमाज़ के बाद हज़रत अबू बकर व उमर के हक़ में बद दुआ की। जब दूसरे साल मैं ने उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ के बाद इमाम ने हज़रत अबू बकर व उमर के हक़ में बेहतरीन दुआ मंगी। मैंने नमाज़ियों से पूछा कि तुम्हारा पुराना इमाम क्या हुआ? तो लोगों ने कहा कि आप हमारे साथ चल कर उसको देख लीजिए! मैं जब उन लोगों के साथ एक मकान में पहुँचा तो यह देख कर मुझ को बड़ी इब्रत हुई कि एक कुत्ता बैठा हुआ है और उस की दोनों आँखों से आँसू जारी हैं। मैंने उस से कहा कि तुम वही इमाम हो जो हज़राते शैख़ैन के लिए बद दुआ किया करता था तो उस ने सर हिला कर जवाब दिया कि हाँ! (शवाहिदुन्नबुवा स 156)

अल्लाहु अक्बर! सुब्हानअल्लाह! कितनी बड़ी है शान सहाबा-ए-किराम की! खास कर यारे ग़ारे रसूल हज़रत अमीरूल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ की। क्या ख़ूब कहा है किसी सहाबा की तअ़रीफ़ करने वाले ने:-

बीच में शमअ थी और चारों तरफ़ परवाने
हर कोई उसके लिए जान जलाने वाला
दअवा उलफ़ते अहमद तो सभी करते हैं
कोई निकले तो ज़रा रन्ज उठाने वाला
काम उलफ़त के थे वह जिन को सहाबा ने किया
क्या नहीं याद तुम्हें "ग़ार" में जाने वाला

तबसरा:-किसी काम के अन्जाम और आगे के हालात को जान लेना हर आदमी जानता है कि यक़ीनन यह ग़ैब का इल्म है। अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की उपर लिखी हुई करामात से ज़ाहिर हो जाता है कि अमीरूल मोमिनीन को अल्लाह तआला ने कश्फ़ व इलहाम के तौर पर उन ग़ैबों का इल्म अता फ़रमाया था।

लिल्लाह ! इन्साफ़ कीजिए कि जब ख़लीफ़ा को अल्लाह तआला ने इलहाम व कश्फ़ के ज़रिए इल्मे ग़ैब की करामत अता फ़रमाई तो क्या उसने अपने पैग़म्बर को अपनी मुक़द्दस वही के ज़रिए इल्मे ग़ैब का मुअजेज़ा न अता फ़रमाया होगा? क्या मआज़ल्लाह! अल्लाह तआला को इल्मे ग़ैब बताने की कुदरत नहीं या नऊज़ुबिल्लाह! नबी में इल्मे ग़ैब हासिल करने की सलाहियत नहीं। बताइए दुनिया में कौन ऐसा बेवकूफ है जो ख़ुदा की कुदरत और उस के नबी की सलाहियत से इनकार कर सकता है जब ख़ुदा की कुदरत तस्लीम और नबी की सलाहियत तस्लीम है तो फिर भला नबी-ए-अकरम के इल्मे ग़ैब का इनकार किस तरह मुमकिन हो सकता है? मगर अफ़सोस! सद हज़ार अफ़सोस! कि वहाबी उलमा जो अज़मते मुस्तफ़ा को घटाने के लिए लंगर लंगोट कस कर बल्कि नंगा होकर मैदान में उतर पड़े हैं। यह सब कुछ जानते हुए और सैंकड़ों आयाते बय्यनात और दलीलों को देखते हुए भी आँख छुपा कर हुज़ूर के इल्मे ग़ैब का चिल्ला चिल्ला कर इनकार करते रहते हैं और अपने मानने वालों और हवा ख़्वाहों को इस दर्जा गुमराह कर चुके हैं कि

उन के अवाम गुमराही की भूल भुलैयों से निकल कर सीधे रास्ते पर आने के लिए किसी तरह तैयार ही नहीं होते और कहावत मश्हूर है कि सोते को जगाना बहुत आसान है मगर जागते को जगाना बहुत मुश्किल है इस लिए अब हम उन लोगों की हिदायत से तक़रीबन मायूस हो चुके हैं क्योंकि यह लोग जाहिल नहीं बल्कि मुतजाहिल (जान बुझ कर अन्जान बनना) है यअनी सब कुछ जानते हुए भी जाहिल बने हुए हैं और यह लोग तालिबे हक़ नहीं हैं बल्कि दुश्मन हैं। यअनी हक़ के ज़ाहिर होने के बाद भी हक़ को क़बूल करने के लिए तैयार नहीं हैं।

इस लिए हम अपने सुन्नी हन्फ़ी भाइयों की यही मुख़्लेसाना मशवरा बल्कि हुक्म देते हैं कि वह नबी-ए-अकरम ﷺ के ग़ैबदाँ होने के अक़ीदा पर खुद पहाड़ की तरह मज़बूती के साथ क़ायम रहें और उन गुमराहों की तक़रीरें, तहरीरों और सोहबतों से बिल्कुल क़तई तौर पर परहेज़ करें। क्योंकि गुमराही के वाइरस बहुत जल्द असर कर जाते हैं और हिदायत का नूर बड़ी मुश्किल और बहुत कोशिश के बाद मिलता है। खुदावन्दे करीम हमारे बेरादराने अहले सुन्नत के ईमान व अक़ायद की हिफ़ाज़त फ़रमाए और तमाम गुमराहों, बददीनों और बेदीनों के बुराई से बचाए रखे। (आमीन)

आखिर में ब्यान की गई तीन रवायतों से ज़ाहिर है कि हज़रत अबू बकर व उमर رضی اللہ عنہما की मुक़द्दस शान में बदगोई और बद ज़बानी का अनजाम कितना ख़तरनाक व इबरतनाक है? ज़मान-ए-हाल के तबराई रवाफ़िज़ के लिए यह रिवायात इबरत और नसीहत हैं कि वह लोग अपने सहाबा को बुरा भला कहने से बाज़ आजाएँ वरना हलाकतों और बरबादियों का सिग्नल डाउन हो चुका है और क़रीब है कि अज़ाबे इलाही की रेलगाड़ी उन ज़ालिमों को रौंद कर चूर चूर कर डाले और (ان شاء اللہ تعالیٰ) इन्शाअल्लाह तआला यह कमीने भी दोनों जहाँ की लअनतों में गिरफ़्तार होकर दुनिया में बदल कर ख़िन्ज़ीर व बन्दर और कुत्ते बना दिए जाएँगे और आख़िरत में कहरो ग़ज़बे जब्बार

में गिरफ़्तार होकर अज़ाबे दोज़ख़ पाकर ज़लील व ख़्वार हो जाएँगे।

हज़राते अहले सुन्नत को ज़रूरी है कि तमाम गुमराह फ़िर्क़ों की तरह रवाफ़िज़ व ख़्वारिज से भी इसी तरह अलग रहें और उन से तअल्लुक़ न रखें क्योंकि यह सब फ़िर्क़े जो शाने रिसालत व दरबारे सहाबियत व बारगाहे अहले बैत में गुस्ताख़ियाँ करते हैं यक़ीनन बिला शुब्हा यह सब के सब जहन्नमी हैं और यह लोग यहाँ भी और जिस मजलिस में भी रहेंगे उन पर ख़ुदा की फटकार पड़ती रहेगी और ज़ाहिर है कि जो उन के पास बैठेगा और उन से मिलेगा। इस लिए ख़ैरियत इसी में है कि आग से दूर ही रहिए वरना अगर जलने से बचेंगे तो कम से कम उस की आंच से न बच सकेंगे। ख़ुदावन्दे करीम हज़राते अहले सुन्नत के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

हज़रत उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ

ख़लीफ़-ए-दोम जानशीने पैग़म्बर हज़रत उमर फ़ारूक़े अअ्ज़म رضی اللہ عنہ की कुन्नियत **"अबू हफ़स"** और लक़्ब **"फ़ारूक़े अअ्ज़म"** है आप क़ुरैश के सरदारों में अपनी ज़ाती व ख़ानदानी मर्तबा के लिहाज़ से बहुत ही मुमताज़ हैं। आठवें पुश्त में आप का ख़ानदानी शजरा रसूलुल्लाह ﷺ के शजर-ए-नसब से मिलता है। आप वाक़िआ फ़ील के तीन साल बाद मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए और ऐलाने नुबूवत के छठे साल सत्ताइस (27) साल की उम्र में मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए। जब कि एक रिवायत में है कि आप से पहले कुल उन्तालीस (39) आदमी इस्लाम क़बूल कर चुके थे। आप के मुसलमान हो जाने से मुसलमानों को बे हद ख़ुशी हुई और उन को एक बहुत बड़ा सहारा मिल गया। यहाँ तक कि हुज़ूर रहमते आलम ﷺ ने मुसलमानों की जमाअत के साथ ख़ाना-ए-कअबा की मस्जिद में खुल्लम खुल्ला नमाज़ अदा फ़रमाई।

आप तमाम इस्लामी जंगों में मुजाहिदाना शान के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे और पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ की तमाम इस्लामी कामों और

सुलह व जंग वग़ैरह की तमाम मनसूबा बन्दियों में हुज़ूर सुलताने मदीना ﷺ के वज़ीर व मुशीर की हैसियत से वफ़ादार साथी रहे। अमीरूल मुमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه ने अपने बाद आप को ख़लीफ़ा चुना और दस साल छः महीना चार दिन आप ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ होकर जानशीनी रसूल की तमाम ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह अन्जाम दिया। 26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी बुध के दिन नमाज़े फज्र में अबू लूलू फ़ीरोज़ मजूसी काफ़िर ने आप के पेट में ख़न्जर मारा और आप यह ज़ख़्म खा कर तीसरे दिन शर्फ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए। बवक़्ते वफ़ात आप की उम्र शरीफ़ तिरसठ(63)साल की थी। हज़रत सुहेब رضي الله عنه ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुबारका के अन्दर हज़रत सिद्दीक़े अकबर رضي الله عنه के पहलूए अनवर में मदफ़ून हुए।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा व अज़ालतुल ख़िफा वग़ैरह)

करामात

क़ब्र वालों से बात चीत: अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ رضي الله عنه एक मर्तबा एक नेक नौजवान की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि ऐ फ़लाँ! अल्लाह तआला ने वअदा फ़रमाया कि "ولمن خاف مقام ربه جنتن" (यअनी जो शख़्स अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डर गया। उस के लिए दो जन्नतें हैं) ऐ नौजवान! बता तेरा क़ब्र में क्या हाल है? उस नौजवान सालिह (नेक) ने क़ब्र के अन्दर से आप का नाम ले कर पुकारा और बआवाज़े बलन्द दो मर्तबा जवाब दिया कि मेरे रब ने यह दोनों जन्नतें मुझे अता फ़रमा दी हैं।

(हज्जतुल्लाह अलल आलमीन ज़ि 2, स 860 बहवाला हाकिम)

मदीना की आवाज़ नेहावन्द तक: अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े अअ्ज़म رضي الله عنه ने हज़रत सारिया رضي الله عنه को एक लश्कर का कमान्डर बना कर नेहावन्द की सर ज़मीन में जिहाद के लिए रवाना फ़रमा दिया। आप जिहाद में मसरुफ थे कि एक दिन हज़रत उमर رضي الله عنه ने

मस्जिदे नबवी के मिंबर पर ख़ुतबा पढ़ते हुए अचानक यह इरशाद फ़रमाया कि يا سارية الجبل (यअनी ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ़ अपनी पीठ कर लो) हाज़रीने मस्जिद हैरान रह गए कि हज़रत सारिया तो सर ज़मीने नेहावन्द में जिहाद कर रहे हैं और मदीना मुनव्वरा से सैंकड़ों मील की दूरी पर हैं।आज अमीरूल मोमिनीन ने उन्हें क्योंकर पुकारा? लेकिन नेहावन्द से जब जब हज़रते सारियां का खबरी आया तो उस ने यह खबर दी की मैदाने जंग में जब कुफ्फ़ार से मुक़ाबला हुआ तो हमारी हार होने लगी। इतने में अचानक एक चीख़ने वाले की आवाज़ आई जो चिल्ला चिल्ला कर यह कह रहा था कि ऐ सारिया! तुम पहाड़ की तरफ़ अपनी पीठ कर लो। हज़रत सारिया ﷺ ने फ़रमाया कि यह तो अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके अअ्ज़म ﷺ की आवाज़ है। यह कहा और फ़ौरन ही उन्हों ने अपने लश्कर को पहाड़ की तरफ़ पीठ करके सफ़ बन्दी का हुक्म दिया और उस के बाद जो हमारी लश्कर की कुफ़्फ़ार से टक्कर हुई तो एक दम अचानक जंग का पासा ही पलट गया और एक ही लम्हे में इस्लामी लश्कर ने कुफ़्फ़ार की फौजों को रौंद डाला और फौजियों के जबरदस्त हमलों की ताब न लाकर कुफ़्फ़ार का लश्कर मैदाने जंग छोड़ कर भाग निकला और अफ़वाजे इस्लाम ने फ़तेह मुबीन का परचम लहरा दिया। (मिश्कात बाबुल करामात, स़ 546 व हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स 860 व तारीख़ुल ख़ुलफ़ा स 85)

तबसेरा: हज़रत अमीरूल मोमिनीन फ़ारूके अअ्ज़म ﷺ की इस हदीसे करामत से चन्द बातें मालूम हुईं जो तालिबे हक़ के लिए रोशनी का मिनारा हैं।

1:- यह कि हज़रत अमीरूल मोमिनीन फ़ारूके अअ्ज़म और आप के कमान्डर दोनों साहिबे करामत हैं क्योंकि मदीना मुनव्वरा से सैंकड़ों मील की दूरी पर आवाज़ को पहुँचा देना यह अमीरूल मोमिनीन की करामत है और सैंकड़ों मील की दूरी से किसी आवाज़ को सुन लेना यह हज़रत सारिया ﷺ की करामत है।

2:- यह कि अमीरूल मोमिनीन ने मदीना तैयबा से सैंकड़ों मील की दूरी पर नेहावन्द के मैदाने जंग और उस के हालात व कैफ़ियात को देख लिया और फिर इस्लामी फौजियों की मुश्किलात का हल भी मिंबर पर खड़े खड़े लश्कर के कमान्डर को बता दिया।

इस से मालूम हुआ कि **औलिया-ए-किराम** के कान और आँख और उन की सुनने व देखने की ताक़तों को आम इन्सानों के कान व आँख और उन की कुव्वतों पर हरगिज़ हरगिज़ क़यास नहीं करना चाहिए बल्कि यह ईमान रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब बन्दों के कान और आँख को आम इन्सानों से बहुत ही ज़्यादा ताक़त अता फ़रमाई है और उन की आँखों, कानों और दूसरे अंगों की ताक़त इस क़दर बे मिस्ल और बे मिसाल है और उन से ऐसे कारनामे अनजाम पाते हैं कि जिन को देख कर करामत के सेवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

3:- ऊपर की हदीस से यह भी साबित होता है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े अअ्ज़म رضی اللہ عنہ की हुकूमत हवा पर भी थी और हवा भी उन के कन्ट्रोल में थी इस लिए कि आवाज़ों को दूसरों के कानों तक पहुँचाना दर हक़ीक़त हवा का काम है कि हवा के बहने ही से आवाज़ें लोगों के कानों के पर्दो से टकरा कर सुनाई दिया करती हैं। हज़रत फ़ारूक़े अअ्ज़म رضی اللہ عنہ ने जब चाहा अपने क़रीब वालों को अपनी आवाज़ सुना दी और जब चाहा तो सैकड़ों मील दूर वालों को भी सुना दी। इस लिए कि हवा आप के ज़ेरे फ़रमान थी जहाँ तक आप ने चाहा हवा से आवाज़ पहुँचाने का काम ले लिया।

सुब्हानल्लाह! सच फ़रमाया हुज़ूर अकरम ﷺ ने कि من كان لله كان الله له (यअनी अल्लाह का बन्दा फ़रमाँ बरदार बन जाता है तो ख़ुदा उस का काम बनाने वाला मदद गार बन जाता है इसी मज़मून की तरफ़ इशारा करते हुए हज़रत शैख़ सअदी अलैहिर्रहमा ने क्या ख़ुब फ़रमाया)

तर्जुमा: तू ख़ुदा के हुक्म से कोताही न कर ताकि तेरे हुक्म से

दुनिया की कोई चीज़ रूगरदानी न करे)

दरिया के नाम खत: रिवायत है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक़ के दौरे खिलाफ़त में एक मर्तबा मिस्र का दरियाए नील सूख गया। मिस्र के रहने वालों ने मिस्र के गवर्नर अम्र बिन आस से फ़रियाद की और यह कहा कि मिस्र की तमाम तर पैदावार का दारो मदार उसी दरियाए नील के पानी पर है। ऐ अमीर! अब तक हमारा यह दस्तूर रहा है कि जब कभी भी यह दरया सूख जाता था तो हम लोग एक खुबसूरत कंवारी लड़की को इस दरिया में ज़िन्दा दफ़न करके दरिया की भेंट चढ़ाया करते थे तो यह दरिया जारी हो जाया करता था अब हम क्या करें? गवर्नर ने जवाब दिया कि अरहमुर्राहिमीन और रहमतुल लिलआलमीन का रहमत भरा दीन हमारा इस्लाम हरगिज़ हरगिज़ कभी भी इस बे रहमी और ज़ालिमाना काम की इजाज़त नहीं दे सकता इस लिए तुम लोग इन्तज़ार करो। मैं दरबारे ख़िलाफ़त में ख़त लिख कर पूछता हूँ। वहाँ से जो हुक्म मिलेगा हम उस पर अमल करेंगे।

चुनान्चे एक क़ासिद गवर्नर का ख़त लेकर मदीना मुनव्वरा दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुआ। अमीरूल मोमिनीन ने गवर्नर का ख़त पढ़ कर दरियाए नील के नाम एक ख़त तहरीर फ़रमाया जिस का मज़मून यह था कि

"ऐ दरियाए नील! अगर तू ख़ुद बख़ुद जारी हुआ करता था तो हम को तेरी कोई ज़रूरत नहीं है और अगर तू अल्लाह तआला के हुक्म से जारी होता था तो फिर अल्लाह तआला के हुक्म से जारी हो जा।"

अमीरूल मोमिनीन ने इस ख़त को क़ासिद के हवाला फ़रमाया और हुक्म दिया कि मेरे इस ख़त को दरियाए नील में दफ़न कर दिया जाए। चुनान्चे आप के फ़रमान के मुताबिक़ गवर्नर मिस्र ने उस ख़त को दरियाए नील के सूखे बालू में दफ़न कर दिया। ख़ुदा की शान कि जैसे ही अमीरूल मोमिनीन का ख़त दरिया में दफ़न किया गया। फ़ौरन ही दरिया

जारी हो गया और उस के बाद फिर कभी सूखा नहीं। (हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स 861 व इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद नम्बर 2, स़ 166)

तबसेरा: इस ब्यान से मालूम हुआ कि जिस तरह हवा पर अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ की हुकूमत थी उसी तरह दरियायो के पानियों पर भी आप की हुकमरानी का परचम लहरा रहा था और दरियाओं की रवानी भी आप की फ़रमाँ बरदार व ख़िदमत गुज़ार थी।

चादर देख कर आग बुझ गई: रिवायत में है कि आप की ख़िलाफ़त के दौर में एक मर्तबा अचानक एक पहाड़ के ग़ार से एक बहुत ही ख़तरनाक आग जाहिर हुई जिस ने आस पास की तमाम चीज़ों को जला कर राख का ढेर बना दिया। जब लोगों ने दरबारे ख़िलाफ़त में फ़रियाद की तो अमीरूल मोमिनीन ने हज़रत तमीम दारी ﷺ को अपनी चादर मुबारक अता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि तुम मेरी यह चादर ले कर आग के पास चले जाओ। चुनान्चे हज़रत तमीम दारी ﷺ इस पाक चादर को लेकर रवाना हो गए और जैसे ही आग के क़रीब पहुँचे। फौरन वह आग बुझने और पीछे हटने लगी। यहाँ तक कि वह ग़ार के अन्दर चली गई और जब यह चादर ले कर ग़ार के अन्दर दाख़िल हो गए तो वह आग बिल्कुल ही बुझ गई और फिर कभी भी ज़ाहिर नहीं हुई।

(इज़ालतुल खिफ़ा मक़सद नम्बर 2, स 172)

तबसेरा: इस रिवायत से पता चलता है कि हवा और पानी की तरह आग पर भी अमीरूल मोमिनीन की हुक्मरानी थी और आग भी आप की फरमाँ बरदार थी।

मार से ज़लज़ला ख़त्म: इमामुल हरमैन ने अपनी किताब "**अश्शामिल**" में तहरीर फ़रमाया है कि एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा में ज़लज़ला आ गया और ज़मीन ज़ोरों के साथ कांपने और हिलने लगी। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ ने जलाल में आकर ज़मीन पर एक दुर्रा मारा और बलन्द आवाज़ से तड़प कर फ़रमाया قری الم اعدل علیك (ऐ ज़मीन! ठहर जा क्या मैंने तेरे ऊपर अदल नहीं किया

है?) आप का फ़रमान जलालते निशान सुनते ही ज़मीन ठहर गई और ज़लज़ला ख़त्म हो गया। (हुज्जतुल्लाह ज़ि 2, स 861 व इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद नम्बर 2, स 172)

तबसेरा: इस रिवायत से यह साबित होता है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर की हुकूमत जिस तरह हवा, पानी, आग पर थी उसी तरह ज़मीन पर भी आप के फ़रमान शाही का सिक्का चलता था। ऊपर की चारों करामतों से मालूम हुआ कि औलिया अल्लाह की हुकूमत हवा, आग, पानी और मिट्टी सभी पर है और चूँकि यह चारों अनासिर अरबा कहलाते हैं यअनी उन्ही चारों से तमाम दुनिया की चीजें बनाई गई हैं तो जब उन चारों अनासिर पर औलिया-ए-किराम की हुकूमत साबित हो गई तो जो जो चीज़ें उन चारों अनासिर से बनी होती हैं। ज़ाहिर है उन पर भी औलिया-ए-किराम की हुकूमत हो गई।

दूर से पुकार का जवाब: हज़रत अमीरूल मोमिनीन फ़ारूक़े अअ्ज़म ने सरज़मीने रूम में मुजाहिदीने इस्लाम का एक लश्कर भेजा। फिर कुछ दिनों के बाद बिल्कुल ही अचानक मदीना मुनव्वरा में निहायत ही बलन्द आवाज़ से आप ने दो मर्तबा यह फ़रमाया:

يـا لبيكاه! يا لبيكاه! (यअनी ऐ शख़्स! मैं तेरी पुकार पर हाज़िर हूँ) अहले मदीना हैरान रह गए और उन की समझ में कुछ भी न आया कि अमीरूल मोमिनीन किस पुकारने वाले की पुकार का जवाब दे रहे हैं? लेकिन जब कुछ दिनों के बाद वह लश्कर मदीना मुनव्वरा वापस आया और उस लश्कर का कमान्डर अपनी फ़ुतूहात और अपने जंगी कारनामों का ज़िक्र करने लगा तो अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया कि उन बातों को छोड़ दो! पहले यह बताओ कि जिस मुजाहिद को तुम ने ज़बरदस्ती दरिया में उतारा था और उस ने يـا عـمـراه! يا عمراه! (ऐ मेरे उमर! मेरी ख़बर लीजिए) पुकारा था उस का क्या वाक़िआ था ?

कमान्डर ने फ़ारूक़ी जलाल से डर कर कांपते हुए अर्ज़ किया कि अमीरूल मोमिनीन! मुझे अपनी फ़ौज को दरया के पार उतारना था

इस लिए मैंने पानी की गहराई का अन्दाज़ा करने के लिए उस को दरिया में उतरने का हुक्म दिया। चूँकि मौसम बहुत ही ठन्डा था और तेज़ हवाएँ चल रही थीं इस लिए उस को सरदी लग गई और उस ने दो मर्तबा ज़ोर ज़ोर से !یا عمراہ! یا عمراہ कह कर आप को पुकारा। फिर यकायक उस की रूह परवाज़ कर गई। ख़ुदा गवाह है कि मैंने हरगिज़ हरगिज़ उस को हलाक करने के इरादे से दरिया में उतरने का हुक्म नहीं दिया था। जब अहले मदीना ने कमान्डर की ज़बानी यह क़िस्सा सुना तो उन लोगों की समझ में आ गया कि अमीरूल मोमिनीन ने एक दिन जो दो मर्तबा!یالبیکاہ!یالبیکاہ फ़रमाया था हक़ीक़त में यह उसी बेचारे मुजाहिद की फ़रियाद व पुकार का जवाब था। अमीरूल मोमिनीन कमान्डर का बयान सुन कर गुस्से में भर गए और फ़रमाया कि सर्द मौसम और ठण्डी हवाओं के झोंकों में उस मुजाहिद को दरिया की गहराई में उतारना यह क़त्ले ख़ता के हुक्म में है। इस लिए तुम अपने माल में से उस के वारिसों को उस का ख़ून बहा (बदला) अदा करो और ख़बरदार! आगे किसी सिपाही से हरगिज़ हरगिज़ कभी कोई ऐसा काम न लेना जिस में उस की हलाकत का अन्देशा हो। क्योंकि मेरे नज़दीक एक मुसलमान का हलाक होजाना बड़ी हलाकतों से भी कहीं बढ़ चढ़ कर बरबादी है।

(अज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद नम्बर 2, स 172)

तबसेराः अमीरूल मोमिनीन ने उस वफ़ात पाने वाले सिपाही की फ़रियाद और पुकार को सैकड़ों मील दूरी से सुन लिया और उस का जवाब भी दिया। इस रिवायत से ज़ाहिर होता है कि औलिया-ए-किराम दूर की आवाज़ों को सुन लेते हैं और उन का जवाब भी देते हैं।

दो ग़ैबी शेरः रिवायत है कि बादशाहे रूम का भेजा हुआ एक अजमी (अरब के रहने वालों के अलावा को अजमी कहते हैं।)काफ़िर मदीना मुनव्वरा आया और लोगों से हज़रत उमर رضی اللہ عنہ का पता पुछा। लोगों ने बता दिया कि वह दोपहर को खजूर के बाग़ों में शहर से कुछ दूर क़ैलूला (दोपहर खाने के बाद आराम करना)फ़रमाते हुए तुम को

मिलेंगे। यह अजमी काफ़िर ढूंडते ढूंडते आप के पास पहुँच गया और यह देखा कि आप अपना चमड़े का सोटा अपने सर के नीचे रख कर ज़मीन पर गहरी नींद में सो रहे हैं। अजमी काफ़िर इस इरादे से तलवार को नियाम से निकाल कर आगे बढ़ा कि अमीरूल मोमिनीन को क़तल करके भाग जाए मगर वह जैसे ही आगे बढ़ा बिल्कुल ही अचानक उस ने यह देखा कि दो शेर मुँह फाड़े हुए उस पर हमला करने वाले हैं। यह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर वह ख़ौफ़ व दहशत से बिलबिला कर चीख़ पड़ा और उस की चींख़ की आवाज़ से अमीरूल मोमिनीन बेदार हो गए और यह देखा कि अजमी काफ़िर नंगी तलवार हाथ में लिए हुए थर थर काँप रहा है। आप ने उस की चीख़ और दहशत का सबब पुछा तो उस ने सच सच सारा वाक़िआ बयान कर दिया और फिर बलन्द आवाज़ से कलिमए तैयबा पढ़ कर मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो गया और अमीरूल मोमिनीन ने उस के साथ निहायत ही रहम वाला बरताव फ़रमा कर उस के क़सूर को मआफ़ कर दिया। **(इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद नम्बर 2, स 172 व तफ़सीरे कबीर जिल्द 5 स 478)**

तबसेरा: यह रवायत बता रही है कि अल्लाह तआला अपने ख़ास बन्दों की हिफ़ाज़त के लिए ग़ैब से ऐसा सामान इन्तिज़ाम फ़रमा देता है कि जो किसी के वहम व गुमान में भी नहीं आ सकता और यही ग़ैबी सामान औलिया अल्लाह की करामत कहलाते हैं। हज़रत शैख़ सअ़दी अलैहिर्रहमा ने उसी मज़मून की तरफ़ इशारा फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया।

محال است چوں دوست دارد ترا   کہ در دست دشمن گزارد ترا

मुहाल अस्त चूँ दोस्त दारद तेरा   कि दर दस्त दुश्मन गुज़रद तेरा

तर्जमा: यअनी अल्लाह तआला जब तुम को अपना महबूब बन्दा बना ले तो फिर यह मुहाल है कि वह तुम को तुम्हारे दुश्मन के हाथ में परीशानी के आलम में छोड़ दे बल्कि उस की किब्रियाई ज़रूर दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिए अपने महबूब बन्दों की ग़ैबी तौर पर

इमदाद व नुसरत का सामान पैदा फ़रमा देती है और यही ईमानी मदद फ़ज़्ले रब्बानी बन कर इस तरह महबूबाने इलाही की दुश्मनों से हिफ़ाज़त करती है जिस को देख कर बे इख़्तियार यह कहना पड़ता है कि:- "दुश्मन अगर क़वी अस्त निगहबान क़वी तरास्त"

क़ब्र में बदन सलामत: वलीद बिन अब्दुल मलिक अमवी के दौरे हुकूमत में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर पड़ी और बादशाह के हुक्म से दोबारा बनाने के लिए बुनियाद खोदी गई तो अचानक बुनियाद में एक पाँव नज़र आया। लोग घबरा गए और सब ने यही ख़्याल किया कि यह हुज़ूर नबी अकरम ﷺ का पैर अक़्दस है। लेकिन जब उरवा बिन ज़ुबैर सहाबी रज़ि॰ ने देखा और पहचाना फिर क़सम खा कर यह फ़रमाया कि यह हुज़ूरे अनवर ﷺ का मुक़द्दस पाँव नहीं है बल्कि यह अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि॰ का क़दम शरीफ़ है तो लोगों की घबराहट और बे चैनी में कुछ सूकुन हुआ।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द 1, स 186)

तबसेरा: बुख़ारी शरीफ़ की यह रिवायत इस बात की ज़बरदस्त शहादत है कि कई औलिया-ए-किराम के मुक़द्दस जिस्मों को क़ब्र की मिट्टी सालों गुज़र जाने के बाद भी नहीं खा सकती। बदन तो बदन उन के कफ़न को भी मिट्टी मैला नहीं करती। औलिया-ए-किराम का यह हाल है तो भला हज़राते अन्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का क्या हाल होगा। फिर हुज़ूर सय्यदुल अन्बिया ख़ातिमुन नबिईन शफ़ीउल मुज़नबीन ﷺ के जिस्मे अतहर का क्या कहना? जब कि वह अपनी क़ब्रे अनवर में जिस्मानी जिन्दगी के साथ जिन्दा हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है। فنبی الله حی یرزق (यअनी अल्लाह तआला के नबी ज़िन्दा है और उन को रोज़ी भी दी जाती है।)

जो कह दिया वह हो गया: रबीआ बिन उमैया बिन ख़ल्फ़ ने अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि॰ से अपना यह ख़्वाब बयान किया कि मैं ने यह ख़्वाब देखा है कि मैं एक हरे भरे मैदान में हूँ फिर मैं उस से निकल कर एक ऐसे चटयल मैदान में आ गया जिस में कहीं

दूर दूर तक घास या पेड़ का नाम व निशान भी नहीं था और जब मैं नींद से बेदार हुआ तो वाक़ई मैं एक बन्जर मैदान में था। आप ने फ़रमाया कि तू ईमान लाए गा। फिर उस के बाद काफ़िर हो जाएगा और कुफ़्र ही की हालत में मरे गा। अपने ख़्वाब की यह ताबीर सुन कर वह कहने लगा कि मैंने कोई ख़्वाब नहीं देखा है मैंने यूँ ही झूठ मूठ आप से यह कह दिया है। आप ने फ़रमाया कि तू ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो मगर मैंने जो तअबीर बताई है वह अब पूरी हो कर रहेगी। चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि मुसलमान होने के बाद उस ने शराब पी और अमीरूल मोमिनीन ने उस को दुर्रह मार कर सज़ा दी और उस को शहर बद्र करके ख़ैबर भेज दिया। वह ज़ालिम वहाँ से भाग कर रूम की सर ज़मीन में चला गया और वहाँ जाकर वह मरदूद नसरानी हो गया और काफिर होकर कुफ़्र ही की हालत में मर गया।

(इज़ालतुल खिफ़ा मक्सद नमबर 2, स 170)

लोगों की तक़दीर में क्या है?: अब्दुल्लाह बिन मुस्लेमा कहते हैं कि हमारे क़बीला का एक वफ़्द अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ की बारगाहे खिलाफ़त में आया। तो उस जमाअत में इश्तर नाम का एक शख़्स भी था। अमीरूल मोमिनीन उस को सर से पैर तक बार बार गरम निगाहों से देखते रहे। फिर मुझ से पुछा कि क्या यह शख़्स तुम्हारे ही क़बीला का है? मैंने कहा कि "जी हाँ" उस वक़्त आप ने फ़रमाया कि ख़ुदा उस को तबाह करे और उस के फ़ितने व फ़साद से उस उम्मत को महफ़ूज़ रखे। अमीरूल मोमिनीन की इस दुआ के बीस साल बाद जब बाग़ियों ने हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ को शहीद किया तो यही "इशतर" उस बाग़ी गरोह का एक बहुत बड़ा लीडर था।

इसी तरह एक मर्तबा हज़रत उमर ﷺ मुल्के शाम के कुफ़्फ़ार से जिहाद करने के लिए लश्कर भरती फ़रमा रहे थे। अचानक एक टोली आप के सामने आई तो आप ने बहुत ही ना पसन्दीदगी के साथ उन लोगों की तरफ़ से मुँह फेर लिया। फिर दोबारा यह लोग आप के सामने आए तो आप ने मुँह फेर कर उन लोगों को इस्लामी फौज में

भरती करने से इन्कार फ़रमा दिया। लोग आप के इस तर्ज़े अमल से इन्तेहाई हैरान थे। लेकिन आख़िर में यह राज़ खुला कि इस टोली में **"असवद यजयई"** भी था जिस ने इस वाक़िआ से बीस साल बाद हज़रते उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ को अपनी तलवार से शहीद किया और उस टोली में अब्दुर्रहमान बिन मुलजम मुरादी भी था जिस ने इस वाक़िआ से तक़रीबन छब्बीस (२६) साल के बाद हज़रते अली رضی اللہ عنہ को अपनी तलवार से शहीद कर डाला।

(इज़ालतुल खिफ़ा मक़सद नम्बर 2, स 169 ता 172)

तबसेराः उपर ब्यान की गई करामतों में आप ने रबीआ बिन उमैया बिन ख़लफ़ के ख़ातमा के बारे में बरसों पहले यह ख़बर दे दी कि वह काफ़िर होकर मरे गा और बीस बरस पहले आप ने "इश्तर" के फितनों व फ़साद से उम्मत के महफूज़ रहने की दुआ माँगी और "असवद यजयई" से इस बिना पर मुँह फेर लिया और इस्लामी लश्कर में उस को भरती करने से इन्कार कर दिया कि यह दोनों हज़रते उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ के क़ातिलों में से थे। छब्बीस बरस पहले आप ने अब्दुर्रहमान बिन मुलजम मुरादी को नापसन्दीदगी से देखा और इस्लामी लश्कर में इस बिना पर भरती नहीं फ़रमाया कि वह हज़रते अली رضی اللہ عنہ का क़ातिल था।

इन सब रिवायतों से यह साबित होता है कि औलिया-ए-किराम को ख़ुदावन्दे कुद्दूस के बता देने से आदमियों की तक़दीरों का हाल मालूम हो जाता है इसी लिए हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी अलैहिर्रहमा ने अपनी मसनवी शरीफ़ में फ़रमाया है।

لوح محفوظ است پیش اولیاء   از چہ محفوظ است محفوظ از خطاء

लौहे महफ़ूज़ अस्त पेशे औलिया   अज़ चेह महफूज़ अस्त महफज़ अज़ ख़ता

तर्जमाः यअनी लौहे महफूज़ औलिया-ए-किराम के सामने रहती है जिस को देख कर वह इन्सानों की तक़दीरों में क्या लिखा है उस को जान लेते हैं। लौहे महफूज़ को इस लिए लौहे महफूज़ कहते हैं कि वह ग़लतियों और ख़ताओं से महफूज़ है।

दुआ की मक़्बूलियतः अबू हदबा हमसी का बयान है कि जब अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर को यह ख़बर मिली कि इराक़ के लोगों ने आप के गवर्नर को उस के मुँह पर कंकरियाँ मार कर ज़लील व रुस्वा करके शहर से बाहर निकाल दिया है तो आप को इस ख़बर से इन्तेहाई तक्लीफ और बेचैनी हुई और आप बहुत ही ग़ज़बनाक होकर मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गए और उसी गुस्से की हालत में आप ने नमाज़ शुरू कर दी लेकिन चूँकि आप बहुत ही गुस्से से परीशान थे इस लिए आप को नमाज़ में सहव हो गया और आप इस रन्जो ग़म से और भी ज़्यादा बे ताब हो गए और इन्तेहाई रन्जो ग़म की हालत में आप ने यह दुआ मांगी कि या अल्लाह क़बील-ए-सक़ीफ़ के लोंडे (हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी) को उन लोगों पर मुसल्लत फ़रमा दे जो ज़माना-ए-जाहलियत का हुक्म चला कर उन इराक़ियों के नेक और बुरे किसी को भी न बख़्शे। चुनान्चे आप की यह दुआ क़बूल हो गई और अब्दुल मलिक बिन मरवान अमवी के दौरे हुकूमत में हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी इराक़ का गवर्नर बना और उस ने इराक़ के रहने वालों पर जुल्म व सितम का ऐसा पहाड़ तोड़ा कि इराक़ की ज़मीन बिलबिला उठी। हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी इतना ज़ालिम था कि उस ने जिन लोगों को रस्सी में बांध कर अपनी तलवार से क़त्ल किया उन मक़तूलों की तअदाद एक लाख या उस से ज़्यादा ही है और जो लोग उस के हुक्म से क़त्ल किए गए उन की गिन्ती का तो शुमार ही नहीं हो सका।

हज़रत इब्ने रबीआ मुहद्दिस ने फ़रमाया कि जिस वक़्त अमीरूल मोमिनीन ने यह दुआ मांगी थी उस वक़्त हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी पैदा भी नहीं हुआ था। (इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद नम्बर 2, स़ 172)

तबसेराः इस रिवायत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला अपने औलिया-ए-किराम को ग़ैब की बातों का भी इल्म अता फ़रमाता है। चुनान्चे उपर की रिवायत में आप ने देख लिया कि अभी हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी पैदा भी नहीं हुआ था लेकिन अमीरूल मोमिनीन

हज़रत उमर फ़ारूके अअ्ज़म رضی اللہ عنہ को यह मालूम हो गया था कि हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी नामी एक बच्चा पैदा होगा जो बड़ा होकर गवर्नर बनेगा और इन्तेहाई ज़ालिम होगा।

ज़ाहिर है कि वक़्त से पहले उन बातों का मालूम हो जाना यक़ीनन यह ग़ैब का इल्म है। अब यह मस्ला सूरज से भी ज़्यादा रोशन होगया कि जब अल्लाह तआला अपने औलिया को ग़ैब का इल्म अता फ़रमाता है तो फिर अंबिया-ए-किराम علیہم السلام खास कर हुज़ूर सय्यदुल अंबिया ﷺ को भी अल्लाह तआला ने यक़ीनन उलूमे ग़ैबिया का ख़ज़ाना अता फ़रमाया है और यह हज़राते बे शुमार ग़ैब की बातों को ख़ुदा तआला के बता देने से जानते हैं और दूसरों को भी बता देते हैं। चुनान्चे अहले हक़ हज़राते उलमाए अहले सुन्नत का यही अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ने अंबिया-ए- किराम बिल ख़ुसूस हुज़ूर सैय्यदुल अंबिया ﷺ को बे शुमार उलूमे गैबिया के ख़ज़ाने अता फ़रमाए हैं और यही अक़ीदा हज़राते ताबईन व हज़राते सहाबा-ए-किराम رضی اللہ عنہم का भी था।

चुनान्चे मवाहिब लदुनिया शरीफ़ में है कि:-

قد استهروا نتشر امر رسول الله ﷺ بين اصحابه بالاطلاع على الغيوب

(जनाबे रसूलुल्लाह ﷺ गुयूब पर मुत्तला ये बात सहाब-ए-किराम में आम तौर पर मशहूर और ज़बाने ज़द ख़ास व आम थी।)

इसी तरह मवाहिबुल्लदुनिया की शरह में अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी अलैहिर्रहमा ने तहरीर फ़रमाया है:

واصحابه رسول الله ﷺ جاز مون باطلا عه على الغيب

(यअनी सहाबा-ए-किराम رضی اللہ عنہم का यह पुख़्ता अक़ीदा था कि हुज़ूर ﷺ ग़ैब की बातों से बा ख़बर हैं।) उन दो बुज़ुर्गों के अलावा दूसरे बहुत से उलमा-ए-किराम ने भी अपनी अपनी किताबों में इस ख़ुलासे को बयान फ़रमाया है। तफ़सील के लिए देखें "कुरआनी तक़रीरें" और "क़यामत कब आएगी?"

हज़रते उस्माने ग़नी رضی اللہ عنہ

ख़लीफ़-ए-सोम अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान رضی اللہ عنہ की कुन्नियत "अबू अम्र" और लक़ब "ज़ुन नूरैन" (दो नूर वाले) है। आप कुरैशी हैं और आप का नसब नामा यह है। उस्मान बिन अफ़्फ़ान बिन अबिल आस बिन उमय्या बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मुनाफ़। आप का ख़ानदानी शजरा **"अब्दे मनाफ़"** पर रसूलुल्लाह ﷺ के नसब नामा से मिल जाता है आप ने शुरू इस्लाम ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था और आप को आप के चचा और दूसरे ख़ानदानी काफ़िरों ने मुसलमान हो जाने की वजह से बहुत सताया। आप ने पहले हबशा की तरफ़ हिजरत फ़रमाई। फिर मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत फ़रमाई। इस लिए आप "साहिबुल हिजरतैन" (दो हिजरतों वाले) कहलाते हैं। और चूँकि हुज़ूरे अकरम ﷺ की दो बेटियाँ एक एक करके आप के निकाह में आईं इस लिए आप का लक़ब "ज़ुन नूरैन" है आप जंगे बद्र के अलावा दुसरे तमाम इस्लामी जेहादों में कुफ़्फ़ार से जंग फरमाते रहे। जंगे बद्र के मौक़अ़ पर उन की ज़ौजा मुहतरमा जो रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादी थीं सख़्त बीमार होगई थीं। इस लिए हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन को जंगे बद्र में जाने से मना फ़रमा दिया लेकिन उन को मुजाहिदीने बद्र में शुमार फ़रमा कर माले ग़नीमत में से मुजाहिदीन के बराबर हिस्सा दिया और अजरो सवाब की ख़ुशख़बरी भी दी। हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर फ़ारूक़े अअ़ज़म رضی اللہ عنہ की शहादत के बाद आप ख़लीफ़ा चुने गये और बारा बरस तक तख़्ते ख़िलाफ़त को सरफ़राज़ फ़रमाते रहे।

आप के दौरे ख़िलाफ़त में इस्लामी हुकूमत की सरहदों में बहुत ज़्यादा फैलाव हुआ और अफ़्रीक़ा वग़ैरह बहुत से देश कब्ज़ा में आ कर ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़ेरे नगीं हुए। बयासी (82) बरस की उम्र में मिस्र के बाग़ियों ने आप के मकान का घेराव कर लिया और 12 ज़िल हिज्जा या 18 ज़िल हिज्जा 35 हिजरी जुमा के दिन उन बाग़ियों में से

एक बद नसीब ने आप को रात के वक़्त इस हाल में शहीद कर दिया कि आप कुरआने पाक की तिलावत फ़रमा रहे थे और आप के ख़ून के चन्द क़तरात कुरआन शरीफ की आयत "فسيكفيكهم الله" पर पड़े। आप के जनाज़ा की नमाज़ हुज़ूरे अक़दस ﷺ के फूफ़ी ज़ाद भाई हज़रत जुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई और आप मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ीअ में मदफून हैं।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा व इज़ालतुल ख़िफ़ा वग़ैरह)

करामात

ज़िना कार आँखें: अल्लामा ताजुद्दीन सबकी अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब "तबक़ात" में तहरीर फ़रमाया है कि एक शख़्स ने रास्ता चलते हुए एक अजनबी औरत को घूर घूर कर ग़लत निगाहों से देखा। उस के बाद यह शख़्स अमीरूल मोमिनीन हज़रत उसमाने ग़नी ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ। उस शख़्स को देख कर हज़रत अमीरूल मोमिनीन ने निहायत ही पुर जलाल लेहजे में फ़रमाया कि तुम लोग ऐसे हालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आँखों में ज़िना के असरात होते हैं। उस आदमी ने (जल भुन कर) कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ के बाद आप पर वही उतरने लगी है? आप को यह कैसे मालूम हो गया कि मेरी आँखों में ज़िना के असरात हैं ?

अमीरूल मोमिनीन ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे ऊपर वही तो नहीं नाज़िल होती है। लेकिन मैं ने जो कुछ कहा है यह बिल्कुल ही क़ौले हक़ और सच्ची बात है और ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने मुझे एक ऐसी फ़रास्त (नूरानी बसीरत) अता फ़रमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के हालात व ख़्यालात को मालूम कर लेता हूँ। (हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन ज़ि 2, स़ 862, व इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद 2, स 227)

तबसेरा: कुरआन मजीद में ख़ुदा वन्दे कुद्दूस का इरशाद है कि "كلا بل سكته ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون" यअनी आदमी जब कोई गुनाह करता है तो उस का यह असर होता है कि उस के दिल पर एक

काला दाग़ और बदनुमा धब्बा पड़ जाता है और चूँकि दिल पूरे जिस्म का बादशाह है इस लिए दिल पर जब कोई असर पड़ता है तो पूरा बदन उस से मुतास्सिर हो जाता है तो अल्लाह के करीबी बन्दे जिन की आँखों में नूरे बसारत देखने के साथ साथ नूरे बसीरत भी हुआ करता है वह बदन के हर हर हिस्सा में उन असरात को अपने नूरे फ़रासत और निगाहे करामत से देख लिया करते हैं। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उसमान ग़नी ﷺ चूँकि अहले बसीरत और साहिबे बातिन थे। इस लिए उन्हों ने अपनी निगाहे करामत से उस आदमी की आँखों में उस के गुनाह के असरात को देख लिया और उस की आँखों को इस लिए ज़िनाकार कहा। हदीस शरीफ़ में आया है कि "زنا العينين النظر" यअनी किसी अजनबी औरत को बुरी नियत से देखना यह आँखों का ज़िना है। वल्लाहु अअ्लम! (واللہ اعلم!)

हाथ में कैंसर: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रावी हैं कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ﷺ मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मिंबरे अक़्दस पर ख़ुतबा पढ़ रहे थे कि बिल्कुल ही अचानक एक बदनसीब और शैतान सिफत इन्सान जिस का नाम **"जहजाह ग़िफ़ारी"** था खड़ा हो गया और आप के दस्ते मुबारक से छड़ी छीन कर उस को तोड़ डाला।आप ने अपने इल्म व हया की वजह से उस की कोई पकड़ नहीं फ़रमाई लेकिन ख़ुदा तआला की क़ह्हारी व जब्बारी ने उस बे अदबी और गुस्ताख़ी पर उस मरदूद को यह सज़ा दी कि उस के हाथ में कैंसर का मरज़ हो गया और उस का हाथ कुल सड़ कर गिर पड़ा और वह यह सज़ा पा कर एक साल के अन्दर ही मर गया। **(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जिल्द 2, सफा 862 व तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफा 112)**

गुस्ताख़ी की सज़ा: हज़रत अबू कुलाबा ﷺ का बयान है कि में मुल्के शाम की सर ज़मीन में था तो मैंने एक शख़्स को बार बार यह आवाज़ लगाते हुए सुना कि **"हाए अफ़सोस! मेरे लिए जहन्नम है"** में उठ कर उस के पास गया तो यह देख कर हैरान हो गया कि उस

शख़्स के दोनों हाथ और पावं कटे हुए हैं और वह दोनों आँखों से अंधा है और अपने चेहरे के बल ज़मीन पर औंधा पड़ा हुआ बार बार लगातार यही कह रहा है कि "हाए अफ़सोस! मेरे लिए जहन्नम है" यह मनज़र देख कर मुझ से रहा न गया और मैंने उस से पूछा कि ऐ शख़्स! तेरा क्या हाल है? और क्यों और किस बिना पर तुझे अपने जहन्नमी होने का यक़ीन है? यह सुन कर उस ने यह कहा कि ऐ शख़्स! मेरा हाल न पूछ। मैं उन बद नसीब लोगों में से हूँ जो अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ को क़तल करने के लिए उन के मकान में घुस पड़े थे। मैं जब तलवार लेकर उन के क़रीब पहुँचा तो उन की बीवी साहिबा ने मुझे डांट कर शोर मचाना शुरू कर दिया। तो मैं ने उन की बीवी साहिबा को एक थप्पड़ मार दिया। यह देख कर अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ ने यह दुआ मांगी कि "अल्लाह तआला तेरे दोनों हाथों और दोनों पावों को काट डाले और तेरी दोनों आँखों को अंधी कर दे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे" ऐ शख़्स! मैं अमीरूल मोमिनीन के पुर जलाल चेहरे को देख कर और उन की उस खतरनाक दुआ को सुन कर काँप उठा और मेरे बदन का एक एक रोंगटा खड़ा हो गया और मैं ख़ौफ़ व दहशत से काँपते हुए वहाँ से भाग निकला।

अमीरूल मोमिनीन की चार दुआवों में से तीन दुआवों की पकड़ में तो आ चुका हूँ। तुम देख रहे हो कि मेरे दोनों हाथ और पावों कट चुके और दोनों आँखें अंधी हो चुकीं। अब सिर्फ़ चौथी दुआ यअनी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाक़ी रह गया है और मुझे यक़ीन है कि यह मामला भी यक़ीनन हो कर रहे गा। चुनान्चे अब मैं उस का इन्तज़ार कर रहा हूँ और अपने जुर्म को बार बार याद करके नादिम व शर्मशार हो रहा हूँ और अपने जहन्नमी होने का इक़रार करता हूँ।

(इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद 2, स227)

तबसेरा: ऊपर की दोनों रिवायतों और करामतों से यह सबक़ मिलता है कि अल्लाह तआला अगरचे बहुत बड़ा सत्तार व ग़फ़्फ़ार

व रहीम है लेकिन अगर कोई बद नसीब उस के महबूब बन्दों की शान में कोई गुस्ताख़ी व बे अदबी करता है तो ख़ुदा वन्दे कुद्दूस की क़हहारी व जब्बारी उस मर्दूद को हरगिज़ मआफ़ नहीं फ़रमाती बल्कि ज़रूर दुनिया व आख़िरत के बड़े बड़े अज़ाबों में गिरफ़्तार कर देती है और वह दोनों आलम में क़हरे क़हहार व गजबे जब्बार का इस तरह सज़ावार होजाता है कि दुनिया में लअनतों के मार और फटकार और आख़िरत में अज़ाबे जहन्नम के सिवा इस को कुछ नहीं मिलता। राफ़ज़ी और वहाबी जिन के दीन व मज़हब की बुनियाद ही महबूबाने ख़ुदा की बे अदबी पर है। हम ने उन गुस्ताख़ों और बे अदबों में से कई एक को अपनी आँखों से देखा है कि उन लोगों पर क़हरे इलाही की ऐसे मार पड़ी है कि तौबा तौबा अलअमान। और मरते वक़्त उन लोगों का इतना बुरा हाल हुआ है कि तौबा तौबा। **नउजु बिल्लाह!**

अल्लाह तआला हर मुसलमान को अल्लाह वालों की बे अदबी व गुस्ताख़ी की लअनत से महफ़ूज रखे और अपने महबूबों की तअज़ीम व तौक़ीर और उन के अदब व एहतराम की तौफ़ीक़ बख़्शे **(आमीन)**

ख़्वाब में पानी पी कर सैराब: हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ फ़रमाते हैं कि जिन दिनों बाग़ियों ने हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ के मकान का घेराव कर लिया और उन के घर में पानी की एक बून्द तक का जाना बन्द कर दिया था और हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ प्यास की सख्ती से तड़पते रहते थे। मैं आप की मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुआ तो आप उस दिन रोज़ादार थे। मुझ को देख कर आप ने फ़रमाया कि ऐ अब्दुल्लाह बिन सलाम! आज मैं हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ के दीदार पुर अनवार से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुआ तो आप ने बहुत ही मुश्फ़िक़ाना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि ऐ उस्मान! ज़ालिमों ने पानी बन्द करके तुम्हें प्यास से बे क़रार कर दिया है? मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ! तो फ़ौरन ही आप ने दरेची में से एक डोल मेरी तरफ़ लटका दिया जो निहायत मीठा और ठंडे पानी से भरा हुआ था। मैं उस को

पी कर सैराब हो गया और अब उस वक़्त बेदारी की हालत में भी उस पानी की ठंडक में अपनी दोनों छातियों और दोनों कंधों के बीच महसूस करता हूँ। फिर हुज़ूरे अकरम ﷺ ने मुझ से फ़रमाया कि ऐ उस्मान! अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो उन बाग़ियों के मुक़ाबला में तुम्हारी इमदाद व नुसरत करूँ। और अगर तुम चाहो तो हमारे पास आकर रोज़ा खोलो। ऐ अब्दुल्लाह बिन सलाम! मैं ने ख़ुश होकर यह अर्ज़ कर दिया कि या रसूलल्लाह ﷺ आप के दरबार पुर अनवार में हाज़िर होकर रोज़ा इफ़तार करना यह ज़िन्दगी से हज़ारों लाखों दर्जे ज़्यादा मुझे प्यारी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं उस के बाद चला आया और उसी दिन रात में बाग़ियों ने आप को शहीद कर दिया। **(अल बदाया वन नहाया ज़ि 7, स 182)**

अपने मदफ़न की ख़बर: हज़रत इमाम मालिक अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ीअ के उस हिस्सा में तशरीफ़ ले गए जो **"हिश्शे कोकब"** कहलाता है तो आप ने वहाँ खड़े होकर एक जगह पर यह फ़रमाया कि जल्द ही यहाँ एक नेक शख़्स दफ़न कर दिया जाए गा। चुनान्चे उस के बाद ही आप की शहादत हो गई और बाग़ियों ने आप के जनाज़ा मुबारका के साथ इस क़दर हुल्लड़ बाज़ी की कि आप को न रोज़-ए-मनव्वरा के क़रीब दफ़न किया जा सका न जन्नतुल बक़ीअ के उस हिस्सा में मदफ़ून किया जा सका जो बड़े सहाबा का क़ब्रस्तान था बल्कि सब से दूर अलग थलग "हिश्शे कोकब" में आप दफन किए गिए। जहाँ कोई सोच भी नहीं सकता था कि यहाँ अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ की क़ब्रे मुबारक बनेगी क्योंकि उस वक़्त तक वहाँ कोई क़ब्र थी ही नहीं। **(इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद 2, स 227)**

तबसेरा: इस रिवायत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला अपने औलिया को इन बातों का भी इल्म अता फ़रमा देता है कि वह कब और कहाँ वफ़ात पाएँगे? और किस जगह उन की क़ब्र बने गी?

चुनान्चे सैंकड़ों औलिया-ए-किराम के तज़किरों में लिखा हुआ है कि उन अललाह वालों ने वक़्त से पहले लोगों को यह बता दिया है कि वह कब? और कहाँ और किस जगह वफ़ात पाकर मदफ़ून होंगे।

ज़रुरी इन्तेबाहः उस मौक़अ पर कुछ कम समझ और बदअक़ीदा लोग अवाम को बहकाते रहते हैं कि कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया हैः "وما تدری نفس بای ارض تموت" (यअनी अल्लाह तआला के सिवा कोई उस को नहीं जानता कि वह कौन सी ज़मीन में मरेगा) इस लिए औलिया-ए-किराम के यह सब क़िस्से ग़लत हैं। उस का जवाब यह है कि कुरआन मजीद की यह आयत हक़ और बरहक़ है और हर मोमिन का उस पर ईमान है मगर इस आयत का मतलब यह है कि बेग़ैर अल्लाह तआला के बताए हुए कोई शख़्स अपनी अक़ल व समझ से इस बात को नहीं जान सकता कि वह कब और कहाँ मरेगा? लेकिन अल्लाह तआला अपने ख़ास बन्दों, हज़राते अम्बिया -ए-किराम को बज़रिए वही औलिया-ए-किराम को बतरीक़ कश्फ़ो करामत उन चीज़ों का इल्म अता फ़रमा दे तो वह भी जान लेते हैं कब और कहाँ उन का इन्तक़ाल होगा।

ख़ुलासा यह है कि अल्लाह तआला तो उस बात को जानता ही है कि कौन कहाँ मरेगा लेकिन अल्लाह तआला के बता देने से ख़ुदा के खास बन्दे भी इस बात को जान लेते हैं कि कौन कहाँ मरेगा? मगर कहाँ अल्लाह तआला का इल्म और कहाँ बन्दों का इल्म ? अल्लाह तआला का इल्म हमेशगी वाला,ज़ाती और क़दीम है और बन्दों का इल्म अताई और खत्म होने वाला है। अल्लाह तआला का इल्मे अज़ली, अबदी और ग़ैर महदूद है और बन्दों का इल्म फ़ानी और महदूद है।

अब यह मसला निहायत ही सफ़ाई के साथ खुल गया है कि कुरआनी इरशाद का मतलब यह कि अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता कि कौन कब और कहाँ मरेगा? और अहले हक़ का यह अक़ीदा कि औलिया-ए-किराम भी जानते हैं कि कौन कब और कहाँ मरेगा? यह दोनों बातें अपनी अपनी जगह पर सही हैं। और उन दोनों

बातों में हरगिज़ हरगिज़ कोई टकराव नहीं क्योंकि जहाँ यह कहा गया कि अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता कि कौन कब और कहाँ मरेगा। उस का मतलब यह है कि बेग़ैर ख़ुदा के बताये कोई नहीं जानता और जहाँ यह कहा गया कि हज़राते अंबिया व औलिया जानते हैं कि कौन कब और कहाँ मरे गा तो उस का मतलब यह है कि हज़राते अंबिया व औलिया ख़ुदा के बता देने से जान लेते हैं। अब नाज़रीने किराम इन्साफ़ फ़रमाएँ कि इन दोनों बातों में कौन सा इख़्तेलाफ और टकराव है? दोनों ही बातें अपनी अपनी जगह पर सो फ़ीसद सही और दुरूस्त हैं। **वल्लाहु अअ्लम**

शहादत के बाद ग़ैबी आवाज़: हज़रत अदी बिन हातिम सहाबी رضی اللہ عنہ का बयान है कि हज़रत अमीरूल मोमिनीन उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ की शहादत के दिन मैंने अपने कानों से सुना कि कोई शख़्स बलन्द आवाज़ से यह कह रहा था कि: "ابشـر ابـن عـفـان بروح و ريحـان و برب غير غضبان ابشر ابن عفان بغفران و رضوان" (यअनी हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान رضی اللہ عنہ को राहत और ख़ुश्बू की ख़ुशख़बरी दो और न नाराज़ होने वाले रब की मुलाक़ात की ख़ुश्ख़बरी सुनाओ और ख़ुदा की बख़्शिश और ख़ुशी की भी बशारत दे दो) हज़रत अदी बिन हातिम رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं उस आवाज़ को सुन कर इधर उधर नज़र दौड़ाने लगा और पीछे मुड़ कर भी देखा मगर कोई शख़्स नज़र नहीं आया। (शवाहिदुन्नबुवा स 158)

मदफ़न में फ़रिश्तों की भीड़: रिवायत है कि बाग़ियों की हुल्लड़ बाज़ियों के सबब तीन दिन तक आप की मुक़द्दस लाश बे गोरो कफ़न पड़ी रही। फिर चन्द जाँ निसारों ने रात की तारीकी में आप के जनाज़ा मुबारका को उठा कर जन्नतुल बक़ीअ पहुँचा दिया और आप की मुक़द्दस क़ब्र खोदने लगे। अचानक उन लोगों ने देखा कि सवारों की एक बहुत बड़ी जमाअत उन के पीछे पीछे जन्नतुल बक़ीअ में दाख़िल हुई उन सवारों को देख कर लोगों पर ऐसा ख़ौफ़ तारी हुआ कि कुछ लोगों ने जनाज़ा मुबारका को छोड़ कर भाग जाने का इरादा कर लिया।

यह देख कर सवारों ने बआवाज़े बलन्द कहा कि आप लोग ठहरे रहें और बिल्कुल न डरें हम लोग भी उन की तदफ़ीन में शिरकत के लिए यहाँ हाज़िर हुए हैं। यह आवाज़ सुन कर लोगों का ख़ौफ़ दूर हो गया और इत्मीनान व सुकून के साथ लोगों ने आप को दफ़न किया। क़ब्रस्तान से लौट कर उन सहाबियों ने क़सम खा कर लोगों से कहा कि यक़ीनन यह फ़रिश्तों की जमाअत थी। (शवाहिदुन्नबुवा स 158)

गुस्ताख़ दरिन्दा के मुँह में: मन्कूल है कि हाजियों का एक क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा पहुँचा। तमाम अहले क़ाफ़िला हज़रत अमीरूल मोमिनीन उस्मान ग़नी के मज़ारे मुबारक पर ज़ियारत करने और फ़ातिहा ख़्वानी के लिए गए लेकिन एक शख़्स जो आप से दुश्मनी रखता था तौहीन व इहानत के तौर पर आप की ज़ियारत के लिए नहीं गया और लोगों से कहने लगा कि वह बहुत दूर है इस लिए मैं नहीं जाऊँगा।

यह क़ाफ़िला जब अपने वतन को वापस आने लगा तो क़ाफ़िला के तमाम लोग ख़ैरो आफ़ियत और सलामती के साथ अपने अपने वतन पहुँच गए लेकिन वह शख़्स जो आप की क़ब्रे अनवर की ज़ियारत के लिए नहीं गया था। उस का यह अनजाम हुआ कि बीच रास्ते में बीच क़ाफ़िला के अन्दर एक दरिन्दा जानवर दहाड़ता और ग़ुर्राता हुआ आया और उस शख़्स को अपने दाँतों से दबोच कर और पन्जों से फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला।

यह मन्ज़र देख कर तमाम अहले क़ाफ़िला ने यक ज़बान होकर यह कहा कि यह हज़रत उस्मान ग़नी की बे अदबी व बे हुरमती का अंजाम है। **(शवाहिदुन्नबुवा स 158)**

तबसेरा: उपर की तीनों रवायतों से अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी की जलालते शान और दरबारे ख़ुदावन्दी में उन की मक़बूलियत और विलायत व करामत का ऐसा अज़ीमुश्शान निशान ज़ाहिर होता है कि उन के मर्तबे की बलन्दियों का कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता और आख़िरी रिवायत तो उन गुस्ताख़ों के लिए बहुत ही नसीहत वाली व ख़ौफ़नाक है जो हज़रत उस्मान ग़नी की शान

मे बद ज़बान होकर तीनों खलीफों को बुरा भला कहा करते हैं। जैसा कि हमारे दौर के शीओं का सड़ा हुआ व नापाक तरीक़ा है।

अहले सुन्नत हज़रात पर जरूरी है कि उन की मजालिस में हरगिज़ हरगिज़ क़दम न रखें वरना क़हरे इलाही में मुबतला होने का ख़तरनाक अन्देशा है ख़ुदा वन्दे करीम हर मुसलमान को अपने कहरो ग़ज़ब से बचाए रखे और हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-किराम और तमाम सहाबा-ए-किराम की मुहब्बत व अक़ीदत की दौलत अता फ़रमाए। **आमीन!**

हज़रत अली मुर्तज़ा

ख़लीफ़-ए-चहारूम जानशीने रसूल व ज़ौजे बतूल हज़रत अली बिन अबी तालिब की कुन्नियत "अबुल हसन" और "अबू तुराब" है। आप हुज़ूरे अक़दस के चचा अबू तालिब के बेटे हैं। आमुल फ़ील के तीस बरस बाद जब कि हुज़ूरे अकरम की उम्र शरीफ़ तीस बरस की थी १३ रजब को जुमा के दिन हज़रते अली ख़ानए क़अबा के अन्दर पैदा हुए। आप की वालिदा माजिदा का नाम हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद है। () आप ने अपने बचपन ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था और हुज़ूरे अरकम के ज़ेरे तरबियत हर वक़्त आप की इमदाद व नुसरत में लगे रहते थे। आप मुहाजिरीने अव्वलीन और अशरए मुबश्शेरा में अपने कई ख़ुसूसी दरजात के लिहाज़ से बहुत ज़्यादा मुमताज़ हैं। जंगे बद्र, जंगे उहुद, जंगे ख़न्दक़ आदि तमाम इस्लामी लड़ाइयों में अपनी बे पनाह बहादुरी के साथ जंग फ़रमाते रहे और कुफ़्फ़ारे अरब के बड़े बड़े नामवर बहादुर और सूरमा आप की मुक़द्दस तलवार जुल फ़िक़ार की मार से मक़तूल हुए। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी की शहादत के बाद अन्सार व मुहाजिरीन ने आप के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त करके आप को अमीरूल मोमिनीन चुना और चार बरस आठ माह नो दिन तक आप मस्नदे खिलाफ़त को सर फ़राज़ फ़रमाते रहे। १७ रमज़ान ४० हिजरी

को अब्दुर्रहमान बिन मुल्ज़िम मरादी ख़ारजी मरदूद ने नमाज़े फ़ज्र को जाते हुए आप की मुक़द्दस पेशानी और नूरानी चेहरे पर ऐसी तलवार मारी जिस से आप सख़्त तौर पर ज़ख़्मी हो गए और दो दिन ज़िन्दा रह कर जामे शहादत से सैराब हो गए और कुछ किताबों में लिखा है कि १९ रमज़ान जुमा की रात में आप ज़ख़्मी हुए और २१ रमज़ान की रात इतवार आप की शहादत हुई। (वल्लाहु तआला अअ्लम) आप के बड़े बेटे हज़रत इमाम हसन ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप को दफ़न फ़रमाया। **(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा व एज़ालतुल ख़िफ़ा वग़ैरा)**

करामात

क़ब्र वालों से सवाल जवाब: हज़रत सईद बिन मुसय्यिब कहते हैं कि हम लोग अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली के साथ मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ीअ में गए तो आप ने क़ब्रों के सामने खड़े होकर बआवाज़े बलन्द फ़रमाया कि ऐ क़ब्र वालों **अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह!** क्या तुम लोग अपनी ख़बरें हमें सुनाओगे या हम तुम लोगों को तुम्हारी ख़बरें सुनाएँ? उस के जवाब में कब्रों के अन्दर से आई "**वअलैकस्सलाम व रहमतुल्लाह व बरकातहू**" ऐ अमीरूल मोमिनीन आप ही हमें यह सुनाइए कि हमारी मौत के बाद हमारे घरों में क्या क्या मामलात हुए? हज़रत अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ क़ब्र वालो! तुम्हारे बाद तुम्हारे घरों की ख़बर यह है कि तुम्हारी बीवियों ने दूसरे लोगों से निकाह कर लिया और तुम्हारे माल व दौलत को तुम्हारे वारिसों ने आपस में तक़सीम (बाँट) कर लिया और तुम्हारे छोटे छोटे बच्चे यतीम हो कर दरबदर फिर रहे हैं और तुम्हारे मज़बूत और ऊँचे ऊँचे महलों में तुम्हारे दुश्मन आराम और चैन के साथ ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। उस के जवाब में क़ब्रों में से एक मुर्दे की यह दर्द नाक आवाज़ आई कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! हमारी ख़बर यह है कि हमारे कफ़न पुराने होकर फट चुके हैं और जो कुछ हम ने दुनिया में ख़र्च किया था उस को

हम ने यहाँ पा लिया है और जो कुछ हम दुनिया में छोड़ आए थे उस में हमें घाटा ही घाटा उठाना पड़ा है।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन ज़ि 2, स 863)

तबसेरा: इस रिवायत से मालूम हुआ कि अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब बन्दों को यह ताक़त व क़ुदरत अता फ़रमाता है कि क़ब्र वाले उन के सवालों का बलन्द आवाज़ से इस तरह जवाब देते हैं कि दूसरे लोग भी सुन लेते हैं। यह क़ुदरत व ताक़त आम इन्सानों को हासिल नहीं है लोग अपनी आवाज़ें तो मुर्दों को सुना सकते हैं और मुर्दे उन की आवाज़ों को सुन भी लेते हैं। मगर क़ब्र के अन्दर से मुर्दों की आवाज़ों को सुन लेना यह आम इन्सानों के बस की बात नहीं है बल्कि यह ख़ुदा के खास बन्दों का ख़ास हिस्सा और ख़ासा है जिस को उन की करामत के सिवा और कुछ भी नही कहा जा सकता और इस रिवायत से यह भी पता चला कि क़ब्र वालों का यह इक़बाली बयान है कि मरने वाले दुनिया में जो माल व दौलत छोड़ कर मर जाते हैं उस मे मरने वालों के लिए सरा सर घाटा ही घाटा हैं और जिस माल व दौलत को वह मरने से पहले ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं वही उन के काम आने वाला है।

फ़ालिज वाला अच्छा हो गया: अल्लामा ताजुद्दीन सबकी ने अपनी किताब "तबक़ात" में ज़िक्र फ़रमाया है कि एक मर्तबा अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली अपने दोनों बेटे हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन के साथ हर्मे कअबा में हाज़िर थे कि बीच रात में अचानक यह सुना कि एक शख़्स बहुत ही गिड़ गिड़ा कर अपनी जरूरत के लिए दुआ मांग रहा है और खूब खूब रो रहा है। आप ने हुक्म दिया कि उस शख़्स को मेरे पास लाओ। वह शख़्स इस हाल में हाज़िरे ख़िदमत हुआ कि उस के बदन की एक करवट फ़ालिज ज़दा थी और वह ज़मीन में घसीटता हुआ आप के सामने आया। आप ने उस का क़िस्सा पूछा तो उस ने अर्ज़ किया ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं बहुत ही बे बाकी के साथ क़िस्म क़िस्म के गुनाहों में

दिन रात व्यस्त रहता था और मेरा बाप जो बहुत ही नेक और पाबन्दे शरीअत मुसलमान था बार बार मुझ को टोकता और गुनाहों से मना करता रहता था। मैं ने एक दिन अपने बाप की नसीहत से नाराज़ होकर उस को मार दिया और मेरी मार खा कर मेरा बाप तक्लीफ व ग़म में डूबा हुआ हर्मे कअबा आया और मेरे लिए बद दुआ करने लगा। अभी उस की दुआ ख़त्म भी नहीं हुई थी कि बिल्कुल ही अचानक मेरी एक करवट पर फ़ालिज का असर होगया और मैं ज़मीन पर घिसट कर चलने लगा। इस ग़ैबी सज़ा से मुझे बड़ी इबरत हासिल हुई और मैं ने रो रो कर अपने बाप से अपने जुर्म की मआफ़ी माँगी और मेरे बाप ने अपनी शफ़क़ते पिदरी (बाप की मुहब्बत) से मजबूर होकर मुझ पर रहम खाया और मुझे मआफ़ कर दिया और कहा कि बेटा चल! जहाँ मैं ने तेरे लिए बद दुआ की थी उसी जगह अब मैं तेरे लिए सेहत व सलामती की दुआ मांगूँगा। चुनान्चे मैं अपने बाप को ऊँटनी पर सवार करके मक्का मुअज़्ज़मा ला रहा था कि रास्ते में बिल्कुल अचानक ऊँटनी एक मक़ाम पर बिदक कर भागने लगी और मेरा बाप उस की पीठ पर से गिर कर दो चट्टानों के बीच हलाक हो गया और अब मैं अकेला ही हर्मे कअबा में आकर दिन रात रो रो कर खुदा तआला से अपनी तन्दुरूस्ती के लिए दुआएं मांगता रहता हूँ। अमीरूल मोमिनीन ने सारी दास्तान सुन कर फ़रमाया कि ऐ शख़्स! अगर वाक़ई तेरा बाप तुझ से ख़ुश हो गया था तो इतमीनान रख कि खुदा वन्दे करीम भी तुझ से खुश हो गया है। उस ने कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं क़सम खा कर कहता हूँ कि मेरा बाप मुझ से खुश हो गया था। अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने उस शख़्स की हालत पर रहम खा कर उस को तसल्ली दी और चन्द रकअत नमाज़ पढ़ कर उस की तन्दुरूस्ती के लिए दुआ मांगी। फिर फ़रमाया ऐ शख़्स उठ खड़ा हो जा! यह सुनते ही वह बिला तकल्लुफ़ उठ कर खड़ा हो गया और चलने लगा। आप ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स! अगर तू ने क़सम खा कर यह न कहा होता कि तेरा बाप तुझ से ख़ुश हो

गया था तो में हरगिज़ तेरे लिए दुआ न करता।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन ज़ि 2, स 863)

गिरती हुई दीवार थम गई: हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ ब्यान करते हैं कि एक मर्तबा अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली एक दीवार के साए में एक मुक़द्दमा का फैसला फ़रमाने के लिए बैठ गए। मुक़द्दमा के बीच में लोगों ने शोर मचाया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! यहाँ से उठ जाइए यह दीवार गिर रही है। आप ने निहायत सुकून व इत्मीनान के साथ फ़रमाया कि मुक़द्दमा की कारवाई जारी रखो। अल्लाह तआला बेहतरीन हाफ़िज़ व मददगार व देखने वाला है। चुनान्चे इत्मीनान के साथ आप इस मुक़द्दमा का फ़ैसला फ़रमा कर जब वहाँ से चल दिए तो फ़ौरन ही वह दीवार गिर गई।

(इज़ालतुल खिफ़ा मक़सद 2, स 273)

तबसेरा: यह रिवायत इस बात की दलील है कि ख़ुदा वन्दे कुद्दूस अपने औलिया-ए-किराम को ऐसी ऐसी रूहानी ताक़तें अता फ़रमाता है कि उन के इशारों से गिरती हुई दीवारें तो क्या चीज़ हैं बहते हुए दरियाओं की रवानी भी ठहर जाती है। सच है।

कोई अन्दाज़ा कर सक्ता है उस के ज़ोर बाज़ू का
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़्दीरें

आपको झूठा कहने वाला अंधा हो गया: अली बिन ज़ाज़ान का बयान है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली ने एक मर्तबा कोई बात इरशाद फ़रमाई तो एक बद नसीब ने निहायत ही बे बाकी के साथ यह कह दिया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन आप झूठे हैं। आप ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स! अगर मैं सच्चा हूँ तो ज़रूर तू अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हो जाए गा। इस गुस्ताख़ ने कह दिया कि आप मेरे लिए बद दुआ कर दीजिए। मुझे उस की परवा नहीं है उस के मुँह से उन अलफ़ाज़ का निकलना था कि बिलकुल ही अचानक वह शख़्स दोनों आँखों का अंधा हो गया और इधर उधर हाथ पावं मारने लगा।

(इज़ालतुल खिफ़ा मक़सद 2, स 273)

कौन कहाँ मरेगा और कहाँ दफ़्न होगा?: हज़रत असबअ رضي الله عنه कहते हैं कि हम लोग एक मर्तबा अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली رضي الله عنه के साथ सफ़र में मैदाने करबला के अन्दर ठीक उस जगह पहुँचे जहाँ आज हज़रत इमाम हुसैन رضي الله عنه की क़ब्रे अनवर बनी हुई है तो आप ने फ़रमाया कि उस जगह आगे ज़माने में एक आले रसूल (ﷺ) का क़ाफ़िला ठहरे गा और इस जगह उन के ऊँट बंधे हुए होगे। और इसी मैदान में जवानाने अहले बैत की शहादत होगी और इसी जगह उन शहीदों का मदफ़न बने गा और उन लोगों पर आसमान व ज़मीन रोएँगे।

(इज़ालतुल खिफ़ा मक़सद 2,स273 बहवाला अल-रियाजुन्नसरह)

तबसेरा: रिवायत बाला से पता चलता है कि औलिया अल्लाह को कश्फ के जरिए बरसों बाद होने वाले वाक़िआत और लोगों के हालात यहाँ तक कि लोगों की मौत और मदफ़न की कैफ़ियात का इल्म हासिल हो जाता है और यह हक़ीक़त में इल्मे ग़ैब है जो अल्लाह तआला के अता फ़रमाने से औलिया-ए-किराम को हासिल हुआ करता है और यह औलिया-ए-किराम की करामत हुआ करती है।

फ़रिश्तों ने चक्की चलाई: हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी رضي الله عنه का बयान है कि हुजूरे अक़्दस ﷺ ने मुझे हज़रत अली رضي الله عنه को बुलाने के लिए उन के मकान पर भेजा तो मैं ने वहाँ यह देखा कि उन के घर में चक्की बेग़ैर किसी चलाने वाले के ख़ुद ब ख़ुद चल रही है।

जब मैं ने बारगाहे रिसालत में इस अजीब करामत का तज़्किरा किया तो हुजूर अक़्दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबू ज़र! अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे भी हैं जो ज़मीन में सैर करते रहते हैं। अल्लाह तआला ने उन फ़रिश्तों की यह भी डियुटी फ़रमा दी है कि वह मेरे आल की इमदाद व इआनत करते रहें।

(इज़ालतुल खिफ़ा मक़सद 2, स 273)

तबसेरा: इस रिवायत से यह सबक़ मिलता है कि हुजूरे अकरम ﷺ की आले पाक को बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस क़दर कुर्ब और मक़बूलियत हासिल है कि अल्लाह तआला ने कुछ फ़रिश्तों को उन

की इमदाद व नुसरत और जरूरत पूरी करने के लिए ख़ास तौर पर मुक़र्रर फ़रमा दिया है। यह शर्फ़ हज़राते अहले बैत को हुज़ूरे अक़दस ﷺ की निस्बत की वजह से हासिल हुआ है। सुब्हानल्लाह! सुलताने मदीना ﷺ की इज़्ज़त व अज़मत और उन के वक़ार व इक़्तेदार का क्या कहना? कि आप के घर वालों की चक्की फ़रिश्ते चलाया करते थे।

मैं कब वफ़ात पाऊँगा?: हज़रत फुज़ाला बिन फुज़ाला رضی اللہ عنہ इरशाद फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली رضی اللہ عنہ मक़ामे "يـنـبـع" में बहुत सख़्त बीमार हो गए तो मैं अपने वालिद के साथ उन की अयादत (मरीज़ को देखने के लिए जाना) के लिए गया। बात चीत के दौरान मेरे वालिद ने अर्ज़ किया ऐ अमीरूल मोमिनीन! आप इस वक़्त ऐसी जगह बीमारी की हालत में ठहरे हैं। अगर इस जगह आप की वफ़ात हो गई तो क़बीलए (جهينه) "जहीनिया" के गंवारों के सिवा और कौन आप की तजहीज़ व तकफ़ीन करेगा? इस लिए मेरी गुज़ारिश है कि आप मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले चलें क्यों कि वहाँ अगर यह हादसा हुआ तो वहाँ आप के जाँ निसार मुहाजिरीन व अन्सार और दूसरे मुक़द्दस सहाबा आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे और यह मुक़द्दस हस्तियाँ आप के कफ़न व दफ़न का इन्तज़ाम करेंगी। यह सुन कर आप ने फ़रमाया ऐ फुज़ाला! तुम इत्मीनान रखो कि मैं अपनी इस बीमारी में हरगिज़ हरगिज़ वफ़ात नहीं पाऊंगा। सुन लो उस वक़्त तक हरगिज़ हरगिज़ मेरी मौत नहीं आ सकती जब तक कि मुझे तलवार मार कर मेरी इस पेशानी और दाढ़ी को ख़ून से रंगीन न कर दिया जाए। (इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद 2, स 273)

तबसेरा: चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि बद बख़्त अब्दुर्रहमान बिन मुल्ज़िम मुरादी ख़ारजी ने आप की मुक़द्दस पेशानी पर तलवार चला दी जो आप की पेशानी को काटती हुई जबड़े तक मिल गई। उस वक़्त आप की ज़बाने मुबारक से यह जुम्ला अदा हुआ فـزت بـرب الـكـعـبـه।(यअनी कअबा के रब की क़सम! कि मैं कामयाब होगया) उस ज़ख़्म में आप शहादत के शर्फ़ से सरफ़राज़ हो गए और आप ने

हज़रत फ़ज़ाला से मक़ामे يـنبع में जो फ़रमाया था वह हर्फ़ बहर्फ़ सहीह हो कर रहा।

दुर्रे ख़ैबर का वज़न: जंगे ख़ैबर में जब घमसान की जंग होने लगी तो हज़रत अली की ढाल कट कर गिर पड़ी तो आप ने जोशे जिहाद में आगे बढ़ कर क़िला ख़ैबर का फाटक उखाड़ डाला और उस के एक किवाड़ का ढाल बना कर उस पर दुश्मनों की तलवारों को रोकते थे। यह किवाड़ इतना भारी और वज़नी था कि जंग के ख़ातमे के बाद चालीस आदमी मिल कर भी उस को न उठा सके।

(ज़रक़ानी जि 2, स 230)

तबसेरा: क्या फ़ातेहे ख़ैबर के उस कारनामे को इन्सानी ताक़त की कार गुज़ारी कहा जा सकता है? हरगिज़ हरगिज़ नहीं। यह इन्सानी ताक़त का कारनामा नहीं है। बल्कि यह रूहानी ताक़त का एक कारनामा है जो सिर्फ अल्लाह वालों ही का हिस्सा है जिस को आम तौर पर करामत कहा जाता है।

कटा हुआ हाथ जोड़ दिया: रिवायत है कि एक हबशी गुलाम जो अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली का इन्तहाई मुख़्लिस आशिक़ था। बद क़िस्मती से उस ने एक मर्तबा चोरी कर ली। लोगों ने उस को पकड़ कर दरबारे ख़िलाफ़त में पेश कर दिया और गुलाम ने अपने जुर्म का इक़रार भी कर लिया। अमीरूल मोमिनीन हज़रते अली ने उस का हाथ काट दिया। जब वह अपने घर को रवाना हुआ तो रास्ता में हज़रत सलमान फ़ारसी और इब्नुल करा से उस की मुलाक़ात हो गई इब्नुल करा ने पूछा कि तुम्हारा हाथ किस ने काटा? तो गुलाम ने कहा अमीरूल मोमिनीन व यअसूबुल मुस्लमीन दामादे रसूल व ज़ौजए बतूल ने। इब्नुल करा ने कहा कि हज़रत अली ने तुम्हारा हाथ काट डाला फिर भी तुम इस क़दर एजाज़ व इकराम और तअ़रीफ़ व सना के साथ उन का नाम लेते हो? गुलाम ने कहा कि क्या हुआ? उन्हों ने हक़ पर मेरा हाथ काटा और मुझे अज़ाबे जहन्नम से बचा लिया। हज़रत सलमान फ़ारसी ने दोनों की बात सुनी और

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली से उस का तज़्किरा किया तो अमीरूल मोमिनीन ने उस गुलाम को बुलवा कर उस का कटा हुआ हाथ उस की कलाई पर रख कर रूमाल से छुपा दिया। फिर कुछ पढ़ना शुरू कर दिया। इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई कि रूमाल हटाओ जब लोगों ने रूमाल हटाया तो गुलाम का कटा हुआ हाथ इस तरह कलाई से जुट गया था कि कहीं कटने का निशान भी नहीं था।

(तफ़सीरे कबीर ज़ि 5, स 479)

शौहर औरत का बेटा निकला: अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली के घर से कुछ दूर एक मस्जिद के पहलू में दो मियाँ बीवी रात भर झगड़ा करते रहे। सुबह को अमीरूल मोमिनीन ने दोनों को बुला कर झगड़े का सबब पूछा। शौहर ने अर्ज़ किया ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं क्या करूँ? निकाह के बाद मुझे इस औरत से बे इन्तेहा नफ़रत हो गई। यह देख कर बीवी मुझ से झगड़ा करने लगी। फिर बात बढ़ गई और रात भर लड़ाई होती रही। आप ने तमाम दरबारियों को बाहर निकाल दिया और औरत से फ़रमाया कि देख मैं तुझ से जो सवाल करूँ उस का सच सच जवाब देना। फिर आप ने फ़रमाया कि ऐ औरत! तेरा नाम यह है तेरे बाप का नाम यह है। औरत ने कहा कि बिल्कुल ठीक ठीक आप ने बताया। फिर आप ने फ़रमाया कि ऐ औरत! तू याद कर कि तो ज़िना कारी से हामला हो गई थी। और एक मुद्दत तक तू और तेरी माँ इस हमल को छुपाती रही। जब पेट का दर्द शुरू हुआ तो तेरी माँ तुझे उस घर से बाहर ले गई और जब बच्चा पैदा हुआ तो उस को एक कपड़े से लपेट कर तू ने मैदान में डाल दिया। इत्तेफ़ाक़ से एक कुत्ता उस बच्चे के पास आया तेरी मां ने उस कुत्ते को पत्थर मारा लेकिन वह पत्थर बच्चे को लगा और उसका सिर फट गया तो तेरी माँ को बच्चे पर रहम आ गया और उसने बच्चे के ज़ख्म पर पटटी बाँधी फिर तुम दोनों वहाँ से भाग खड़ी हुई। उसके बाद उस बच्चे की तुम दोनों को कुछ भी ख़बर नही मिली क्या यह वाक़िआ सच है? औरत ने कहा कि हाँ ऐ अमीरूल

मोमिनीन! यह पूरा वाक़िआ हर्फ़ बहर्फ़ सही है। फिर आप ने फ़रमाया कि ऐ मर्द! तू अपना सर खोल कर उस को दिखा दे। मर्द ने सर खोला तो उस ज़ख़्म का निशान मौजूद था। उस के बाद अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ औरत!यह मर्द तेरा शौहर नहीं है बल्कि तेरा बेटा है तुम दोनों अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि उस ने तुम दोनों को हराम कारी से बचा लिया। अब तू अपने इस बेटे को ले कर अपने घर चली जा। (शवाहिदुन्नबूवा स161)

तबसेरा: ऊपर की दोनों मुस्तनद करामतों को बग़ौर पढ़िए और ईमान रखिए कि खुदावन्दे कुद्दूस के औलिया-ए-किराम आम इन्सानों की तरह नहीं हुआ करते बल्कि अल्लाह तआला अपने उन महबूब बन्दों को ऐसे ऐसे रूहानी ताक़तों का बादशाह बल्कि शहंशाह बना देता है कि उन बुजुर्गों के कब्ज़े और उन की रूहानी ताक़तों और कुदरतों के बुलन्द मर्तबे तक किसी बड़े से बड़े फ़लसफ़ी की अक़्ल व फ़हम की भी रसाई नहीं हो सकती ।

ख़ुदा की क़सम! मैं हैरान हूँ कि कितने बड़े जाहिल या मुतजाहिल हैं वह लोग जो औलिया-ए-किराम को बिल्कुल अपने ही जैसा मुल्ला समझ कर उन के साथ बराबरी का दअवा करते हैं और औलिया-ए-किराम की ताक़त का चिल्ला चिल्ला कर इन्कार करते फिरते हैं। तअज्जुब है कि ऐसे ऐसे वाक़िआत जो नूरे हिदायत के चाँद तारे हैं। उन मुन्किरों की निगाह से अभी तक ओझल ही हैं। मगर उस में कोई तअज्जुब की बात नहीं जो दोनों हाथों से अपनी आँखों को बन्द करले उस को चाँद सितारे तो क्या सूरज की रोशनी भी नज़र नहीं आ सकती। हक़ीक़त में औलिया-ए-किराम के न मानने वालों का यही हाल है।

ज़रा सी देर में क़ुरआन मजीद ख़त्म कर लेते: यह करामत सही रिवायात से साबित है कि आप घोड़े पर सवार होते वक़्त एक पैर रकाब में रखते और कुरआन मजीद शुरू करते और दूसरा पैर रकाब में रख कर घोड़े की ज़ीन पर बैठने तक इतनी देर में एक कुरआन मजीद ख़त्म कर लिया करते थे। (शवाहिदुन्नबुवा स 160)

इशारे से दरिया की तुग़यानी ख़त्म: एक मर्तबा नहरे फ़रात में ऐसी ख़ौफ़नाक तुग़यानी (उबाल) आ गई कि सैलाब में तमाम खेतियाँ डुब गई लोगों ने आप के दरबार में फ़रियाद की। आप फ़ौरन ही उठ खड़े हुए और रसूलुल्लाह ﷺ का जुब्बा मुबारका व अमामा पहन कर घोड़े पर सवार हुए और आदमियों की एक जमाअत जिस में हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन رضي الله عنهما भी थे आप के साथ चल पड़े। आप ने पुल पर पहुँच कर अपने छड़ी से नहरे फुरात की तरफ़ इशारा किया तो नहर का पानी एक गज़ कम हो गया। फिर दूसरी मर्तबा इशारा फ़रमाया तो और एक गज़ कम हो गया। जब तीसरी बार इशारा किया तो तीन गज़ पानी उतर गया। और सैलाब ख़त्म हो गया। लोगों ने शोर मचाया कि अमीरूल मोमिनीन! बस कीजिए यही काफ़ी है।

(शवाहिदुन्नबुवा स 162)

जासूस अंधा हो गया: एक शख़्स आप رضي الله عنه के पास रहकर जासूसी किया करता था और आप رضي الله عنه की ख़ुफ़िया ख़बरें आप के मुख़ालिफीन को पहुंचाया करता था। आप رضي الله عنه ने जब उस से दरियाफ्त फरमाया तो वह शख़्स क़समें खाने लगा और अपनी बरात ज़ाहिर करने लगा। आपने जलाल में आकर फरमाया कि अगर तू झूठा है तो अल्लाह तआ़ला तेरी आंखों की रौशनी छीन ले। एक हफ्ता भी नहीं गुज़रा था कि यह शख़्स अंधा हो गया,और लोग उसको लाठी पकड़ कर चलाने लगे। (शवाहिदुन्नुबूवह स167)

तुम्हारी मौत किस तरह होगी?: एक शख़्स आप की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ तो आप ने उस को उस के हालात बता कर यह बताया कि तुम को फ़लाँ खुजूर के पेड़ पर फांसी दी जाएगी। चुनान्चे उस शख़्स के बारे में जो कुछ आप ने फ़रमाया था वह हर्फ़ बहर्फ़ दुरूसत निकला और आप की पेश गोई पूरी होकर रही। (शवाहिदुन्नबुवा स162)

पत्थर उठाया तो पानी का चश्मा उबल पड़ा: मक़ामे सफ़ीन को जाते हुए आप का लश्कर एक ऐसे मैदान से गुज़रा जहाँ पानी नहीं था।

पूरा लश्कर प्यास की सख़्ती से बे ताब हो गया। वहाँ के गिरजा घर में एक राहिब रहता था। उस ने बताया कि यहाँ से दो कोस की दूरी पर पानी मिल सकेगा। कुछ लोगों ने इजाज़त तलब की ताकि वहाँ से जाकर पानी पिएँ। यह सुन कर आप अपने ख़च्चर पर सवार होगए और एक जगह की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि उस जगह तुम लोग ज़मीन को खोदो। चुनान्चे लोगों ने ज़मीन की खुदाई शुरू कर दी। तो एक पत्थर ज़ाहिर हुआ। लोगों ने उस पत्थर को निकालने की बहुत कोशिश की लेकिन तमाम औज़ार बेकार हो गए। और वह पत्थर न निकल सका। यह देख कर आप को गुस्सा आ गया और आप ने अपनी सवारी से उतर कर आसतीन चढ़ाई और दोनों हाथों की उंगलियों को उस पत्थ्र की दराड़ में डाल कर ज़ोर लगाया। तो वह पत्थर निकल पड़ा और उस के नीचे से एक निहायत ही साफ़ सुथरा और मीठा पानी का चश्मा ज़ाहिर हो गया और तमाम लश्कर उस पानी से सैराब होगया। लोगों ने अपने जानवरों को भी पिलाया और लश्कर की तमाम मश्कों को भी भर लिया। फिर आप ने उस पत्थर को उस की जगह पर रख दिया। गिरजा घर का ईसाई पादरी आप की यह करामत देख कर सामने आया और आप से पुछा कि क्या आप फ़रिश्ता हैं? आप ने कहा! नहीं। उस ने पूछा! क्या आप नबी हैं? आप ने फ़रमाया! नहीं। उस ने कहा! फिर आप क्या हैं? आप ने फ़रमाया मैं पैग़म्बरे मुरसिल हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़ातिमुन्नबीईन ﷺ का सहाबी हूँ और मुझ को हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने चन्द बातों की वसियत भी फ़रमाई है। यह सुन कर वह ईसाई राहिब कलमा शरीफ़ पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया।

आप ने फ़रमाया! तुम ने इतनी मुद्दत तक इस्लाम क्यों क़बूल नहीं किया था? राहिब ने कहा कि हमारी किताबों में यह लिखा हुआ है कि इस गिरजा घर के क़रीब जो एक चश्मा छुपा है उस चश्मे को वह शख़्स ज़ाहिर करेगा जो या तो नबी होगा या नबी का सहाबी होगा। चुनान्चे मैं और मुझ से पहले बहुत से पादरी इस गिरजा घर में

इसी इन्तज़ार में मुक़ीम रहे। अब आज आप ने यह चश्मा ज़ाहिर कर दिया। तो मेरी मुराद पुरी हो गई। इस लिए मैं ने आप के दीन को क़बूल कर लिया। राहिब की तक़रीर सुन कर आप रो पड़े और इस क़दर रोए कि आप की दाढ़ी मुबारक आंसूओं से भीग गई और फिर आप ने इरशाद फ़रमाया! अलहम्दु लिल्लाह कि उन लोगों की किताबों में भी मेरा ज़िक्र है। यह राहिब मुसलमान होकर आप के ख़ादिमों में शामिल हो गया और आप के लश्कर में दाख़िल होकर शामियों से जंग करते हुए शहीद हो गया और आप ने उस को अपने दस्ते मुबारक से दफ़न किया और उस के लिए बख़्शिश की दुआ फ़रमाई। (शवाहिदुन्नबुवा स 164)

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ

आप का नाम नामी भी अशरह मुबश्शेरह की फेहरिस्ते गिरामी में है। मक्का मुकर्रमा के अन्दर ख़ानदाने कुरैश में आप की पैदाइश हुई। माँ बाप ने "तलहा" नाम रखा मगर दरबारे नुबुवत से उन को "**फ़य्याज़**" व "**जव्वाद**" व ख़ैर" के मुअज़्ज़ज़ अलक़ाब अता हुए। यह जमाअते सहाबा में से पहले ईमान लाने वाले की लाइन में हैं। उन के इस्लाम लाने का वाक़िआ यह है कि यह तिजारत के लिए बसरा गए तो वहाँ के एक ईसाई पादरी ने उन से दरयाफ़्त किया कि क्या मक्का में "**अहमद नबी**" पैदा हो चुके हैं? उन्होंने हैरान होकर पूछा! कौन "**अहमद नबी**"? पादरी ने कहा।

"अहमद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब वह नबी आख़िरूज़्ज़मा हैं और उन की नुबुवत के जहूर का यही ज़माना है। और उन की पहचान का निशान यह है कि वह मक्का मुकर्रमा में पैदा होंगे और खुजूरों वाले शहर (मदीना मुनव्वरा) की तरफ़ हिजरत करेंगे।"

चूँकि उस वक़्त तक हुज़ूरे अकरम ﷺ ने अपनी नुबुवत का ऐलान नहीं फ़रमाया था। इस लिए हज़रत तलहा ﷺ ने पादरी को नबी आख़िरूज़्ज़माँ ख़ातिमुन्नबीईन ﷺ के बारे में कोई जवाब न दे सके।

लेकिन बसरा से मक्का मुअज़्ज़मा आने के बाद जब उन को पता चला कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने अपनी नुबुवत का ऐलान फ़रमा दिया है तो यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه के साथ बारगाहे नुबुवत में हाज़िर होकर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन को बे हद सताया और रस्सी में बांध कर उन को मारते रहे मगर यह पहाड़ की तरह दीने इस्लाम पर जमे रहे। फिर हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चले गए और जंगे बद्र के सिवा तमाम इस्लामी जंगों में कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। जंगे बद्र में उन की ग़ैर हाज़िरी का यह सबब हुआ कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन को और हज़रत सईद बिन ज़ैद رضي الله عنه को अबू सुफ़यान के क़ाफ़िला की तलाश में भेज दिया था। अबू सुफ़यान का क़ाफ़िला समंद्र के किनारे के रास्ते से मक्का मुकर्रमा चला गया और यह दोनों हज़रात जब लौट कर मैदाने बद्र में पहुँचे तो जंग ख़त्म हो चुकी थी।

जंगे उहुद में उन्होंने बड़ी ही जाँ बाज़ी और सर फ़रोशी का मुज़ाहिरा किया। हुज़ूरे अक़दस ﷺ को कुफ़्फ़ार के हमलों से बचाने में चूंकि यह तलवार और नेज़ों की बौछाड़ को अपने हाथ पर रोकते रहे। इस लिए आप की उंगली कट गई और हाथ बिल्कुल बेकार हो गया था और उन के बदन पर तीर व तलवार और नेज़ों के पच्हत्तर (75) ज़ख़्म लगे। उन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में चन्द हदीसें भी वारिद हुई हैं। जंगे उहुद के दिन जब जंग रूक जाने के बाद हुज़ूरे अकरम ﷺ चट्टान पर चढ़ने लगे तो लोहे की ज़िरा के बोझ की वजह से चट्टान पर चढ़ना दुश्वार हो गया। उस वक़्त हज़रत तलहा رضي الله عنه बैठ गए और उन के बदन के ऊपर से गुज़र कर हुज़ूरे अकरम ﷺ चट्टान पर चढ़े और खुश होकर फ़रमाया! اوجب طلحة (यअनी तलहा ने अपने लिए जन्नत वाजिब कर ली।) (मिश्कात स 566)

इसी तरह हुज़ूरे अकरम ﷺ ने यह भी फ़रमाया! ज़मीन पर चलता फिरता शहीद "तलहा" है।

(कंज़ुल उम्माल ज़ि 12, स 275, मतबूआ हैदराबाद)

20 जमादिल आख़िर 26 हिजरी में जंगे जमल के दौरान आप को एक तीर लगा और आप चौंसठ (64) बरस की उम्र में शहादत से सरफ़राज़ हुए। (अकमाल स़ 601, अशरए मुबश्शोरह स़ 245)

करामत

एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में: शहादत के बाद आप को बसरा के क़रीब दफ़न कर दिया गया मगर जिस मक़ाम पर आप की क़ब्र शरीफ़ बनी वह गढ़े में था। इस लिए क़ब्र मुबारक कभी कभी पानी में डूब जाती थी। आप ने एक शख़्स को बार बार ख़्वाब में आकर अपनी क़ब्र बदलने का हुक्म दिया। चुनान्चे उस शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से अपना ख़्वाब बयान किया तो आप ने दस हज़ार दिरहम में एक सहाबी का मकान ख़रीद कर उस में क़ब्र खोदी और हज़रत तलहा ﷺ की मुक़द्दस लाश को पुरानी क़ब्र में से निकाल कर उस क़ब्र में दफ़न कर दिया। काफ़ी मुद्दत गुज़र जाने के बावजूद आप का मुक़द्दस जिस्म सलामत और बिल्कुल ही तरो ताज़ा था। (किताब अशरए मुबश्शोरा स 245)

तबसेरा: ग़ौर फ़रमाइए कि कच्ची क़ब्र जो पानी में डूबी रहती थी एक मुद्दत गुज़र जाने के बावजूद एक वली और शहीद की लाश ख़राब नहीं हुई। जो हज़रात अंबिया ﷺ ख़ास कर हुज़ूर सैय्यदुल अंबिया ﷺ के मुक़द्दस जिस्म को क़ब्र की मिट्टी भला किस तरह ख़राब कर सकती है? यही वजह है कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया ان اللہ حرم علی الارض ان تاکل اجساد الانبیاء (मिश्कात स 121) (यअनी अल्लाह तआला ने अंबिया ﷺ के जिस्मों को ज़मीन पर हराम फ़रमा दिया है कि ज़मीन उन को कभी खा नहीं सकती।)

इसी तरह इस रिवायत से इस मस्ला पर भी रोशनी पड़ती है कि शोहदा-ए-किराम अपने जिन्दगी की जरूरतों के साथ अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं क्यों कि अगर वह ज़िन्दा न होते तो क़ब्र में पानी भर जाने से उन को क्या तकलीफ़ होती? उसी तरह इस

रिवायत से यह भी मालूम हुआ कि शुहदा-ए-किराम ख़्वाब में आकर जिन्दों को अपने हालात व कैफ़ियात से बा खबर करते रहते हैं। क्योंकि ख़ुदा तआला ने उन को यह कुदरत अता फ़रमाई है कि वह ख़्वाब या बेदारी में अपनी क़ब्रों से निकल कर ज़िन्दों से मुलाक़ात और बात कर सकते हैं। अब ग़ौर फ़रमाइए कि जब शहीदों का यह हाल है और उन की जिस्मानी ज़िन्दगी की यह शान है तो फिर हज़रात अंबिया-ए-किराम ﷺ ख़ास कर हुज़ूर सैय्यदुल अंबिया ﷺ की जिस्मानी जिन्दगी और उन का कब्ज़ा और उन के इख़्तियार व इक़्तदार का क्या आलम होगा?

ग़ौर फ़रमाइए कि वहाबियों के पेशवा मोलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी किताब तक़वियतुल ईमान में यह मज़मून लिख कर कि "हुज़ूरे अकरम ﷺ मर कर मिट्टी में मिल गए।" (नउज़ुबिल्लाह) कितना बड़ा जुर्म और बहुत बड़ा ज़ुल्म किया है। अल्लाहु अकबर! उन बे अदबों और गुस्ताख़ों ने अपने नोके क़लम से रसूल के आशिकों के दिलों को किस तरह मजरूह व ज़ख़्मी किया है उस को बयान करने के लिए हमारे पास अलफ़ाज़ नहीं हैं।

فالی اللہ المشتکی وھو عزیز ذوانتقام

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि.

यह हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की फूफी सफ़िया रज़ि. के बेटे हैं। इस लिए यह रिश्ता में शहंशाहे मदीना ﷺ के फूफी ज़ाद भाई और हज़रत सैय्यदा ख़दीजा रज़ि. के भतीजे और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. के दामाद हैं। यह भी अशरे मुबश्शेरा यअनी उन दस ख़ुश नसीब सहाबा-ए-किराम में से हैं जिन को हुज़ूरे अकरम ﷺ ने दुनिया ही में जन्नती होने की ख़ुशख़बरी सुनाई।

बहुत ही बलन्द क़ामत, गोरे और छरेरे बदन के आदमी थे और अपनी वालिदा माजिदा की बेहतरीन तरबियत की बदौलत बचपन ही से निडर, मेहनती, बलन्द हौसला और निहायत ही पक्के इरादे और

बहादुर थे। सोलह बरस की उम्र में उस वक़्त इस्लाम क़बूल किया जब कि अभी छ (6) या सात (7) आदमी ही इस्लाम लाए हुए थे। तमाम इस्लामी लड़ाइयों में अरब के बहादुरों के मक़ाबले में आप ने जिस मुजाहिदाना बहादुरी का मुज़ाहिरा किया तवारीख़े जंग में उस की मिसाल मिलनी मुश्किल है। आप जिस तरफ़ तलवार लेकर बढ़ते कुफ़्फ़ार के परे के परे काट कर रख देते।

आप को हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने जंगे ख़ंदक़ के दिन "हवारी" (मुख़्लिस व जाँ निसार दोस्त) का ख़िताब अता फ़रमाया। आप जंगे जुमल से बेज़ार होकर वापस तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अम्र बिन जरमोज़ ने आप को धोका दे कर शहीद कर दिया। शहादत के समय आप की उम्र शरीफ़ चौंसठ (64) बरस की थी। सन् 36 हिजरी में सफ़वान में आप की शहादत हुई।

पहले यह "वादी अलसबाअ" में दफ़न किए गए मगर फिर लोगों ने उन की मुक़द्दस लाश को क़ब्र से निकाला और पूरे इज़्ज़त व एहतेराम के साथ लाकर आप को शहर बसरा में सुपुर्दे ख़ाक किया जहाँ आप की क़ब्र शरीफ़ मश्हूर ज़ियारत गाह है।

(अकमाल स 595 वग़ैरा)

करामात

बा करामत बरछी: जंगे बद्र में सईद बिन आस का बेटा "उबैद" सर से पावों तक लोहे का लिबास पहने हुए कुफ़्फ़ार की जमाअत में से निकला और निहायत ही घमन्ड और ग़ुरूर से यह बोला कि ऐ मुसलमानो! सुन लो कि मैं "अबू करश" हूँ। उस की यह घमन्डी ललकार सुन कर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम رضی اللہ عنہ जोशे जिहाद में भरे हुए मुक़ाबले के लिए अपनी सफ़ से निकले मगर यह देखा कि उस की दोनों आँखों के सिवा उस के बदन का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जो लोहे में छुपा हुआ न हो। आप ने ताक कर उस की आँख में इस ज़ोर से बरछी मारी कि बरछी उस की आँख को छेदती हुई खोपड़ी की

हड्डी में चुभ गई और वह लड़खड़ा कर ज़मीन पर गिरा और फ़ौरन ही मर गया। हज़रत जुबैर ने जब उस की लाश पर पावों रख कर पुरी ताक़त से बरछी को खींचा तो बड़ी मुश्किल से बरछी निकली। लेकिन बरछी का सिरा मुड़ गया था। यह बरछी एक बाकरामत यादगार बन कर बरसों तक तबर्रुक बनी रही। हुज़ूरे अक़दस ने हज़रत ज़ुबैर से यह बरछी तलब फ़रमाई और उस को अपने पास रखा। फिर आप के बाद ख़ुलफ़ा-ए- राशदीन के पास यके बाद दीगरे जाती रही और यह हज़रात इज़्ज़त व इहतेराम के साथ उस बरछी की ख़ास हिफ़ाज़त फ़रमाते रहे। फिर हज़रत जुबैर के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के पास आगई यहाँ तक कि सन 73 हिजरी में जब बनू उमैया के ज़ालिम गवर्नर हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने उन को शहीद कर दिया तो यह बरछी बनू उमैया के क़बज़ा में चली गई। फिर उस के बाद ला पता हो गई।

(बुख़ारी शरीफ़ ज़ि 2, स 570 ग़ज़्व-ए-बद्र)

तबसेराः बुख़ारी शरीफ़ की यह हदीसे पाक हर मुसलमान दीनदार को झंझोड़ कर खबर दार कर रही है कि बुज़ुर्गाने दीन व उलमा-ए-सालहीन की छड़ी, क़लम, तलवार, तसबीह, लिबास, बरतन आदि सामानों को याद गार के तौर पर बतौर तबर्रुक अपने पास रखना हुज़ूरे अक़दस और ख़ुलफ़ा-ए-राशदीन की मुक़द्दस सुन्नत है। ग़ौर फ़रमाइए कि हज़रत ज़ुबैर की बरछी को तबर्रुक बना कर रखने में हुज़ूरे अकरम और आप के ख़ुलफ़ा-ए-राशदीन ने किस क़दर एहतेमाम किया और किस किस तरह इस बरछी का एज़ाज़ व इकराम किया।

बद अक़ीदा लोग जो बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात और उन की ज़्यारतों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं और अहले सुन्नत को तअना दिया करते हैं कि यह लोग बुज़ुर्गों की लाठियों, तलवारों, क़लमों का इकराम व एहतराम करते हैं। यह हदीस उन की आँखें खोल देने के लिए हिदायत की छड़ी से कम नहीं बशर्ते यह कि उन की

आँखें फूट न गई हों।

फ़तहे फुसतात: मिस्र की जंग में हज़रत अम्र बिन आस رضي الله عنه अपने लश्कर के साथ फुसतात के क़िला का कई महीना से घेराव किए हुए थे लेकिन उस मज़बूत क़िला को फतह करने का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। आप ने दरबारे ख़िलाफ़त में कुछ और फौज़ों से इमदाद के लिए दरख़्वास्त भेजी। अमीरूल मोमिनीन हज़रत फ़ारूके अअ्ज़म رضي الله عنه ने दस हज़ार मुजाहिदीन और चार अफसरों को भेज कर यह तहरीर फ़रमाया कि उन चार अफ़सरों में हर अफ़सर दस हज़ार सिपाही के बराबर हैं। उन चार अफ़सरों में हज़रत जुबैर رضي الله عنه भी थे।

हज़रत अमर बिन आस رضي الله عنه ने हज़रत जुबैर رضي الله عنه को हमला आवर घेराव करने वालों की फौज का कमान्डर बना दिया। हज़रत जुबैर رضي الله عنه ने क़िला का चक्कर लगा कर अन्दाज़ा फ़रमा लिया कि इस क़िला को फ़तह करना बहुत ही दुश्वार है। लेकिन आप ने अपने फौजी दस्ते को मुख़ातब करके फ़रमाया कि ऐ बहादुराने इस्लाम! देखो मैं आज अपनी हस्ती को इस्लाम पर फिदा और कुरबान करता हूँ। यह कह कर आप ने बिल्कुल अकेले क़िला की दीवार पर सीढ़ी लगाई और तनहा क़िला के ऊपर चढ़ कर "अल्लाहु अकबर" का नअरा मारा और एक दम फ़सील के नीचे क़िला के अन्दर कूद कर अकेले ही क़िला की अन्दरूनी फौज से लड़ते हुए किला का फाटक खोल दिया और इस्लामी फौज नअरए तकबीर बलन्द करते हुए क़िला के अन्दर दाख़िल हो गई और एक ही लम्हे में क़िला फ़तह हो गया।

इस मज़बूत व पक्का किला को जिस बे मिसाल हिम्मत और बहादुरी से मिनटों में फतह कर लिया। उस को तारीखे जंग में करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अमीरे लशकर हज़रते अम्र बिन आस رضي الله عنه अन्हु भी उस करामत को देखकर दंग रह गए। क्योंकि वह कई माह से उस किला का घेराव किये हुए थे। मगर बावजूद अपनी जंगी महारत और आला दर्जे की कोशिशों के वह उस किला को फतह नहीं कर सकते थे। **(किताब अशरए मुबश्शरह सफा 224)**

हज़रत ज़ुबैर की शकल में हज़रत जिब्राईल: हुज़ूरे अकरम ने फ़रमाया कि जंगे बद्र के दिन हज़रत जिब्रईल पीले रंग का अमामा बांधे हुए हज़रत ज़ुबैर की शकल व सूरत में फ़रिश्तों की फौज लेकर उतरे थे। (कन्ज़ुल उम्माल ज़ि 12 स 127 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़

यह भी अशरए मुबश्शेरा यअनी दस जन्नती सहाबा की फेहरिस्त में हैं। हुज़ूरे अक़्दस की विलादते मुबारका से दस साल बाद ख़ानदाने कुरैश में पैदा हुए। शुरूआती तअ्लीम व तरबियत इसी तरह हुई जिस तरह सरदाराने कुरैश के बच्चों की हुआ करती थी। उन के इस्लाम लाने का सबब यह हुआ कि यमन के एक बुढ़े ईसाई पादरी ने उन को नबी आख़िरूज़्ज़माँ के ज़हूर की ख़बर दी और यह बताया कि वह मक्का में पैदा होंगे और मदीना मुनव्वरा को हिजरत करेंगे। जब यह यमन से लौट कर मक्का मुकर्रमा आए तो अबू बकर सिद्दीक़ ने उन को इस्लाम लाने को कहा। चुनान्चे एक दिन उन्हों ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर होकर इस्लाम क़बूल कर लिया। जब कि आप से पहले थोड़े ही आदमी इस्लाम लाए थे। चूँकि मुसलमान होते ही आप के घर वालों ने आप पर ज़ुल्म व सितम का पहाड़ तोड़ना शुरू कर दिया। इस लिए हिजरत करके हबशा चले गए। फिर हबशा से मक्का मुकर्रमा वापस आए और अपना सारा माल व सामान छोड़ कर बिल्कुल ख़ाली हाथ हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चले गए। मदीना मुनव्वरा पहुँच कर आप ने बाज़ार का रूख़ किया। चन्द ही दिनों में आप की तिजारत में इस क़दर ख़ैरो बरकत हुई कि आप का शुमार दौलत मन्दों में होने लगा और आप ने क़बीलए अन्सार की एक ख़ातून से शादी भी कर ली।

तमाम इस्लामी लड़ाइयों में आप ने जान व माल के साथ शिरकत की। जंगे उहुद में यह ऐसी जाँ बाज़ी और सर फ़रोशी के साथ लड़े कि उन के बदन पर इक्कईस (21) ज़ख़्म लगे थे और उन के पैरों में

भी एक गहरा ज़ख़्म लग गया था। जिस की वजह से लंगड़ा कर चलते थे। आप की सख़ावत का यह आलम था कि एक मर्तबा आप का तिजारती क़ाफ़िला जो सात सो (700) ऊँटों पर मुश्तमिल था। आप ने अपना यह पूरा क़ाफ़िला ऊँटों और उन पर लदे हुए सामानों के साथ ख़ुदा की राह में ख़ैरात कर दिया।

एक मर्तबा हुज़ूरे अकरम ﷺ ने अपने सहाबा को सदक़ा देने की तरग़ीब दी। तो आप ने चार हज़ार दिरहम पेश कर दिए। दूसरी मर्तबा चालीस हज़ार दिरहम और तीसरी मर्तबा पाँच सौ घोड़े और पाँच सौ ऊँट पेश कर दिए। बवक़्ते वफ़ात एक हज़ार घोड़े और पच्चास हज़ार दीनारों का सदक़ा किया और जंगे बद्र में शरीक होने वाले सहाबा-ए-किराम के लिए चार चार सौ दीनार की वसियत फ़रमाई और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा ﷺ और दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए एक बाग़ की वसियत की जो चालीस हज़ार दिरहम की मालियत का था। (मिश्कात ज़ि 2, स 567)

32 हिजरी में कुछ दिनों बीमार रह कर बहत्तर (72) साल की उम्र में विसाल फ़रमाया और मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न हुए और हमेशा के लिए सख़ावत व बहादुरी का यह सूरज डुब गया। (अश्रए **मुबश्शेरा स 229 ता 235 व अकमाल स़ 603 व कन्जुल उम्माल ज़ि 15 स 204**)

करामात

यूँ तो आप की मुक़द्दस ज़िन्दगी पुरी करामत ही करामत थी मगर हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ की ख़िलाफ़त का मस्ला आप ने जिस तरह तैय फ़रमाया वह आप की बातिनी फ़रासत (समझ)और ख़ुदा दाद करामत का एक बड़ा ही अनमोल नमूना है।

हज़रत उस्मान ﷺ की ख़िलाफ़त: अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ ने वफ़ात के वक़्त छः जन्नती सहाबा हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत सअद बिन अबी वक़ास, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम,

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ का नाम लेकर यह वसियत फ़रमाई कि मेरे बाद इन छः शख़्सों में से जिस पर इत्तेफाक़ हो जाए उस को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया जाए और तीन दिन के अन्दर खिलाफ़त का मस्ला ज़रूर तैय कर दिया जाए और इन तीन दिनों तक हज़रत सुहैब ﷺ मस्जिदे नबवी में इमामत करते रहेंगे। इस वसियत के मुताबिक़ यह छः हज़रात एक मकान में जमा हो कर दो दिन तक राय करते रहे। मगर यह मजलिसे शोरा किसी नतीजा पर न पहुँची। तीसरे दिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ ने फ़रमाया कि तुम लोग जानते हो कि आज खलीफ़ा मुकर्रर करने का तीसरा दिन है। इस लिए तुम लोग आज अपने में से किसी को ख़लीफ़ा चुन लो। हाज़िरीन ने कहा कि ऐ अब्दुर्रहमान! हम लोग तो इस मस्ला को हल नहीं कर सकते। अगर आप के ज़हन में कोई राय हो तो पेश कीजीए। आप ने फ़रमाया कि छः आदमियों की यह जमाअत कुरबानी से काम ले और तीन आदमियों के हक़ में अपने अपने हक़ को छोड़ दे। यह सुन कर हज़रत जुबैर ﷺ ने ऐलान फ़रमाया कि मैं हज़रत अली ﷺ के हक़ में अपने हक़ से हट जाता हूँ। फिर हज़रत तलहा ﷺ हज़रत उस्मान ﷺ के हक में अपने हक को छोड़ दिया। आख़िर में हज़रत सअद ﷺ ने फ़रमाया कि मैं ने हज़रत अब्दुर्रहमान ﷺ को अपना हक़ दे दिया। अब हज़रत अब्दुर्रहमान ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ उस्मान व अली! मैं तुम दोनों को यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं हरगिज़ हरगिज़ ख़लीफ़ा नहीं बनूँगा। अब तुम दो ही उम्मीदवार रह गए हो। इस लिए तुम दोनों ख़लीफा के चुनाव का हक़ मुझे दे दो। हज़रत उस्मान व हज़रत अली ﷺ ने खलीफ़ा का चुनावी मस्ला खुशी ख़ुशी हज़रत अब्दुर्रहमान ﷺ के सुपुर्द कर दिया। इस बात चीत के मुकम्मल हो जाने के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान ﷺ मकान से बाहर निकल आए और पुरे शहरे मदीना में छुपके छुपके चक्कर लगा करके उन दोनों उमीदवारों के बारे में आम लोगों की राय मालूम करते रहे। फिर दोनों उम्मीदवारों से अलग अलग तन्हाई में यह वादा ले लिया कि अगर मैं

तुम को खलीफ़ा बना दूँ तो तुम इन्साफ करोगे। और अगर दूसरे को ख़लीफ़ा मुकर्रर कर दूँ तो तुम उस की फरमां बरदारी करोगे। जब दोनों उम्मीदवारों से यह वादा ले लिया तो फिर आप ने मस्जिदे नबवी में आकर यह ऐलान फ़रमाया कि ऐ लोगो! मैं ने ख़िलाफ़त के मआमले में खुद भी काफ़ी ग़ौर व खौज़ किया और इस मामले में अन्सार व मुहाजिरीन की आम राय भी मालूम कर ली है चूंकि राए आम्मा हज़रत उस्मान رضي الله عنه के हक़ में ज़्यादा है इस लिए मैं हज़रत उस्मान رضي الله عنه को ख़लीफ़ा चुनता हूँ। यह कह कर सब से पहले ख़ूद आप ने हज़रत उस्मान رضي الله عنه की बैअ़त की और आप के बाद हज़रत अली और दूसरे सब सहाबा-ए -किराम رضي الله عنهم ने बैअत कर ली। इस तरह खिलाफ़त का मस्ला बेग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ व बिखराव के तैय होगया। जो बिला शुब्हा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه की बहुत बड़ी करामत है। **(अशरए मुबश्शेरा स 231, ता 234 व बुख़ारी जिल्द नं०-1, सफा नं०- 524 मुनाक़िबे उस्मान)**

जन्नत में जाने वाला पहला मालदार: हुजूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया (اَوَّلُ مَنْ يَّدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ اَغْنِيَاءِ اُمَّتِىْ عَبْدُالرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ) मेरी उम्मत के मालदारों में सब से पहले अब्दर्रहमान बिन औफ जन्नत में दाख़िल होंगे। **(कन्जुल अमाल जिल्द 12, सफा 293)**

माँ के पेट ही से नेक: हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान رضي الله عنه का बयान है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه एक मर्तबा बेहोश होगए और कुछ देर बाद जब वह होश में आए तो फ़रमाया कि अभी अभी मेरे पास दो बहुत ही खौफ़नाक फ़रिश्ते आए और मुझ से कहा कि उस ख़ुदा के दरबार में चलो जो प्यारा व अमीन है। इतने में एक दूसरा फ़रिश्ता आगया और उस ने कहा कि उन को छोड़ दो। यह तो जब अपनी माँ के पेट में थे उसी वक़्त से नेक बख्ती आगे बढ़ कर उन से मिल चुकी है। **(कन्जुल अमाल जि 15, स 203, मतबूआ हैदराबाद)**

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास

उन की कुन्नियत अबू इसहाक़ है और खा़नदाने कुरैश के एक बहुत ही नामवर शख़्स हैं जो मक्का मुकर्रमा के रहने वाले हैं। यह उन खुश नसीबों में से एक हैं जिन को नबी अकरम ने जन्नत की खुशखबरी दी। यह शुरू इस्लाम ही में जब कि अभी उन की उम्र 17 बरस की थी। दामने इस्लाम में आ गए और हुजूर नबी अकरम के साथ साथ तमाम लड़ाईयों में हाज़िर रहे। यह खु़द फ़रमाया करते थे कि मैं वह पहला शख़्स हूँ जिस ने अल्लाह तआला की राह में कुफ़्फ़ार पर तीर चलाया। और हम लोगों ने हुजूर के साथ रह कर इस हाल में जिहाद किया कि हम लोगों के पास सिवाए बबूल के पत्तों और बबूल की फल्लियों के कोई खाने की चीज़ न थी। (मिश्कात जि 2, स 567)

हुजूरे अक़दस ने खा़स तौर पर उन के लिए यह दुआ फ़रमाई। "اللهم سدد سهمه واجب دعوته"

तर्जमा: (ऐ अल्लाह उन के तीर के निशाने को दुरूस्त फ़रमा दे और उन की दुआ को क़बूल फ़रमा)

खिलाफ़ते राशिदा के ज़माने में भी यह फ़ारस और रूम के जिहादों में कमान्डर रहे। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ने अपने दौरे खिलाफ़त में उन को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया। फिर उस उहदा से हटा दिया। और यह बराबर जिहादों में कुफ़्फ़ार से कभी सिपाही बन कर और कभी इस्लामी लश्कर के कमान्डर बन कर लड़ते रहे। जब उस्मान ग़नी अमीरूल मोमिनीन हुए तो उन्हों ने दोबारा उन को कूफ़ा का गवर्नर बना दिया। यह मदीना मुनव्वरा के क़रीब मक़ामे "अतीक़" में अपना एक घर बना कर उस में रहते थे। और 55 हिजरी में जब कि उन की उम्र शरीफ़ पचहत्तर (75) बरस की थी उसी मकान के अन्दर विसाल फ़रमाया। आप ने वफ़ात से पहले यह वसियत फ़रमाई थी कि मेरा ऊन का वह पुराना जुब्बा

ज़रूर पहनाया जाए जिस को पहन कर मैं ने जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार से जिहाद किया था। चुनान्चे वह जुब्बा आप के कफ़न में शामिल किया गया। लोग पुरी अक़ीदत से आप के जनाज़े को कंधों पर उठा कर मक़ामे "अतीक़" से मदीना मुनव्वरा लाए और हाकिमे मदीना मरवान बिन हकम ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बकीअ में आप की क़ब्र मुनव्वर बनाई।

"अशरए मुबश्शेरा" यअनी जन्नत की ख़ुशख़बरी पाने वाले दस सहाबियों में से यही सब से आख़िर में दुनिया से तशरीफ़ ले गए और उन के बाद दुनिया अशरए मुबश्शेरा के ज़ाहिरी वजूद से ख़ाली हो गई। मगर ज़माना उन की बरकात से हमेशा हमेशा फ़ैज़ पाता रहेगा।

(अकमाल फी असमाईर्रिजाल व तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ जिल्द नं०1, सफा नं०-22 वग़ैरा)

करामात

आप की करामतों में से चन्द करामात निम्नलिखित हैं।

बदनसीब बूढ़ा: हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि कूफ़ा के कुछ लोग हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ की शिकायात लेकर अमीरूल मोमिनीन हज़रत फ़ारूक़े अअ्ज़म ﷺ के दरबारे ख़िलाफ़त में मदीना मुनव्वरा में पहुँचे हज़रत अमीरूल मोमिनीन ने उन शिकायात की तहक़ीक़ात के लिए चन्द भरोसेमन्द सहाबियों को हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ के पास कूफ़ा भेजा और यह हुक्म फ़रमाया कि कूफ़ा शहर की हर मस्जिद के नमाज़ियों से नमाज़ के बाद यह पूछा जाए कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ कैसे आदमी हैं? चुनान्चे तहक़ीक़ात करने वालों की इस जमाअत ने जिन जिन मस्जिदों में नमाज़ियों की क़सम दे कर हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ के बारे में दरयाफ़्त किया तो तमाम मस्जिदों के नमाज़ियों ने उन के बारे में अच्छा कहा और तअ्रीफ की। मगर एक मस्जिद में सिर्फ एक आदमी जिस का नाम **"अबू सअदा"** था। उस ने हज़रत सअद बिन अबी

वक्कास ﷺ की तीन शिकायात पेश कीं और कहा لا يقسم بالسوية ولا يسير بالسرية ولا يعدل فى القضية (यअनी यह माले ग़नीमत बराबरी के साथ तक्सीम नहीं करते और ख़ुद लश्करों के साथ जिहाद में नहीं जाते और मुक़द्दमात के फ़ैसलों में इन्साफ नहीं करते)

यह सुन कर हज़रत सअ्द बिन अबी वक्कास ﷺ ने फ़ौरन ही यह दुआ मांगी! ऐ अल्लाह! अगर यह शख़्स झूठा है तो उस की उम्र लम्बी कर दे और उस की गरीबी को बढ़ा दे। उस को फ़ितनों में मुब्तला करदे। अब्दुल मलिक बिन उमैर ताबई का बयान है कि इस दुआ का मैंने यह असर देखा कि "अबू सअ्दा" इस क़दर बूढ़ा हो चुका था कि बूढ़ापे की वजह से उस की दोनों भवें उस की दोनों आँखों पर लटक पड़ी थीं और वह दर बदर भीक मांग मांग कर बहुत फ़क़ीरी और मुहताजी की ज़िन्दगी बसर करता था। और इस बुढ़ापे में भी वह राह चलती हुई जवान लड़कियों को छेड़ता था। और उन के बदन में चुटकियाँ भरता रहता था और जब कोई उस से उस का हाल पुछता था तो वह कहा करता था कि मैं क्या बताऊँ? मैं एक बूढ़ा हूँ जो फ़ितनों में मुब्तेला हूँ क्योंकि मुझ को हज़रत सअद बिन अबी वक्कास ﷺ की बद दुआ लग गई है। (हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जिल्द-2, सफा-860 बहवाला बुख़ारी व मुस्लिम व बैहक़ी)

दुश्मने सहाबा का अनजाम: एक शख़्स हज़रत सअद बिन अबी वक्कास ﷺ के सामने सहाबा-ए-किराम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी के अलफ़ाज़ बकने लगा। आप ने फ़रमाया कि तुम अपनी इस ख़बीस हरकत से बाज़ रहो वरना मैं तुम्हारे लिए बद दुआ कर दूँगा। इस गुस्ताख़ व बे बाक ने कह दिया कि मुझे आप की बद दुआ की कोई परवा नहीं। आप की बद दुआ से मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ सकता। यह सुन कर आप को जलाल आगया और आप ने उसी वक़्त यह दुआ मांगी कि या अल्लाह! अगर इस शख़्स ने तेरे प्यारे नबी के प्यारे सहाबियों की तौहीन की है तो आज ही उस को अपने क़हरो ग़ज़ब की निशानी देखा दे ताकि दूसरों को उस से सबक हासिल हो।

इस दुआ के बाद जैसे ही वह शख़्स मस्जिद से बाहर निकला तो बिल्कुल ही अचानक एक पागल ऊँट कहीं से दोड़ता हुआ आया और उस को दाँतों से पछाड़ दिया और उस के ऊपर बैठ कर उस को इस क़दर ज़ोर से दबाया कि उस की पिसलियों की हड्डियाँ चूर चूर हो गईं और वह फ़ौरन ही मर गया। यह मंज़र देख कर लोग दौड़ दौड़ कर हज़रत सअद ﷺ को मुबारक बाद देने लगे कि आप की दुआ मक़्बूल हो गई और सहाबा का दुश्मन हलाक हो गया। (दलाइलुन्नबुवा जि 3, स 207, व हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि 2, स 866)

गुस्ताख़ की ज़बान कट गई: जंगे क़ादसिया में हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ इस्लामी लश्करों के कमान्डर थे लेकिन आप ज़ख़्मों से निढाल थे। इस लिए मैदाने जंग में निकल कर जंग नहीं कर सके। बल्कि सीने के नीचे एक तकिया रख कर और पेट के बल लेट कर फौजों की कमान करते रहे। बड़ी खूँरेज़ और घमसान की जंग के बाद जब मुसलमानों को जीत मिल गई तो एक मुसलमान सिपाही ने यह गुस्ताख़ी और बे अदबी की कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ पर कमेन्ट करते हुए उन की शान में बुराई और बे अदबी के अशआर लिख डाले जो यह हैं।

نقاتل حتى ينزل الله نصره وسعد بباب القادسيه معصم

तर्जमा:- हम लोग जंग करते हैं यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपनी मदद नाज़िल फ़रमा देता है और हज़रत सअद ﷺ का यह हाल है कि वह क़ादसिया के फाटक पर महफ़ूज़ होकर बैठे ही रहते हैं।)

فابنا وقد امت نساء كثيرة ونسوة سعد ليس فيهن ايم

तर्जमा:- हम जब जंग से वापस आए तो बहुत सी औरतें बेवा हो चुकी थीं लेकिन सअद की कोई बीवी भी बेवा नहीं हुई)

इस दिल ख़राश बुराई से हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ के दिले नाज़ुक पर बड़ी ज़बरदस्त चोट लगी और आप ने इस तरह दुआ मांगी कि या अल्लाह! उस शख़्स की ज़बान और हाथ को मेरी बुराई करने से रोक दे। आप की ज़बान से उन कलमात का निकलना

था कि यकायक किसी ने उस गुस्ताख़ सिपाही को इस तरह तीर मारा कि उस की ज़बान कट कर गिर पड़ी और उस का हाथ भी कट गया और वह शख़्स एक लफ़्ज भी न बोल सका और उस का दम निकल गया। (दलाइलुन्नबुवा जिल्द 3, स 207, अल बदाया वन्नेहाया, जिल्द7, स 45)

चेहरा पीठ की तरफ़ हो गया: एक औरत की यह बुरी आदत थी कि वह हमेशा हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्कास رضی اللہ عنہ के मकान में झांक झांक कर आप के घरेलू हालात की ताक झांक किया करती थी। आप ने बार बार उस को समझाया और मना किया। मगर वह किसी तरह रूकी नहीं। यहाँ तक कि एक दिन निहायत जलाल में आप की ज़बाने मुबारक से यह अलफ़ाज़ निकल पड़े कि "तेरा चेहरा बिगड़ जाए" इन अलफ़ाज़ों का यह असर हुआ कि उस औरत की गर्दन घुम गई और उस का चेहरा पीठ की तरफ़ हो गया। **(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जिल्द 2, सफा 866, बहवाला इब्ने असाकिर)**

एक ख़ारजी की हलाकत: एक गुस्ताख़ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ को गाली दी। हज़रत सअद बिन अबी वक़्कास رضی اللہ عنہ यह सुन कर रन्ज व ग़म में डूब गए और जोश में आ कर यह बद दुआ कर दी कि "या अल्लाह! अगर यह तेरे औलिया में से एक वली को गालियाँ दे रहा है तो उस मजलिस के खत्म होने से पहले ही उस शख़्स को अपना क़हर व ग़ज़ब दिखा दे।"

आप की ज़बाने अक़्दस से इस दुआ का निकलना था कि उस मर्दूद का घोड़ा बिदक गया और वह पत्थरों के ढेर में मुंह के बल गिर पड़ा और उस का सर टुकड़े टुकड़े हो गया। जिस से वह हलाक हो गया। **(हुज्जतुल्लाह अललआलमीन जि 2,स 866 बहावाला हाकिम)**

तबसेरा: हज़रत सअद बिन अबी वक़्कास رضی اللہ عنہ की ऊपर ब्यान की गई इन पांच करामतों से हम को दो सबक़ मिलते हैं।

पहला: खुदा के प्यारे अंबिया व सिद्दीक़ीन और शुहदा-ए-किराम व सालेहीन की शान में अदना दर्जे की बद दुआएं बहुत ही ख़तरनाक और हलाकत वाली हैं। उन बुजुर्गों की बद दुआ और फटकार और

उन की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी क़हरे इलाही का सिगनल है। उन ख़ुदा के मुक़द्दस और महबूब बन्दों की ज़रा सी भी बे अदबी को ख़ुदावन्दे कुद्दूस की शाने क़हहारी व जब्बारी मआफ़ नहीं फ़रमाती। बल्कि ज़रूर उन गुस्ताख़ों को दोनों जहाँ के अज़ाब में गिरफ़्तार कर देती है।

दुसराः यह कि अल्लाह तआला के प्यारे बन्दों, उलमा औलिया और तमाम सालेहीन की बद दुआएं बहुत ही ख़तरनाक और हलाकत आफ़रीं बलाएं हैं। उन बुज़ुर्गों की बद दुआ और फटकार वह तलवार है जिस की कोई ढाल नहीं और यह तबाही व बरबादी का वह ज़हरीला तीर है जिस का निशाना कभी गलती नहीं करता। इसलिए हर मुसलमान पर ज़रूरी है कि ज़िन्दगी भर हर क़दम पर यह ध्यान रखे कि कभी भी अल्लाह तआला के नेक बन्दों की शान में ज़र्रा भर भी बे अदबी न होने पाए और बुज़ुर्गाने दीन में से किसी की भी बद दुआ न ले बल्कि हमेशा इस कोशिश में लगा रहे कि ख़ुदा के नेक बन्दों की दुआएं मिलती रहें। क्योंकि नेक बन्दों की बद दुआएं बरबादी का ख़ौफ़नाक सिगनल और उन की दुआएं आबादी का मीठा फल हैं।

साठ हज़ार का लश्कर दरिया मेंः जंगे फारस में हज़रत सअद बिन अबी वक़ास رضی اللہ عنہ इस्लामी लश्कर के कमान्डर थे। रास्ते में दरियाए दजला को पार करने की ज़रूरत पेश आ गई और कश्तियाँ मौजूद नहीं थीं। आप ने लश्कर को दरिया में उतर जाने का हुक्म दिया और ख़ुद सब से आगे आगे आप यह दुआ पढ़ते हुए दरिया पर चलने लगे

نستعين بالله و نتو كل عليه وحسبنا الله و نعم الوكيل ولا حول و لا قوة الا بالله العلى العظيم लोग आपस में बिला झिझक एक दूसरे से बातें करते हुए घोड़ों पर सवार, ऊँटों वाले ऊँटों पर सवार, पैदल चलने वाले पैदल, अपने अपने सामानों के साथ दरिया पर इस तरह चलने लगे जिस तरह मैदानों में क़ाफ़िले गुज़रते रहते हैं। उस्मान नहदी ताबई का बयान है कि उस मौक़अ पर एक सहाबी का पयाला दरिया में गिर पड़ा, तो दरिया की मौजों ने उस प्याला को किनारे पर पहुँचा दिया और उन को उन का प्याला मिल गया। इस लश्कर की तअदाद साठ

हज़ार पैदल और सवार की थी।

(दलाइलुन्नबुवा जि3, स 209 तबरी जि 4, स171)

तबसेरा: यह रिवायत इस बात की दलील है कि दरिया भी औलिया अल्लाह के हुक्मों का फ़रमाँ बरदार है और उन अल्लाह वालों की हुकूमत ख़ुदावन्दे कुद्दूस की अता से जिस तरह सूखी ज़मीन पर है इसी तरह दरियाओं पर भी उन की हुकूमत का सिक्का चलता है। काश वह बद अक़ीदा लोग जो औलिया-ए-किराम के अदब व एहतेराम से महरूम और उन बुज़ुर्गों की ख़ुदा दाद ताक़तों और उन के पावर के न मानने वाले हैं। उन रिवायात को बग़ौर पढ़ते और उन रोशनी के मीनारों से हिदायत का नूर हासिल करते ।

डॉक्टर मुहम्मद इक़बाल अलैहिर्रहमा ने हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु की इसी करामत की तरफ़ इशारा करते हुए अपनी नज़्म में यह शेअर लिखा है:-

दश्त तो दश्त हैं दरिया भी न छोड़े हम ने
बहरे ज़ुलमात में दौड़ा दिए घेडे हम ने

नअ्र-ए-तकबीर से ज़लज़ला: जंगे क़ादसिया में जीत हासिल हो जाने के बाद हज़रत सअद बिन अबी वक़ास رضی اللہ عنہ ने "हम्स" पर चढ़ाई की। यह रूमियों का बहुत ही मज़बूत क़िला था। क़ैसरे रूम ने उस शहर की हिफ़ाज़त के लिए एक बहुत ही ज़बरदस्त फौज भेजी थी मगर जब हज़रत सअद बिन अबी वक़ास رضی اللہ عنہ उस शहर के क़रीब पहुँचे तो आप ने लश्कर को हुक्म फ़रमाया (لا الہ الا اللہ واللہ اکبر) लाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर का बलन्द आवाज़ से नअरा मारें,चुनान्चे जब पूरी फौज ने एक साथ नअ्रा मारा तो उस शहर में एक ज़ोर का ज़लज़ला आ गया कि तमाम ईमारतें हिलने लगीं। फिर दूसरी मर्तबा नअरा मारा तो क़िला और शहर की दीवारें गिरने लगीं और रूमी फ़ौज पर ऐसी दहशत तारी हो गई कि वह हथियार भी न उठा सकी। बल्कि एक भारी भरकम रक़म बतौर टेक्स के दे कर रूमियों ने मुसलमानों से सुलह कर ली। (इज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद 2, सफा 59)

तबसेराः कलमए तैयबा और तकबीर का नअरा हर शख़्स लगा सकता है मगर तजरबा यह है कि अगर इस ज़माने के लाखों मुसलमान भी एक साथ मिल कर यह नअरा मारें तो घास का एक पत्ता और भूस का एक तिनका भी नहीं हिल सकता। मगर सहाबा-ए-किराम के उस नअरा से पत्थारों की चटानों से बने हुए महल्लात और क़िला चकना चूर हो कर ज़मीन पर बिखर गए। इस से मालूम हुआ कि अगरचे कलमए तकबीर के अलफ़ाज़ व मआनी मे तो ज़र्रा बराबर भी फ़र्क़ नहीं है लेकिन अल्लाह वालों की ज़बानों, आवाज़ों और लेहजों में और हमारी ज़बानों, आवाज़ों और लेहजों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। कहाँ वह अल्लाह के नेक और पाक बाज़ बन्दे? और कहाँ हम दिलों के मैले और ज़बानों के गंदे? इस से पता चलता है कि एक ही आयत, एक ही दुआ, एक अल्लाह वाला पढ़ दे तो उस का असर कुछ और होता है और गुनाहों वाला पढ़ दे तो उस की तासीर कुछ और होती है। डॉक्टर मुहम्मद इक़बाल अलैहिर्रहमा ने उसी मज़मून की तरफ़ इशारा करते हुए क्या ख़ूब कहा हैः-

परवाज़ है दोनों की उसी एक फज़ा में
करगस का जहाँ और है शाहीन का जहाँ और
अलफ़ाज़ व मआनी में तफ़ाउत नहीं लेकिन
मुल्ला की अज़ाँ और मुजाहिद की अज़ाँ और

(बाले जिब्रील)

बहर हाल इस नुक्ता से हरगिज़ हरगिज़ ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिए कि औलिया-ए-किराम और आम इन्सानों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है, जो लोग सिर्फ़ पांच वक़्त नमाज़ पढ़ कर औलिया-ए-किराम के साथ बराबरी का दअवा करते फिरते हैं ख़ुदा की क़सम यह लोग गुमराही के इतने गहरे और इस क़दर अंधेरे गड्ढ़े में गिर पड़े हैं कि उन्हें न तो तौफ़ीक़े इलाही की सीढ़ी मिल सकती है न वहाँ तक आफताबे हिदायत की रोशनी पहुँच सकती है। ख़ुदावन्दे करीम उन गुमराहों के कुर्ब और उन के मकरो फ़रेब के काले जादू से हर मुसलमान को महफूज रखे। आमीन

उम्र दराज़ (लम्बी उम्र) हो गईः एक शख़्स निहायत ही ख़तरनाक और जान लेवा बीमारी में मुबतला होकर अपनी ज़िन्दगी से ना उम्मीद हो चुका था। वह हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होगया और रो रो कर फ़रियाद करने लगा ऐ सहाबीए रसूल मेरे बच्चे अभी बहुत ही छोटे छोटे हैं। मेरे मरने के बाद उन की परवरिश करने वाला मुझे कोई नज़र नहीं आता, इसलिए आप यह दुआ कर दीजिए कि उन बच्चों के बालिग़ होने तक ज़िन्दा रहूँ। आप को उस मरीज़ के हाले ज़ार पर रहम आगया और आप ने उस की तन्दुरूस्ती और सलामती के लिए दुआ कर दी, तो वह शख़्स शिफ़ायाब होगया और बीस बरस तक ज़िन्दा रहा, हालाँकि किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि वह इस बीमारी से बच कर ज़िन्दा रह सकेगा। **(हुज्जतुल्लाह अललआलमीन जि2,स866 बहवाला बेहक़ी)**

तबसेराः हज़रत सअद बिन अबी वक़ास ﷺ की इन करामतों में आप ने उन की बद दुआओं का नतीजा भी देख लिया और उन की दुआओं का जलवा भी देख लिया, इस लिए उस से सबक़ हासिल कीजिए और हमेशा अल्लाह वालों की बद दुआओं से बचते रहिए। और उन बुज़ुर्गों से हमेशा नेक दुआओं की भीक मांगते रहिइए। अगर आप का यह अमल रहा, तो इन्शाअल्लाह तआला ज़िन्दगी भर आप सआदत और ख़ुश बख़्ती के बादशाह बने रहेंगे। वल्लाहु तआला अअ्लम! (واللہ تعالیٰ اعلم)

हज़रत सईद बिन ज़ैद ﷺ

यह भी अशरए मुबश्शेरा यअनी उन दस सहाबियों में से हैं जिन को रसूले अकरम ﷺ ने जन्नती होने की ख़ुशख़बरी सुनाई है। यह ख़ानदाने कुरेश में से हैं। और ज़माने जाहिलियत के मश्हूर मोवहहीद (एक ख़ुदा को मानने वाला) ज़ैद बिन अम्र बिन नफ़ील के बेटे और अमीरूल मोमिनीन हज़रत फ़ारूक़े अअ्ज़म ﷺ के बहनोई हैं। यह जब मुसलमान हुए उन को हज़रत उमर ﷺ ने रस्सी से बांध कर मारा

और उन के घर में जाकर उन को और अपनी बहन फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब को भी मारा मगर यह दोनों इस्तक़ामत का पहाड़ बन कर इस्लाम पर जमे रहे। जंगे बद्र में उन को और हज़रत तलहा को हुज़ूरे अकरम ने अबू सुफ़यान के क़ाफ़िला का पता लगाने के लिए भेज दिया था। इस लिए जंगे बद्र के लड़ाई में हिस्सा न ले सके। मगर उस के बाद की तमाम लड़ाइयों में यह डट कर कुफ़्फ़ार से हमेशा जंग करते रहे। गन्दुमी रंग बहुत ही लम्बा क़द, ख़ूबसूरत और बहादुर जवान थे। तक़रीबन 50 हिजरी में सत्तर बरस की उम्र पाकर मक़ामे ''अतीक़'' में विसाल फ़रमाया और लोगों ने आप के जनाज़ा मुबारका को मदीना मुनव्वरा लाकर आप को जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किया।

(अकमाल फ़ी अस्माइर्रिजाल स 596 व बुख़ारी जि1, स 545 मा हाशिया)

करामत

कुवाँ क़ब्र बन गया: एक औरत जिस का नाम अरवी बिन्ते अवैस था। उन के ऊपर हाकिमे मदीना मरवान बिन हकम की कचहरी में यह दावा दायर कर दिया कि उन्हों ने मेरी एक ज़मीन ले ली है। मरवान ने जब उन से जवाब तलब किया तो आप ने फ़रमाया कि मैं ने जब रसूलुल्लाह को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स किसी की बालिश्त बराबर भी ज़मीन ले लेगा तो क़्यामत के दिन उस को सातों ज़मीनों का तौक़ पहनाया जाए गा तो इस हदीस को सुन लेने के बाद भला यह क्यों कर मुमकिन है कि मैं किसी की ज़मीन ले लूँगा। आप का यह जवाब सुन कर मरवान ने कहा! ऐ औरत! अब मैं तुझ से कोई गवाह तलब नहीं करूँगा। जा तू उस ज़मीन को ले ले। हज़रत सईद बिन ज़ैद ने यह फैसला सुन कर यह दुआ मांगी। ऐ अल्लाह! अगर यह औरत झूठी है तो अंधी हो जाए और उसी ज़मीन पर मरे। चुनान्चे उस के बाद यह औरत अंधी हो गई। मुहम्मद बिन अम्र का बयान है कि मैं ने उस औरत को देखा है कि वह अंधी हो गई थी और दीवारें पकड़ कर इधर उधर चलती फिरती थी। यहाँ तक

कि वह एक दिन उसी ज़मीन के एक कुवें में गिर कर मर गई और किसी ने उस को निकाला भी नहीं। इस लिए वही कुवाँ उस की क़ब्र बन गई और एक अल्लाह वाले की दुआ की मक़बूलियत का जलवा नज़र आ गय.। **(मिश्कात जिल्द नं०2, सफा नं०546 व हुज्जतुल्लाह जिल्द नं०2, सफा नं०866 बहवाला बुख़ारी व मुस्लिम)**

तबसेरा: अल्लाह वालों की यह करामत है कि उन की दुआएं बहुत ज़्यादा और बहुत जल्द मक़बूल हुआ करती हैं। और उन की ज़बान से निकले अलफ़ाज़ का नतीजा ख़ुदा वन्दे करीम ज़रूर आलमे वजूद में लाता है। सच है।

जो जज़्ब के आलम में निकले लबे मोमिन से
वह बात हक़ीक़त में तक़दीरे इलाही है

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह

यह ख़ानदाने क़ुरैश के बहुत ही नामवर और मुअज़्ज़ज़ शख़्स हैं। फ़हर बिन मालिक पर उन का ख़ानदानी शजरा रसूलुल्लाह के ख़ानदान से मिल जाता है। यह भी अशरए मुबश्शेरा में से हैं। उन का असली नाम "आमिर" है। अबू उबैदा उन की कुन्नियत है और उन को बारगाहे रिसालत में अमीनुल उम्मत का लक़ब मिला है शुरू इस्लाम ही में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने उन के सामने इस्लाम पेश किया तो आप फ़ौरन ही इस्लाम क़बूल करके जाँ निसारी के लिए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो गए। पहले आप ने हबशा हिजरत की। फिर हबशा से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चले गए। जंगे बद्र आदि तमाम इस्लामी जंगों में इन्तहाई जाँबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से मअरका आराई करते रहे। जंगे उहुद में दो कड़ियाँ हुज़ुरे अनवर के रूख़सार (गाल) में चुभ गई थी। आप ने अपने दाँतों से पकड़ कर लोहे की उन कड़यों को खींच कर निकाला। उसी में आप के अगले दो दाँत शहीद हो गए थे। बहुत ही शेरे दिल बहादुर, बलन्द क़ामत और बारोब चेहरे वाले पहलवान थे। 18 हिजरी में बमुक़ामे उरदुन ताऊन अमवास मे

वफ़ात पा गए। हज़रत मआज़ बिन जबल رضي الله عنه ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और मक़ामे बीसान में दफ़न हुए। बवक़्ते वफ़ात उम्र शरीफ़ उट्ठावन बरस थी। (अकमाल फ़ि असमाइर्रिजाल स 608)

करामत

आप की करामतों में से एक बहुत ही मश्हूर और अजीब करामत निम्नलिखित है।

बे मिसाल मछली: आप तीन सौ मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर के कमान्डर बन कर **"सैफुल बहर"** में जिहाद के लिए तशरीफ़ ले गए। वहाँ फौज का राशन ख़त्म हो गया। यहाँ तक कि यह चौबीस चौबीस घंटे में एक एक खजूर बतौरे राशन के मुजाहिदीन को देने लगे। फिर वह खजूरें भी ख़तम हो गईं। अब भूके रहने के सिवा कोई चारा नहीं था। उस मौक़े पर आप की यह करामत ज़ाहिर हुई कि अचानक समन्द्र की तूफ़ानी मौजों ने किनारे पर एक बहुत बड़ी मच्छली को फैंक दिया उस मच्छली को यह तीन सौ मुजाहिदीन की फौज अट्ठारा दिनों तक पेट भर कर खाते रहे और उस की चरबी को अपने जिसमों पर मलती रही। यहाँ तक कि सब लोग तन्दुरूस्त और ख़ूब मोटे ताज़े हो गए फिर चलते वक़्त उस मच्छली का कुछ हिस्सा काट कर अपने साथ ले कर मदीना मुनव्वरा वापस आए और हुजूरे अक़्दस ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में भी इस मच्छली का एक टुकड़ा पेश किया जिस को आप ने खाया और इरशाद फ़रमाया कि उस मच्छली को अल्लाह तआला ने तुम्हारा रिज़्क़ बना कर भेज दिया। यह मच्छली कितनी बड़ी थी लोगों को उस का अन्दाज़ा बताने के लिए अमीरे लश्कर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह رضي الله عنه ने हुक्म दिया कि उस मच्छली की दो पिस्लियों को ज़मीन में गाड़दें। चुनान्चे दोनों पिस्लियाँ ज़मीन में गाड़ दी गईं तो इतनी बड़ी मेहराब बन गई कि उस के नीचे कजावा बंधा हुआ ऊँट गुज़र गया।

(बुख़ारी शरीफ़ जि 2, स 626, बाब ग़ज़वए सैफुल बहर)

तबसेराः ऐसे वक़्त में जब कि लश्कर में ख़ूराक का सारा सामान ख़त्म हो चुका था और लश्कर के सिपाहियों के लिए भूके रहने के सिवा कोई चारा ही नहीं था। बिल्कुल अचानक बग़ैर किसी मेहनत व मुशक़्क़त के उस मच्छली को तीन सौ भूके सिपाहियों ने उस मच्छली को काट काट कर अट्ठारा दिनों तक ख़ूब ख़ूब शिकम सेर होकर खाया। यह एक दूसरी करामत है। क्योंकि इतनी बड़ी बच्छली बहुत ही कम है कि इतना बड़ा लश्कर उस को इतने दिनों तक खाता रहे और फिर उस के टुकड़ों को काट काट कर ऊँटों पर लाद कर मदीना मुनव्वरा तक ले जाए मगर फिर भी मच्छली ख़त्म नहीं हुई बल्कि उस का कुछ हिस्सा लोग छोड़ कर चले गए। इतनी बड़ी मच्छली का वजूद दुनिया में बहुत ही कम है। फिर मच्छली एक ऐसी चीज़ है कि मरने के बाद दो चार दिनों में सड़ गल कर और पानी बन कर बह जाती है मगर आदत के ख़िलाफ़ महीनों तक यह मरी हुई मच्छली ज़मीन पर धूप में पड़ी रही। फिर भी बिल्कुल ताज़ा रही। न उस में बदबू पैदा हुई न उस का मज़ा बदला। यह तीसरी करामत है।

ग़रज़ इस अजीब व ग़रीब मच्छली का मिल जाना उस एक करामत के बीच में चन्द करामतें ज़ाहिर हुई जो बिला शुब्हा अमीरे लश्कर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ﷺ जन्नती सहाबी की बहुत ही अज़ीम और नादिरूल वजूद करामतें हैं। वल्लाहु तआला अअ्लम

हज़रत हमज़ा ﷺ

हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब ﷺ यह हुजूरे अक़्दस ﷺ के चचा हैं और चूँकि उन्हों ने भी हज़रत सुवैबा ﷺ का दूध पिया था इस लिए दुध के रिश्ते से यह हुजूर ﷺ के रज़ाई भाई भी हैं।सिर्फ चार साल हुजूर ﷺ से उम्र में बड़े थे और बाज़ का क़ौल है कि सिर्फ़ दो साल का फ़र्क़ था। यह हुजूर ﷺ से बहुत ही मुहब्बत रखते थे। यही वजह है कि जब अबू जहल ने हर्मे कअबा में हुजूरे अक़्दस ﷺ को बहुत ज़्याद बुरा भला कहा तो बावजूद यह कि अभी मुसलमान नहीं

हुए थे लेकिन गुस्से में आपे से बाहर हो गए और हर्मे कअबा में जाकर अबू जहल के सर पर इस ज़ोर के साथ अपनी कमान से मारा कि उस का सर फट गया और एक हंगामा मच गया। आप ने अबू जहल का सर फाड़ कर बलन्द आवाज़ से कलमा पढ़ा और कुरैश के सामने ज़ोर ज़ोर से ऐलान करने लगे कि मैं भी मुसलमान हो चुका हूँ अब किसी की हिम्मत नहीं है कि मेरे भतीजे को आज से कोई बुरा भला कह सके। उस में इख़्तिलाफ़ है कि ऐलाने नुबुवत के दूसरे साल आप मुसलमान हुए या छट्टे साल। बहर हाल आप के मुसलमान हो जाने से बहुत ज़्यादा इस्लाम और मुसलमानों के फायदे का सामान हो गया। क्योंकि आप की बहादुरी और जंगी कारनामों का सिक्का तमाम बहादुराने कुरैश के ऊपर बैठा हुआ था दरबारे नुबुवत से उन को **"असदुल्लाह"** व "असदुर्रसूल" (अल्लाह का शेर और अल्लाह के रसूल का शेर) का प्यारा ख़िताब मिला। सन ३ हिजरी में जंगे उहुद की लड़ाई लड़ते हुए शहादत से सरफ़राज़ हो गए। और सैय्यदुश-शोहदा के क़ाबिले एहतेराम लक़ब के साथ मशहूर हुए। (अकमाल स 560 व ज़रक़ानी जि 3, स 270 ता 285 व मदारिजुन्नबुवा वग़ैरा)

फ़रिश्तों ने गुस्ल दिया: हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ का कहना है कि हज़रत हमज़ा رضی اللہ عنہ को उन की शहादत के बाद फ़रिश्तों ने गुस्ल दिया। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने भी उस की तसदीक़ फ़रमाई कि बे शक मेरे चचा को शहादत के बाद फ़रिश्तों ने ग़ुसल दिया।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन स 863 जि 2, बहवाला इब्ने सअद)

तबसेरा: मस्ला यह है कि शहीद को गुस्ल नहीं दिया जाएगा। चुनान्चे हुज़ूरे अकरम ﷺ ने हज़रत हमज़ा رضی اللہ عنہ को न तो ख़ुद गुस्ल दिया न सहाबा-ए-किराम को उस का हुक्म फ़रमाया। इस लिए ज़ाहिर यही है कि चूँकि तमाम **शुहदा-ए-उहुद** में आप सैय्यदुश्शोहदा के मुअज़्ज़ज़ ख़िताब से सरफ़राज़ हुए इस लिए फ़रिश्तों ने एज़ाज़ी तौर पर आप के एज़ाज़ व इकराम का इज़्हार करने के लिए आप को गुस्ल दिया या मुमकिन है कि हज़रत हन्ज़ला ग़सीलुल मलाइका की तरह

उन को भी गुस्ल की ज़रूरत हो और फ़रिश्तों ने इस बिना पर गुस्ल दिया हो। बहर हाल उस में शक नहीं कि एक सहाबी को गुस्ल देने के लिए आसमान से फ़रिश्तों का नाज़िल होना और अपने नूरानी हाथों से गुस्ल देना यह सैय्यदुश्शोहदा हज़रत हमज़ा ‎رضي الله عنه की एक बहुत ही बड़ी करामत है। (वल्लाहु तआला अअ्लम)

क़ब्र के अन्दर से सलामः हज़रत फ़ातिमा ख़ज़ाइया ‎رضي الله عنها का बयान है कि मैं एक दिन हज़रत सैय्यदुश्शोहदा जनाब हमज़ा ‎رضي الله عنه के मज़ारे पाक की ज़ियारत के लिए गई और मैंने क़ब्र के सामने खड़े होकर अस्सलामु अलैक या उम्मे रसूलुल्लाह कहा। तो आप ने बआवाजे बलन्द क़ब्र के अन्दर से मेरे सलाम का जवाब दिया। जिस को मैं ने अपने कानों से सुना। **(हुज्जतुल्लाह जि 2, स 863 बहवाला बैहकी)**

उसी तरह शैख़ महमूद कुरदी शैखाबी ने आप के क़ब्र पर हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ किया तो आप ने क़ब्रे मुनव्वर के अन्दर से बआवाज़े बलन्द उन के सलाम का जवाब दिया और इरशाद फ़रमाया कि ऐ शैख़ महमूद! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर "हमज़ा" रखना। चुनान्चे जब ख़ुदावन्दे करीम ने उन को बेटा अता फ़रमाया तो उन्होंने उस का नाम "हमज़ा" रखा। **(हुज्जतुल्लाह अललअलमीन जि 2, स 863 बहवाला किताबुल बाक़ियातुस्सालिहात)**

तबसेराः इस रवायत से हज़रत हमज़ा ‎رضي الله عنه की चन्द करामतें मालूम हुईं।

पहलाः यह कि आप ने क़ब्र के अन्दर से शैख़ महमूद के सलाम को सुन लिया और देख भी लिया कि सलाम करने वाला शैख़ महमूद हैं। फिर आप ने सलाम का जवाब शैख़ महमूद को सुना भी दिया। हालाँकि दूसरे क़ब्र वाले सलाम करने वालों के सलाम को सुन तो लेते हैं और पहचान भी लेते हैं मगर सलाम का जवाब सलाम करने वालों को सुना नहीं सकते।

दुसराः सैय्यदुश्शोहदा हज़रत हमज़ा ‎رضي الله عنه को अपनी क़ब्र शरीफ के अन्दर रहते हुए यह मालूम था कि अभी शैख़ महमूद के कोई बेटा

नहीं मगर आगे उन को ख़ुदा वन्दे करीम बेटा अता फ़रमाएगा। जभी तो आप ने हुक्म दिया कि ऐ शैख़ महमूद! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर हमज़ा रखना।

तीसरा: आप ने जवाबे सलाम और बेटे का नाम रखने के बारे में जो कुछ इरशाद फ़रमाया वह इस क़दर बलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि शैख़ महमूद और दूसरे मौजूद लोगों ने सब कुछ अपने कानों से सुन लिया।

उपर की करामतों से इस मस्ला पर रोशनी पड़ती है कि शोहदा-ए-किराम अपनी अपनी क़ब्रों में पुरे जरूरियाते जिन्दगी के साथ ज़िन्दा हैं और उन के इल्म की ज्यादती का यह हाल है कि वह यहाँ तक जान और पहचान लेते हैं कि आदमी की पीठ में जो नुतफ़ा है उस से पैदा होने वाला बच्चा लड़का है या लड़की! यही तो वजह है कि हमज़ा ने फ़रमाया कि ऐ शैख़ महमूद! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर रखना। अगर उन को यक़ीन से यह मालूम न होता कि लड़का ही पैदा होगा तो आप किस तरह लड़के का नाम अपने नाम पर रखने देते? **वल्लाहु तआला अअ्लम!**

क़ब्र में से खून निकला: जब हज़रत अमीर मआविया ने अपनी हुकूमत के दौरान मदीना मुनव्वरा के अन्दर नहरें खोदने का हुक्म दिया तो एक नहर हज़रत हमज़ा के मज़ारे अक़्दस के पहलू में निकल रही थी। ला इल्मी में अचानक नहर खोदने वालों का फावड़ा आप के क़दम मुबारक पर पड़ गया और आप का पावों कट गया। तो उस से ताज़ा ख़ून बह निकला। हालाँकि आप को दफ़्न हुए छियालीस साल गुज़र चुके थे।

(हुज्जतुल्लाह जि2, स 864 बहवाला इब्ने सअ्द)

तबसेरा: वफ़ात के बाद ताज़ा ख़ून का बह निकलना यह दलील है कि शोहदा-ए-किराम अपनी क़ब्रों में पूरे जरूरीयाते जिंदगी के साथ ज़िन्दा हैं जैसा कि उस से पहले हम इस मस्ला पर उसी किताब में क़दरे रोशनी डाल चुके हैं।

हज़रत अब्बास رضي الله عنه

यह हुज़ूरे नबी करीम ﷺ के दूसरे चचा हैं उन की उम्र आप से दो साल ज़्यादा थी। यह शुरू इस्लाम में कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ थे। यहाँ तक कि आप जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार की तरफ़ से जंग में शरीक हुए और मुसलमानों के हाथों में गिरफ़्तार हुए मगर मुहक़्क़ेक़ीन का कहना यह है कि यह जंगे बद्र से पहले मुसलमान हो गए थे। और अपने इस्लाम को छुपाए हुए थे और कुफ़्फ़ारे मक्का उन को कौम में होने का दबाव डाल कर ज़बरदस्ती जंगे बद्र में लाए थे। चुनान्चे जंगे बद्र में लड़ाई से पहले हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया दिया था कि तुम लोग हज़रत अब्बास को क़तल मत करना क्योंकि वह मुसलमान हो गए हैं। लेकिन कुफ़्फ़ारे मक्का उन पर दबाव डाल कर उन्हें जंग में लाए हैं। यह बहुत ही बड़े और माल दार थे और ज़माना-ए-जाहिलियत में भी हाजियों को ज़मज़म शरीफ़ पिलाने और खान-ए-कअबा की तअमीरात का एज़ाज़ आप को हासिल था। फ़तहे मक्का के दिन उन्हीं के उभारने पर हज़रत अबू सुफ़यान رضي الله عنه ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया और दूसरे सरदाराने कुरैश भी उन्हीं के मशवरों से मुतअस्सिर होकर इस्लाम के दामन में आए। उन की खूबियों में कुछ हदीसें भी आई हैं और हुज़ूर ﷺ ने उन को बहुत सी खुशखबरीयाँ और बहुत ज़्यादा दुआएं दी हैं जिन का तज़्किरा सहाहे सित्ता और हदीस की दूसरी किताबों में तफ़सील के साथ मौजूद है। 32 हिजरी में अट्ठासी बरस की उम्र पाकर मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई। और जन्नतुल बक़ीअ में सुपुर्दे ख़ाक किए गए।

(अकमाल स०606 व तारीखुल ख़ुलफ़ा वग़ैरा)

करामत

उनके तुफ़ैल बारिश हुई: अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर رضي الله عنه के दौरे ख़िलाफ़त में जब सख़्त सूखा पड़ गया और ख़ुश्क साली की मुसीबत

से दुनियाए अरब बदहाली में मुबतेला हो गई तो अमीरूल मोमिनीन नमाज़े इस्तिसक़ा के लिए मदीना मुनव्वरा से बाहर मैदान में तशरीफ़ ले गए और उस मौक़ा पर हज़ारों सहाबा-ए-किराम का इज्तिमाअ हुआ। उस भरे मजमअ में दुआ के वक़्त हज़रत अमीरूल मोमिनीन ने हज़रत अब्बास ﷺ का हाथ थाम कर उन्हें उठाया और उन को अपने आगे खड़ा करके इस तरह दुआ मांगी।

"**या अल्लाह!** पहले जब हम लोग क़हत में मुबतेला होते थे तो तेरे नबी को वसीला बना कर बारिश की दुआए मांगते थे और तू हम को बारिश अता फ़रमाता था मगर आज हम तेरे नबी ﷺ के चचा को वसीला बना कर दुआ मांगते हैं इसलिए तू हमें बारिश अता फ़रमा दे।"

फिर हज़रत अब्बास ﷺ ने भी बारिश के लिए दुआ मांगी तो अचानक उसी वक़्त इस क़दर बारिश हुई कि लोग घुटनों घुटनों तक पानी में चलते हुए अपने घरों में वापस आए और लोग खुशी और जज़्ज़बए अक़ीदत से आप की चादरे मुबारक को चूमने लगे और कुछ लोग आप के जिस्मे मुबारक पर अपना हाथ फेरने लगे। चुनान्चे हज़रत हस्सान बिन साबित ﷺ ने जो दरबारे नुबुवत के शाइर थे इस वाक़िआ को अपने अशआर में ज़िक्र करते हुए फ़रमाया:-

سئل الامام وقد تتابع جدبنا ☆ فسقى الغمام بغرة العباس
احيى الاله به البلاد فا صبحت ☆ مخضرة الاجناب بعد اليأس

(यअनी अमीरूल मोमिनीन ने इस हालत में दुआ मांगी कि लगातार कई साल से क़हत पड़ा हुआ था तो बदली ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रोशन पैशानी के तुफ़ैल में सब को सैराब कर दिया। मअबूदे बरहक़ ने इस बारिश से तमाम शहरों को ज़िन्दगी अता फ़रमाई और ना उम्मीदी के बाद तमाम शहरों के इर्द गिर्द हरे भरे होगए।)

(बुख़ारी जिल्द-1, सफा-526 व हुज्जतुल्लाह जिल्द-2, सफा-865 व दलाइलुन्नबुवा जि3, स 206)

हज़रत जअफ़र

हज़रत जअफ़र बिन अबी तालिब हज़रत अली के भाई हैं। यह पहले इस्लाम लाने वालों में हैं। यकतीस आदमियों के मुसलमान होने के बाद यह दामने इस्लाम में आए और कुफ़्फ़ारे मक्का की तक्लीफों से तंग आकर रहमते आलम की इजाज़त से पहले हबशा की तरफ़ हिजरत की। फिर हबशा से कशतियों पर सवार हो कर मदीना तैयबा की तरफ़ हिजरत की और ख़ैबर में हुज़ूरे अक्दस की ख़िदमते आलिया में उस वक़्त पहुँचे जब कि ख़ैबर फ़तह हो चुका था। और हुज़ूरे अक्दस माले ग़नीमत को मुजाहिदीन के दरमियान बाँट रहे थे। हुज़ूरे अकरम ने जोशे मुहब्बत में उन से मुआनक़ा (गले मिलना) फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि मैं इस बात का फ़ैसला नहीं कर सकता कि जंगे ख़ैबर की फ़तह से मुझे ज़्यादा ख़ुशी हासिल हुई या ऐ जअफ़र बिन अबी तालिब! तुम मुहाजिरीन के आने से ज़्यादा खुशी हासिल हुई।

यह बहुत ही जाँबाज़ और बहादुर थे और निहायत ही खुबसूरत और बा रोअब थे। सन् 8 हिजरी की जंगे मौता में अमीरे लश्कर होने की हालत में इकतालीस बरस की उम्र में शहादत से सरफ़राज़ हुए। उस जंग में कमान्डर होने की वजह से लश्करे इस्लाम का झंडा उन के हाथ में था। कुफ़्फ़ार ने तलवार के वार से उन के दाएँ हाथ को शहीद कर दिया तो उन्होंने ने झपट कर झंडे को बाएँ हाथ में पकड़ लिया। जब बायाँ हाथ भी कट कर गिर पड़ा तो उन्होंने झंडे को दोनों कटे हुए बाज़ूओं से थाम लिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने फ़रमाया जब हम ने उन की लाशे मुबारक को उठाया तो उन के जिस्मे अतहर पे नव्वे ज़ख़्म थे मगर कोई ज़ख़्म भी उन के बदन के पीछे हिस्से पर नहीं लगा था बल्कि तमाम ज़ख़्म उन के बदन के अगले ही हिस्से पर थे। (अकमाल स 589 व हवाशी बुख़ारी वग़ैरा)

करामत

जुल जनाहीन (दो बाजुओं वाला या उड़ने वाल): उन का एक लक़ब "जुल जनाहीन" (दो बाज़ुओं वाला) है दूसरा लक़ब तेयार (उड़ने वाला) है। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने उन की यह करामत बयान फ़रमाई है कि उन के कटे हुए बाजुओं के बदले में अल्लाह तआला ने उन को दो पर अता फ़रमाए हैं। और यह जन्नत के बाग़ों में जहाँ चाहते हैं उड़ कर चले जाते हैं।

तबसेरा: आप की उसी करामत को बयान करते हुए अमीरूल मोमिनीन हज़रत सैय्यदना अली मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ ने फ़ख़रिया अनदाज़ में यह शेअर इरशाद फ़रमाया है:-

وجعفرالذی یمسی ویضحی ☆ یطیرمع الملائکۃ ابن امی

(यअनी जअफ़र बिन अबी तालिब رضی اللہ عنہ जो सुबह व शाम फ़रिश्तों के झुरमुट में नूरानी बाज़ूओं से परवाज़ (उड़ान) फ़रमाते रहते हैं वह मेरे हक़ीक़ी भाई हैं।)

आप की यह करामत बहुत ही बड़ी हैं क्योंकि और किसी दूसरे सहाबी के बारे में यह करामत हमारी नज़र से नहीं गुज़री।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ

यह ख़ानदाने कुरैश के बहुत ही नामवर लोगों में से हैं उन की वालिदा हज़रत बीबी लुबाबा सुग़रा رضی اللہ عنہا उम्मुल मोमिनीन हज़रत बीबी मैमूना رضی اللہ عنہا की बहन थीं। यह बहादुरी और फौजी सलाहियत तदाबीरे जंग के ऐतेबार से तमाम सहाबा-ए-किराम में एक ख़ुसूसी इम्तियाज़ रखते हैं। इस्लाम क़बूल करने से पहले उन की और उन के बाप वलीद की इस्लाम दुश्मनी मशहूर थी। जंगे बद्र और जंगे उहुद की लड़ाइयों में यह कुफ़्फ़ार के साथ रहे और उन से मुसलमानों को बहुत ज़्यादा जानी नुक़सान पहुँचा मगर अचानक उन के दिल में इस्लाम की सच्चाई का ऐसा सूरज निकल गया कि सन् 7 हिजरी में यह ख़ुद

बख़ुद मक्का से मदीना जाकर दरबारे रिसालत में हाज़िर हो गए और दामने इस्लाम में आगए और यह वादा कर लिया कि अब ज़िन्दगी भर मेरी तलवार कुफ़्फ़ार से लड़ने के लिए बेनियाम रहे गी। चुनान्चे उस के बाद हर जंग में इन्तेहाई मुजाहिदाना जाह व जलाल के साथ कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला में लड़ते रहे। यहाँ तक कि सन् 8 हिजरी में जंगे मौता में जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा, हज़रत जअफ़र बिन अबी तालिब व हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा तीनों कमान्डर ने यके बाद दीगरे जामे शहादत नोश कर लिया तो इस्लामी फ़ौज ने उन को अपना कमान्डर चुना और उन्होंने ऐसी जाँबाज़ी के साथ जंग की कि मुसलमानों को फ़तहे मुबीन (जीत) होगई।

और उसी मौक़अ पर जब यह जंग में व्यस्त थे हुज़ूरे अकरम ﷺ ने मदीना मुनव्वरा में सहाबा के एक जमाअत के सामने उन को **"सैफुल्लाह"** (अल्लाह की तलवार) के ख़िताब से सरफ़राज़ फ़रमाया। अमीरूल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ के दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ितना इरतदाद (इस्लाम से फिरना) ने सर उठाया। तो उन्होंने उन जंगों में भी खास कर जंगे यमामा में मुसलमान फ़ौजियों की कमान्डरी की ज़िम्मेदारी क़बूल की और हर मोड़ पर फ़तहे मुबीन हासिल की। फिर अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के दोरान रूमियों की जंगों में भी उन्होंने इस्लामी फ़ौजों की कमान संभाली और बहुत ज़्यादा फ़तूहात हासिल हुएं। सन् 21 हिजरी में चन्द दिन बीमार रह कर वफ़ात पाई। **(अकमाल स593, व कन्जुल उम्माल जि15, व तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)**

करामात

ज़हर ने असर नहीं किया: रिवायत है कि जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने मक़ाम **"हैरा"** में अपने लश्कर के साथ पड़ाओ किया तो लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरे लश्कर! आप अजमियों (अरब के अलावा के रहने वाले) के ज़हर से बचते रहें। हम लोगों को अंदेशा है

कि कहीं यह लोग आप को ज़हर न दे दें। आप ने फ़रमाया कि लाओ मैं देख लूँ कि अजमियों का ज़हर कैसा होता है? लोगों ने आप को दिया तो आप "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर खा गए और आप को बाल बराबर भी नुक़सान नहीं पहुँचा और "कलबी" की रिवायत में यह है कि एक ईसाई पादरी जिस का नाम अब्दुल मसीह था एक ऐसा ज़हर ले कर आया कि उस के खा लेने से एक घंटा के बाद मौत यक़ीनी होती है। आप ने उस से वह ज़हर मांग कर उस के सामने ही بسم الله الذی لا یضر مع اسمه شئی فی الارض ولا فی السماء وهو السمیع العلیم पढ़ा और यह ज़हर खा गए। यह मंज़र देख कर अब्दुल मसीह ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! यह इतना ख़तरनाक ज़हर खा कर भी ज़िन्दा है। यह बहुत ही हैरत की बात है। अब बेहतर यही है कि उन से सुलह करलो वरना उन की फ़तह यक़ीनी है। चुनान्चे उन ईसाईयों ने एक भारी भरकम टेक्स दे कर सुलह कर ली। यह वाक़िआ अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ के दौरे ख़िलाफ़त में हुआ। (हुज्जतुल्लाह जि2, स 867 बहवाला बैहक़ी वग़ैरा)

तबसेरा: हम इसी किताब के शुरू में "तहक़ीक़े करामात" के उनवान के तहत में यह तहरीर कर चुके हैं कि करामत की पचीस क़िस्मों से जानलेवा चीजों का असर न करना यह भी करामत की एक बहुत ही शानदार क़िस्म है। चुनान्चे उपर की रिवायत इस की बेहतरीन मिसाल है।

शराब का शहद में तबदील हो जाना: हज़रत ख़ीमा ﷺ कहते हैं कि एक शख़्स हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ﷺ के पास शराब से भरी हुई मश्क ले कर आया तो आप ने यह दुआ मांगी कि या अल्लाह! उस को शहद बना दे। थोड़ी देर बाद जब लोगों ने देखा तो वह मश्क शहद से भरी हुई थी। (हुज्जतुल्लाह जि2, स 867 व तबरी जि4, स4)

शराब सिर्का बन गई: एक मर्तबा लोगों ने आप से शिकायत की कि ऐ अमीरे लश्कर ! आप की फ़ौज में कुछ लोग शराब पीते हैं। आप ने फौरन ही तलाशी लेने का हुक्म दे दिया। तलाशी लेने वालों

ने एक सिपाही के पास से शराब की एक मश्क पा ली। लेकिन जब यह मश्क आप के सामने पेश की गई तो आप ने बारगाहे इलाही में यह दुआ मंगी कि "ऐ अल्लाह! उस को सिर्का बना दे" चुनान्चे जब लोगों ने मश्क का मुंह खोल कर देखा तो वाक़ई उस में से सिर्का निकला। यह देख कर मश्क वाला सिपाही कहने लगा ख़ुदा की क़सम! यह हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की करामत है। वरना हक़ीक़त यही है कि मैंने उस मश्क में शराब भर रखी थी।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि2, स 867)

तबसेराः करामत की पचीस क़िसमों में से "**क़लबे माहियत**" यअनी किसी चीज़ की हक़ीक़त को बदल देना मज़कूरा बाला दोनों रिवायात करामत की उसी क़िसम की मिसाल हैं कि **औलिया-ए-किराम** जब भी चाहते हैं अपनी रूहानी ताक़त या अपनी मकबूल दुआओं की बदौलत एक चीज़ की हक़ीक़त को बदल कर उस को दूसरी चीज़ बना देते हैं। औलिया अल्लाह की करामतों के तज़्किरों में उस की हज़ारों मिसालें मिलेंगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर

यह अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के बेटे हैं। उन की माँ का नाम ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन है। यह बचपन ही में अपने वालिद माजिद के साथ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। यह इल्म व फ़ज़ल के साथ बहुत ही इबादत गुज़ार परहेज़गार थे। मैमून बिन महरान ताबई का फ़रमान है कि मैं ने अब्दुल्लाह बिन उमर से बढ़ कर किसी को मुत्तक़ी व परहेज़गार नहीं देखा। हज़रत इमाम मालिक फ़रमाया करते थे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर मुसलमानों के इमाम हैं। यह हुज़ूर की वफ़ाते अक़दस के बाद साठ बरस तक हज के मजमों और दूसरे मौक़ों पर मुसलमानों को इस्लामी हुक्मों के बारे में फ़तवा देते रहे। मिज़ाज में बहुत ज़्यादा सख़ावत का ग़लबा था और बहुत ज़्यादा सदक़ा व ख़ैरात की आदत थी। अपनी जो चीज़ पसन्द

आजाती थी फौरन ही उस को राहे ख़ुदा में ख़ैरात कर देते थे। आप ने अपनी ज़िन्दगी में एक हज़ार गुलामों को ख़रीद ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया। जंगे खन्दक़ और उस के बाद इस्लामी लड़ाइयों में बराबर कुफ़्फ़ार से जंग करते रहे। हाँ अलबत्ता हज़रत अली और हज़रत मआविया رضی اللہ عنہما के बीच जो लड़ाइयाँ हुईं। आप उन लड़ाइयों में ग़ैर जानिबदार रहे।

अब्दुल मलिक बिन मरवान की हुकूमत के दौरान हज्जाज बिन युसुफ़ सक़फ़ी अमीरूल हज बन कर आया। आप ने खुतबा के दरमियान उस को टोक दिया। हज्जाज ज़ालिम ने जल भुन कर अपने एक सिपाही को हुक्म दे दिया कि वह ज़हर में बुझाया हुआ नेज़ा (भाला) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के पावों में मार दे। चुनान्चे उस मरदूद ने आप के पावं में नेज़ा मार दिया। ज़हर के असर से आप का पावों बहुत ज़्यादा फूल गया और आप बीमार हो कर बिस्तर पर पड़ गए। मक्कार हज्जाज बिन युसुफ़ आप की अयादत के लिए आया और कहने लगा कि हज़रत! काश मुझे मअलूम हो जाता कि किस ने आप को नेज़ा मारा है? आप ने फ़रमाया। उस को जान कर फिर तुम क्या करो गे? हज्जाज ने कहा कि अगर मैं उस को क़त्ल न करू तो ख़ुदा मुझे मार डाले। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि तुम कभी हरगिज़ हरगिज़ उस को क़त्ल नहीं करोगे। उस ने तो तुम्हारे हुक्म ही से ऐसा किया है। यह सुन कर हज्जाज बिन युसुफ़ कहने लगा कि नहीं नहीं ऐ अबू अब्दुर्रहमान! आप हरगिज़ यह ख़्याल न करें और जल्दी से उठ कर चल दिया। उसी मरज़ में सन ७४ हिजरी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर رضی اللہ عنہ की शहादत के तीन महीने बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ चौरासी या छियासी बरस की उमर पाकर वफ़ात पा गए। और मक्का मुअज़्ज़मा में मक़ामे "मुहसब" या मक़ामे "ज़ी तवी" में दफ़न हुए।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3, सफा 229 अकमाल सफा 605 व तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़ जिल्द 1, सफा 35)

करामात

शेर दुम हिलाता हुआ भागा: अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी ने अपने **"तबक़ात"** में तहरीर फ़रमाया है कि एक शेर रास्ता में बैठा हुआ था और क़ाफ़िला वालों का रास्ता रोके हुए था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने उस के क़रीब जाकर फ़रमाया कि रास्ता से अलग हट कर खड़ा हो जा। आप की यह डाँट सुन कर शेर दुम हिला कर रास्ता से दूर भाग निकला। **(तफ़सीरे कबीर जि5, स 179 व हुज्जतुल्लाह जि2, स 866)**

एक फ़रिश्ता से मुलाक़ात: हज़रत अता बिन अबी रबाह का बयान है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने दोपहर के वक़्त देखा कि एक बहुत ही ख़ूबसूरत साँप ने सात चक्कर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया। फिर मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ पढ़ी। आप ने उस साँप से फ़रमाया अब आप जब कि तवाफ़ से फ़ारिग़ हो चुके हैं यहाँ पर आप का ठहरना मुनासिब नहीं है। क्योंकि मुझे ख़तरा है कि मेरे शहर के बेवकूफ लोग आप को कुछ तकलीफ पहुँचा देंगे। साँप ने बग़ौर आप के कलाम को सुना फिर अपनी दुम के बल खड़ा हो गया। और फ़ौरन ही उड़ कर आसमान पर चला गया। इस तरह लोगों को मअलूम हो गया कि कोई फ़रिश्ता था जो साँप की शक्ल में तवाफ़े कअबा के लिए आया था। **(दलाइलुन्नबुवा जि3, स 207)**

ज़्याद कैसे हलाक़ हुआ?: ज़्याद सलतनते बनू उमैया का बहुत ही ज़ालिम व जाबिर गवर्नर था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ को यह ख़बर मिली कि वह हज्जाज़ का गवर्नर बन कर आ रहा है आप को यह हरगिज़ गवारा न था कि मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा पर ऐसा ज़ालिम हुकूमत करे। चुनान्चे आप ने यह दुआ मांगी कि या अल्लाह! इब्ने समिया (ज़्याद) की इस तरह मौत हो जाए कि उस के बदले में कोई मुसलमान क़त्ल न किया जाए। आप की यह दुआ मक़बूल हो गई कि अचानक ज़्याद के अंगूठे में ताऊन गिलटी निकल

पड़ी और वह एक हफ़्ता के अन्दर ही एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर गया। (इब्ने असाकिर व मुनतख़ब जिल्द 5, सफ़ा 231)

तबसेरा: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ की पहली करामत से यह मालूम हुआ कि अल्लाह वालों की हुकूमत का सिक्का न सिर्फ़ इन्सानों के दिलों पर होता है बल्कि उन के हाकिमाना पावर का परचम दरिन्दों, चरिन्दों, परिन्दों के दिलों पर भी लहराता रहता है और सब के सब अल्लाह वालों के फ़रमांबरदार हो जाते हैं। यही वह मज़मून है जिस की तरफ़ इशारा करते हुए हज़रत शेख़ सअदी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया है:-

تو هم گردن از حکم داور مپیچ ٭ که گردن نه پیچد ز حکم تو هیچ

(यअनी तुम ख़ुदा बन्दे करीम के हुक्म से गर्दन न मोड़ो ताकि कोई मख़्लूक़ तुम्हारे हुक्म से गर्दन न मोड़े) मतलब यह है कि अगर तुम ख़ुदा के फ़रमाँबरदार बने रहोगे तो ख़ुदा की तमाम मख़्लूक़ात तुम्हारी फ़रमाँबरदार बनी रहेगी।

दूसरी करामत से यह सबक़ मिलता है कि जब कअबा मुअज़्ज़मा के तवाफ़ के लिए फ़रिश्ते साँप की शकल में आते हैं तो फिर ज़ाहिर है कि फ़रिश्ते इंसानों की शक्ल में भी ज़रूर ही आते होंगे। इस लिए हर हाजी को यह ध्यान रखना चाहिए कि हरम कअबा में हरगिज़ हरगिज़ किसी से उलझना नहीं चाहिए ख़ुदा न ख़्वास्ता तुम किसी इंसान से झगड़ा तकरार करो और हक़ीक़त में कोई फ़रिश्ता हो जो इंसान के रूप में तकरार कर रहा हो तो फिर यह समझ लो कि किसी फ़रिश्ते से लड़ने झगड़ने का अनजाम अपनी हलाकत के सिवा और क्या हो सकता है?

तीसरी करामत से ज़ाहिर है कि अल्लाह वालों की दुआएँ उस तीर की तरह होती हैं जो कमान से निकल कर निशाना से बाल बराबर ख़ता नहीं करतीं इस लिए हमेशा इस का ख़्याल रखना चाहिए कि कभी भी किसी बद दुआ की पकड़ और फटकार में न पड़ें और मग़रिब ज़दा मुलहिदों (बे दीनों) की तरह हरगिज़ यह न कहा करें कि

मियाँ किसी की दुआ या बद दुआ से कुछ नहीं होता। यह मुल्ला लोग बिला वजह लोगों को बद दुआ की धौंस दिया करते हैं बल्कि यह ईमान रखें कि बुजुर्गों की दुआओं और बददुआओं में बहुत ज़्यादा असर है।

हज़रत सअद बिन मआज़ رضی اللہ عنہ

हज़रत सअद बिन मआज़ बिन नौंअमान अन्सारी यह मदीना मुनव्वरा के रहने वाले बहुत ही बड़े मर्तबे वाले सहाबी हैं। हुजूरे अक्दस ﷺ ने मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले जाने से पहले ही हज़रत मुसअब बिन उमैर رضی اللہ عنہ को मदीना मुनव्वरा भेज दिया कि वह मुसलमानों को इस्लाम की तअलीम दें। और ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की तबलीग़ करते रहें। चुनान्चे हज़रत मुसअब बिन उमैर رضی اللہ عنہ की तबलीग़ से हज़रत सअद बिन मआज़ رضی اللہ عنہ दामने इस्लाम में आ गए और ख़ुद इस्लाम क़बूल करते ही यह ऐलान फ़रमा दिया कि मेरे क़बीला बनू अब्दुल अशहल का जो मर्द या औरत इस्लाम से मुंह मोड़े गा मेरे लिए हराम है कि मैं उस से कलाम करूँ।आप का यह ऐलान सुनते ही क़बीला बनू अब्दुल अशहल का एक एक बच्चा दौलते इस्लाम से माला माल हो गया। इस तरह आप का मुसलमान हो जाना मदीना मुनव्वरा में इस्लाम फैलने के लिए बहुत ही बा बरकत साबित हुआ।

आप बहुत ही बहादुर और इन्तेहाई निशाना बाज़ तीर अनदाज़ भी थे। जंगे बद्र और उहुद में ख़ूब ख़ूब बहादुरी दिखाई। मगर जंगे ख़नदक़ में ज़ख़्मी हो गए और उसी ज़ख़्म में शहादत से सरफ़राज़ हो गए। उन की शहादत का वाक़िआ यह है कि आप एक छोटी सी ज़िरह (लोहे का वह कपड़ा जो जंग में पहनते हैं) पहने हुए नेज़ा ले कर जोशे जिहाद में लड़ने के लिए मैदाने जंग में जा रहे थे कि इब्ने उरक़ा नामी काफ़िर ने ऐसा निशाना बांध कर तीर मारा कि जिस से आप की एक रग जिस का नाम "अकहल" है कट गई। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उन के लिए मस्जिदे नबवी में एक ख़ेमा गाड़ा और उन का इलाज शुरू

किया। ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से दो मर्तबा उन के ज़ख़्म को दाग़ा और उन का ज़ख़्म भरने लग गया था लेकिन उन्होंने शहादत के शौक़ में ख़ुदावन्दे तआला से यह दुआ मांगी

"या अल्लाह! तू जानता है कि किसी क़ौम से मुझे जंग करने की इतनी तमन्ना नहीं है जितनी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से लड़ने की तमन्ना है। जिन्होंने ने तेरे रसूल को झुठलाया और उन को उन के वतन से निकाला। **ऐ अल्लाह!** मेरा तो यही ख़्याल है कि अब तू ने हमारे और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बीच जंग का ख़ातमा कर दिया है लेकिन अगर अभी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कोई जंग बाक़ी रह गई हो जब तो मुझे ज़िन्दा रखना ताकि मैं तेरी राह में उन काफ़िरों से जंग करूँ अगर अब उन लोगों से कोई जंग बाक़ी न रह गई हो तो तू मेरे इस ज़ख़्म को फाड़ दे और इस ज़ख़्म में तू मुझे शहादत अता फ़रमा दे।"

ख़ुदा की शान कि आप की यह दुआ ख़त्म होते ही बिल्कुल अचानक आप का ज़ख़्म फट गया और ख़ून बह कर मस्जिदे नबवी में बनी गफ़्फ़ार के ख़ेमे के अन्दर पहुँच गया। उन लोगों ने चौंक कर कहा कि ऐ ख़ेमा वालो! यह कैसा ख़ून है जो तुम्हारी तरफ से बह कर हमारी तरफ़ आ रहा है? जब लोगों ने देखा तो हज़रत सअद बिन मआज़ के ज़ख़्म से ख़ून जारी था। उसी ज़ख़्म में उन की शहादत हो गई। (बुख़ारी जि 2, स 591 बाब मरजउन्नबी मिनल इहज़ाब)

ऐन वफ़ात के वक़्त उन के सरहाने हुज़ूरे अनवर तशरीफ़ फ़रमा हैं। जाँ कनी (जान निकलने का वक़्त)के आलम में उन्होंने ने आख़िरी बार जमाले नुबूवत का दीदार किया और कहा। अस्सलामु अलैका या रसूलल्लाह! फिर बलन्द आवाज़ से कहा कि या रसूलल्लाह! मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। और आप ने तबलीग़े रिसालत का हक़ अदा कर दिया।

(मदारिजुन्नबुवा जि॰2, स॰181 181)

आप का साले विसाल ५ हिजरी है। बवक़्ते विसाल आप की उम्र ३७ बरस की थी। जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़ून हैं। जब हुज़ूरे अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन को दफ़्ना कर वापस आ रहे थे तो शिद्दते ग़म से आप के आँसू के क़तरात आप की दाढ़ी मुबारक पर गिर रहे थे। **(अकमाल स 596 व असदुल ग़ाबा जि2, स 298)**

करामात

जनाज़ा में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि सअद बिन मआज़ की मौत से अर्शे इलाही हिल गया और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उन के जनाज़ा में शरीक हुए।

(ज़रक़ानी जि2, स 143 व हुज्जतुल्लाह जि2, स 868)

मिट्टी मुश्क बन गई: मुहम्मद बिन शरजील बिन हसना ﷺ का बयान है कि एक शख़्स ने हज़रत सअद बिन मआज़ ﷺ की क़ब्र की मिट्टी हाथ में ली तो उस में से मुश्क की ख़ुश्बू आने लगी और एक रिवायत में यह भी है कि जब उन की क़ब्र खोदी गई तो उस में से खुश्बू आने लगी। जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ से उस का ज़िक्र किया गया तो आप ने सुब्हानल्लाह! सुब्हानल्लाह! फ़रमाया और ख़ुशी के आसार आप के रूख़्सारे अनवर पर जाहिर हो गए। **(ज़रकानी जि2, स 143, व हुज्जतुल्लाह जि 2, स 868 बहवाला इब्ने असअद)**

फरिश्तों से ख़ेमा भर गया: हज़रत सलमा बिन असलम बिन हरीश ﷺ कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ हज़रत सअद बिन मआज़ ﷺ के खेमा में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो वहाँ कोई भी आदमी मौजूद न था मगर फिर भी हुज़ूरे अकरम ﷺ लम्बे लम्बे क़दम रख कर फलांगते हुए खेमा में तशरीफ ले गए और उन की लाश के पास थोड़ी देर ठहर कर बाहर तशरीफ़ लाए। मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं ने आप को देखा कि आप ख़ेमा में लम्बे लम्बे क़दम के साथ फलांगते हुए दाख़िल हुए हालाँकि ख़ेमा में कोई शख़्स भी मौजूद न था। आप ने फ़रमाया कि ख़ेमा में इस क़दर फ़रिश्तों का हुजूमह था कि वहाँ क़दम रखने की जगह न थी। इस लिए मैं ने फ़रिश्तों के बाजुओं को

बचा बचा कर क़दम रखा। (हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि2, स868 बहवाला इब्ने असअद)

तबसेरा: ख़ुदा के नेक और महबूब बन्दों की निसबत से जब उन की क़ब्र की मिट्टी में मुश्क की ख़ुश्बू पैदा हो जाती है तो लोगों की नहूसत व बदबख़्ती दूर होकर उन्हें बरकत व नेकबख़्ती हासिल हो जाए तो उस में कौन सा तअज्जुब है? जिन की तासीर से मिट्टी मुश्क बन सकती है क्या उन की असर से बीमारी तन्दुरूस्ती और बद नसीबी, ख़ुश नसीबी नहीं बन सकती।

काश! वह लोग जो औलिया अल्लाह की क़ब्रों को मिट्टी का ढेर कह कर क़ब्रों की ज़ियारत करने वालों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं और उन मुक़द्दस क़ब्रों की तासीर का इन्कार करते रहते हैं इस रिवायत से हिदायत की रोशनी हासिल करते और औलिया अल्लाह की कब्रों का अदब व एहतेराम करते।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर व बिन हज़ाम رضي الله عنه

यह मदीना मुनव्वरा के रहने वाले अन्सारी हैं और मशहुर सहाबी हज़रत जाबिर رضي الله عنه के बाप हैं। क़बीला-ए-अन्सार में यह अपने ख़ानदान बनी सलमा के सरदार और रहमते आलम ﷺ के बहुत ही जाँ निसार सहाबी हैं। जंगे बद्र में बड़ी बहादुरी और जाँ बाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़े। और सन् 3 हिजरी में जंगे उहुद के दिन सब से पहले जामे शहादत से सैराब हुए।

बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा की रिवायत है कि उन्होंने रात में अपने बेटे हज़रत जाबिर رضي الله عنه को बुला कर यह फ़रमाया। मेरे प्यारे बेटे! कल सुबह जंगे उहुद में मैं ही सब से पहले शहादत से सरफ़राज़ हूँगा। और बेटा! सुन लो! रसूलुल्लाह ﷺ के बाद तुम से ज़्यादा मेरा कोई प्यारा नहीं है। इस लिए तुम मेरा क़र्ज़ अदा कर देना और बहनों के साथ अच्छा सुलूक करना। यह मेरी आख़िरी वसियत है।

हज़रत जाबिर رضي الله عنه का बयान है कि वाक़ई सुबह को मैदाने जंग में

सब से पहले मेरे वालिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाम رضي الله عنه शहीद हुए। (बुख़ारी जि1, स180 व असदुल ग़ाबा ज़िर, स 232)

करामात

फ़रिश्तों ने साया किया: हज़रत जाबिर رضي الله عنه कहते हैं कि जंगे उहुद के दिन जब मेरे वालिद हज़रत अब्दुल्लाह अन्सारी رضي الله عنه की मुक़द्दस लाश को उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए। तो उन का यह हाल था कि काफ़िरों ने उन के कान और नाक को काट कर उन की सूरत बिगाड़ दी थी। मैं ने चाहा कि उन का चेहरा खोल कर देखूं तो मेरी बिरादरी और खानदान क़बीला वालों ने मुझे इस ख़्याल से मना कर दिया कि लड़का अपने बाप का यह हाल देख कर तक्लीफ व ग़म से निढाल हो जाएगा। इतने में मेरी फूफी रोती हुई उन की लाश के पास आई तो सैय्यदे आलम हुजूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि तुम उन पर रोओ या ना रोओ। फ़रिश्तों की फौज बराबर लगातार उन की लाश पर अपने बाज़ुओं से साया करते रहते हैं। (बुख़ारी जि1, स 395)

कफ़न सलामत बदन तरोताज़ा: हज़रत जाबिर رضي الله عنه का बयान है कि जंगे उहुद के दिन मैं अपने वालिद हज़रत अब्दुल्लाह رضي الله عنه को एक दूसरे शहीद (हज़रत अमर बिन जुमूह) के साथ एक ही क़ब्र में दफ़न कर दिया था। फिर मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि मेरे बाप एक दूसरे शहीद की क़ब्र में दफ़न हैं। इस ख़्याल से कि उन को एक अलग क़ब्र में दफ़न करूँ। छः महीने के बाद मैं ने उन की क़ब्र को खोद कर लाश मुबारक को निकाला तो वह बिल्कुल उसी हालत मेंथे जिस हालत में उन को मैं ने दफ़न किया था। सिवाए उस के कि उन के कान पर कुछ बदलाव हुआ था। (बुख़ारी जि 1, स180 हाशिया बुख़ारी)

और इब्ने सअद की रिवायत में है कि हज़रत अब्दुल्लाह رضي الله عنه के चेहरे पर ज़ख़्म लगा था और उन का हाथ उन के ज़ख़्म पर था। जब उन का हाथ उन के ज़ख़्म से हटाया गया तो ज़ख़्म से ख़ून बहने लगा। फिर जब उन का हाथ उन के ज़ख़्म पर रख दिया गया तो ख़ून

बन्द हो गया और उन का कफ़न जो एक चादर थी जिस से चेहरा छिपा दिया गया था और उन के पैरों पर घास डाल दी गई थी चादर और घास दोनों को हम ने उसी तरह पड़ा हुआ पाया।

(इब्ने असअद जिल्द 3, सफा 562)

फिर उस के बाद मदीना मुनव्वरा में नहरों की खुदाई के वक़्त जब हज़रत अमीरे मआविया ने यह ऐलान कराया कि सब लोग मैदाने उहुद से अपने अपने मुर्दों को उन की क़ब्रों से निकाल कर ले जाएँ। तो हज़रत जाबिर फ़रमाते हैं कि मैं ने दोबारा छियालिस (46) बरस के बाद अपने वालिद माजिद हज़रत अब्दुल्लाह की क़ब्र खोद कर उन की मुक़द्दस लाश को निकाला तो मैं ने उन को उस हाल में पाया कि अपने ज़ख़्म पर हाथ रखे हुए थे। जब उन का हाथ उठाया गया तो ज़ख़्म से ख़ून बहने लगा। फिर जब हाथ ज़ख़्म पर रख दिया गया तो ख़ून बन्द हो गया और उन का कफ़न जो एक चादर का था उसी तरह सही सालिम था। (हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जिल्द 2, सफा 864 ब हवाला बैहक़ी)

क़ब्र में तिलावत: हज़रत अबू तलहा बिन उबैदुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं अपनी ज़मीन की देख भाल के लिए "ग़ाबा" जा रहा था तो रास्ते में रात हो गई। इस लिए मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन हज़ाम की क़ब्र के पास ठहर गया। जब कुछ रात गुज़र गई तो मैं ने उन की क़ब्र में से तिलावत की इतनी बेहतरीन आवाज़ सुनी कि उस से पहले इतनी अच्छी तिलावत मैं ने कभी भी नहीं सुनी थी।

जब मैं मदीना मुनव्वरा को लौट कर आया और मैं ने हुज़ूरे अक़्दस से उस का तज़्किरा किया तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि क्या ऐ अबू तलहा! तुम को यह मालूम नहीं कि ख़ुदा ने उन शहीदों की रूहों को क़ब्ज़ करके ज़बरजद और याक़ूत की लालटेन में रखा है। और उन क़िन्दीलों (लालटेनों) के जन्नत के बाग़ों में लटका दिया है। जब रात होती है तो यह रूहें क़िन्दीलों से निकाल कर उन के जिस्मों में डाल दी जाती हैं फिर सुबह को वह अपनी जगहों पर

वापस लाई जाती हैं।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि 2, स 871 बहवाला इब्ने मनदा)

तबसेराः यह मुस्तनद रिवायत इस बात का सुबूत हैं कि हज़रात शोहदा-ए-किराम अपनी अपनी क़ब्रों में पूरे लेवाज़माते ज़िंदगी के साथ ज़िन्दा हैं और वह अपने जिस्मों के साथ जहाँ चाहें जा सकते हैं तिलावत कर सकते हैं और दूसरे क़िस्म क़िस्म के काम भी कर सकते और करते हैं।

हज़रत मअ़ज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ

उन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। यह क़बीला ख़ज़रज के अन्सारी और मदीना मुनव्वरा के रहने वाले हैं। यह उन सत्तर ख़ुश नसीब अन्सार में से एक हैं जिन लोगों ने हिजरत से बहुत पहले मैदाने अरफ़ात की घाटी में हुज़ूरे अकरम ﷺ से बैअते इस्लाम की थी। यह जंगे बद्र और उस के बाद के तमाम जिहादों में मुजाहिदाना शान से शरीके जंग रहे। हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन को यमन का क़ाज़ी और मुअल्लिम बना कर भेजा था और हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में उन को मुल्के शाम का गवर्नर भी मुक़र्रर कर दिया था जहाँ उन्हों ने 18 हिजरी में ताऊन अमवास में बीमार हो कर अड़तीस (38) साल की उम्र में वफ़ात पाई। आप बहुत ही बलन्द पाए आलिम, हाफ़िज़, क़ारी, मुअल्लिम और निहायत ही मुत्तक़ी व परहेज़गार और आला दर्जे के इबादत गुज़ार थे। बनी सलमा के तमाम बुतों को उन्हों ने ही तोड़ फोड़ कर फैंक दिया था। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि क़यामत में उन का लक़ब "इमामुल उल्मा" है। (अकमाल स 161 व असदुल ग़ाबा जि4, स 378)

करामत

मुंह से नूर निकलता थाः हज़रत अबू बहरिया رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत मआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ को "हमस" की मस्जिद में देखा वह

घने और घोंगरियाले वाले बहुत ख़ुबसूरत थे। जब वह बात चीत करते तो उन के साथ साथ उन के मुंह से एक नूर निकलता।जिस की रोशनी और चमक साफ नज़र आती। (तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़ जि1, स20)

हज़रत उसैद बिन हज़ीर

हज़रत उसैद बिन हज़ीर अन्सार के क़बीला औस की शाख़ बनी अब्दुल अशहल से ख़ानदानी तअल्लुक़ रखते हैं। मदीना मुनव्वरा में हज़रत मसअब बिन उमैर की तबलीग़ से यह इस्लाम में दाख़िल हुए। अपने क़बीला बनी अब्दुल अशहल के सरदार और मदीना मुनव्वरा में अपनी ख़ुबियों की वजह से बहुत ही बावक़ार थे। यह क़ुरआन मजीद बड़ी ही अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ते थे। अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ भी उन का बहुत ज़्यादा एज़ाज़ व इकराम करते थे और बारगाहे नुबुवत में मकबूल और हाज़िर रहते थे।

जंगे बद्र, जंगे उहुद, जंगे ख़न्दक़ वग़ैरह तमाम ग़ज़वात में पूरी हिम्मत व बहादुरी से कुफ़्फ़ार से जंग करते रहे। ज़माना ख़िलाफ़त के जिहादों में भी शिरकत फ़रमाते रहे यहाँ तक कि फ़तह बैतुल मुक़द्दस में अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर के साथ रहे। सन २० हिजरी में हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर फ़ारूक़े आज़म की ख़िलाफ़त के दौरान मदीना मुनव्वरा के अन्दर विसाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न हुए। (अकमाल स०585 व असदुल ग़ाबा जि०1, स०92)

करामत

फ़रिश्ते घर के ऊपर उतर पड़े: रिवायत में है कि आप ने नमाज़े तहज्जुद में सूरह बक़रा की तिलावत शुरू की। उसी घर में आप का घोड़ा भी बंधा हुआ था और घोड़े के क़रीब ही में उन का बच्चा यहया भी सो रहा था। यह अच्छी आवाज़ के साथ क़िरत कर रहे थे। अचानक उन का घोड़ा बिदकने लगा यहाँ तक कि उन को ख़तरा

महसूस होने लगा कि घोड़ा उन के बच्चे को कुचल देगा।

चुनान्चे नमाज़ ख़त्म करके जब उन्होंने सहन में आकर ऊपर देखा तो यह नज़र आया कि बादल के टुकड़े की तरह जिस में बहुत से चिराग़ रोशन हैं और कोई चीज़ उन के मकान के ऊपर उतर रही है। आप ने उस मंज़र से घबरा कर क़िरत बन्द कर दी और सुबह को जब बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर यह वाक़िआ बयान किया तो रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि यह फ़रिश्तों की मुक़द्दस जमाअत थी जो तेरी क़िरत की वजह से आसमान से तेरे मकान की तरफ़ उतर पड़ी थी। अगर तू सुबह तक तिलावत करता रहता तो यह फ़रिश्ते ज़मीन से इस क़दर क़रीब हो जाते कि तमाम इंसानों को उनका दीदार हो जाता। **(दलाइलुल नबुवा जि2, स205, मिश्कात शरीफ़ स184 फ़ज़ाइले कुरआन)**

तबसेरा: इस रिवायत से साबित होता है कि खुदा के नेक बन्दों की तिलावत सुनने के लिए आसमान से फ़रिश्तों की जमाअत ज़मीन की तरफ़ उतरती है। यह और बात है कि आम लोग फ़रिश्तों को देख नहीं सकते मगर अल्लाह वालों में से कुछ ख़ास ख़ास लोगों को फ़रिश्तों का दीदार भी नसीब हो जाता है। बल्कि वह फ़रिश्तों से बात भी कर लेते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम رضي الله عنه

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम बिन उस्मान बिन अमर कुरैशी यह क़बीला कुरैश में ख़ानदाने बनी यतीम से तअल्लुक़ रखते हैं। सन 4 हिजरी में पैदा हुए। यह मशहूर मुहद्दिस हज़रत ज़ुहरा बिन मुअबद के दादा हैं। अहले हिजाज़ के मोवह्हीदीन में उन का शुमार होता है। और उन के शागिर्दों में उन के पोते ज़ुहरा बिन मुअबद बहुत मशहूर हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम को बचपन ही में उन की वालिदा हज़रत ज़ैनब बिन्ते हमीद हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ख़िदमत में ले गईं और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप मेरे इस बच्चे से बैअत ले

लीजिए। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि यह तो बहुत ही छोटा है। फिर अपना मुक़द्दस हाथ उन के सर पर फेरा और उन के लिए ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमा दी। (असदुल ग़ाबा जि3, स 270 व अकमाल स 595)

करामत

तिजारत में बरकत: उसी दुआए नबवी की बदौलत उन को यह करामत हासिल हुई कि उन को तिजारत में नफ़अ के सिवा किसी सौदे में कभी भी नुक़्सान हुआ ही नहीं। रिवायत है कि यह अपने पोते जुहरा बिन मुअबद को साथ लेकर बाज़ार में जाते और ग़ल्ला ख़रीदते तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ उन से मुलाक़ात करते और कहते कि हम को भी आप अपनी इस तिजारत में शरीक कर लीजिए। इस लिए कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने आप के लिए ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाई है। फिर यह सब लोग उस तिजारत में शरीक हो जाते तो कभी कभार ऊँट के बोझ बराबर नफ़अ कमा लेते और उस को अपने घर भेज देते। (बुख़ारी जि1, स 340 बाबुश्शरकिया फ़ित्तआम)

तबसेरा: नेक और सालेह लोगों को अपने करोबार और धंधे रोज़गार में इस नियत से शरीक कर लेना कि उन की बरकत से हम फ़ैज़याब होंगे यह सहाबा-ए-किराम का मुक़द्दस तरीक़ा है। चुनान्चे पुराने ज़माने के ख़ुश अक़ीदा और नेक ताजिरों का यही तरीक़ा था कि वह जब कोई तिजारत करते थे तो किसी आलिमे दीन या पीरे तरीक़त का कुछ हिस्सा उस तिजारत में मुक़र्रर कर के उन बुज़ुर्गों को अपना शरीके तिजारत बना लेते थे। ताकि उन अल्लाह वालों की वजह से तिजारत में ख़ैरो बरकत हो। इसी लिए आज कल भी कई ख़ुश अक़ीदा और नेक बख़्त मोमिन ख़ास कर मैमन अपनी तिजारत में हज़रत गौसे अअ्ज़म ﷺ को हिस्सा दार बना लेते हैं और नफ़अ में जितनी रक़म हज़रत गौसे अअ्ज़म अलैहिर्रहमा के नाम की निकलती है उस को यह लोग नियाज़ खाता कहते हैं और उसी रक़म से यह

लोग ग्यारहवीं शरीफ़ की फ़ातिहा भी दिलाते हैं और आलिमों और सैय्यदों को उस रक़म से नज़राना भी दिया करते हैं यक़ीनन यह बहुत ही अच्छा तरीक़ा है। **वल्लाहु तआला अअ्लम।**

हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु

यह मदीना मुनव्वरा के अन्सारी हैं और क़बीला-ए-अन्सार में ख़ानदाने औस के बहुत ही मशहूर फ़रज़न्द हैं। बहुत ही पुर जोश और जाँबाज़ सहाबी हैं। और हुज़ूरे अकरम ﷺ से उन को बे पनाह इश्क़ था। जंगे बद्र में दिल खोल कर इन्तेहाई बहादुरी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़े। जंगे उहुद में भी आप के मुजाहिदाना कारनामे बहादुरी के कारनामे की हैसियत रखते हैं। लेकिन सन 5 हिजरी में असफ़ान व मक्का मुकर्रमा के दरमियान मक़ामे **"रजीअ"** में यह कुफ़्फ़ार के हाथों गिरफ़्तार हो गए। चूँकि उन्हों ने जंगे बद्र में कुफ़्फ़ारे मक्का के एक मश्हूर सरदार **"हारिस बिन आमिर"** को क़त्ल कर दिया था। इस लिए उस के बेटों ने उन को ख़रीद लिया और लोहे की ज़ंजीरों में जकड़ कर उन को अपने घर की एक कोठरी में क़ैद कर दिया। फिर मक्का मुकर्रमा से बाहर मक़ामे **"तईम"** में ले जाकर एक बहुत बड़ी भीड़ के सामने उन को सूली पर चढ़ा कर शहीद कर दिया। इस्लाम में यह पहले ख़ुश नसीब सहाबी हैं जिन को कुफ़्फ़ार ने सूली पर चढ़ा कर शहीद किया। सूली पर चढ़ने से पहले उन्होंने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया कि ऐ गरोहे कुफ़्फ़ार! सुन लो मेरा दिल तो यही चाहता था कि देर तक नमाज़ पढ़ता रहूँ क्योंकि यह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है। मगर मुझ को यह ख़्याल आ गया कि कहीं तुम लोग यह न समझ लो कि मैं शहादत से डरता हूँ इस लिए मैं ने बहुत ही मुख़्तसर नमाज़ पढ़ी। कुफ़्फ़ार ने आप को जब सूली पर चढ़ा दिया तो आप ने ईमान अफ़रोज़ अशआर पढ़े। फिर हारिस बिन आमिर के बेटे **"अबू सरूआ"** ने आप के मुक़द्दस सीना में नेज़ा मार कर आप को शहीद कर दिया। आप की शहादत का पूरा

हाल आप हमारी किताब "ईमानी तक़रीरें" और "सीरते मुस्तफ़ा" में पढ़िए। उन की कुछ करामात क़ाबिले ज़िक्र हैं।

करामत

बे मौसम का फल: जिन दिनों में यह हारिस बिन आमिर के बेटों की क़ैद में थे ज़ालिमों ने दाना पानी बन्द कर दिया था और उन को ज़ंजीरों में इस तरह जकड़ दिया था कि उन के हाथ पावं दोनों बंधे हुए थे। उस ज़माना में हारिस बिन आमिर की बेटी का बयान है कि खुदा की क़सम! मैंने खुबैब(ﷺ)से अच्छा कोई क़ैदी नहीं देखा।मैं ने बार बार यह देखा कि वह क़ैद की कोठरी के अन्दर ज़ंजीरों में बंधे हुए बेहतरीन अंगूरों का खोशा हाथ मे लिए खा रहे हैं। हालांकि खुदा की क़सम! उन दिनों मक्का मुअज़्ज़मा के अन्दर कोई फल भी नहीं मिलता था और अंगूर का तो मोसम भी नहीं था।(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि2, स869 व बुखारी शरीफ़)

मक्का की आवाज़ मदीना पहुँची: जब हज़रत खुबैब ﷺ सूली पर चढ़ाए गए तो उन्होंने बड़ी अफसोस के साथ कहा कि या अल्लाह! मैं यहाँ किसी को नहीं पाता जिस के ज़रिइए मैं आख़िरी सलाम तेरे प्यारे रसूल ﷺ तक पहुँचा सकुँ। इस लिए तू मेरा सलाम हबीब ﷺ तक पहुँचा दे। सहाबा किराम का बयान है कि हुज़ूरे सरवरे आलम ﷺ मदीना मुनव्वरा के अन्दर अपने असहाब के मजलिस में बैठे थे कि बिल्कुल ही अचानक आप ने बलन्द आवाज़ से वअलैकुमुस्सलाम फ़रमाया। सहाबा-ए-किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इस वक़्त आप ने किस को सलाम का जवाब दिया है। आप ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारा दीनी भाई खुबैब अभी अभी मक्का मुअज़्ज़मा में सूली पर चढ़ा दिया गया और उस ने सूली पर चढ़ कर मेरे पास अपना सलाम भेजा है। और मैं ने उस के सलाम का जवाब दिया है।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि 2, स 869)

एक साल में तमाम क़ातिल हलाक: रिवायत है कि सूली पर चढ़ाए जाने के वक़्त हज़रत खुबैब رضي الله عنه ने क़ातिलों के मजमअ की तरफ़ देख कर यह दुआ मांगी। اللهم احصهم عددا وا قتلهم بددا ولا تبق منهم احدا (यअनी ऐ अल्लाह! मेरे उन तमाम क़ातिलों को गिन कर शुमार कर ले और उन सब को हलाक फ़रमा दे और उन में से किसी एक को भी बाक़ी न रख) एक काफ़िर का बयान है कि मैं ने जब खुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु को बद दुआ करते हुए सुना तो मैं ज़मीन पर लेट गया ताकि खुबैब की नज़र मुझ पर न पड़े। चुनान्चे उस का असर यह हुआ कि एक साल पूरा होते तमाम वह लोग जो आप के क़तल में शरीक व राज़ी थे सब के सब हलाक व बरबाद हो गए। फ़क़त तनहा मैं बच गया हूँ।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि2, स 869 व बुखारी)

लाश को ज़मीन निगल गई: हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने सहाबा-ए-किराम से इरशाद फ़रमाया कि मक़ामे तईम में हज़रत खुबैब की लाश सूली पर लटकी हुई है जो मुसलमान उन की लाश को सूली से उतार कर लाए गा मैं उस के लिए जन्नत का वादा करता हूँ। यह खुशखबरी सुन कर हज़रत जुबैर बिन अव्वाम और हज़रत मिक़दाद बिन असवद رضي الله عنهما तेज़ रफ़तार घोड़ों पर सवार हो कर रातों को सफ़र करते थे। उन दोनों हज़रात ने लाश को सूली से उतारा चालीस दिन गुज़र जाने के बावजूद लाश बिल्कुल तरो ताज़ा थी और ज़ख़्मों से ताज़ा ख़ून टपक रहा था घोड़े पर लाश को रख कर मदीना मुनव्वरा का रूख़ किया मगर सत्तर काफ़िरों ने उन लोगों का पीछा किया। जब उन दोनों हज़रात ने देखा कि अब हम गिरफ़्तार हो जाएंगे तो उन दोनों ने मुक़द्दस लाश को ज़मीन पर रख दिया। खुदा की शान देखिए कि एक दम ज़मीन फट गई और मुक़द्दस लाश को ज़मीन निगल गई और फिर इस तिरह बराबर हो गई कि फटने का नाम व निशान भी बाक़ी न रहा। यही वजह है कि हज़रत खुबैब رضي الله عنه का लक़ब **"बलीउल अर्ज़"** (जिन को ज़मीन निगल गई) है! फिर उन दोनों हज़रात ने फ़रमाया कि ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का हम तो दो शेर हैं जो अपने जंगल में जा रहे थे।

अगर तुम लोगों से हो सके तो हमारा रास्ता रोक कर देख लो। वरना अपना रास्ता लो। जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने देख लिया कि इन दोनों हज़रात के पास लाश नहीं है तो वह लोग मक्का वापस चले गए।

(मदारिजुन्नबुवा जि2, स 141)

तबसेरा: शहीदे इस्लाम हज़रत खुबैब अन्सारी सहाबी رضی اللہ عنہ की उन चारों करामतों को पढ़ कर नसीहत हासिल कीजिए कि खुदा वन्दे करीम शोहदा-ए-किराम खास कर अपने हबीब अलैहिस्सलातु वस्सलाम के असहाबे किराम को कैसी कैसी अज़ीमुश्शान करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाता है और यह नसीहत हासिल कीजिए कि सहाबा-ए-किराम ने दीने इस्लाम की खातिर कैसी कुरबानी पेश की हैं। और फिर सोचिए कि हम आज के मुसलमान इस्लाम के लिए क्या कर रहे हैं? और हमें क्या करना चाहिए और फिर खुदा का नाम ले कर उठिए और इस्लाम के लिए कुछ कर डालिए।

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी رضی اللہ عنہ

यह मदीना मुनव्वरा के वही खुश नसीब अन्सारी हैं जिन के मकान को शहंशाहे कौनैन ﷺ ने मेहमान बन कर शर्फ़े नुज़ूल बख़्शा और यह शहंशाहे दो आलम ﷺ की मेज़बानी से सात महीने तक सरफ़राज़ होते रहे और दिन रात सुबह व शाम हर वक़्त व हर पल अपने हर क़ौल व फ़ेल से ऐसी वालिहाना अक़ीदत और आशिक़ाना जाँ निसारी का मुज़ाहिरा करते रहे कि मुश्किल ही से उस की मिसाल मिल सकेगी।

हुजूरे अक़्दस ﷺ ने मुलाक़ातियों की आसानी के लिए नीचे की मंज़िल में क़याम पसन्द फ़रमाया। मजबूरन हज़रत अबू अय्यूब अनसारी ऊपर की मंज़िल में रहे। एक मर्तबा अंजाने में पानी का घड़ा टूट गया तो उस अन्देशा से कि कहीं पानी बह कर नीचे वाली मंज़िल में न जाए और हुजूर रहमते आलम ﷺ को कुछ तकलीफ़ न पहुँच जाए हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी رضی اللہ عنہ घबरा गए और सारा पानी अपने लिहाफ़ में सुखा लिया। घर में बस यही एक रज़ाई थी जो गीली हो

गई। रात भर मिया बीवी ने सरदी खाई। मगर हुज़ूरे अकरम ﷺ को ज़र्रा भर भी तकलीफ़ पहुँच जाए यह गवारा नहीं किया। ग़रज़ बे पनाह अदब व एहतेराम और मुहब्बत व अक़ीदत के साथ सुलताने दारेन ﷺ की मेहमान नवाज़ी व मेज़बानी के फ़राइज़ अदा करते रहे।

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी رضي الله عنه सख़ावत के साथ साथ बहादुरी में भी बेमिसाल थे। तमाम इस्लामी लड़ाइयों में मुजाहिदाना शान के साथ लड़ाई लड़ते रहे। यहाँ तक कि हज़रत अमीरे मआविया رضي الله عنه के ज़माने में जब मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर जिहादे कुस्तुनतुनिया के लिए रवाना हुआ तो अपने बुढ़ापे के बावजूद भी आप मुजाहिदीन के उस लश्कर के साथ जिहाद के लिए तशरीफ़ ले गए और बराबर मुजाहिदीन की सफ़ों में खड़े हो कर जिहाद करते रहे।

जब सख़्त बीमार हो गए और खड़े होने की ताक़त नहीं रही तो आप ने मुजाहिदीने इस्लाम से फ़रमाया कि जब तुम लोग जंग बन्दी करो तो मुझे भी सफ़ में अपने क़दमों के पास लिटाए रखो और जब मेरा इन्तक़ाल हो जाए तो तुम लोग मेरी लाश को कुस्तुनतुनिया के क़िला की दीवार के पास दफ़न करना। चुनान्चे सन ५१ हिजरी में उसी जिहाद के दौरान आप की वफ़ात हुई और इस्लामी लश्कर ने उन की वसियत के मुताबिक़ उन को कुस्तुनतुनिया के क़िला की दीवार के पास दफ़न कर दिया।

यह अन्देशा था कि शायद ईसाई आप की क़ब्र खोद डालें। मगर ईसाईयों पर ऐसी हैबत सवार हो गई कि वह आप की मुक़द्दस क़ब्र को हाथ न लगा सके और आज तक आप की क़ब्र शरीफ़ उसी जगह मौजूद है और लोगों के लिए ज़ियारत गाह है जहाँ हर क़ौम व मिल्लत के लोग हर वक़्त हाज़िरी देते हैं।

करामत

क़ब्र मुबारक शिफ़ाख़ाना बन गई: यह आप की करामत का एक रूहानी और नूरानी जलवा है कि बहुत ही दूर दूर से क़िस्म क़िस्म के

मरीज़ जो जिन्दगी से मायूस हो जाते हैं आप की क़ब्र शरीफ़ के लिए हाज़िरी देते हैं और ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से शिफ़ा पाते हैं।

(अकमाल फ़ी अस्माइर्रिजाल स 586 व हाशिया अल उम्माल जि6, स 225 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बसर رضی اللہ عنہ

यह अब्दुल्लाह बिन बसर माज़नी हैं। उन की कुन्नियत अबू बसर या अबू सफ़वान है। उन के वालिद ने हुज़ूरे अकरम ﷺ की दअवत की और शहंशाहे दो आलम ने जो कुछ था खाया। फिर खुजूरें लाई गईं। आप ने खुजूरें भी खाईं। और हज़रत अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ के सर पर अपना दस्ते मुबारक रख कर दुआ फ़रमाई। यह आख़िरी उम्र में मुल्के शाम चले गए।

अल्लामा इब्ने असीर का बयान है कि यह आख़िरी सहाबी हैं जिन का मुल्के शाम में विसाल शरीफ़ हुआ। यही अब्दुल्लाह बिन बसर رضی اللہ عنہ हैं। इन की उम्र में इख़्तिलाफ़ है। इसाबा में हैं कि ९४ बरस की उम्र में वफ़ात पाई और अल्लामा अबू नईम का क़ौल है। कि एक सौ बरस की उम्र में उन का विसाल हुआ। बग़ैर किसी बीमारी के शहर हमस में वुज़ू करते हुए बिल्कुल ही अचानक वफ़ात पा गए।

(अकमाल स 603 व असदुल ग़ाबा जि 3, स 125 व कंज़ुल उम्माल जि16 सव 104)

करामत

रिज़्क़ में कभी तंगी पैदा नहीं हुई: दुआए नबवी की बरकत से उम्र भर उन की रोज़ी में तंगी नहीं हुई। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन के घर में खाने से फ़ारिग़ हो कर घर वालों के लिए तीन दुआएं मांगी थीं:–

(1) या अल्लाह! इन लोगों की मग़्फ़िरत फ़रमा।

(2) या अल्लाह! इन लोगों पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

(3) या अल्लाह! इन लोगों की रोज़ी मे बरकत फ़रमा।
(कंजुल उम्माल जि16, स 104 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत अम्र बिन हमक رضي الله عنه

सुलह हुदैबिया के बाद यह अपने क़बीला बनी ख़ुज़ाआ से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा आए और दरबारे नुबुवत में हाज़िर रह कर हदीसें याद करते रहे। फिर कूफ़ा चले गए और वहाँ से मिस्र जाकर बस गए। कुछ दिनों शाम में भी रहे। उन के शागिर्दों में जुबैर बिन नफ़ीर और रफ़ाआ बिन शद्दाद वग़ैरह बहुत मश्हूर मुहद्दसीन हैं। यह हज़रत अली رضي الله عنه के तरफ़दार थे। और जंगे जमल व सिफ्फ़ीन व नहरवान में हज़रत अली के साथ रहे। जब हज़रत इमाम हसन رضي الله عنه ने ख़िलाफ़त हज़रत अमीरे मआविया رضي الله عنه को सौंप दी। तो उस वक़्त हज़रत अमीरे मआविया رضي الله عنه के गवर्नर "ज़्याद" के ख़ौफ़ से यह इराक़ से भाग कर "मोसल" के एक ग़ार में गए और उसी ग़ार में उन को साँप ने काट लिया जिस से उन की वहीं वफ़ात हो गई। अल्लामा इब्ने असीर साहिब असदुल ग़ाबा का बयान है कि उन की क़ब्र शरीफ़ मोसल में बहुत ही मशहूर ज़ियारत गाह है। क़ब्र पर बहुत बड़ा गुंबद और लम्बी चौड़ी दरगाह है। सन् 50 हिजरी में आप की शहादत हुई। (असदुल ग़ाबा जि4, स 100)

करामत

अस्सी (80) बरस की उम्र में सब बाल काले:

उन्होंने हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ख़िदमत में दूध का तोहफा पेश किया। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने दूध पी कर उन की जवानी की बक़ा के लिए दुआ फ़रमा दी। इस दुआए नबवी की बदौलत उन को यह करामत मिल गई कि अस्सी बरस की उम्र हो जाने के बावजूद उन का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुआ था।

(कंजुल उम्माल स० 165 स 112 व असदल ग़ाबा जि4, स100)

हज़रत आसिम बिन साबित رضي الله عنه

हज़रत आसिम बिन साबित बिन अफ़्लह अन्सारी। यह अन्सार में क़बीला औस के काबिले फख़्र सपूत हैं बहुत ही जाँबाज़ और बहादुर सहाबी हैं। उन्होंने जंगे बद्र में बे मिसाल जुराअत व बहादुरी का मुज़ाहिरा किया और कुफ़्फ़ारे कुरैश के बड़े बड़े नामवर सरदारों को क़त्ल कर दिया। यह हज़रत उमर رضي الله عنه के बेटे हज़रत आसिम बिन उमर رضي الله عنه के नाना हैं। सन् 4 हिजरी में ग़ज़वतुर्रजीअ की जंग में यह कुफ़्फ़ार से आमने सामने लड़ते हुए अपने छः साथियों के साथ शहीद हो गए।

(असदुल ग़ाबा जि 3, स 73)

करामात

शहद की मक्खियों का पहरा: चूँकि आप ने जंगे बद्र के दिन कुफ़्फ़ारे मक्का के बड़े बड़े नामी गिरामी सूरमाओं और नामवर सरदारों को मौत के घाट उतार दिया था। इस लिए जब कुफ़्फ़ारे मक्का को उन की शहादत की ख़बर मिली तो उन काफ़िरों ने चन्द आदमियों को इस लिए मक़ामे रजीअ में भेज दिया ताकि उन के बदन का कोई ऐसा हिस्सा (सर वग़ैरा) काट कर लाएं जिस से यह पहचान हो जाए कि वाक़ई हज़रत आसिम क़त्ल हो गए। चुनान्चे चन्द कुफ़्फ़ार उन की लाश की तलाश में मक़ामे रजीअ तक पहुँच गए मगर वहाँ जाकर उन काफ़िरों ने उस शहीद मर्द की यह करामत देखी कि लाखों की तअदाद में शहद की मक्खियों के झुंड ने उन की लाश के इर्द गिर्द इस तरह घेरा डाल रखा है जिस से वहाँ तक किसी का पहुँचना ही ना मुमकिन हो गया है। इस लिए कुफ़्फ़ारे मक्का नाकाम व नामुराद होकर मक्का वापस चले गए।

(बुख़ारी जि 2, स 569 व ज़रक़ानी जि2, स 73)

समन्दर में क़ब्र : एक रिवायत में यह भी है कि मक्का की एक औरत सलाफ़ा बिन्ते सअद के दो बेटों को हज़रत आसिम बिन साबित

ने जंगे बद्र में क़त्ल कर डाला था। इस लिए औरत ने बदले के जोश में यह क़सम खा रखी थी कि अगर मुझ को आसिम बिन साबित का सर मिल गया तो उन की खोपड़ी में शराब पियोंगी। चुनान्चे उस ने कुछ लोगों को भेजा था कि तुम उन का सर काट कर ले आओ। मैं उस को बहुत बड़ी क़ीमत दे कर ख़रीद लूंगी। इस लालच में चन्द कुफ़्फ़ार मक़ामे रजीअ तक पहुँचे मगर जब उन्हों ने शहद की मक्खियों का घेरा देखा तो हवास बाख्ता हो गए मगर कुछ लालची लोग इस इन्तज़ार में वहाँ ठहर गए कि जब कभी भी यह शहद की मक्खियाँ उड़ जाएंगी तो हम उन का सर काट कर ले जाएं गे। खुदा की शान कि निहायत ही ज़ोर दार बारिश हुई और पहाड़ों से बरसाती नाला बहता हुआ उस मैदान में पहुँचा और इस ज़ोर का रेला आया कि कुफ़्फ़ार जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए और आप की मुक़द्दस लाश पानी के बहाओ के साथ बहते हुए समन्दर में पहुँच गई।

रिवायत है कि जिस दिन आसिम बिन साबित ने इस्लाम क़बूल किया था उस दिन खुदा से यह वादा किया था कि मैं न तो किसी काफ़िर के बदन को हाथ लगाऊंगा न किसी काफ़िर को मौक़ा दूंगा कि वह मेरे बदन को छू सके। अल्लाहु अकबर! खुदा की शान कि ज़िन्दगी भर तो उन का यह वादा पूरा होता ही रहा। मगर शहादत के बाद भी खुदा वन्दे कुद्दूस ने उन के इस वादे को पूरा फ़रमा दिया कि कुफ़्फ़ार उन के मुक़द्दस बदन को हाथ न लगा सके। पहले शहद की मक्खियों का पहरा लगा दिया। फिर बरसाती नालों ने उन के बदन मुबारक को उन के मदफ़न तक पहुँचा दिया। **(हुज्जतुल्लाह जि2, स 869 बहवाला बैहक़ी व कंज़ुल उम्माल जि16, स 187)**

तबसेरा: हज़रत आसिम बिन साबित की उन दोनों करामतों को पढ़ कर गौर फ़रमाइए कि अल्लाह तआला का शोहदा-ए-किराम पर कितना बड़ा फज्ल होता है और राहे खुदा में जान फ़िदा करने वालों को रब्बुल इज़्ज़त जल्ल जलालहू के दरबारे आलिया से कैसी अज़ीमुश्शान करामतों के निशान अता किए जाते हैं। वफ़ात के बाद

भी उन के तसर्रूफ़ात बसूरत करामात जारी रहते हैं। इस लिए शहीदों से अक़ीदत व मुहब्बत और उन का अदब व एहतेराम वाजिब और ईमान का एक जरूरी हिस्सा होता है।

हज़रत उबैदा बिन हारिस رضی اللہ عنہ

उन का वतन मक्का मुकर्रमा है और यह ख़ानदाने कुरैश के बहुत ही मुमताज़ और नामवर शख़्स हैं। यह शुरू इस्लाम ही में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए थे। फिर हिजरत भी की। निहायत ही ख़ूबसूरत बहुत ही बहादुर और जाँबाज़ सहाबी हैं। सन् 2 हिजरी में साठ या अस्सी मुहाजिरीन के साथ हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उन को "राबिग़" की तरफ़ जिहाद के लिए रवाना फ़रमाया। चुनान्चे तारीख़े इस्लाम में मुजाहिदीन का यह लश्कर सरिया उबैदा बिन हारिस के नाम से मश्हूर है। सन २ हिजरी में जंगे बद्र में उन्होंने शैबा बिन रबीआ से जंग की जो लश्करे कुफ़्फ़ार के कमान्डर उतबा बिन रबीआ का भाई था। यह बड़ी जाँबाज़ी के साथ लड़ते रहे मगर इस क़दर ज़ख़्मी हो गए कि उन की पिन्डली टूट कर चूर चूर हो गई और नली का गूदा बहने लगा। यह देख कर हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने आगे बढ़ कर शैबा को क़त्ल कर दिया और हज़रत उबैदा رضی اللہ عنہ को अपने कांधे पर उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए। इस हालत में हज़रत उबैदा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! क्या मैं शहादत से महरूम रहा? इरशाद फ़रमाया। हरगिज़ नहीं बल्कि तुम शहादत से सरफ़राज़ हो गए। यह सुन कर उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह! अगर आज अबू तालिब ज़िन्दा होते तो वह मान लेते कि उन के इस शेअ़र का मतलब मैं ही हूँ।

ونسلمه حتى نصرع حوله ☆ ونذهل عن ابنائنا والحلائل

(यअनी हम हुज़ूरे अकरम ﷺ को उस वक़्त दुश्मानों के हवाले करेंगे जब हम उन के गर्दा गर्द लड़ते ख़ून में लत पत हो जाएंगे और हम अपने बेटों और बीवियों को भूल जाएंगे।)

उसी ज़ख़्म में आप मंज़िले सुफ़रा में पहुँच कर शर्फ़ शहादत से

सरफ़राज़ हो गए।(अबू दाऊद जि2, स 261 व ज़रक़ानी जि1, स 418)

करामत

क़ब्र की खुशबू दूर तकः इश्क़े रसूल में बे पनाह जाँ निसारियों और फ़िदा कारियों की बदौलत उन को यह शानदार करामत नसीब हुई कि उन की क़ब्रे अतहर से इस क़दर मुश्क की तेज़ ख़ुश्बू आती कि पूरा मैदान हर वक़्त महकता रहता।

चुनान्चे ब्यान किया गया है कि एक मुद्दत के बाद हुज़ूरे अक़दस ﷺ का सहाबा- ए-किराम के साथ मंज़िले सफ़रा में क़याम हुआ तो सहाबा-ए-किराम ने हैरान होकर बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की कि या रसूलल्लाह! इस सहरा में मुश्क की इस क़दर तेज़ ख़ुश्बू कहाँ से और क्यों आ रही है? आप ने इरशाद फ़रमाया कि इस मैदान में अबू मआविया (हज़रत उबैदा ؓ) की क़ब्र मौजूद होते हुए तुम्हें तअज्जुब क्यों हो रहा है कि यहाँ मुश्क की खुश्बू महक रही है ? (किताब सद सहाबा स 314 मर्तबा शाह मुराद मारहरवी)

अल्लाहु अकबर! यह सच है:

कमालाते वली मिट्टी में भी यूँ जगमगाते हैं
कि जैसे नूर ज़ुलमत में कभी पिन्हाँ नहीं होता

हज़रत सअद बिन रबीअ ؓ

हज़रत सअ्द बिन रबीअ बिन अम्र अन्सारी ख़ज़रजी ؓ बैअते उक़बा पहला और बैअते उक़बा दुसरा दोनों बैअतों में शरीक रहे और यह अन्सार में से खानदान बनी हारिस के सरदार थे। ज़मानए जाहलियत में जब कि अरब में लिखने पढ़ने का बहुत ही कम रवाज था उस वक़्त यह लिखना जानते थे। यह हुज़ूरे अक़दस ﷺ के इन्तहाई आशिक़ और बे हद जाँनिसार सहाबी हैं। हज़रत सअद बिन रबीअ की बेटी का बयान है कि मैं अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ؓ के दरबार में हाज़िर हुई तो उन्होंने अपने बदन की चादर

उतार कर मेरे लिए बिछा दी और मुझे उस पर बैठाया। इतने में हज़रत उमर आ गए और पुछा यह लड़की कौन है? अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि यह उस शख़्स की बेटी है जिस ने हुज़ूरे अकरम के ज़माने ही में जन्नत के अन्दर अपना ठिकाना बना लिया और मैं और तुम यूँ ही रह गए। यह सुन कर हज़रत उमर ने हैरत के साथ पुछा! कि ऐ ख़लीफ़ए रसूल! वह कौन शख़्स हैं? तो आप ने फ़रमाया कि "सअद बिन रबीअ" हज़रत उमर ने उस की तसदीक़ की। जंगे बद्र में निहायत बहादुरी के साथ कुफ़्फ़ार से जंग की। जंगे उहुद में बारह काफ़िरों को एक एक नेज़ा मारा और जिस को एक नेज़ा मारा वह मर कर ठंडा हो गया फिर घमासान की जंग में ज़ख़्मी होकर उसी जंगे उहुद में सन् 3 हिजरी को शहीद हो गए। और हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद के साथ एक क़ब्र में दफ़न हुए। (अकमाल स 596 हाशिया कंजुल उम्माल जि16, स 36 असदुल ग़ाबा स2, स 277)

करामत

दुनिया में जन्नत की ख़ुश्बू: हज़रत ज़ैद बिन साबित का बयान है कि जंगे उहुद के दिन हुज़ूरे अक़दस ने मुझ को हज़रत सअद बिन रबीअ की लाश की तलाश में भेजा और फ़रमाया कि अगर वह ज़िन्दा मिलें तो तुम उन से मेरा सलाम कह देना। चुनान्चे जब तलाश करते करते मैं उन के पास पहुँचा तो उन को इस हाल में पाया कि अभी कुछ कुछ जान बाक़ी थी। मैं ने हुज़ूरे अकरम का सलाम पहुँचाया तो उन्होंने जवाब दिया और कहा कि रसूलुल्लाह से मेरा सलाम कह देना और सलाम के बाद यह भी अर्ज़ कर देना कि या रसूलल्लाह! मैं जन्नत की खुश्बू मैदाने जंग मे सूंघ चुका और मेरी क़ौम अन्सार से मेरा यह आख़िरी पैग़ाम कह देना कि अगर तुम में एक आदमी भी ज़िन्दा रहा और कुफ़्फ़ार का हमला रसूलुल्लाह तक पहुँच गया तो अल्लाह तआला के दरबार में तुम्हारा कोई उज़्र

क़बूल नहीं हो सकता और तुम्हारा वह वादा टूट जाएगा जो तुम लोगों ने बैअते उक़बा में किया था। इतना कहते कहते उन की रूह परवाज़ कर गई। (हुज्जतुल्लाह जि2,स870 बहवाला हाकिम व बैहक़ी)

बाज़ रिवायात से पता चलता है कि जिस शख़्स को हुज़ूरे अकरम ﷺ ने हज़रत सअद बिन रबीअ رضی اللہ عنہ की लाश का पता लगाने के लिए भेजा था। वह हज़रत उबै बिन कअब رضی اللہ عنہ थे। चुनान्चे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ का यही कहना है। **(वल्लाहु तआला अअ्लम, असदुल ग़ाबा जि2, स 277)**

तबसेरा: अल्लाहु अकबर! ग़ौर फ़रमाइए कि हज़रत सहाबा-ए-किराम को हुज़ूरे अकरम ﷺ से कितनी वालिहाना मुहब्बत और किस क़दर आशिक़ाना लगाओ था कि आख़री वक़्त है। ज़ख़्मों से निढाल हैं। मगर उस वक़्त भी हुज़ूर रहमते आलम ﷺ का ख़्याल दिल व दिमाग़ के कोना कोना में छाया हुआ है। अपने घर वालों के लिए अपनी बच्चियों के लिए कोई वसीयत नहीं फ़रमाते। मगर रसूलुल्लाह ﷺ के लिए अपनी सारी क़ौम को कितना अहम आख़िरी पैग़ाम देते हैं। सहाबा-ए-किराम की यही वह नेकियाँ हैं जो क़यामत तक किसी को नसीब नहीं हो सकतीं। और इसी लिए **सहाबा-ए-किराम** رضی اللہ عنہم का सारी उम्मत में वह दर्जा है जो आसमान पर सितारों की बारात में चाँद का दर्जा है।

हज़रत सअद बिन रबीअ رضی اللہ عنہ के कोई बेटा नहीं था। सिर्फ़ दो बेटियाँ थीं। जिन को हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन की मीरास में से दो सुलस (तिहाई हिस्सा) अता फ़रमाया। **वल्लाहु तआला अअ्लम।**

हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ

हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ का नसब नामा यह है। अनस बिन मालिक बिन नसर बिन ज़मज़म बिन ज़ैद बिन हराम अन्सारी। आप क़बीलए अन्सार में ख़ज़रज की एक शाख़ बनी नख़्ज़ार में से हैं। उन की माँ का नाम उम्मे सुलैम बिन्ते मलहान है। उन की कुन्नियत हुज़ूरे अकरम ﷺ ने अबू हमज़ा रखी और उन का मशहूर लक़ब

"ख़ादिमुन्नबी" है। और उस लक़ब पर हज़रत अनस को बे हद फ़ख़्र था। दस बरस की उम्र में यह ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और दस बरस तक सफ़र व वतन, जंग व सुलह हर जगह हर हाल में हुज़ूरे अकरम की ख़िदमत करते रहे और हर दम ख़िदमते अक़दस में हाज़िर रहते। हुज़ूरे अक़दस के तबर्रुकात में से उन के पास छोटी सी लाठी थी। आप ने वसियत की थी कि उस को बवक़्ते दफ़न मेरे कफ़न में रख दें। चुनान्चे यह लाठी आप के कफ़न मे रख दी गई। हुज़ूरे अक़दस ने उन के लिए ख़ास तौर पर माल और औलाद में तरक़्क़ी और बरकत की दुआएं फ़रमाई थीं। चुनान्चे उन के माल और औलाद में बेहद बरकत व तरक़्क़ी हुई। मुख़्तलिफ़ बीवियों और बांदियों से आप के अस्सी लड़के और दो लड़कियाँ पैदा हुई। और जिस दिन आप का विसाल हुआ उस दिन आप के बेटों और पोतों वग़ैरा की तअदाद एक सो बीस थी। बहुत ज़्यादा हदीसें आप से मरवी हैं। आप के शागिर्दों की तअदाद भी बहुत ज़्यादा है। मेंहदी का ख़ेज़ाब सर और दाढ़ी में लगाते थे और ख़ुश्बू भी ख़ूब इस्तेमाल करते। आप ने वसियत फ़रमाई कि मेरे कफ़न में वही ख़ुश्बू लगाई जाए जिस में हुज़ूर रहमते आलम का पसीना मिला हुआ है। उन की वालिदा हुज़ूरे अकरम के पसीना को जमा करके ख़ुश्बू में मिलाया करती थीं।

हज़रत उमर के दौरे ख़िलाफ़त में लोगों को तअलीम देने के लिए आप मदीना मुनव्वरा से बसरा चले गए। आप के साले विसाल और आप की उम्र शरीफ़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है। मश्हूर यह है कि सन् 91 हिजरी में आप का विसाल हुआ। कुछ ने सन् 92 हिजरी, कुछ ने सन् 93 हिजरी, कुछ ने सन् 90 हिजरी को आप का विसाल का साल तहरीर किया है। बवक़्ते विसाल आप की उम्र शरीफ़ एक सौ तीन बरस की थी। बाज़ एक सौ दस बाज़ एक सौ सात और बाज़ ने निन्नावे बरस लिखा हुआ। आप के बाद शहर बसरा मे कोई सहाबी बाक़ी नहीं रहा। बसरा से दो कोस के फ़ासला पर आप की

क़ब्र शरीफ़ बनी जो लोगों की ज़ियारत गाह है। आप बहुत ही हक़ बोलने वाले, हक़ पसन्द, इबादत गुज़ार सहाबी हैं और आप की चन्द करामतें भी मन्कूल हैं। (अकमाल स 575 स असदुल ग़ाबा जि1, स 127)

करामात

साल में दो मर्तबा फल देने वाला बाग़: उन की करामतों में से एक करामत यह है कि दुनिया भर में खुजूरों का बाग़ साल में एक ही मर्तबा फलता है मगर आप का बाग़ साल में दो मर्तबा फलता था।

(मिश्कात शरीफ़ जि2, स 545)

खुजूरों में मुश्क की खुश्बू:- इसी तरह यह भी आप की बहुत ही बे मिसाल करामत है कि आप के बाग़ के खुजूरों में मुश्क की खुश्बू आती थी जिस की मिसाल दुनिया में कहीं भी नहीं मिल सकती है।

(मिश्कात शरीफ़ जि2, स 545)

दुआ से बारिश:- आप का माली आया और सख्त सूखे और खुश्क साली की शिकायत करने लगा। आप ने वुज़ू फ़रमाया और नमाज़ पढी। फिर फ़रमाया कि ऐ माली! आसमान की तरफ़ देख! क्या तुझे कुछ नज़र आरहा है? बाग़बान ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मैं तो आसमान में कुछ भी नहीं देख रहा हूँ फिर आप ने नमाज़ पढ़ कर बाग़बान से पुछा कि क्या आसमान में कुछ नज़र आ रहा है। अब की मर्तबा बाग़बान ने जवाब दिया कि जी हाँ। एक परिन्द के पर के बराबर बदली का टुकड़ा नज़र आ रहा है फिर आप बराबर नमाज़ और दुआ में मशग़ूल रहे यहाँ तक कि आसमान में हर तरफ़ बादल छा गया और बहुत ही ज़ोर दार बारिश हुई। फिर हज़रत अनस رضی اللہ عنہ ने बाग़बान को हुक्म दिया कि तुम घोड़े पर सवार होकर देखो कि यह बारिश कहाँ तक पहुँची है? उस ने चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ा कर देखा और आकर कहा कि बारिश "मसीरीन" और "क़ज़बान" के महल्लों के आगे नहीं बढ़ी। (तबक़ात इब्ने सअ्द जि 7, स21)

तबसेरा: बारिश कहाँ तक हुई है? उस को देखने और मालूम

करने की वजह यह थी कि इस शहर में जहाँ आप थे सूखा पड़ गया था। और पानी की सख़्त ज़रूरत थी। बाक़ी दूसरे इलाक़ों में काफ़ी बारिश हो चुकी थी। उन इलाक़ों में बिल्कुल और बारिश की ज़रूरत नहीं थी। बल्कि वहाँ ज़्यादा बारिश से नुक़सान होने का खतरा था। इसी लिए आप ने पता लगाया कि बारिश कहाँ तक हुई है? जब आप को मालूम हो गया कि बारिश उसी शहर में हुई है जहाँ बारिश की ज़रूरत थी तो फिर आप को इत्मिनान हो गया कि अलहम्दु लिल्लाह! इस बारिश से कहीं भी कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

अल्लाहु अकबर! बारगाहे इलाही के मक़बूल बन्दों की शान और दरबारे ख़ुदावन्दी में उन की मक़बूलियत का क्या कहना? जब ख़ुदा से अर्ज़ किया बारिश हो गई और जहाँ तक बारिश बरसाना चाही वहीं तक बरसी।

लिल्लाह! ग़ौर फ़रमाइए कि क्या औलिया अल्लाह का हाल और उन की शान आम इंसानों जैसी है? तौबा, तौबा, नऊज़ुबिल्लाह! कहाँ यह अल्लाह तआला के पाक बन्दे और कहाँ मनहूस और दिलों के गंदे लोग। چہ نسبت خاک رابا عالم پاک

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं

کار پاکاں را قیاس از خود مگیر ☆ گرچہ ماند در نوشتن شیر و شیر

(यअनी पाक लोगों के मामलात को अपने ऊपर मत क़यास कर। अगरचे लिखने मे शेर और शीर बिल्कुल हम शक्ल और एक जैसे हैं। लेकिन एक शेर वह है कि इंसान को फाड़ कर खा जाता है। और एक शीर (दूध) है कि उसे इंसान खाता और पीता है)

فاعتبروا یا اولی الابصار

हज़रत अनस बिन नज़र رضی اللہ عنہ

यह हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ के चचा हैं। यह बहुत ही बहादुर और जाँबाज़ सहाबी हैं। हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ का बयान है कि मेरे चचा हज़रत अनस बिन नज़र رضی اللہ عنہ जंगे उहुद के दिन अकेले ही

कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए आगे बढ़ते चले गए। जब आप ने देखा कि कुछ मुसलमान सुस्त पड़ गए हैं और आगे नहीं बढ़ रहे तो आप ने बलन्द आवाज़ से ललकार कर फ़रमाया:- والذى نفسى بيده انى لا جدريح الجنة دون احد وانها لـريـح الجنة (यअनी मैं उस ज़ात की क़सम खा कर कहता हूँ कि जिस के क़बज़-ए-क़ुदरत में मेरी जान है कि मैं उहुद पहाड़ के पास जन्नत की ख़ुश्बू पा रहा हूँ और यक़ीनन बिला शुबहा यह जन्नत ही की ख़ुश्बू है) आप ने यह फ़रमाया और अकेले ही कुफ़्फ़ार के बीच में लड़ते हुए ज़ख़्मों से चूर होकर गिर पड़े और शहादत के शर्फ़ से सरफ़राज़ हुए।

उन के बदन पर तीरों, तलवारों और नेज़ों के अस्सी से ज़्यादा ज़ख़्म गिने गए थे और कुफ़्फ़ार ने उन की आँखों को फोड़ कर और नाक, कान, होंट को काट कर उन की सूरत इस क़दर बिगाड़ दी थी कि कोई शख़्स उन की लाश को पहचान न सका। मगर जब उन की बहन हज़रत रबीअ رضی اللہ عنہا आई तो उन्हों ने उन की उंगलियों के पुरों को देख कर पहचाना कि यह मेरे भाई अनस बिन नज़र رضی اللہ عنہ की लाश है।

हज़रत अनस बिन नज़र رضی اللہ عنہ जंगे बद्र में शरीक नहीं हो सके थे। उस का उन्हें बहुत रंज व ग़म था कि अफ़सोस मैं इस्लाम के पहले ग़ज़्वा में ग़ैर हाज़िर रहा। फिर वह अक्सर कहा करते थे कि अगर आगे कभी अल्लाह तआला ने यह दिन दिखाया कि कुफ़्फ़ार से जंग का मौक़अ मिला तो अल्लाह तआला देख लेगा कि मैं जंग क्या करता हूँ और क्या कर दिखाता हूँ।

चुनान्चे सन् 3 हिजरी में जब जंगे उहुद हुई तो उन्होंने ख़ुदा तआला से जो वअदा किया था वह पूरा करके दिखाया कि अपने बदन पर अस्सी ज़ख़्मों से ज्यादा ज़ख़्म खा कर शहीद हो गए। चुनान्चे हुज़ूरे अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि उन की शान में क़ुरआन करीम की यह आयत नाज़िल हुई :- من المومنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه

तर्जमा: मोमिनीन में से कुछ मर्द ऐसे हैं जिन्हों ने ख़ुदा से किए हुए अपने वादा को पूरा कर दिया। (अकमाल स 585 असदुल गाबा

जि 1, स 122 हुज्जतुल्लाह जि 2, स 871 बुखारी शरीफ़)

करामत

इन की करामतों में से यह एक करामत बहुत ज़्यादा मश्हूर और मुस्तनद है।

खुदा ने क़सम पूरी फरमा दी: हज़रत अनस बिन नज़र ﷺ की बहन हज़रत रबीअ ﷺ ने झगड़ा व तकरार करते हुए एक अन्सारी की लड़की के दो अगले दाँत तोड़ डाले। लड़की वालों ने बदले का मुतालबा किया और शहंशाहे कौनेन ﷺ ने कुरआन मजीद के हुक्म के मुताबिक़ यह फैसला फ़रमा दिया कि रबीअ बिन्ते नज़र के दाँत बदले मे तोड़ दिए जाएं। जब हज़रत अनस बिन नज़र ﷺ को पता चला तो वह बारगाहे रिसलात में हाज़िर हुए और कहा कि या रसूलल्लाह! खुदा तआला की क़सम! मेरी बहन का दाँत नहीं तोड़ा जाए। हुजूरे अक्सद ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ अनस बिन नज़र! तुम क्या कह रहे हो? क़ेसास (बदला) तो अल्लाह तआला कि किताब का फ़ैसला है। यह बात अभी हो रही थी कि लड़की वाले दरबारे नुबुवत में हाज़िर हुए और कहने लगे कि या रसूलल्लाह! क़ेसास में रबीअ का दाँत तोड़ने के बदले में हम लोगों को दियत (माली बदला) दिया जाए। इस तरह हज़रत अनस बिन नज़र ﷺ की क़सम पूरी हो गई और उन की बहन हज़रत रबीअ ﷺ का दाँत तोड़े जाने से बच गया।

हुजूरे अक्सद ﷺ ने उस मौक़अ पर यह इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला के बन्दों में से कुछ ऐसे भी हैं कि अगर वह किसी मामिला में अल्लाह तआला की क़सम खा लें तो अल्लाह तआला उन की क़सम को पूरी फ़रमा देता है। (**बुखारी शरीफ़ जि2, स 264, बाब क़ौला वल जरूह क़सास**)

तबसेरा: हुजूरे अक्दस ﷺ के इरशादे गिरामी का यह मतलब है कि अल्लाह तआला के बन्दों में से कुछ ऐसे बारगाहे इलाही के मक़बूल हैं कि अगर किसी ऐसी चीज़ के बारे में जो बज़ाहिर होने

वाली न हो अल्लाह तआला के यह बन्दे अगर क़सम खा लें कि हो जाएगी तो अल्लाह तआला उन मुक़द्दस बन्दों की क़समों को टूटने नहीं देता। बल्कि उस न होने वाली चीज़ को मौजूद फ़रमा देता है ताकि उन मुक़द्दस बन्दों की क़सम पूरी हो जाए।

देख लीजिए कि हज़रत रबीअ رضي الله عنه के लिए दरबारे नुबुवत से बदले का फ़ैसला हो चुका था और मुद्दई ने क़ेसास ही का मुतालबा किया था। लेकिन जब हज़रत अनस बिन नज़र رضي الله عنه क़सम खा गए कि खुदा की क़सम! मेरी बहन का दाँत नहीं तोड़ा जाएगा तो खुदा तआला ने ऐसा ही सबब पैदा कर दिया। तो ज़ाहिर है कि अगर फैसला के मुताबिक़ दाँत तोड़ दिया जाता तो उन की क़सम टूट जाती। मगर खुदा तआला का फ़ज़्ल व करम हो गया कि मुद्दई का दिल बदल गया और उस ने बजाए क़ेसास (जानी बदले) के दियत (माली बदले) का मुतालबा कर दिया। इस तरह दाँत टूटने से बच गया और उन की क़सम पूरी हो गई।

इस की बहुत सी मिसालें और सुबूत हासिल हूँगे कि अल्लाह वाले जिस बात की क़सम खा गए अल्लाह तआला ने उस चीज़ को मौजूद फ़रमा दिया। अगरचे वह चीज़ ऐसी थी कि बज़ाहिर उस के होने की कोई भी सूरत नहीं थी।

हज़रत हंज़ला बिन अबी आमिर رضي الله عنه

यह मदीना मुनव्वरा के रहने वाले हैं और अन्सार के क़बीला औस से उन का खानदानी तअल्लुक़ है। उन का बाप अबू आमिर अपने क़बीला का सरदार था और ज़मान-ए-जाहलियत में उस की इबादत की कसरत को देख कर आम तौर पर लोग उस को अबू आमिर राहिब (पादरी) कहा करते थे। जब हुज़ूरे अकरम ﷺ हिजरत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए और पूरा मदीना और इर्द गिर्द का इलाक़ा हुज़ूर के क़दमों पर क़ुरबान होने लगा तो मदीना के दो शख़्सों पर हसद का भूत सवार हो गया। एक अब्दुल्लाह बिन उबै,

दूसरे अबू आमिर राहिब, लेकिन अब्दुल्लाह बिन उबै ने तो अपनी दुश्मनी को छुपाए रखा और मुनाफ़िक़ बन कर मदीना ही में रहा। लेकिन अबू आमिर राहिब हसद की आग में जल भुन कर मदीना से मक्का चला गया। और कुफ़्फ़ारे मक्का को भड़का कर मदीना मुनव्वरा पर हमला के लिए तैयार किया। चुनान्चे सन ३ हिजरी में जब जंगे उहुद हुई तो अबू आमिर कुफ़्फ़ार के लश्कर में शामिल था और कुफ़्फ़ार की तरफ़ से लड़ रहा था। मगर उस के बेटे हज़रत हंज़ला ﷺ परचमे इस्लाम के नीचे निहायत ही जवाँ मर्दी और जोश व ख़रोश के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे थे। अबू आमिर राहिब जब तलवार घुमाता हुआ मैदान में निकला। तो हज़रत हंज़ला ﷺ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! ﷺ मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं अपनी तलवार से अपने बाप अबू आमिर का सर काट कर लाऊँ मगर हुज़ूर रहमतुल लिलआलमीन ﷺ की रहमत ने यह गवारा नहीं किया कि बेटे की तलवार बाप का सर काटे। इस लिए आप ने इजाज़त नहीं दी मगर हज़रत हंज़ला ﷺ जोशे जिहाद में इस क़दर आपे से बाहर हो गए थे कि सर हथेली पर रख कर इन्तहाई जाँ बाज़ी के साथ लड़ते हुए लश्कर के बीच तक पहुँच गए और कुफ़्फ़ार के कमान्डर अबू सुफ़यान पर हमला कर दिया और क़रीब था कि हज़रत हंज़ला ﷺ की तलवार अबू सुफ़यान का फ़ैसला कर दे। मगर अचानक पीछे से शद्दाद बिन असवद ने झपट कर वार को रोका और हज़रत हंज़ला ﷺ को शहीद कर दिया। (असदुल ग़ाबा जि2, स 67 व मदारिजुन्नबुवा स 123)

ग़सीलुल मलाइका (फ़रिश्तों का नहलाया हुआ): हज़रत हंज़ला ﷺ के बारे में हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि फ़रिश्तों ने उन्हें गुस्ल दिया है। जब उन की बीवी से उन का हाल पुछा गया। तो उन्हों ने यह बताया कि वह जंगे उहुद की रात में अपनी बीवी के साथ सोए थे। और गुस्ल की जरूरत हो गई थी। मगर वह रात के आख़िरी हिस्से में दअवते जंग की पुकार सुन कर इस ख़्याल से बिला ग़ुस्ल मैदाने जंग की तरफ़ दौड़ पड़े कि शायद गुस्ल करने में अल्लाह के रसूल

की पुकार पर दौड़ने में देर लग जाए। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया कि यही वजह है कि फ़रिश्तों ने शहादत के बाद उन को गुस्ल दिया। वरना शहीद को गुस्ल देने की ज़रूरत ही नहीं है। इसी वाक़िआ की बिना पर हज़रत हंज़ला ؓ को ग़सीलुल मलाइका (फ़रिश्तों के नहलाए हुए) कहा जाता है। **(मदारिजुन्नबुवा ज़िर, व मिश्कात शरीफ़ वग़ैरा)**

तबसेरा: फ़रिश्तों ने हज़रत हंज़ला ؓ को शहादत के बाद गुस्ल दिया। यह आप की बहुत बड़ी करामत और निहायत ही जबरदस्त फ़ज़ीलत है। चुनान्चे आप के क़बीला वालों को इस पर बहुत बड़ा फ़ख़्र और नाज़ था कि हज़रत हंज़ला ؓ हमारे क़बीला के एक बे मिसाल आदमी हैं कि जिन को फ़रिश्तों ने नहलाया। इस तफ़ाख़ुर के सिलसिले में मन्कूल है कि क़बीला-ए-औस के लोगों ने **क़बीला-ए-ख़ज़रज** वालों से कहा कि देख लो हज़रत हंज़ला ؓ ग़सीलुल मलाइका हमारे **क़बीला-ए-औस** के हैं। हज़रत आसिम ؓ शहद की मक्खियों ने जिन की लाश पर पहरा दिया था। वह भी हमारे क़बीला-ए-औस के हैं और हज़रत सअद बिन मआज़ ؓ जिन की वफ़ात पर अर्शे इलाही हिल गया वह भी हमारे क़बीला-ए-औस के हैं और हज़रत ख़ुज़ेमा बिन साबित ؓ जिन की अकेले की गवाही दो गवाहों के बराबर है वह भी हमारे क़बीला औस ही के हैं।

यह सुन कर **क़बीला-ए-ख़ज़रज** के लोगों ने कहा कि हमारे क़बीला-ए-ख़ज़रज वालों को भी यह फ़ख़्र हासिल है कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की मौजूदगी में हमारे क़बीला के चार आदमी हाफ़िज़े कुरआन व क़ारी हुए और तुम्हारे क़बीला में इस वक़्त तक कोई भी पूरा हाफ़िज़े कुरआन नहीं हुआ। देख लो हज़रत ज़ैद बिन साबित, हज़रत अबू ज़ैद हज़रत उबै बिन कअब और हज़रत मआज़ बिन जबल ؓ अजमईन यह चारों हुफ़्फ़ाज हमारे क़बीला ख़ज़रज के सपुत हैं। **(असदुल ग़ाबा जिल्द नं०-2, सफ़ा नं०-28)**

हज़रत आमिर बिन फुहेरा رضي الله عنه

यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه के आज़ाद किये हुए गुलाम हैं। यह शुरू इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे। फिर कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन को बहुत ज़्यादा सताया तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه ने उन को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। हिजरत के वक़्त जब कि हुज़ूरे अनवर ﷺ अपने यारे ग़ार सिद्दीक़ जाँनिसार رضي الله عنه के साथ ग़ारे सोर में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यही हज़रत आमिर बिन फुहेरा رضي الله عنه दिन भर बकरियों को चरा कर ग़ार के पास रात को लाते और उन बकरियों का दुध दुह कर दोनों आलम के ताजदार और उन के यारे ग़ार को पिलाते। जब ग़ारे सोर से हुज़ूरे अकरम ﷺ मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हुए तो एक ऊँटनी पर शहंशाहे दो आलम और एक ऊँटनी पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक और हज़रत आमिर बिन फुहेरा رضي الله عنه बैठे। सफ़र सन् 4 हिजरी वाक़िआ "**बीरे मऊना**" में आप को शहादत की सआदत हासिल हुई।

(असदुल ग़ाबा जि 3, स 91) (पूरी तफ़सील के लिए पढ़िए हमारी किताब सीरते मुस्तफ़ा)

करामत

लाश आसमान तक बलन्द हुई: जंग बीरे मऊना में सत्तर सहाबा-ए-किराम में से सिर्फ़ अमर बिन उमैया ज़मरी رضي الله عنه ज़िन्दा बचे। बाक़ी सब जामे शहादत से सैराब हो गए। उन ही शोहदा-ए-किराम में से हज़रत आमिर बिन फुहेरा رضي الله عنه भी हैं। कुफ़्फ़ार के सरदार आमिर बिन तुफ़ैल का बयान है कि हज़रत आमिर बिन फुहेरा जब शहीद हो गए तो एक दम उन की लाश ज़मीन से बलन्द होकर आसमान तक पहुँची। फिर थोड़ी देर के बाद आहिस्ता आहिस्ता वह ज़मीन पर उतर आई और उस के बाद उन की लाश तलाश करने पर नहीं मिली। क्योंकि फ़रिश्तों ने उन्हें दफ़न कर दिया। **(बुखारी जि2, स 587)**

तबसेरा: जिस तरह हज़रत हंज़ला رضي الله عنه को फ़रिश्तों ने गुस्ल दिया तो

उन का लक़ब "ग़सीलुल मलाइका" हुआ उसी तरह चूँकि उन को फ़रिश्तों ने क़ब्र में दफ़न किया था इस लिए यह "दफ़ीनुल मलाइका" (फ़रिश्तों के दफ़न किये हुए) हैं।

वल्लाहु तआला अअ्लम।

हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी ﷺ

हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह बिन मसअर बिन जअफ़र बिन कलब लेसी ﷺ उन का वतन मक्का मुअज़्ज़मा है और यह फ़तहे मक्का से पहले ही मुसलमान हो गए। फ़तहे मक्का में यह हुज़ूरे अक़्दस शहंशाहे कौनेन ﷺ के साथ थे और आप ने उन को मक्का मुकर्रमा के रास्तों की दुरूस्ती और कुफ़्फ़ार के हालात की जासूसी के काम पर लगाया। फिर फ़तहे मक्का के बाद साठ सवारों का अफ़सर बना कर आप ने उन को मक़ामे कुदेद में बनी मलूह से जंग के लिए भेज दिया।

इब्ने कलबी का बयान है कि जनाबे रसूलुल्लाह ﷺ ने उन को बनी मुर्रा से लड़ने के लिए "फेदक" भेजा। वहीं यह शहादत से सरफ़राज़ हो गए। वल्लाहु तआला अअ्लम! (असदुल ग़ाबा जि4, स 168)

एक रिवायत से यह भी मालूम होता है कि हज़रत फ़ारूके़ अअ्ज़म ﷺ के दौरे ख़िलाफ़त में भी यह जिहादों में शरीक होते रहे हैं। ख़ास तौर पर जंगे क़ादसिया में खूब खूब कुफ़्फ़ार से लड़े। मश्हूर है कि हुरमुजान उन्हीं के हाथ से मारा गया। हज़रत अमीरे मआविया ﷺ की हुकूमत के दौरान इब्ने ज़याद ने उन को ख़ुरासान का हाकिम बना दिया था। (इसाबा जि॰5, स॰ 187)

उन की यह एक करामत बहुत मश्हूर और निहायत ही मुस्तनद है।

करामत

ख़ुश्क नाला में अचानक सैलाब: हज़रत जुनदुब बिन मकीस जहनी ﷺ का बयान है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह

लेसी رضي الله عنه को एक छोटे से लश्कर का अमीर बना कर जेहाद के लिए भेजा। मैं भी उस लश्कर में शामिल था। हम लोगों ने मक़ामे "कुदेद" में क़बीला बनी अलमलूह पर हमला किया और उन के ऊँटों को माले ग़नीमत बना कर वापस आने लगे। अभी हम लोग कुछ दूर ही चले थे कि बनू मलूह के तमाम क़बाइल का एक बहुत बड़ा लश्कर जमा हो कर हमारे पीछे आ गया। हम लोग एक नाले के पार आगए जो बिल्कुल ही खुश्क था। और हम लोगों को बिल्कुल ही यक़ीन हो गया कि अब हम लोग उन काफ़िरों के हाथों में गिरफ़्तार हो जाएँगे। मगर कुफ़्फ़ार जब नाला के पास आए तो बावजूद यह कि न बारिश हुई न बदली किसी तरफ़ से नज़र आई। अचानक नाला पानी से भर गया और इस ज़ोरो शोर से पानी का बहाव था कि उस को पार करना इन्तहाई दुश्वार था। चुनान्चे कुफ़्फ़ार का लश्कर नाला के पास ठहर गया और एक काफ़िर भी नाला को पार न कर सका और हम लोग निहायत ही इत्मीनान और सलामती के साथ मदीना मुनव्वरा पहुँच गए। (हुज्जतुल्लाह जि2, स 872 बहवाला इब्ने असअद)

तबसेरा: हम करामत की क़िसमों के बयान में यह लिख चुके हैं कि बिल्कुल अचानक ग़ैब से किसी चीज़ का बतौर इमदाद के ज़ाहिर हो जाना यह भी करामत की एक क़िसम है। सूखे नाला में अचानक पानी भर जाना यह हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लेसी رضي الله عنه की उसी क़िस्म की करामत है। उन की उसी करामत की बदौलत तमाम सहाबियों की जान बच गई।

हज़रत अबू मूसा अशअरी رضي الله عنه

हज़रत अबू मूसा अशअरी رضي الله عنه यमन के रहने वाले थे। मक्का मुकर्रमा में आकर इस्लाम क़बूल किया। पहले हिजरत करके हबशा चले गए। फिर हबशा से कशतियों पर सवार होकर तमाम मुहाजिरीने हबशा के साथ आप भी तशरीफ़ लाए और ख़ैबर में हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत उमर رضي الله عنه ने सन् 20 हिजरी में उन को

बसरा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया और हज़रत उस्मान ﷺ की शहादत तक यह बसरा के गवर्नर रहे। जब हज़रत अली और हज़रत अमीरे मआविया ﷺ की जंग शुरू हुई तो पहले आप हज़रत अली ﷺ के तरफ़दार थे मगर उस झगड़े से दूर होकर मक्का मुकर्रमा चले गए। यहाँ तक कि सन् 52 हिजरी में आप की वफ़ात हो गई। (अकमाल स० 618)

करामत

ग़ैबी आवाज़ सुनते थे: आप की यह एक ख़ास करामत थी कि ग़ैबी आवाज़ें आप के कानों में आया करती थीं। चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का बयान है कि एक मर्तबा हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ समन्दरी जिहाद में अमीरे लश्कर बन कर गए। रात में सब मुजाहिदीन कश्तियों पर सवार होकर सफ़र कर रहे थे कि बिल्कुल अचानक ऊपर से एक पुकारने वाले की आवाज़ आई।

"क्या मैं तुम लोगों को ख़ुदा तआला के इस फ़ैसले की ख़बर दे दूँ जिस का वह अपनी ज़ात पर फ़ैसला फ़रमा चुका है? वह यह है कि जो अल्लाह तआला के लिए गर्मी के दिनों में प्यासा रहे गा, अल्लाह तआला पर हक़ है कि प्यास के दिन (क़यामत में) ज़रूर ज़रूर उस को सैराब फ़रमा देगा।"

(हुज्जतुल्लाह जि 2, स़ 872 बहवाला हाकिम)

लहने दाऊदी: आप की आवाज़ और लहजा में इतनी ज़बरदस्त कशिश खिचाव थी कि उस को करामत के सिवा और कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर ﷺ जब हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ को देखते तो फ़रमाते। ذكرنا ربنا يا ابا موسى (ऐ अबू मूसा! हम को अपने रब की याद दिलाओ)

यह सुन कर हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ कुरआन शरीफ़ पढ़ने लगते। उन की क़िरत सुन कर हज़रत उमर ﷺ के दिल में ऐसी नूरी तजल्ली पैदा हो जाती कि उन्हें दुनिया से दूरी और अपने रब की हुज़ूरी नसीब हो जाती थी।

हज़रत बुरैदा का बयान है कि हुज़ूरे अक़्दस ने हज़रत अबू मूसा अशअरी की क़ेरत सुनी तो इरशाद फ़रमाया कि दाऊद की सी अच्छी आवाज़ उस शख़्स को ख़ुदा तआला की तरफ़ से अता की गई है। (कंज़ुल उम्माल जि 16 स 218 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत तमीम दारी

हज़रत तमीम बिन अवस पहले नसरानी थे। फिर सन ९ हिजरी में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। बहुत ही इबादत गुज़ार थे। एक ही रात में कुरआन मजीद पूरा पढ़ लिया करते थे। और कभी कभी एक ही आयत को रात भर सुबह तक नमाज़ में बार बार पढ़ते रहते। हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर का बयान है कि एक रात सोते रह गए और नमाज़े तहज्जुद के लिए नहीं उठ सके तो उन्हों ने अपनी इस कोताही का कफ़्फ़ारा इस तरह अदा किया कि पुरे एक साल तक रात भर नहीं सोए। पहले मदीना मुनव्वरा में रहते थे फिर अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी की शहादत के बाद मुल्के शाम में चले गए और आख़िरी उम्र तक मुल्के शाम ही में रहे। मस्जिदे नबवी मे सब से पहले उन्हों ने क़िन्दील (लाल्टेन) जलाई और हुज़ूरे अक़्दस ने दज्जाल के जसासा का वाक़िआ उन से सुन का सहाबा-ए-किराम को सुनाया। (अकमाल स 588 व असदुल ग़ाबा जि1, स 215)

करामत

चादर दिखा कर आग बुझा दी: आप की करामतों में से एक मशहूर और मुस्तनद करामत यह है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत फ़ारूक़े अअ्ज़म के दौरे ख़िलाफ़त में जब पहाड़ के एक ग़ार से एक कुदरती आग जाहिर हुई तो अमीरूल मोमिनीन ने उन को अपनी चादर अता फ़रमाई। यह चादर ले कर जब आग के क़रीब पहुँचे तो आग बुझती हुई पीछे को हटती चली गई। यहाँ तक कि आग ग़ार के अन्दर दाख़िल हो गई और यह ख़ुद भी आग को चादर से हटाते हुए

ग़ार में घुसते चले गए। जब यह आग को बुझा कर हज़रत अमीरूल मोमिनीन की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप ने फ़रमाया ऐ तमीम दारी! इसी दिन के लिए हम ने तुम को छुपा रखा था।

(हुज्जतुल्लाह जि2, स 873 बहवाला अबू नईम)

(इस आग का पुरा हाल हम ने अपनी किताब "रूहानी हिकायात" और सीरते मुस्तफ़ा" में तहरीर किया है।)

हज़रत इमरान बिन हसीन ﷺ

उन की कुन्नियत अबू नजीद है और यह क़बीला बनू ख़ज़ाआ की एक शाख़ बनू कअब के ख़ानदान से हैं। इस लिए ख़ुजाई और कअबी कहलाते हैं। सन् ७हिजरी में जंगे ख़ैबर के साल मुसलमान हुए। हज़रत उमर ﷺ ने अपनी ख़िलाफ़त के दौरान उन को अहले बसरा की तअलीम के लिए मुक़र्रर फ़रमाया था। मुहम्मद बिन सीरीन मुहद्दिस फ़रमाया करते थे कि बसरा में इमरान बिन हुसैन ﷺ से ज़्यादा पुराना और अफ़ज़ल कोई सहाबी नहीं। उनकी पूरी ज़िन्दगी मज़हबी रंग में रंगी हुई थी। तरह तरह की इबादतों में बहुत ज़्यादा मेहनत फ़रमाते थे।

हुज़ूरे अक़दस ﷺ के साथ इतनी वालिहाना अक़ीदत थी और आप का इतना एहतेराम करते थे कि जिस हाथ से उन्हों ने आप ﷺ के दस्ते मुबारक पर बैअत की थी। उस हाथ से उम्र भर उन्होंने पेशाब का मक़ाम नहीं छुआ। तीस बरस तक मुसलसल इस्तिस्क़ा की बीमारी में साहिबे फ़राश रहे और पेट का आप्रेशन भी हुआ मगर सबरो शुक्र का यह हाल था कि ख़ैर ख़ैरियत लेने वाले से यही फ़रमाया करते थे कि मेरे ख़ुदा को जो पसन्द है वही मुझे भी महबूब है।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2, सफा 873 व अकमाल व असदुल ग़ाबा जिल्द4, सफा 137)

सन् 52 हिजरी में बमक़ामे बसरा आप का विसाल हुआ

करामत

फ़रिश्तों से सलाम व मुसाफ़ा: आप की मश्हूर करामत यह है कि आप फ़रिश्तों की तसबीह की आवाज़ सुना करते और फ़रिश्ते आप से मुसाफ़हा किया करते थे साथ ही आप बहुत मुस्तजाबुद्दअवात भी थे। यअनी आप की दुआएँ बहुत ज़्यादा मक़बूल हुआ करती थीं। (हुज्जतुल्लाह जिल्द २, सफा 873 व असदुल गाबा जि4, स 137 व इब्ने सअद जि4, स 288)

हज़रत सफ़ीना رضي الله عنه

यह हुज़ूरे अक़दस ﷺ के आज़ाद किये हुए गुलाम हैं और कुछ का क़ौल है कि यह हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा رضي الله عنها के गुलाम थे। उन्होंने इस शर्त पर उन को आज़ाद किया था कि उम्र भर रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत करते रहेंगे। "**सफ़ीना**" उन का लक़ब है। उन के नाम में इख़्तिलाफ़ है। किसी ने "**रबाह**" किसी ने "**महरान**" किसी ने "**रूमान**" नाम बताया है। "**सफ़ीना**" अरबी में कश्ती को कहते हैं। उन का लक़ब "**सफ़ीना**" होने का सबब यह है कि दौराने सफ़र एक शख़्स थक गया तो उस ने अपना सामान उन के कंधों पर डाल दिया और यह पहले ही बहुत ज़्यादा सामान उठाए हुए थे। यह देख कर हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने खुश तबई और मज़ाह के तौर पर यह फ़रमाया कि انت سفينة (तुम तो कश्ती हो) उस दिन से आप का यह लक़ब मश्हूर हो गया कि लोग आप का असली नाम ही भूल गए। लोग उन का असली नाम पुछते तो यह फ़रमाते थे कि में नहीं बताऊँगा। मेरा नाम रसूलुल्लाह ﷺ ने "**सफ़ीना**" रख दिया है अब में उस नाम को कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं बदलूँगा।

(अकमाल सफा 597 व असदुल गाबा जिल्द 2, स 324)

करामत

शेर ने रास्ता बताया: उन की मश्हूर और निहायत ही मुस्तनद करामत यह है कि यह रूम की सर ज़मीन में जिहाद के दौरान इस्लामी लश्कर से बिछड़ गए और लश्कर की तलाश में दौड़ते भागते चले जा रहे थे। कि बिल्कुल ही अचानक जंगल से एक शेर निकल कर उन के सामने आ गया। उन्हों ने डाँट कर बलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ शेर! मैं रसूलुल्लाह ﷺ का गुलाम हूँ और मेरा मामला यह है कि मैं लश्करे इस्लाम से अलग हो गया हूँ और लश्कर की तलाश में हूँ। यह सुन कर शेर दुम हिलाता हुआ उन के पहलू में आकर खड़ा हो गया। और बराबर उन को अपने साथ लिए हुए चलता रहा। यहाँ तक कि यह लश्करे इस्लाम में पहुँच गए तो शेर वापस चला गया। (मिश्कात जि2, स 554 बाबुल करामात)

हज़रत अबू अमामा बाहली رضي الله عنه

उन का नाम सदी बिन अज्लान है मगर यह अपनी कुन्नियत ही के साथ मश्हूर हैं। बनू बाहला के ख़ानदान से हैं। इस लिए बाहली कहलाते हैं। मुसलमान होने के बाद सब से पहले सुलह हुदैबिया में शरीक होकर बैअते रिज़्वान के शर्फ़ से सरफ़राज़ हुए। दो सौ पच्चास हदीसें उन से मरवी हैं और हदीसों के दर्स व फैलाने में उन को बेहद लगाव था। पहले मिस्र में रहते थे फिर हमस चले गए और वहीं सन् 86 हिजरी में इकानवे (91) बरस की उम्र में वफ़ात पाई। बाज़ मोअर्रख़ीन ने उन का साले वफ़ात सन 81 हिजरी तहरीर किया है। यह अपनी दाढ़ी में पीले रंग का ख़िज़ाब (मेंहदी) करते थे।

(अकमाल सफा 586 व असदुल गाबा जिल्द 3, सफा 16)

करामत

फ़रिश्ता ने दूध पिलाया: उन की एक करामत यह है कि जिस को वह ख़ूद बयान फ़रमाया करते थे कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उन को भेजा कि तुम अपनी कौ़म मे जाकर इस्लाम की तबलीग़ करो चुनान्चे हुजुर के हुक्म के मुताबिक़ यह अपने क़बीला में पहुँचे और इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाया। मगर उन की कौम ने उन के साथ बहुत बुरा सुलूक किया। खाना खिलाना तो बड़ी बात है पानी का एक क़तरा भी नहीं दिया। बल्कि उन का मज़ाक़ उड़ाते हुए और बुरा भला कहते हुए उन को बस्ती से बाहर निकाल दिया। यह भूक प्यास से इन्तेहाई बे ताब और निढाल हो चुके थे। लाचार होकर खुले मैदान ही में एक जगह सो गए तो ख़्वाब में देखा कि एक आने वाला (फ़रिश्ता) आया और उन को दुध से भरा हुआ एक बरतन दिया। यह उस दुध को पी कर ख़ुब जी भर कर सैराब हो गए। ख़ुदा की शान देखिइए कि जब नींद से बेदार हुए तो न भूक थी न प्यास ।

उस के बाद गावं के कुछ अच्छे और सुलझे हुए लोगों ने गावों वालों को बुरा भला कहा कि अपने ही क़बीला का एक मुअज़्ज़ज़ आदमी गावों में आया और तुम लोगों ने उस के साथ शरमनाक क़िस्म की बदसुलूकी कर डाली। जो हमारे क़बीला वालों की पेशानी पर हमेशा के लिए कलंक का टीका बन जाएगी। यह सुन कर गावों वालों को शर्मिंदगी हुई और वह लोग खाना पानी वग़ैरा लेकर मैदान में उन के पास पहुँचे। तो उन्होंने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारे खाने पीने की अब कोई ज़रूरत नहीं है। मुझ को तो मेरे रब ने खिला पिला कर सैराब कर दिया है और फिर अपने ख़्वाब का क़िस्सा बयान किया। गावों वालों ने जब देख लिया कि वाक़ई यह खा पी कर सैराब हो चुके हैं और उन के चेहरे पर भूक प्यास का कोई असर व निशान नहीं हालांकि इस सुनसान जंगल और बयाबान में खाना पानी कहीं से मिलने को कोई सवाल ही पैदा नहीं होता तो गावं वाले आप की इस

करामत से बेहद मुतअस्सिर हुए यहाँ तक कि पूरी बस्ती के लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। (हुज्जतुल्लाह ज़ि२, स़ ८७३ बहवाला बैहक़ी व कंजुल उम्माल जि 16 व 622 व मुस्तदरक हाकिम जि 3, स 642)

इमदादे ग़ैबी की अशरफ़ियाँ: हज़रत अबू अमामा बाहली ﷺ की लौंडी का बयान है कि वह बहुत ही सख़ी और फ़ैयाज़ आदमी थे। किसी मंगते को भी अपने दरवाज़े से वापस नहीं लौटाते थे। एक दिन उन के पास सिर्फ़ तीन ही अशरफ़ियाँ थी। और यह उस दिन रोज़ा से थे। इत्तेफ़ाक़ से उस दिन तीन मांगने वाले दरवाज़ा पर आए और आप ने तीनों को एक एक अशरफ़ी दे दी। फिर सो रहे। बांदी कहती है कि मैंने नमाज़ के लिए इन्हें जगाया और वह वज़ू करके मस्जिद में चले गए। मुझे उन के हाल पर बड़ा तरस आया कि घर मे न एक पैसा है न अनाज का एक दाना। भला यह रोज़ा किस चीज़ से इफ़तार करेंगे? मैंने एक शख़्स से क़र्ज़ ले कर रात का खाना तैयार किया और चिराग़ जलाया। फिर मैं जब उन के बिस्तर को दुरूस्त करने के लिए गई तो क्या देखती हूँ कि तीन सो अशरफ़ियाँ बिस्तर पर पड़ी हुई हैं मैंने उन को गिन कर रख दिया। वह नमाज़े इशा के बाद जब घर में आए और चिराग़ जलता हुआ और बिछा हुआ दस्तर ख़्वान देखा तो मुस्कुराए और फ़रमाया कि आज तो माशाअल्लाह मेरे घर में अल्लाह की तरफ़ से ख़ैर ही ख़ैर है। फिर मैं ने उन्हें खाना खिलाया और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए आप उन अशरफ़ियों को यूँही ला परवाई के साथ बिस्तर पर छोड़ कर चले गए और मुझ से कह कर भी नहीं गए कि मैं उन को उठा लेती। आप ने हैरान होकर पुछा कि कैसी अशरफ़ियाँ! मैं तो घर में एक पैसा भी छोड़ कर नहीं गया था। यह सुन कर मैं ने उन का बिस्तर उठा कर जब उन्हें दिखाया कि यह देख लीजिए अशरफ़ियाँ पड़ी हुई हैं तो वह बहुत ख़ुश हुए। लेकिन उन्हें भी उस पर बड़ा तअज्जुब हुआ। फिर सोच कर कहने लगे कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से मेरी इमदादे ग़ैबी है। मैं उस के बारे में उसके सिवा और क्या कह सकता हूँ।

(हुलियतुल औलिया जि 10, स129 व शवाहिदुन्नबुवा स218)

हज़रते दहिया बिन ख़लीफ़ा

यह बहुत ही बलन्द मर्तबा सहाबी हैं जंगे उहुद और उस के बाद के तमाम इस्लामी जंगों में कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। सन ६ हिजरी में हुज़ूरे अक़्दस ने उन को रूम के बादशाह क़ैसर के दरबार में अपना मुबारक ख़त देकर भेजा और क़ैसरे रूम हुज़ूर का नामा मुबारक पढ़ कर ईमान ले आया। मगर उस की सलतनत के लोगों ने इस्लाम क़बूल करने से इनकार कर दिया।

उन्होंने हुज़ूरे अकरम की ख़िदमत में चमड़े का मोज़ा बतौर नज़राना पेश किया और हुज़ूरे अक़्दस ने उस को क़बूल फ़रमाया। यह मदीना मुनव्वरा से शाम में आकर बस गए थे। और हज़रत अमीरे मआविया के ज़माने तक ज़िन्दा रहे। (अकमाल स 594)

करामत

हज़रत जिब्रईल उन की सूरत में: उन की मश्हूर करामत यह है कि हज़रत जिब्रईल उन की सूरत में ज़मीन पर नाज़िल हुआ करते थे।

(अकमाल स 594 व असदुल ग़ाबा जि2, स 130)

हज़रत सायब बिन यज़ीद

उन की कुन्नियत अबू यज़ीद है। बनू कुन्दा में से थे। हिजरत के दूसरे साल पैदा हुए और हज्जतुल विदाअ में अपने वालिद के साथ हज किया। इमाम जहरी उन के शागिर्द में बहुत ही मश्हूर हैं। सन 80 हिजरी में उन की वफ़ात हुई। (अकमाल स 598)

करामत

चौरानवे साल का जवान: हुज़ूरे अक़्दस ने उन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा था। जुनैद बिन अब्दुर्रहमान का बयान है कि

हज़रत सायब बिन यज़ीद ﷺ चौरानवे साल तक निहायत ही तन्दुरूस्त और मज़बूत रहे और कान, आँख, दाँत किसी चीज़ में भी कमज़ोरी के आसार नहीं पैदा हुए थे। (कंजुल उम्माल जि 16 स 51)

हज़रत सायब बिन यज़ीद ﷺ के गुलाम अता कहते हैं कि हज़रत सायब ﷺ के सर के अगले हिस्से के बाल बिल्कुल काले थे और सर के पिछले हिस्से के सब बाल और दाढ़ी सफ़ेद थी। मैं ने हैरान होकर पुछा ऐ मेरे आक़ा! यह क्या मआमला है? मुझे उस पर तअज्जुब हो रहा है। तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं बचपन में बच्चों के साथ खेल रहा था तो हुज़ूर नबी करीम ﷺ मेरे पास से गुज़रे और मुझ से मेरा नाम पुछा। मैं ने अपना नाम सायब बिन यज़ीद बताया तो हुज़ूरे अकरम ﷺ ने मेरे सर पर अपना हाथ मुबारक फेरा। जहाँ तक हुज़ूरे अक़दस ﷺ का दस्ते मुबारक पहुँचा है। वह बाल सफ़ैद नहीं हुआ और आगे भी कभी सफ़ैद नहीं होंगे।

हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ

उन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है और यह हुज़ूरे अक़दस ﷺ के आज़ाद किए हुए गुलाम हैं। यह फ़ारस के शहर "रामहुरमुज़" के रहने वाले थे। मजूसी मज़हब के पाबन्द थे और उन के बाप मजूसियों की इबादत गाह आतिश खाना के देख भाल करने वाले थे। यह बहुत से राहिबों और ईसाई साधूओं की सोहबत उठा कर मजूसी मज़हब से बेज़ार होगए। और अपने वतन से मजूसी दीन छोड़ कर दीने हक़ की तलाश में घर से निकल पड़े और ईसाईयों की सोहबत में रह कर ईसाई हो गए। फिर डाकूओं ने गिरफ़्तार कर लिया और अपना गुलाम बना कर बेच डाला। और यके बाद दीगरे यह दस आदमियों से ज़्यादा लोगों के गुलाम रहे। जब रसूलुल्लाह ﷺ मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त एक यहूदी के गुलाम थे। जब उन्हों ने इस्लाम क़बूल किया तो जनाब रसूलुल्लाह ﷺ ने उन को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया।

जंगे ख़न्दक़ में मदीना मुनव्वरा शहर के गिर्द ख़न्दक़ खोदने का मशवरा उन्होंने ही दिया था। यह बहुत ही ताक़तवर थे और अन्सार व मुहाजिरीन दोनों ही उन से मुहब्बत करते थे। चुनान्चे अन्सारियों ने कहना शुरू किया कि سلمان ومنا सलमान हम में से है और मुहाजिरीन ने भी यही कहा कि سلمان ومنا यअनी सलमान हम में से हैं। हुज़ूरे अकरम ﷺ का उन पर बहुत बड़ा करम था। जब अन्सार व मुहाजिरीन का नअरा सुना तो इरशाद फ़रमाया سلمان منا اهل البيت (**यअनी सलमान हम अहले बैत में से हैं**) यह फ़रमा कर उन को अपने अहले बैत में शामिल फ़रमा लिया। अक़दे मुवाख़ात (भाई चारगी) में हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उनको अबू दरदा सहाबी रज़ियल्लहु अन्हु का भाई बना दिया था। बड़े सहाबा में उन का शुमार है। बहुत आबिद व ज़ाहिद और मुत्तक़ी व परहेज़गार थे।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا का बयान है कि यह रात में बिल्कुल ही अकेले सोहबते नबवी से सरफ़राज़ हुआ करते थे। हज़रत अली رضی اللہ عنہ फ़रमाया करते थे कि सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ ने इल्मे अव्वल भी सीखा और इल्मे आख़िर भी सीखा। और वह हम अहले बैत में से हैं। अहादीस में उन के फ़ज़ाइल व ख़ूबियाँ बहुत लिखी हैं। अबू नईम ने फ़रमाया कि उन की उम्र बहुत ज़्यादा हुई। बाज़ का क़ौल है तीन सो पच्चास बरस की उम्र हुई और दो सो पच्चास बरस की उम्र पर तमाम मोअर्रख़ीन का इत्तेफ़ाक़ ह। सन् 35 हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

यह मौत वाली बीमारी में थे तो हज़रत सअद और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہما उन की बीमार पुरसी (पुछने) के लिए गए तो हज़रत सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ रोने लगे। उन हज़रात ने रोने का सबब पुछा तो फ़रमाया कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने हम लोगों को वसियत की थी कि लोगों दुनिया में इतना ही सामान रखना जितना कि एक सवार मुसाफ़िर अपने साथ रखता है लेकिन अफ़सोस कि मैं इस मुक़द्दस वसियत पर अमल नहीं कर सका। क्योंकि मेरे पास इस से कुछ

ज़ायद सामान है। बाज़ मोअर्रख़ीन ने आप की वफ़ात का साल 10 रजब सन् 33 हिजरी या सन् 34 हिजरी तहरीर किया है। मज़ारे मुबारक मदाइन में है जो ज़ियारत गाह है। **(तिर्मिज़ी मनाकिब सलमान फारसी अकमाल सफा 597 व हाशिया कंज़ुल उम्माल ज़ि16, सफा 36 व असदुल ग़ाबा जिल्द 2, सफा 328)**

करामात

मलकुल मौत ने सलाम किया: जब आप के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप ने अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया कि तुम ने जो थोड़ा सा मुश्क रखा है उस को पानी में घोल कर मेरे सर में लगा दो। क्योंकि इस वक़्त मेरे पास कुछ ऐसी हस्तियाँ तशरीफ़ लाने वाली हैं जो न इंसान हैं और न जिन्न। उन की बीवी साहिबा का बयान है कि मैं ने मुश्क को पानी में घोल कर उन के सर में लगा दिया। और मैं जैसे ही मकान से बाहर निकली। घर के अन्दर से आवाज़ आई। السلام عليك يا ولى الله السلام عليك يا صاحب رسول الله मैं यह आवाज़ सुन कर मकान के अन्दर गई तो हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ की रूहे मुतह्हरा परवाज़ कर चुकी थी और वह इस तरह लेटे हुए थे कि गोया गहरी नींद सो रहे हैं। **(शवाहिदुन्नबुवा सफा 221)**

ख़्वाब में अपने अनजाम की ख़बर देना: हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ का बयान है कि मुझ से हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ ने फ़रमाया कि आइए हम और आप यह वादा करें कि हम दोनों में से जो भी पहले विसाल करे वह ख़्वाब में आकर अपना हाल दूसरे को बता दे। मैं ने कहा कि क्या ऐसा हो सकता है? तो उन्होंने फ़रमाया कि हाँ मोमिन की रूह आज़ाद रहती है। रूए ज़ीमन में जहाँ चाहे जा सकती है। उस के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ का विसाल हो गया।

फिर मैं एक दिन कैलूला (दोपहर में खाने के बाद आराम) कर रहा था तो बिल्कुल ही अचानक हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ मेरे सामने आ गए और बलन्द आवाज़ से उन्हों ने कहा, السلام عليكم ورحمة الله

मैं ने जवाब में (وعليكم السلام و رحمة الله و بركاته)कहा और उन से पुछा कि कहिए विसाल के बाद आप पर क्या गुज़री? और आप किस मर्तबा पर हैं? तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं बहुत ही अच्छे हाल में हूँ और मैं आप को नसीहत करता हूँ कि आप हमेशा ख़ुदा पर भरोसा करते रहें। क्योंकि तवक्कल बेहतरीन चीज़ है। तवक्कल बेहतरीन चीज़ है। तवक्कल बेहतरीन चीज़ है। इस जुमला को उन्होंने तीन मर्तबा इरशाद फ़रमाया।

(शवाहिदुन्नबुवा सफा 221)

तबसेरा: इस रिवायत से यह मालूम हुआ कि ख़ुदा के नेक बन्दों की रूहें अपने घर वालों या दोस्तों के मकानों पर जाया करती हैं और अपने मुतअल्लक़ीन को ज़रूरी हिदायात भी देती रहती हैं और यह रूहें कभी ख़्वाब में और कभी आलमे मिसाल में अपने मिसाली जिस्मों के साथ बेदारी में भी अपने मुतअल्लक़ीन से मुलाक़ात करके उन को हिदायात देती और नसीहत फ़रमाती रहती हैं। चुनान्चे बहुत से बुज़ुर्गों से यह मन्कूल है कि उन्होंने वफ़ात के बाद अपने जिस्मों के साथ अपनी क़ब्रों से निकल कर अपने मुतअल्लक़ीन से मुलाक़ात की और नीज़ अपने और दूसरों के हालात के बारे में बात की।

चुनान्चे मशहूर रिवायत है कि हज़रत ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी ﷺ रोज़ाना हज़रत ख़्वाजा बा यज़ीद बुस्तामी ﷺ के मज़ार पुर अनवार पर हाज़िरी दिया करते थे। एक दिन हज़रत ख़्वाजा बा यज़ीद बुस्तामी ﷺ क़ब्रे मुनव्वर से बाहर तशरीफ़ लाए और हज़रत ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी ﷺ को अपनी निसबते तरीक़त से सरफ़राज़ फ़रमा कर ख़िलाफ़त अता फ़रमाई।

चुनान्चे शजरए नक़्शबन्दिया पढ़ने वाले यह अच्छी तरह जानते हैं कि हज़रत ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी अलैहिर्रहमा हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी ﷺ के ख़लीफ़ा हैं। हालाँकि तारीख़ों से साबित हैं कि हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी ﷺ की वफ़ात के तक़रीबन (39) साल बाद हज़रत अबुल हसन ख़रक़ानी अलैहिर्रहमा ख़रक़ान में पैदा हुए।

चरिन्द व परिन्द ताबेअ फ़रमान: उन की मश्हूर करामत यह है कि जंगल मे दौड़ते हुए हिरन को बुलाया तो वह आप के पास फ़ौरन ही हाज़िर हो गया। उसी तरह एक मर्तबा उड़ती हुई चिड़िया को आप ने आवाज़ दी तो वह आप की आवाज़ सुन कर ज़मीन पर उतर पड़ी।

(तज़्किरा महमूद)

फ़रिश्ता से बात: सलमा बिन अतिया असदी का बयान है कि हज़रत सलमान फ़ारसी رضي الله عنه एक मुसलमान के पास उस की अयादत के लिए तशरीफ़ ले गए और वह जाँकनी (मरने) के आलम में था। तो आप ने फ़रमाया कि ऐ फ़रिश्ता! तू उस के साथ नर्मी कर! रावी कहते हैं कि उस मुसलमान ने कहा कि ऐ सलमान फ़ारसी رضي الله عنه यह फ़रिश्ता आप के जवाब में कहता है कि मैं तो हर मोमिन के साथ नर्मी ही इख़्तियार करता हूँ। (हुलियतुल औलिया जि1, स 204)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र رضي الله عنه

यह हज़रत अली رضي الله عنه के भाई हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब رضي الله عنه के बेटे हैं। उन की वालिदा का नाम "असमा बिन्ते उमेस" رضي الله عنها है। उन के वालिदैन जब हिजरत करके हबशा चले गए तो यह हबशा ही में पैदा हुए। फिर अपने वालिदैन के साथ हिजरत करके मदीना मुनव्वरा आए। यह बहुत ही दानिश्मन्द व बुरदबार, निहायत ही इल्म व फ़ज़्ल वाले और बहुत ही पाक बाज़ व परहेज़गार थे। सख़ावत में तो इस क़दर बलन्द मर्तबा थे कि उन को بحر الجود (सख़ावत का दरिया) और اسخی المسلمین (मुसलमानों में सब से ज़्यादा सख़ी) कहते थे। नव्वे बरस की उम्र पाकर सन् 80 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर वफ़ात पाई। (अकमाल फि असमाईर्रिजाल स 604)

उन के विसाल के वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान अमवी ख़लीफ़ा की तरफ़ से मदीना मुनव्वरा के हाकिम हज़रत अबान बिन उस्मान رضي الله عنه थे। उन को हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र رضي الله عنه की वफ़ात की ख़बर पहुँची तो वह आए और ख़ुद अपने हाथों से उन को ग़ुस्ल

देकर कफ़न पहनाया और उन का जनाज़ा उठा कर जन्नतुल बक़ीअ के क़ब्रस्तान तक ले गए।

हज़रत अबान बिन उस्मान ﷺ के आँसू उन के रूख़सार (गाल)पर बह रहे थे। और वह ज़ोर ज़ोर से यह कह रहे थे कि ऐ अब्दुल्लाह बिन जाफ़र! आप बहुत ही बेहतरीन आदमी थे। आप में कभी कोई बुराई थी ही नहीं। आप शरीफ़ थे। लोगों के साथ नेक बरताव करने वाले नेको कार थे। फिर हज़रत अबान बिन उस्मान ﷺ ने आप के जनाज़ा की नामज़ पढ़ाई। आप की उम्र शरीफ़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ ने कहा कि आप की उम्र नव्वे बरस की थी। और बाज़ का कहना है कि बानवे बरस की उम्र में आप ने विसाल फ़रमाया। इसी तरह आप के विसाल के साल में भी इख़्तिलाफ़ है। सन् 80 हिजरी, सन् 81 हिजरी, सन् 85 हिजरी तीन अक़वाल हैं।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3, सफ़ा 133 से 135)

करामात

सजदा गाह से चश्मा उबल पड़ा: हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ का बयान है कि मैं ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ﷺ से कहा कि मेरे बाप के ज़िम्मे तुम्हारा कुछ क़र्ज़ बाक़ी है। आप ने फ़रमाया कि मैं ने उस को मआफ़ कर दिया। मैंने उन से कहा कि मैं उस क़र्ज़ को मआफ़ कराना हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं करूँगा हाँ यह और बात है कि मेरे पास नक़द रक़म नहीं है लेकिन मेरे पास ज़मीनें हैं। आप मेरी फ़लाँ ज़मीन अपने इस क़र्ज़ में ले लीजिए मगर उस ज़मीन में कुँवा नहीं है। और सींचाई के लिए दूसरा कोई ज़रिआ भी नहीं है। आप ने फ़रमाया कि बहुत अच्छा है। बहर हाल मैंने आप की वह ज़मीन ले ली। फिर आप उस ज़मीन में तशरीफ़ ले गए और वहाँ पहुँच कर अपने गुलाम को मुसल्ला बिछाने का हुक्म दिया और आप ने उस जगह दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और बड़ी देर तक सजदा में पड़े रहे। फिर मुसल्ला उटा कर आप ने गुलाम से फ़रमाया कि उस जगह

ज़मीन खोदो। गुलाम ने ज़मीन खोदी तो अचानक वहाँ से पानी का एक ऐसा चश्मा (सोता) उबलने लगा जिस से न सिर्फ़ उस ज़मीन बल्कि आस पास की तमाम ज़मीनों की सींचाई व सैराबी का इन्तज़ाम हो गया। (असदुल ग़ाबा जि 3, स 135)

क़ब्र पर अशआर: आप की क़ब्र मुनव्वर पर निम्नलिखित दो अशआर लिखे हुए देखे गए मगर यह नहीं मालूम हो सका कि यह किस के अशआर हैं और किस ने लिखे हैं? इस लिए हम उस को आप की एक करामत शुमार करते हैं। अशआर यह हैं।

مقیم الی ان یبعث اللہ خلقہ ☆ لقاؤک لا یرجی و انت قریب

(आप उस वक़्त तक यहाँ ठहरे रहेंगे जब कि अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ को क़ब्रों से उठाए गा आप की मुलाक़ात की कोई उम्मीद ही नहीं की जा सकती हालाँकि आप बहुत ही क़रीब हैं।)

تذید بلی فی کل یوم ولیلہ ☆ وتنسی کما تبلی و انت حبیب

(आप हर दिन और हर रात पुराने होते जाएँगे और जैसे जैसे आप पुराने होते जाएँगे लोग आप को भूलते जाएँगे। हालाँकि आप हर शख़्स के महबूब हैं।) (असदुल ग़ाबा जि 3, स 135)

तबसेरा: हज़रत अबान ﷺ हज़रत अमीरूल मोमिनीन उस्मान ﷺ के बेटे और ख़ानदान बनू उमैया के एक मुमताज़ शख़्स हैं। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ﷺ ख़ानदाने बनू हाशिम के चश्मो चिराग़ हैं और बावजूद यह कि दोनों ख़ानदानों में ख़ानदानी झगड़े की बिना पर ख़ुसूसन हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ की शहादत के बाद तनाव रहा करता था। मगर हज़रत अबान ﷺ बावजूद यह कि उस्मानी थे ख़ानदाने बनू उमैया के एक नामवर बेटे थे। फिर अमवी ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान की तरफ़ से हाकिम थे। लेकिन उन सब वजूहात के बावजूद उन्हों ने हाकिमे मदीना मुनव्वरा होते हुए हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ﷺ को गुस्ल दिया।, कफ़न पहनाया और जन्नतुल बक़ीअ के क़ब्रस्तान तक रोते हुए जनाज़ा उठाया। उस से पता चलता है कि हज़रत अबान बिन उस्मान ﷺ बहुत ही नेक नफ़्स

और ख़ानदानी झगड़े से बिल्कुल ही पाक साफ़ थे। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र इस क़दर मक़बूल ख़लाइक़ थे कि ख़ानदाने बनू हाशिम व ख़ानदाने बनू उमैया दोनों की निगाहों में इन्तहाई मुहतरम व मुअज़्ज़म थे। वल्लाहु तआला अअ्लम।

हज़रत जुवैब बिन कलीब

हज़रत जुवैब बिन कलीब बिन रबीआ ख़ोलानी ने यमन की सर ज़मीन में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया तो रसूलुल्लाह ने उन का नाम अब्दुल्लाह रखा।

करामत

आग नहीं जला सकी: उन की इन्तहाई हैरतनाक करामत यह है कि असवद अन्सी ने जब यमन के शहर सनआ में नबुवत का दअवा किया और लोगों को अपना कलमा पढ़ने पर मजबूर करने लगा तो हज़रत जुवैब बिन कलीब ने बड़ी सख़्ती के साथ उस की झूठी नुबुवत का इन्कार करते हुए लोगों को उस की पैरवी से रोकना शुरू कर दिया। उस से जल भुन कर उसवद अन्सी ज़ालिम ने आप को गिरफ़्तार करके जलती हुई आग के शोलों में डाल दिया। मगर आग से बदन तो किया उन के जिस्म के कपड़े भी नहीं जले। यहाँ तक कि पूरी आग जल कर बुझ गई और यह ज़िन्दा सलामत रहे। जब यह ख़बर मदीना मुनव्वरा पहुँची तो हुज़ूरे अकरम ने इस अजीब व गरीब करामत का तज़्किरा फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि यह शख़्स मेरी उम्मत में हज़रत ख़लील की तरह आग के शोलों में जलने से महफ़ूज़ रहा। और एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अकरम की ज़बाने मुबारक से यह ख़बर सुन कर हज़रत उमर ने ब आवाज़े बलन्द यह कहा कि अलहम्दु लिल्लाह! कि हमारे रसूलुल्लाह की उम्मत में अल्लाह तआला ने एक ऐसे शख़्स को भी पैदा फ़रमाया जो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की तरह आग के शोलों में जलने से

महफूज़ रहा। (हुज्जतुल्लाह जि 2, स 874 व असदुल ग़ाबा जि2, स 148)

तबसेरा: हुज़ूरे अकरम ﷺ की मौजूदगी में दो झूठों ने नुबुव्वत का दअवा किया। एक मुसलेमतुल कज़्ज़ाब दूसरा "असवद अन्सी"। हुज़ूरे अकरम ﷺ की मौजूदगी ही में हज़रत फीरोज़ दैलमी और हज़रत कैस बिन अब्द रज़ियल्लाहु अन्हु ने असवद अन्सी को इस तरह क़त्ल किया कि हज़रत फ़ीरोज़ दैलमी उस को पछाड़ कर उस के सीने पर चढ़ गए और हज़रत कैस रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस का सर काट लिया। मगर मुसेलमतुल कज़्ज़ाब को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की फौजों ने क़त्ल किया और यह दोनों झुठे नबुवत के दअ़वेदार दुनिया से फ़ना हो गए।

(अकमाल स 585 वग़ैरा)

हज़रत हमज़ा बिन अम्र असलमी رضي الله عنه

उन के वालिद का नाम अम्र था जो इब्ने अवेमर बिन हारिस अअ्रज के नाम से मश्हूर है। अहले हिजाज़ ने उन की हदीसों को बयान किया है। सन 61 हिजरी में 71 या 80 बरस की उम्र में वफ़ात पाई। (अकमाल स 560 व असदुल ग़ाबा जि 2, स 50)

करामत

उंगलियाँ रौशन हो गईं: उन की एक बहुत अजीब करामत यह है कि लोग हुज़ूरे अक़दस ﷺ के साथ जिहाद में गए थे। इत्तेफ़ाक़ से हुज़ूरे अकरम ﷺ का साथ छुट गया और यह चन्द आदमी सख़्त अंधेरी रात में इधर उधर बिखर गए। न किसी को रास्ता मिलता था। न एक दूसरे की ख़बर थी। इस परेशानी व हैरानी के आलम में एक दम अचानक उन की पांचों उंगलियाँ इस क़दर रौशन हो गईं कि उस की रोशनी में सब को रास्ता नज़र आगया और सब बिखरे हुए लोग इकठा हो गए और हलाकत व बरबादी से बच गए।

(दलाइलुन्नबुवा जि3, स 206)

हज़रत यअला बिन मुर्रा ﷺ

यह क़बीला बनू सक़ीफ में से हैं। बहुत ही बहादुर और जाँबाज़ सहाबी थे। बहुत सी इस्लामी लड़ाइयों में शरीके जिहाद रहे। और मुहद्देसीन की बहुत बड़ी जमाअत ने उन से हदीसों का दर्स लिया और कूफ़ा के मुहद्दसीन में उन का शुमार है। (अकमाल सफा 623)

करामत

अज़ाबे क़ब्र की आवाज़ सुन ली: उन का बयान है कि हम लोग रसूले ख़ुदा ﷺ के साथ साथ क़ब्रस्तान में से गुज़रे तो मैं ने एक क़ब्र में धमाका सुना, घबरा कर मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मैं ने एक क़ब्र में धमाका की आवाज़ सुनी है। आप ने इरशाद फ़रमाया कि तू ने इस धमाका की आवाज़ सुन ली? मैं ने अर्ज़ किया कि जी हाँ! इरशाद फ़रमाया कि ठीक है। एक क़ब्र वाले को उस की क़ब्र में अज़ाब दिया जा रहा है यह उसी अज़ाब की आवाज़ का धमाका था जो कि तू ने सुना। मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! इस क़ब्र वाले को किस गुनाह के सबब अज़ाब दिया जा रहा है? आप ने फ़रमाया कि यह शख़्स चुग़ल खोरी किया करता था। और अपने बदन और कपड़ों को पेशाब से नहीं बचाता था।

(हुज्जतुल्लाह जि 2, स 874 बहवाला बैहक़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ

यह हुज़ूरे अकरम ﷺ के चचा हज़रत अब्बास ﷺ के बेटे हैं। हुज़ूर ﷺ ने उन के लिए हिकमत और फिक़ह व तफ़सीर के उलूम के हासिल होने के लिए दुआ मांगी। उन का इल्म बहुत ज्यादा था। इसी लिए कुछ लोग उन को बहर (दरिया) कहते थे। और जरालामा (उम्मत का बहुत बड़ा आलिम) यह तो आप का बहुत ही मश्हूर लक़ब है। यह बहुत ही खुबसूरत और गोरे रंग के निहायत ही हसीन व खुबसुरत

शख़्स थे। हज़रत उमर ﷺ उन को कम उम्री के बावजूद उमूरे ख़िलाफ़त के अहम तरीन मशवरों में शरीक करते रहे।

लेस बिन अबी सलीम का बयान है कि मैंने ताउस मुहद्दिस से कहा कि तुम उस नव उम्र शख़्स (अब्दुल्लाह बिन अब्बास) की दर्स गाह से चिमटे हुए हो और बड़े सहाबा की दर्स गाहों में नहीं जा रहे हो।

ताउस मुहद्दिस ने फ़रमाया कि मैं ने यह देखा है कि सत्तर सहाबा-ए-किराम जब उन के बीच किसी मस्ला में इख़्तिलाफ़ होता था तो वह सब हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ के क़ौल पर अमल करते थे। इस लिए मुझे उन के इल्म पर भरोसा है। इस लिए मैं उन की दर्स गाह छोड़ कर कहीं नहीं जा सकता। आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा का बहुत ज़्यादा ग़लबा रहता। आप इस क़दर ज़्यादा रोते कि आप के दोनों गालों पर आँसूओं की धार बहने का निशान पड़ गया था। सन् 68 हिजरी में ताइफ़ में 71 बरस की उम्र में विसाल हुआ।

(अकमाल स 604 व असदुल ग़ाबा जि3, स 192)

करामात

उन की करामतों में से तीन करामतें बहुत ज़्यादा मशहूर हैं जो निम्नलिखित हैं।

कफ़न में परिन्दे: मैमून बिन महरान ताबई मुहद्दिस का बयान है कि मैं ताइफ़ में हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास ﷺ के जनाज़ा में हाज़िर था। जब लोग नमाज़े जनाज़ा के लिए खड़े हुए तो बिल्कुल ही अचानक निहायत तेज़ी के साथ एक सफ़ैद परिन्दा आया और उन के कफ़न के अन्दर दाख़िल हो गया। नमाज़ के बाद हम लोगों ने टटूल टटूल कर बहुत तलाश किया मगर उस परिन्दा का कुछ भी पता नहीं चला कि वह कहाँ गया और क्या हुआ? (मुस्ततरफ जि2, स 281)

ग़ैबी आवाज़: जब लोग हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ को दफ़न कर चुके और क़ब्र पर मिट्टी बराबर की जा चुकी तो तमाम लोगों ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी कि कोई शख़्स बलन्द आवाज़ से यह

तिलावत कर रहा है। يـايتها النفس المطمئنة ارجعى الى ربك راضية مرضيه (ऐ सुकून पाने वाली जान! तू अपने रब के दरबार में इस तरह हाज़िर हो जा कि तू ख़ुदा से ख़ुश है और ख़ुदा तुझ से ख़ुश है।)(मुस्ततरफ़ जि 2, स1 कंज़ुल उम्माल जि61,व हाशिया कंज़ुल उम्माल स73)

हज़रत साबित बिन क़ैस

मदीना मुनव्वरा के अन्सारी हैं और ख़ानदाने बनी ख़ज़रज से उन का नसबी तअल्लुक़ है। बड़े सहाबा की फेहरिस्त में उन का नामे नामी बहुत ही मश्हूर है। यह रसूलुल्लाह के ख़तीब थे। और उन को हुज़ूरे अक़दस ने बेहतरीन ज़िन्दगी, फिर शहादत, फिर जन्नत की बशारत दी थी। सन् 12 हिजरी में जंग यमामा के दिन मुसैलमतुल कज़्ज़ाब की फ़ौजों से जंग करते हुए शहादत से सर बलन्द हो गए।

(अकमाल स 588 वग़ैरा)

करामत

मौत के बाद वसियत: उन की यह एक करामत ऐसी बे मिस्ल करामत है कि उस की दूसरी कोई मिसाल नहीं मिल सकती। शहीद हो जाने के बाद आप ने एक सहाबी से ख़्वाब में यह फ़रमाया कि ऐ शख़्स! तुम अमीरे लश्कर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से मेरा यह पैग़ाम कह दो कि मैं जिस वक़्त शहीद हुआ मेरे जिस्म पर लोहे की एक ज़िरह थी जिस को एक मुसलमान सिपाही ने मेरे बदन से उतार लिया और अपने घोड़ा बांधने की जगह पर उस को रख कर उस पर एक हांडी औंधी करके उस को छिपा रखा है। इस लिए मेरा लश्कर मेरी इस ज़िरह को तलाश करके अपने क़बजे में ले लें।

और तुम मदीना मनव्वरा पहुँच कर अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से मेरा यह पैग़ाम कह देना कि मुझ पर जो क़र्ज़ है वह उस को अदा कर दें और मेरा फ़लाँ गुलाम आज़ाद है। ख़्वाब देखने वाले सहाबी ने अपना ख़्वाब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से

बयान किया तो उन्हों ने फौरन ही तलाशी ली और वाक़ई ठीक उसी जगह से ज़िरह निकली जिस जगह का ख़्वाब में आप ने निशान बताया था। और जब अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ को यह ख़्वाब सुनाया गया तो आप ने हज़रत साबित बिन क़ैस ﷺ की वसियत को नाफ़िज़ करते हुए उन का कर्ज़ अदा फ़रमा दिया और उन के गुलाम को आज़ाद क़रार दे दिया।

मशहूर सहाबी हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाया करते थे कि यह हज़रत साबित बिन क़ैस ﷺ की वह ख़ुसूसियत है जो किसी को भी नसीब नहीं हुई। क्योंकि ऐसा कोई शख़्स भी मेरे इल्म में नहीं है कि उस के मर जाने के बाद ख़्वाब में की हुई उस की वसियत को नाफ़िज़ किया गया हो। (तफ़सीर सावी जि2, स 108)

हज़रत अला बिन हज़रमी ﷺ

उन का असली नाम अब्दुल्लाह और उन का असली वतन "हज़र मौत" है। यह शुरू इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन को बहरेन का हाकिम बना दिया। सन् 14 हिजरी में बहालते जिहाद आप की वफ़ात हुई।
(अकमाल स 607)

करामात

हज़रत अबू हुरैरा ﷺ फ़रमाते हैं कि जब अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ ने बहरेन के मुरतदीन से जिहाद करने के लिए हज़रत अला बिन हज़रमी ﷺ को भेजा तो हम लोगों ने उन की तीन करामतें ऐसी देखी हैं कि मैं यह नहीं कह सकता कि उन तीन में से कौन सी ज़्यादा तअज्जुब ख़ेज़ और हैरत अंगेज़ है।

पैदल और सवार दरिया के पार: "दार बिन" पर हमला करने के लिए कश्तियों और जहाज़ों की ज़रूरत थी। मगर कश्तियों के इन्तज़ाम में बहुत लम्बी मुद्दत चाहिए थी। इस लिए हज़रत अला बिन हज़रमी

ﷺ ने अपने लश्कर को ललकार कर पुकारा कि ऐ मुजाहिदीने इस्लाम! तुम लोग खुश्क मैदानों में तो खुदा वन्दे कुद्दूस की इमदाद व नुसरत का नज़ारा बार बार देख चुके अब अगर समन्दर में भी उस की मदद का जलवा देखना हो तो तुम सब लोग समन्दर में दाख़िल हो जाओ। आप ने यह कहा और अपने लश्कर के साथ यह दुआ पढ़ते हुए समन्दर में दाख़िल हो गए। يا ارحم الراحمين يا كريم يا حليم يا احد يا صمد يا حي يا محي الموتى يا حي يا قيوم لا اله الا انت कोई ऊँट पर सवार था, कोई घोड़े पर, कोई गधे पर सवार था, कोई ख़च्चर पर और बहुत से पैदल चल रहे थे मगर समन्दर में क़दम रखते ही समन्दर का पानी खुश्क होकर इस क़दर रह गया कि जानवरों के सिर्फ़ पावं तर हुए थे। पूरा इस्लामी लश्कर इस तरह आराम व राहत के साथ समन्दर में चल रहा था गोया भीगे हुए रेत पर चल रहा है जिस पर चलना निहायत ही सहल और आसान होता है। चुनान्चे इस करामत को देख कर एक मुसलमान मुजाहिद ने जिन का नाम अफ़ीफ़ बिन मन्ज़र था फौरन अपने इन दो शेअरों में इस का ऐसा मन्ज़र खींचा है जो बिला शुबहा वज्द पैदा करने वाला है:-

الم تر ان الله ذلل بحره   وانزل بالكفار احدى الجلائل

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने उन मुजाहिदों के लिऐ अपने समुन्दर को फरमांबरदार बना दिया और कुफ्फार पर एक बहुत बड़ी मुसीबत नाज़िल फरमा दी।

دعونا الى شق البحار فجاءنا   باعجب من فلق البحار الاوائل

(हम लोगों ने समन्दर के फट जाने की दुआ मांगी तो खुदा ने उस से कहीं ज़्यादा अजीब वाक़िआ हमारे लिए पेश फ़रमा दिया जो दरिया फाड़ने के सिलसिले में पहले लोगों के लिए हुआ था) **(अल बदाया वन्नहाया जि 7, स 329 व दलाइलुन्नबुवा जि 3, स 208)**

चमकती रेत से पानी जाहिर हो गया: दूसरी करामत यह है कि हम लोग चटयल मैदान में जहाँ पानी बिल्कुल ही नहीं था। प्यास की सख्ती से बे ताब हो गए और बहुत से मुजाहिदीन को तो अपनी

हलाकत का यक़ीन भी हो गया। अपने लश्कर का यह हाल देख कर हज़रत अला बिन हज़रमी رضی اللہ عنہ ने नमाज़ पढ़ कर दुआ मांगी तो एक दम अचानक लोगों को बिल्कुल ही क़रीब सूखी रेत पर पानी चमकता हुआ नज़र आ गया।

और एक रिवायत में यह है कि अचानक एक बदली जाहिर हुई और इतना पानी बरसा कि जल थल हो गया और सारा लश्कर जानवरों समेत पानी से सैराब हो गया और लश्कर वालों ने अपने तमाम बरतनों को भी पानी से भर लिया।

(तबरी जिल्द3, सफा 257 व दलाइलुन्नबुवा जि3, स 208)

लाश क़ब्र से ग़ायब: तीसरी करामत यह है कि हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु का विसाल हुआ तो हम लोगों ने उन को रेतीली ज़मीन में दफ़न कर दिया। फिर हम लोगों को ख़्याल आया कि कोई जंगली जानवर आसानी के साथ उन की लाश को निकाल कर खा डालेगा। लिहाज़ा उन को किसी आबादी के क़रीब सख़्त ज़मीन में दफ़न करना चाहिए। चुनान्चे हम लोगों ने फ़ौरन ही पलट कर उन की क़ब्र को खोदा तो उन की मुक़द्दस लाश क़ब्र से ग़ायब हो चुकी थी और तलाश के बावजूद हम लोगों को नहीं मिली।

(दलाइलुन्नबुवा जि3, स208)

हज़रत बिलाल رضی اللہ عنہ

आप बहुत ही मशहूर सहाबी हैं आप के वालिद का नाम रेबाह है। यह हबशा के रहने वाले थे। और मक्का मुकर्रमा में एक काफ़िर उमैया बिन ख़लफ़ के गुलाम थे। उसी हाल में मुसलमान हो गए। उमैया बिन ख़लफ़ ने उन को बहुत सताया और उन पर बड़े बड़े जुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े मगर यह पहाड़ की तरह इस्लाम पर डटे रहे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने एक बड़ी रक़म और एक गुलाम दे कर उन को उमैया बिन ख़लफ़ से ख़रीद लिया। और अल्लाह व रसूल की खुशी के लिए उन को आज़ाद कर दिया। इसी

लिए हज़रत उमर ﷺ फ़रमाया करते थे कि अबू बकर हमारे सरदार हैं और उन्होंने हमारे सरदार (बिलाल) को आज़ाद किया।

खुदा की शान कि जंगे बद्र में उमैया बिन ख़लफ़ को हज़रत बिलाल ही ने चन्द अन्सारियों की मदद से क़त्ल किया। तमाम इस्लामी जिहादों में मुजाहिदाना शान के साथ जिहाद फ़रमाते रहे। और मस्जिदे नबवी के मोअज़्ज़िन भी रहे। विसाले नबवी के बाद मदीना तैयबा में रहना और हुज़ूरे अक़दस ﷺ की जगह को ख़ाली देखना उन के लिए ना क़ाबिले बरदाश्त हो गया। रसूल की जुदाई में हर वक़्त रोते रहते। इस लिए मदीना मुनव्वरा को ख़ैर बाद कह दिया और मुल्के शाम मे सुकूनत इख़्तियार कर ली। फिर सन् 20 हिजरी में 63 बरस की उम्र पा कर शहरे दमश्क़ में विसाल फ़रमाया। और बाबुस्सग़ीर में दफन हुए। और बाज़ मोअर्रेख़ीन का क़ौल है कि आप का विसाल शहरे हलब में हुआ और बाबुल अरबईन में आप की क़ब्र मुबारक बनाई गई। वल्लाहु अअ्लम।

(अकमाल फ़ी असमाइर्रिजाल सफ़ा 507)

करामत

ख़्वाब में हुज़ूर ﷺ का दीदार: एक मर्तबा ख़्वाब में सरवरे आलम ﷺ की ज़ियारत से सरफ़राज़ हुए तो हुज़ूरे अकरम ﷺ ने प्यार भरे लहजे में इरशाद फ़रमाया यह क्या अन्दाज़ है कि तुम हमारे पास कभी नहीं आते। ख़्वाब से बेदार हुए तो इस क़दर बे क़रार हो गए कि फ़ौरन ही ऊँट पर सवार हो कर सफ़र में निकल पड़े। जब मदीना मुनव्वरा में रौज़ए अनवर के पास पहुँचे तो शिद्दते ग़म से ग़श खा कर गिर पड़े और ज़मीन पर लोटने लगे। जब कुछ सुकून हुआ तो हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन ﷺ ने अज़ान की फ़रमाइश की। प्यारे रसूल के लाडलों की फ़रमाइश पर इन्कार की गुन्जाइश ही नहीं थी। आप ने मस्जिदे नबवी में अज़ान दी और ज़मानए नुबुवत की बिलाली अज़ान जब अहले मदीना के कान में पड़ी तो एक कोहराम मच गया।

यहाँ तक कि परदा नशीन औरतें जोशे बे क़रारी में घरों से बाहर निकलीं और हर छोटा बड़ा दौरे नुबुवत की याद से बे क़रार हो कर ज़ार ज़ार रोने लगा। चन्द दिनों मदीना मुनव्वरा में रह कर फिर आप मुल्के शाम चले गए। (असदुल ग़ाबा जि 1, स 206 ता 209)

हज़रत हंज़ला बिन हज़ीम رضی اللہ عنہ

यह हुज़ूरे अकरम ﷺ के सहाबी हैं। एक मर्तबा अपने बाप के साथ दरबारे नुबुवत में हाज़िर हुए और उनके बाप ने उन के लिए दुआ की दरख़्वास्त की। हुज़ूर रहमते आलम ﷺ ने शफकत से अपना दस्ते अक़दस उन के सर पर फेरा जिस की बदौलत उन को निम्नलिखित करामत मिली। (असदुल ग़ाबा जि2, स65)

करामत

सर लगते ही बीमारी खत्म: जिस क़िस्म का भी कोई मरीज़ इंसान या जानवर जब उन के पास लाया जाता तो यह अपना सर उस बीमार के बदन पर लगा देते थे। तो फ़ौरन शिफ़ा हासिल हो जाती थी। और एक रिवायत में यह है कि यह अपने हाथ में अपना लुआबे दहन (थूक) लगा कर अपने सर पर रखते और यह दुआ पढ़ते। بسم اللہ علی اثر ید رسول اللہ फिर अपना हाथ मरीज़ के दर्द पर फेर देते तो फ़ौरन मरीज़ शिफ़ायाब हो जाता।

(कंज़ुल उम्माल जि15, स 327 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी رضی اللہ عنہ

उन का इस्मे गिरामी जुनदुब बिन जनादा है। मगर अपनी कुन्नियत के साथ ज़्यादा मशहूर हैं। बहुत ही बुलन्द बड़े सहाबी हैं और यह अपने ज़ुहदो सब्र और तक़्वा व इबादत के एतेबार से तमाम सहाबा-ए-किराम में एक ख़ुसूसी इम्तियाज़ रखते हैं। शुरू इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे यहाँ तक कि बाज़ मोअर्रख़ीन का क़ौल है

कि इस्लाम लाने में उन का पांचवाँ नम्बर है। उन्हों ने मक्का मुकर्रमा में इस्लाम क़ुबूल किया। फिर अपने वतन क़बीला बनी ग़िफ़ार में चले गए। फिर जंगे ख़ंदक़ के बाद हिजरत करके मदीना मुनव्वरा पहुँचे और हुज़ूर ﷺ के विसाल के बाद कुछ दिनों के लिए मुल्के शाम चले गए। फिर वहाँ से लौट कर मदीना मुनव्वरा आए और मदीना मुनव्वरा से कुछ मील दूर मक़ामे "रुबज़ा" में बस गए। (अकमाल स 594)

बहुत से सहाबा और ताबईन इल्मे हदीस में आप के शागिर्द हैं। हज़रत उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त में बमक़ामे रबज़ा सन 32 हिजरी में आप ने वफ़ात पाई। (अकमाल स 594)

उन के बारे में हुज़ूरे अक़दस ﷺ का इरशादे गिरामी है कि जिस शख़्स को हज़रत ईसा علیہ السلام की ज़ियारत का शौक़ हो वह अबू ज़र का दीदार कर ले। (कंज़ुल उम्माल जि 12, स 255)

करामात

जंगल में कफ़न: रिवायत में है कि हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी رضی اللہ عنہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन की बीबी साहिबा रोने लगीं। आप ने पूछा बीबी तुम रोती क्यों हो? बीवी ने जवाब दिया कि क्यों न रोऊँ। जंगल में आप विसाल फ़रमा रहे हैं। और हमारे पास न कफ़न है न कोई आदमी। मुझे यह फ़िक्र है कि इस जंगल में आप की तजहीज़ व तकफ़ीन का मैं कहाँ से और कैसे इन्तज़ाम करूँगी? आप ने फ़रमाया तुम मत रोओ और फ़िक्र न करो। रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि मेरे सहाबा में से एक शख़्स जंगल में विसाल फ़रमाए गा और उस के जनाज़ा में मुसलमानों की एक जमाअत हाज़िर हो जाए गी। मुझे यक़ीन है कि जंगल में विसाल करने वाला वह सहाबी मैं ही हूँ इस लिए तुम फ़िक्र न करो और इन्तज़ार। करो मुमकिन है कोई जमाअत आ रही हो। यह कह कर हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी رضی اللہ عنہ विसाल फ़रमा गए। उन की बीवी का बयान है कि विसाल के थोड़ी देर के बाद बिल्कुल अचानक चन्द सवार आ गए और एक नौजवान ने

अपनी गठड़ी में से एक कफ़न निकाला और आप उस कफ़न में मदफ़ून हुए और सवारों की उस जमाअत ने निहायत ही एहतेमाम के साथ तजहीज़ व तकफ़ीन और नमाज़े जनाज़ा व दफ़न का इन्तज़ाम किया।

(अलकलामुल मुबीन व कंज़ुल उम्माल जि15, स284 मतबूआ हैदराबाद)

सिर्फ ज़मज़म पर ज़िन्दगी: बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि जब हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी मुसलमान हुए तो रोज़ाना मस्जिदे हराम में जाकर अपने इस्लाम का ऐलान करते रहते और कुफ़्फ़ारे मक्का उन को इस क़दर मारते थे कि यह मरने के क़रीब हो जाते थे और हज़रत अब्बास उन को लोगों से यह कह कर बचाया करते थे कि यह क़बीला ग़िफ़ार का आदमी हैं। जो तुम कुरैशियों की शामी तिजारत की मेन रास्ते पर वाक़िअ है। लिहाज़ा उन को तक्लीफ मत दो। वरना तुम्हारी शामी तिजारत का रास्ता बन्द हो जाएगा। हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी पन्द्रह रात उसी हरमे कअबा में रोज़ाना अपने इस्लाम का ऐलान करते और कुफ़्फ़ार से मार खाते रहे और उन पन्द्रह दिनों और रातों में ज़मज़म शरीफ़ के पानी के सेवा उन को गेहूँ या चावल का एक दाना या ज़र्रा बराबर कोई दूसरी ग़िज़ा मयस्सर नहीं हुई मगर यह सिर्फ़ ज़मज़म शरीफ़ पी कर ज़िन्दा रहे और पहले से ज़्यादा तन्दुरूस्त और सेहत मंद हो गए। **(बुखारी जिल्द 1, सफा 499 बाब क़िस्सा ज़मज़म व हाशिया बुखारी सफा 499 व फ़तहुल बारी)**

हज़रत इमाम हसन

यह अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब के बड़े बेटे हैं। उन की कुन्नियत अबू मुहम्मद और लक़ब **"सिब्ते पयम्बर"** व **रैहानतुल रसूल** है। 15 रमज़ान सन् 3 हिजरी में आप की पैदाइश हुई। आप जवानाने अहले जन्नत के सरदार हैं। और आप के फ़ज़ाइल व खूबियों में बहुत ज़्यादा हदीसें आई हैं। आप ने तीन मर्तबा अपना आधा माल खुदा तआला की राह में ख़ैरात कर दिया।

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली की शहादत के बाद कूफ़ा में

चालीस हज़ार मुसलमानों ने आप के दस्ते मुबारक पर मौत की बैअत करके आप को अमीरूल मोमिनीन चुना। लेकिन आप ने तक़रीबन छः माह के बाद जमादिल ऊला सन ४१ हिजरी में हज़रत अमीरे मआविया ﷺ के हाथ पर बैअत फ़रमा कर ख़िलाफ़त उन के हवाले फ़रमा दी। और खुद इबादत व रियाज़त में मशगूल हो गए।

इस तरह हुज़ूरे अकरम ﷺ ने जो ग़ैब की ख़बर दी थी वह ज़ाहिर हो गई कि मेरा यह बेटा "**सैय्यद**" है।और इसकी वजह से अल्लाह तआला मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों में सुलह करा दे गा। चुनान्चे हज़रत इमाम हसन ﷺ अगर ख़िलाफ़त हज़रत मआविया ﷺ के हवाले न फ़रमा देते तो ज़ाहिर है कि हज़रत हसन और हज़रत अमीरे मआविया ﷺ की दोनों फौजों के बीच बड़ी ही ख़ून रेज़ जंग होती जिस से हज़ारों औरतें बेवा और लाखों बच्चे यतीम हो जाते और सलतनते इस्लाम का समूह बिखर जाता मगर हज़रत इमाम हसन ﷺ की अमन पसन्द तबीअत और नेक मिज़ाजी की बदोलत मुसलमानों में खून रेज़ी की बारी नहीं आई।

5 रबीउल अव्वल सन् 49 हिजरी में आप बामे मदीना मुनव्वरा में ज़हर ख़ुरानी की वजह से शहादत से सरफ़राज़ हुए।

(अकमाल स 560 व असदुल ग़ाबा जि 2, स 90 ता 92)

करामात

सुखे पेड़ पर ताज़ा खुजूरें: आप की बहुत सी करामतों में से यह एक करामत बहुत ज़्यादा मश्हूर है कि एक सफ़र में आप का गुज़र खुजूरों के एक बाग़ में हुआ जिस के तमाम पेड़ सूख गए थे। हज़रत जुबैर बिन अव्वाम ﷺ के एक बेटे भी उस सफ़र में आप के साथ थे। आप ने उसी बाग़ में पड़ाओ किया और नौकरों ने आप का बिस्तर एक सूखे पेड़ के जड़ में बिछा दिया और हज़रत जुबैर ﷺ के बेटे ने अर्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! काश इस सूखे दरख़्त पर ताज़ा खुजूरें होतीं तो हम लोग पेट भर कर खा लेते। यह सुन कर हज़रत इमाम

हसन ﷺ ने चुपके से कोई दुआ पढ़ी और बिल्कुल ही अचानक मिन्टों में वह सूखा पेड़ बिल्कुल हरा भरा हो गया और उस में ताज़ा पकी हुई खुजूरें लग गईं। यह मंज़र देख कर एक शुतर बान कहने लगा कि खुदा की क़सम! यह तो जादू का करिश्मा है। यह सुन कर हज़रत जुबैर ﷺ के फ़रज़न्द ने उस को बहुत ज़ोर से डांटा और फ़रमाया कि तौबा कर यह जादू नहीं है बल्कि यह शहज़ादए रसूल की दुआ-ए-मक़बूल की करामत है। फिर लोगों ने खुजूरों को दरख़्त से तोड़ा और सब साथियों ने ख़ूब पेट भर कर खाया।

(रोज़तुश्शुहदा बाब 6, स 109)

फ़र्ज़न्द (बेटा) पैदा होने की खुशखबरी: आप पैदल हज के लिए जा रहे थे बीच राह में एक मंज़िल पर ठहरे। वहाँ आप का एक अक़ीदत मंद हाज़िरे ख़िदमत हुआ और अर्ज़ किया कि हुज़ूर में आप का गुलाम हूँ। मेरी बीवी दर्देज़ेह (बच्चा पैदा होने से कुछ पहले जो औरत को दर्द होता है।)में मुबतला है। आप दुआ फ़रमाएं कि तन्दुरूस्त लड़का पैदा हो। आप ने फ़रमाया कि तुम अपने घर जाओ। तुम्हें जैसे फ़रज़न्द की तमन्ना है वैसा ही फ़रज़न्द तुम को अल्लाह तआला ने अता फ़रमा दिया है और तुम्हारा लड़का हमारा अक़ीदत मन्द और जाँनिसार होगा। वह शख़्स जब अपने मकान पर पहुँचा तो यह देख कर खुशी से बाग़ बाग़ हो गया कि वाक़ई हज़रत इमाम हसन ﷺ ने जैसे फ़रज़न्द की बशारत दी थी वैसा ही लड़का उस के हाँ पैदा हुआ। (शवाहिदुन्नबुवा स 172)

तबसेरा: खुश्क दरख़्त पर ताज़ा खुजूरों का लग जाना और अक़ीदत मन्द के घर में लड़की पैदा हुई या लड़का? और फिर इस बात को जान लेना कि यह लड़का बड़ा हो कर हमारा अक़ीदत मन्द व जाँ निसार होगा। ग़ौर फ़रमाइए कि यह कितनी बड़ी और किस क़दर शानदार करामतें हैं। **सुब्हानअल्लाह!** क्यों न हो कि आप इब्ने रसूल और नूरे दीदा हैदर व बतूल हैं और ख़ुदावन्द की बारगाह में बहुत मक़बूल हैं। (ﷺ)

हज़रत इमाम हुसैन

सय्यदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन की पैदाइश 5 शअबान सन 4 हिजरी को मदीना मुनव्वरा में हुई। आप की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और नाम नामी **"हुसैन"** और लक़ब **"सिब्ते रसूल"** व **"रेहानतुर्रसूल"** है। 10 मुहर्रम सन् 61 हिजरी जुमा के दिन करबाला के मैदान में यज़ीदी सितम गारों ने इन्तहाई बेदर्दी के साथ आप को शहीद कर दिया। (अकमाल स 560)

करामात

कुँएं से पानी निकल पड़ा: अबू औन कहते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के रास्ते में इब्ने मतीअ के पास से गुज़र हुआ। उन्हों ने अर्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूल! मेरे इस कुँऐं में पानी बहुत कम है। इस में डोल भरता नहीं है। मेरी सारी तदबीरें बेकार हो चुकी हैं। काश! आप हमारे लिए बरकत की दुआ फ़रमाएं। हज़रत इमाम ने इस कुँएं का पानी मंगाया और आप ने डोल से मंगा कर पानी नोश (पीया) फ़रमाया। फिर इस डोल में कुल्ली फ़रमा दी और हुक्म दिया कि सारा पानी कुँएं में उंडेल दें। जब डोल का पानी कुँएं में डाला तो नीचे से पानी उबल पड़ा। कुँएं का पानी बहुत ज़्यादा बढ़ गया और पानी पहले से ज़्यादा मीठा और लज़ीज़ भी हो गया। **(इब्ने सअद जि 5, स 144)**

बे अदबी करने वाला आग में: मैदाने करबला में एक बे बाक और बे अदब मालिक बिन उर्वा ने जब आप के ख़ेमा के गिर्द गढ़े में आग जलती हुई देखी तो उस बद नसीब ने यह कहा कि ऐ हुसैन! तुम ने आख़िरत की आग से पहले ही यहाँ दुनिया में आग लगाली? हज़रत इमाम ने फ़रमाया कि ऐ ज़ालिम! क्या तेरा गुमान है कि मैं दोज़ख़ में जाऊँगा? फिर हज़रत इमाम ने अपने ज़ख्मी दिल से यह दुआ मांगी कि "ख़ुदा वन्द! तू इस बद नसीब को नारे जहन्नम से पहले दुनिया

में भी आग के अज़ाब में डाल दे'' इमाम आली मक़ाम की दुआ अभी ख़त्म भी नहीं हुई थी कि फ़ौरन ही मालिक बिन उर्वा का घोड़ा फिसल गया और यह शख़्स इस तरह घोड़े से गिर पड़ा कि घोड़े की रकाब में इस का पावों उलझ गया और घोड़ा इस को घसीटते हुए ख़ंदक़ (गढ़े) की तरफ ले भागा और यह शख़्स ख़ेमा के गिर्द ख़ंदक़ की आग में गिर कर राख का ढेर हो गया। **(रौज़तुश्शोहदा स 169)**

नेज़ा पर सरे अक़दस की तिलावत: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ عنہ का बयान है कि जब यज़ीदियों ने हज़रत इमाम हुसैन رضی اللہ عنہ के सर मुबारक को नेज़ा पर चढ़ा कर कूफ़ा की गलियों में चक्कर लगाया तो मैं अपने मकान के बाला ख़ाना पर था जब सर मुबारक मेरे सामने से गुज़रा तो मैं ने सुना कि सरे मुबारक ने यह आयत तिलावत फ़रमाई। ام حسبت ان اصحاب الکھف والرقیم کانوا من ایاتنا عجبا (सूरेह कहफ़ पारह 15)

इस तरह एक दूसरे बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि जब यज़ीदियों ने सरे मुबारक को नेज़ा से उतार कर इब्ने ज़याद के महल में दाख़िल किया तो आप के मुक़द्दस होंट हिल रहे थे और ज़बाने अक़दस पर इस आयत की तिलावत जारी थी। ولا تحسبن اللہ غافلا عما یعمل الظلمون

(रौज़तुश्शोहदा सफा 230)

तबसेरा: इन ईमान अफ़रोज़ करामतों से यह ईमानी रोशनी मिलती है कि शोहदाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में तमाम जरूरीयाते ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा हैं। ख़ुदा की इबादत भी करते हैं और क़िस्म क़िस्म के तसर्रूफ़ात भी फ़रमाते रहते हैं। और उन की दुआएँ भी बहुत जल्द मक़बूल होती हैं।

हज़रत अमीर मआविया رضی اللہ عنہ

आप के वालिद का नाम अबू सुफ़यान और वालिदा का नाम हिन्दा बिन्ते उतबा है। सन ८ हिजरी में फ़तहे मक्का के दिन यह ख़ुद और आप के वालिदैन सब मुसलमान हो गए और हज़रत अमीरे मआविया رضی اللہ عنہ चूँकि बहुत ही अच्छे कातिब थे इस लिए दरबारे नुबुवत में वही लिखने

वालों की जमाअत में शामिल कर लिए गए। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर رضی اللہ عنہ के दौरे ख़िलाफ़त में यह शाम के गवर्नर मुक़र्रर हुए और हज़रत अमीरूल मोमिनीन उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ के दौरे ख़िलाफ़त ख़त्म होने तक उस ओहदा पर रहे मगर जब अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली رضی اللہ عنہ तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो आप ने उन को गवर्नर से हटा दिया। लेकिन उन्होंने हटाये जाने का परवाना क़बूल नहीं किया और शाम की हुकूमत न छोड़े। बल्कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ के ख़ून के क़ेसास (बदला) का मुतालबा करते हुए उन्होंने अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली رضی اللہ عنہ की बैअत से न सिर्फ़ इनकार किया बल्कि उन से मक़ामे सिफ्फीन में जंग भी हुई।

फिर जब सन् 41 हिजरी में हज़रत इमाम हसन मुजतबा رضی اللہ عنہ ने ख़िलाफ़त उन के हवाले कर दी तो यह पूरे आलमे इस्लाम के बादशाह हो गए। बीस बरस तक ख़िलाफ़ते राशिदा के गवर्नर रहे और बीस बरस तक ख़ुद मुख़्तार बादशाह रहे। इस तरह चालीस बरस तक शाम के तख़्ते सलतनत पर बैठ कर हुकूमत करते रहे और खुश्की व समन्दर में जेहादों का इन्तज़ाम फ़रमाते रहे।

इस्लाम में समुद्री लड़ाइयों की शुरूआत करने वाले आप हैं। जंगी बेड़ों की तअमीर का कारख़ाना भी आप ने बनवाया। खुश्की और समन्दरी फ़ौजों की बेहतरीन तनज़ीम फ़रमाई और जेहादों की बदौलत इस्लामी हुकूमत की सरहदों को खूब खूब बढ़ाते रहे और इशाअते इस्लाम का दाइरा बराबर बढ़ता रहा, जगह जगह मसाजिद की तअमीर और दर्स गाहों का क़याम फ़रमाते रहे।

रजब सन् 60 हिजरी में आप लक़वा की बीमारी में मुबतला हो कर अपने राजधानी दमश्क़ में विसाल फ़रमाया। बवक़्ते विसाल आप ने वसियत फ़रमाई थी कि मेरे पास हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم का एक पैराहन, एक चादर, एक लुंगी और कुछ बाल मुबारक और नाख़ुने अक़दस के चन्द तराशे हैं। इन तीनों मुक़द्दस कपड़ों को मेरे कफ़न में शामिल किया जाए और मुए (बाल) मुबारक और नाख़ुन अक़दस को मेरी आँखों

में रख कर मुझे अर्रहम रीहिमीन के सुपुर्द किया जाए। चुनान्चे लोगों ने आप की इस वसियत पर अमल किया। (अकमाल स 617 वग़ैरा)

बवक़्ते विसाल अठहत्तर या छियासी बरस की उम्र थी। विसाल के वक़्त उन का बेटा यज़ीद दमश्क़ में मौजूद नहीं था। इस लिए ज़हाक बिन क़ैस ने आप के कफ़न दफ़न का इन्तज़ाम किया और उसी ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

हज़रत अमीरे मआविया ﷺ बहुत ही ख़ूबसूरत, गोरे रंग वाले और निहायत ही वजीह और रोब वाले थे। चुनान्चे अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ फ़रमाया करते थे कि ''मआविया'' अरब के ''किसरा'' हैं। (असदुल ग़ाबा जिल्द4, स 385 ता 387)

करामात

आप की चन्द करामतें बहुत ही मशहूर हैं और आप के फ़ज़ाइल में चन्द अहादीस भी मरवी हैं।

जंग में कभी मग़लूब (हारे) नहीं हुऐ : उन की एक मशहूर करामत यह है कि कुश्ती या जंग में कभी भी और कहीं भी और किसी शख़्स से भी मग़लूब नहीं हुए बल्कि हमेशा ही अपने मद्दे मुक़ाबिल पर ग़ालिब रहे क्योंकि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन के बारे में इरशाद फ़रमाया था। ان معاویه لا یصارع احداالاصرعه معاویه (यअनी मआविया जिस शख़्स से लड़े गा मआविया ही उस को पिछाड़ेगा) **(कंजुल उम्माल जि 12, स 317 बहवाला दैलमी अन इब्ने अब्बास)**

दुआ मांगते ही बारिश: सलीम बिन आमिर हबाइरी का बयान है कि एक मर्तबा मुल्के शाम में बिल्कुल ही बारिश नहीं हुई और सख़्त सूखा का दौर दौरा हो गया। हज़रत अमीरे मआविया ﷺ नमाज़े इस्तिसक़ा के लिए मैदान में निकले और मिंबर पर बैठ कर आप ने हज़रत इब्ने असवद जरशी को बुलाया और उन को मिंबर के नीचे अपने क़दमों के पास बैठा कर अपने दोनों हाथों को उठाया और इस तरह दुआ मांगी कि या अल्लाह! हम तेरे हुज़ूर में हज़रत इब्ने असवद

जरशी को सिफ़ारशी बना कर लाए हैं जिन को हम अपने से नेक और अफ़ज़ल समझते हैं।

फिर हज़रत इब्ने असवद जरशी और तमाम हाज़िरीन भी अपने अपने हाथों को उठा कर बारिश की दुआ मांगने लगे। अचानक पच्छिम से एक ज़ोर दार बादल उठा। फिर मौसला धार बारिश होने लगी। यहाँ तक कि मुल्के शाम की ज़मीन सैराब हो कर खेती से हरी भरी हो गई। (तबक़ात इब्ने सअद जिल्द 7, सफ़ा 444)

शैतान ने नमाज़ के लिए जगाया: हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन मौलाना-ए-रूम ने अपनी मस्नवी शरीफ़ में आप की इस करामत को बड़ी धूम से बयान फ़रमाया है कि एक दिन आप के महल में दाख़िल होकर किसी ने आप को नमाज़े फ़ज्र के लिए जगाया तो आप ने पुछा कि तू कौन है? और किस लिए तू ने मुझे जगाया है? तो उस ने जवाब दिया कि ऐ अमीरे मआविया! मैं शैतान हूँ। आप ने हैरान होकर पुछा कि ऐ शैतान! तेरा काम तो इंसान से गुनाह कराना है और तू ने नमाज़ के लिए जगा कर मुझे नेक अमल करने का मौक़ा दिया। इस की वजह क्या है? तो शैतान ने जवाब दिया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं जानता हूँ कि अगर सोते रहने में आप की नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा हो जाती तो आप ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर रोते और इस कसरत से तौबा व इस्तिग़फ़ार करते कि ख़ुदा की रहमत को आप की बे क़रारी व रोने धोने पर प्यार आ जाता कि वह आप की क़ज़ा नमाज़ क़बूल फ़रमा कर अदा नमाज़ से हज़ारों गुना ज़्यादा अज्र व सवाब अता फ़रमा देता। चूँकि मुझे ख़ुदा के नेक बन्दों से दुश्मनी व हसद है इस लिए मैंने आप को जगा दिया ताकि आप को कुछ ज़्यादा सवाब न मिल सके।

(मस्नवी मौलाना रूम अलैहिर्रहमा)

तबसेरा: मस्नवी शरीफ़ की इस हिकायत से मालूम हुआ कि शैतान कभी लोगों को सुला कर और नमाज़ें क़ज़ा करा कर नेकियों और सवाबों से महरूम कराता है। कभी कुछ लोगों को नमाज़ों के लिए जगा कर और अदा नमाज़ें पढ़वा कर ज़्यादा नेकियों और सवाबों

से महरूम कराता है। और इस की सूरत यह है कि जो लोग सुबह को बेदार होकर नमाज़ फ़ज्र जमाअत से पढ़ते हैं तो शैतान कभी कभी कुछ लोगों के दिलों में यह वसवसा डाल देता है कि मैं ख़ुदा का बहुत ही नेक बन्दा हूँ। क्योंकि मैं ने फ़ज्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी है और फ़लाँ फ़लाँ लोगों की नमाज़ें क़ज़ा हो गईं। यक़ीनन मैं उन लोगों से बहुत नेक और बहुत अच्छा हूँ। ज़ाहिर है कि अपनी अच्छाई और बुराई का ख़्याल आते ही नमाज़ का अज्र व सवाब तो बेकार हो ही गया। उलटे तकब्बुर और घमन्ड का गुनाह सर पर सवार हो गया। बहर हाल शैतान की मक्कारी से ख़ुदा तआला की पनाह।

हज़रत हारिसा बिन नौमान

हज़रत हारिसा बिन नौमान बड़े सहाबा में से हैं। जंगे बद्र और जंगे उहुद वग़ैरा तमाम इस्लामी जंगों में मुजाहिदाना शान के साथ जंग करते रहे। क़बीला बनू नज्जार से हैं। हुज़ूरे अक़दस ने उन के बारे में इरशाद फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैं ने वहाँ क़ेरत की आवाज़ सुनी। जब मैं ने पता लगाया कि यह कौन शख़्स हैं? तो फ़रिश्तों ने कहा कि यह हारिसा बिन नौमान हैं। यह अपनी वालिदा के साथ बेहतरीन सुलूक करने वाले सहाबी हैं।

(मिश्कात जि 2, स 419 बाबुल बर वस्साफ़ा)

करामत

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को देखा: उन का बयान है कि मैं एक मर्तबा हुज़ूरे अकरम के पास से गुज़रा तो मैं ने यह देखा कि एक शख़्स आप के पास बैठे हुए हैं। मैं ने सलाम किया और वहाँ से चल दिया। जब मैं वापस आया तो हुज़ूरे अकरम ने फ़रमाया कि ऐ हारिसा! तुम ने उस शख़्स को देखा जो मेरे पास बैठे हुए थे मैं ने अर्ज़ किया कि जी हाँ! तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि वह हज़रत जिब्राईल थे और उन्होंने तुम्हारे सलाम का जवाब भी दिया था।

(अकमाल फ़ी अस्माइर्रिजाल स 561)

और एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत जिब्रईल ने हुज़ूरे अक़दस से फ़रमाया कि हारिसा बिन नौमान अस्सी (80) आदमियों में से एक हैं। तो हुज़ूरे अकरम ने पुछा कि ऐ जिब्रईल! उस का क्या मतलब है कि यह अस्सी आदमियों में से एक हैं ? तो आप ने जवाब दिया कि जंगे हुनैन के दिन कुछ देर के लिए तमाम सहाबा शिकस्त खा कर पीछे हट जाएँगे मगर अस्सी आदमी पहाड़ की तरह आप के साथ ऐसी हालत में डटे रहेंगे जब कि कुफ़्फ़ार की तरफ़ से तीरों की बारिश हो रही होगी। उन अस्सी बहादुरों में से एक "हारिसा बिन नौमान" हैं। (असदुल ग़ाबा जि1, स 358)

यह आख़िरी उम्र में नाबीना हो गए थे, इस लिए हर वक़्त अपने मुसल्ला पर बैठे रहते थे और अपने मुसल्ला के पास एक टोकरी में खुजूर भर कर रखते थे और अपने मुसल्ले से हुजरा के दरवाज़े तक एक धागा बांधे हुए थे। जब गरीब दरवाज़ा पर आकर सलाम करता तो उसी धागा में खुजूरें बांध कर धागा खींच लेते और खुजूरें मिस्कीन के पास पहुँच जाती थीं। उन के घर वालों ने कहा कि इस तकल्लुफ़ व तकलीफ़ की क्या ज़रूरत है? आप हुक्म दें तो घर वाले खुजूरें मिस्कीन को दे दिया करेंगे। आप ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूरे अक़दस को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना। مناولة المسكين تقى ميتة السوء (यअनी मिस्कीन को अपने हाथ से देना बुरी मौत से बचाता है।)

हज़रत हकीम बिन हज़ाम

उन की कुन्नियत अबू ख़ालिद है और ख़ानदाने कुरैश की शाख़ बनू असद से उन का ख़ानदानी तअल्लुक़ है। यह उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा के भतीजे हैं। उन की एक ख़ुसूसियत यह है कि ज़माना जाहिलियत में उन की वालिदा जब कि यह उन के पेट में थे, कअबा के अन्दर बुतों पर चढ़ावा चढ़ाने को गई तो वहीं बीच कअबा में हकीम बिन हज़ाम पैदा हो गए। ज़माने जाहिलियत और इस्लाम

दोनों ज़मानों में यह कुरैश के बड़े लोगों में से शुमार किए जाते थे। फ़तहे मक्का के साल सन् 8 हिजरी में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। बहुत ही अक़्ल मन्द, मआमला समझने वाले और साहिबे इल्म व तक़्वा शिआर थे। एक सौ गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया और एक सो ऊँट उन मुसाफ़िरों को दिए जिन के पास सवारी के जानवर नहीं थे। एक सौ बीस बरस की उम्र पाई। साठ बरस कुफ़्र की हालत में और साठ बरस इस्लमी ज़िन्दगी गुज़ारी। सन 54 हिजरी में मदीना मुनव्वरा उन का विसाल हुआ। (अकमाल स 561)

करामत

तिजारत में कभी घाटा नहीं हुआ: उन की मशहूर करामत यह है कि यह ताजिर थे। ज़िन्दगी भर तिजारत करते रहे, मगर कभी भी और कहीं भी और किसी सौदे में भी कोई नुक़सान और घाटा नहीं हुआ, बल्कि अगर यह मिट्टी भी ख़रीदते तो उस में नफ़अ ही नफ़अ होता, क्योंकि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उन के लिए दुआ फ़रमाई थी। اللهم بارک فی صنعته (ऐ अल्लाह! उन के कारोबार में बरकत अता फ़रमा)

(कंज़ुल उम्माल जि12, स 262)

तिर्मिज़ी व अबू दाऊद की रिवायतों में है कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उन को दो दीनार दे कर एक मेंढा ख़रीदने के लिए भेजा, तो उन्हों ने एक दीनार में दो मेंढे ख़रीदे और फिर उन में से एक मेंढे को एक दीनार में बेच डाला और आप की ख़िदमते अक़दस में आकर एक मेंढा और दो दीनार पेश कर दिए। हुज़ूर ﷺ ने उस में से एक दीनार को तो खुदा की राह में ख़ैरात कर दिया और फिर खुश होकर उनकी तिजारत में बरकत के लिए दुआ फ़रमा दी।

(मिश्कात स 254 बाबुश शरकतु वल वकालतु)

तबसेरा: तिजारत में नफ़अ व नुक़सान दोनों का होना जरूरी है, हर ताजिर को उस का तजरबा है कि कारोबार में कभी नफ़अ होता है कभी नुक़सान, मगर ज़िन्दगी भर तिजारत में हमेशा नफ़अ होता रहे

और कभी भी और कहीं भी और किसी सोदे में भी घाटा न उठाना पड़े। बिला शुबहा उस को करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता, इस लिए हज़रत हकीम बिन हज़ाम رضی اللہ عنہ यकीनन साहिबे करामत सहाबी और बलन्द मर्तबा वाले थे।

हज़रत अम्मार बिन यासिर رضی اللہ عنہ

यह पुराने सहाबा और पहले मुहाजिरीन में से हैं और यह उन मुसीबत ज़दा सहाबियों में से हैं, जिन को कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस क़दर तक्लीफें दीं कि जिन्हें सोच कर ही बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ज़ालिमों ने उन को जलती हुई आग पर लिटाया, चुनान्चे यह दहकती हुई आग के कोइलों पर पीठ के बल लेटे रहते थे। और जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ उन के पास से गुज़रते और यह आप को या रसूलुल्लाह कह कर पुकारते तो आप उन के लिए इस तरह आग से फ़रमाया करते थे। يا نار كونى برداو سلاما على عمار كما كنت على ابراهيم (यअनी ऐ आग तू अम्मार पर उसी तरह ठंडी और सलामती वाली बन जा, जिस तरह तू हज़रत इब्राहीम علیہ السلام के लिए ठंडी और सलामती वाली बन गई थी।)

उन की वालिदा माजिदा हज़रत बीबी सुमैया رضی اللہ عنہا को इस्लाम क़बूल करने की वजह से अबू जहल ने बहुत सताया, यहाँ तक कि उन को नाफ़ के नीचे नेज़ा मार दिया जिस से उन की रूह परवाज़ कर गई और अहदे इस्लाम में सब से पहले यह शहादत से सरफ़राज़ हो गईं।

हुज़ूरे अकरम ﷺ हज़रत अम्मार رضی اللہ عنہ को तैयब व मुतैयब के लक़ब से पुकारा करते थे। यह सन ३७ हिजरी में तिरानवे बरस की उम्र पाकर जंगे सिफ्फीन में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की हिमायत में हज़रत अमीरे मआविया رضی اللہ عنہ की फ़ौजों से जंग करते हुए शहीद हो गए।

(अकमाल स 607)

करामात

कभी उन की क़सम नहीं टूटी: उन की एक मशहूर करामत यह है कि यह जिस बात की क़सम उठा लिया करते थे, ख़ुदा वन्दे करीम हमेशा उन की क़सम को पूरी फ़रमा देता था, क्योंकि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उन के बारे में यह इरशाद फ़रमा दिया था। كم من ذى طمرين لا يؤبه له لو اقسم على الله لا بره منهم عمار بن ياسر (कितने ही ऐसे कमबल पोश हैं कि लोग उन की कोई परवा नहीं करते, लेकिन अगर वह किसी बात की क़सम खा लें तो अल्लाह तआला ज़रूर उन की क़सम पूरी फ़रमा देगा और उन्हीं लोगों में अम्मार बिन यासिर हैं।)

(कंज़ुल उम्माल जि12, स 295)

तीन मर्तबा शैतान को पछाड़ा: हज़रत अली رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अम्मार رضی اللہ عنہ को पानी भरने के लिए भेजा। शैतान एक काले ग़ुलाम की सूरत में हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को पानी भरने से रोकने लगा और लड़ने के लिए तैयार हो गया। हज़रत अम्मार رضی اللہ عنہ ने उस को पिछाड़ दिया, तो वह गिड़गिड़ाने लगा। इसी तरह तीन मर्तबा शैतान ने पानी भरने से आप को रोका और लड़ने पर तैयार हुआ और तीनों मर्तबा आप ने उस को पछाड़ दिया। जिस वक़्त शैतान से आप की कुश्ती हो रही थी हुज़ूरे अकरम ﷺ ने अपनी मजलिस में सहाब-ए-किराम को बताया कि आज अम्मार ने तीन मर्तबा शैतान को पछाड़ दिया है जो एक काले ग़ुलाम की सूरत में उन से लड़ रहा है। हज़रत अम्मार رضی اللہ عنہ जब पानी ले कर आगए तो मैं ने उन से कहा कि तुम्हारे बारे में हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया है कि तुम ने तीन मर्तबा शैतान को पछाड़ा है। यह सुन कर हज़रत अम्मार رضی اللہ عنہ कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! मुझे यह मालूम नहीं था कि वह शैतान है। वरना मैं उस को मार डालता। हाँ अलबत्ता तीसरी मर्तबा मुझे बड़ा ही ग़ुस्सा आ गया और मैं ने इरादा कर लिया था कि मैं दाँत से उस का नाक काट लूँ, मगर मैं जब उस की नाक के क़रीब मुंह ले गया, तो

मुझे बहुत ही गंदी बदबू महसूस हुई, इस लिए मैं पीछे हट गया और उस की नाक बच गई। (शवाहिदुन्नबुवा स 218मतबूआ लखनऊ)

हज़रत शरजील बिन हसना رضی اللہ عنہ

यह बहुत ही जाँबाज़ और बहादुर सहाबी हैं, उन की वालिदा का नाम हसना था उनके वालिद का नाम अब्दुल्लाह बिन मताअ था। उन के बाद उन की वालिदा हसना ने एक अन्सारी से जिन का नाम सुफ़यान बिन मुअमर था, निकाह कर लिया और दो बच्चे भी उन से पैदा हुए जिन का नाम जनादा और जाबिर था। हज़रत शरजील अपने दोनों भाईयों के साथ शुरू इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे और हिजरत करके हबशा भी गए थे और हबशा से मदीना आए, तो बनी ज़रीक़ में रहने लगे। फिर जब हज़रत उमर رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त में उन के दोनों भाईयों का इन्तक़ाल हो गया तो हज़रत शरजील رضی اللہ عنہ बनी ज़हरा के क़बीला में रहने लगे और फ़ारूक़ी दौरे हुकूमत में कई एक जिहादों में अमीरे लश्कर की हैसियत से इस्लामी फौजों के किसी एक दस्ते की कमान करते रहे। सन् 18 हिजरी के ताऊन अमवास मे सरसठ (६७) बरस की उम्र पा कर विसाल फ़रमा गए। अजीब इत्तफ़ाक़ है कि यह और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह رضی اللہ عنہ दोनों एक ही दिन ताऊन में मुबतला हुए। (असदुल ग़ाबा जि 2, स 391)

करामत

क़िला ज़मीन में धंस गया: इस्लामी लश्कर शहरे असकन्दरिया पर हमला आवर था। कुफ़्फ़ार की फौज एक बहुत ही मज़बूत और नाक़ाबिले तस्ख़ीर क़िला में महफूज़ थी और लश्करे इस्लामी क़िला के सामने खुले मैदान में ख़ेमा ज़न था। बहुत दिनों तक जंग होती रही मगर कुफ़्फ़ार क़िला की वजह से मग़लूब (हारना)नहीं होते थे। एक दिन अमीरे लश्कर हज़रत शरजील बिन हसना رضی اللہ عنہ ने काफ़िरों को मुख़ातब करके फ़रमाया कि ऐ लश्करे कुफ़्फ़ार के कमान्डर! सुन लो।

हमारी फ़ौजे इस्लाम में इस वक़्त ऐसे ऐसे अल्लाह वाले मौजूद हैं कि अगर वह इस क़िला की दीवारों को हुक्म दे दें कि तुम फ़ौरन ही ज़मीन में धंस जाओं तो फौरन ही यह क़िला ज़मीन में धंस जाएगा। यह कहा और जोश में आकर आप ने अपना हाथ क़िला की जानिब बढ़ाया और बलन्द आवाज़ में नअर-ए- तकबीर लगाया तो पूरा क़िला पलक झपकते ही ज़मीन के अन्दर धंस गया और कुफ़्फ़ार का लश्कर जो क़िला के अन्दर था खुले मौदान में खड़ा रह गया। यह मंज़र देख कर बादशाह असकन्दरिया का दिल व दिमाग़ हिल गया और वह डर के मारे शहर छोड़ कर अपनी फौजों के साथ भाग निकला और पूरा शहर मुसलमानों के क़बज़े में आ गया।

(तारीख़ वाक़दी व सीरतुस्सालिहीन स 22)

तबसेरा: सुब्हानल्लाह! औलिया अल्लाह की रूहानी ताक़तों का क्या कहना। सच है:-

कोई अन्दाज़ा कर सकता है उस के ज़ोरे बाज़ू का
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती है तक़दीरें

हज़रत अम्र बिन जुमूह رضی اللہ عنہ

यह मदीना मुनव्वरा के रहने वाले अन्सारी हैं और हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ के फूफा हैं यह अपाहिज थे। यह जंगे उहुद के दिन अपने बेटे के साथ जिहाद के लिए आए तो हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन को लंगड़ाने की बिना पर मैदाने जंग में उतरने से रोक दिया। यह बारगाहे रिसालत में गिड़ गिड़ा कर अर्ज़ करने लगे या रसूलल्लाह! मुझे जंग में लड़ने की इजाज़त दीजिए। मेरी तमन्ना है कि मैं लंगड़ाता हुआ जन्नत में चला जाऊँ उन की बे क़रारी और गिरया व ज़ारी को देख कर रहमते आलम ﷺ का दिल इन्तहाई मुतअस्सिर हो गया। और आप ने उन को जंग करने की इजाज़त दे दी। यह खुशी से उछल पड़े और काफ़िरों के हुजूम में घुस कर बहादुरी से जंग करने लगे, यहाँ तक कि शहादत से सरफ़राज़ हो गए। (मदारिजुन्नबुवा जि2, स 24)

करामत

लाश मैदाने जंग से बाहर नहीं गई: लड़ाई हो जाने के बाद जब हज़रत अम्र बिन जुमूह की बीवी हज़रत हिन्द رضی اللہ عنہا मैदाने जंग में गई तो उन की लाश को ऊँट पर लाद कर दफ़्न के लिए मदीना मुनव्वरा लाना चाहा तो हज़ारों कोशिशों के बावजूद वह ऊँट मदीना की तरफ़ नहीं चला, बल्कि वह मैदाने जंग ही की तरफ़ भाग भाग कर जाता रहा। हज़रत हिन्द رضی اللہ عنہا ने जब दरबारे रिसालत में यह माजरा अर्ज़ किया, तो आप ने फ़रमाया कि क्या अम्र बिन जुमूह ने घर से निकलते वक़्त कुछ कहा था? हज़रत हिन्द ने अर्ज़ किया कि जी हाँ! वह यह कह कर घर से निकले थे। اللھم لا تردنی الی اھلی (ऐ अल्लाह! मुझ को मैदाने जंग से अपने अहल व अयाल में वापस आना नसीब मत कर) आप ने इरशाद फ़रमाया कि यही वजह है कि ऊँट मदीना मुनव्वरा की तरफ़ नहीं चल रहा है, इस लिए तुम उन को मदीना ले जाने की कोशिश मत करो। (मदारिजुन्नबुवा जि2, स 124)

तबसेरा: अल्लाहु अकबर! क्या ठिकाना है, इस जज़्ब-ए- इश्क़ और जोशे जिहाद का? और क्या कहना उस शौक़े शहादत का। सुब्हानल्लाह।

दो क़दम भी चलने की है नहीं ताक़त मुझ में
इश्क़ खींचे लिए जाता है, मैं क्या जाता हूँ

खुदा की शान देखिइए कि उन की तमन्ना पूरी हो गई। जिहाद भी कर लिया, शहादत से भी सरफ़राज़ हो गए। और मैदाने जंग ही में उन का मदफ़न भी बन गया। यह सच है।

जो मांगने का तरीक़ा है उस तरह मांगो
दरे करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता

☆☆☆

हज़रत अबू सअलबा ख़ुशनी رضي الله عنه

यह दअवते इस्लाम के शुरू ही में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए थे, सिलसिला चूँकि "खुशीने वाइल" से मिलता है, इस लिए यह खुशनी कहलाते हैं। सुलह हुदैबिया में हुजूरे अक़्दस ﷺ के साथ थे। बैअते रिज़्वान करके रज़ाए खुदावन्दी की सनद हासिल की। हुजूर ﷺ ने उन को मुबल्लिग़ बना कर भेजा, चुनान्चे उन की कोशिशों से उन का पूरा क़बीला जल्द ही दामने इस्लाम में आ गया। मुल्के शाम फ़तह होने के बाद यह शाम में ठहर गए। सच्चाई और साफ़ गोई में यह अपना जवाब नहीं रखते थे। रात के सन्नाटे में अक्सर यह घर से बाहर निकल कर आसमान पर नज़र डालते और सज्दा में गिर कर घंटों सर बसुजूद रहते। मुल्के शाम में बस गए थे।और वहीं सन् 75 हिजरी में वफ़ात पाई उन का नाम जरहिम बिन नाशिब है, मगर कुन्नियत ही मशहूर है।

(अकमाल स 589 व असदुल ग़ाबा जिल्द नं०1, सफा नं०276)

करामत

अपनी पसन्द की मौत मिली: यह अक्सर कहा करते थे और दुआएं भी मांगा करते थे कि या अल्लाह! मुझ को आम लोगों की तरह एड़ियाँ रगड़ रगड़ कर और दम घुट घुट कर मरना पसन्द नहीं है। मुझे ऐसी मौत मिले कि उस में दम घुटने और ऐड़ियाँ रगड़ने की परीशानी न उठानी पड़े, चुनान्चे उन की यह करामत है कि हज़रत अमीरे मआविया رضي الله عنه की हुकूमत के दौरान यह आधी रात गुज़रने के बाद नमाज़ में मशगूल थे कि उन की बेटी ने यह ख़्वाब में देखा कि उन के वालिद साहिब का इन्तक़ाल होगया। वह इस परेशान कुन ख़्वाब से घबरा कर उठ बैठी और आवाज़ दी तो देखा कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं। थोड़ी देर बाद दूसरी मर्तबा आवाज़ दी, तो कोई जवाब नहीं मिला, पास जाकर देखा, तो सर सजदा में था और रूह परवाज़ कर

चुकी थी। (असदुल ग़ाबा व असाबिही)

हज़रत कैस बिन ख़रशा

यह क़बीला बनी कैस बिन सअलबा से तअल्लुक़ रखते थे। उन के इस्लाम लाने की तारीख़ मुतअय्यन नहीं की जासकी, लेकिन यह मालूम है कि हुजूर ﷺ के मदीना तशरीफ़ लाने के बाद यह अपने वतन से मदीना मुनव्वरा आए और हुजुर ﷺ के सामने हाज़िर होकर बोले, कि या रसूलल्लाह! मैं हर उस चीज़ पर जो खुदा तआला की तरफ़ से आप के पास आई है और उम्र भर सच बोलने पर आप से बैअत करता हूँ। आप ने फ़रमाया कि ऐ क़ैस! तुम क्या कहते हो। मुमकिन है तुम को ऐसे ज़ालिम हाकिमों से सामना पड़े जिन के मुक़ाबले में तुम हक़ गोई से काम न ले सको। अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! ऐसा कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं हो सकता। खुदा की क़सम! मैं जिन जिन चीज़ों पर आप से बैअत करता हूँ, उस को ज़रूर ज़रूर पूरा करूँगा। यह सुन कर सरकारे रिसालत मआब ﷺ ने अपने पैग़म्बराना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि अगर ऐसा है तो तुम इत्मीनान रखो कि तुम को किसी शर से कभी भी नुक़सान नहीं पहुँच सकता, चुनान्चे आप उम्र भर अपने उस वादे पर पूरे इरादे से सख़्ती के साथ क़ायम रहे।

बनू उमैया के दौरे हुकूमत में ज़याद और उबैदुल्लाह बिन ज़याद जैसे ज़ालिम गवर्नर पर बरमला नुक्ता चीनी करते रहते थे। यहाँ तक कि उबैदुल्लाह बिन ज़याद ज़ालिम गवर्नर के मुंह पर खुल्लम खुल्ला यह कह दिया कि तुम लोग अल्ला व रसूल पर झूठ बाँधने वाले मुफ़्तरी हो।

करामत

जान गई मगर आन नहीं गई: उबैदुल्लाह बिन ज़याद गवर्नर आप का दुश्मन हो गया था। उस ने आप को क़त्ल की धमकी दी। आप ने

उस से कह दिया कि तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने गुस्से में आकर जल्लादों को बुलाया और हुक्म दे दिया कि तुम लोग क़ैस बिन ख़रशा के मकान पर जाकर उन की गर्दन उड़ा दो, जल्लाद आ गए, लेकिन जब आप की गर्दन उड़ाने के लिए आप के मकान पर पहुँचे तो यह देख कर हैरान रह गए कि वह अपने बिस्तर पर लेटे हुए हैं और उन की मुक़द्दस रूह परवाज़ कर चुकी है। जल्लाद उन के बदन को हाथ भी न लगा सके और नाकाम व नामुराद वापस चले गए और इस तरह आप एक ज़ालिम की सज़ा के शर से बच गए। (इस्तियाब जि 2, स 54)

तबसेराः आप ने उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद से फ़रमाया था कि "तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता" हालाँकि उस ने अपनी गवर्नरी के गुमान में यह चाहा कि जल्लाद से उन को क़त्ल कराकर बदला ले ले, मगर उस का यह मनसूबा ख़ाक में मिल गया और जल्लाद नाकाम व नामुराद होकर वापस चले गए। सुब्हानल्लाह! सच है कि।

जो जज़्ब के आलम में निकले लबे मोमिन से
वह बात हक़ीक़त में तक़दीरे इलाही है

हज़रत उबै बिन कअब अन्सारी رضی اللہ عنہ

अन्सार में क़बीला खज़रज से उन का ख़ानदानी तअल्लुक़ है। यह दरबारे नुबुवत में वह़ी के कातिब थे और यह उन छः सहाबियों में से हैं जो अहदे नबवी में पूरे हाफ़िज़े कुरआन हो चुके थे और हुज़ूर ﷺ की मौजूदगी में फ़तवे भी देने लगे थे। सहाबा-ए-किराम उन को सैय्यदुल कुरा (सब क़ारियों का सरदार) कहते थे। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उन की कुन्नियत अबू मनज़र रखी थी, और हज़रत उमर رضی اللہ عنہ उन को अबूल तुफ़ैल की कुन्नियत से पुकारा करते थे। दरबारे नुबुवत से उनको सैय्यदुल अन्सार (अन्सार का सरदार) का ख़िताब मिला था और हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर رضی اللہ عنہ ने उनको सैय्यदुल मुस्लमीन का लक़ब अता फ़रमाया था। उन के शागिर्दों की फेहरिस्त बहुत

लम्बी है।

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने एक दिन उन से इरशाद फ़रमाया कि ऐ उबै बिन कअब! अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हारे सामने सूरह लम यकुन पढ़ कर तुम्हें सुनाऊँ, तो हज़रत उबै बिन कअब ﷺ ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह ﷺ! क्या ख़ुदा ने मेरा नाम ले कर आप से फ़रमाया है? आप ने फ़रमाया कि हाँ! यह सुन कर हज़रत उबै बिन कअब ﷺ रोते हुए यह कहने लगे। ذکرت عند رب العلمين (यअनी अल्लाह तआला के दरबार में मेरा ज़िक्र किया गया)

(अकमाल स 586 व कंजुल उम्माल जि 15, स 238 व बुख़ारी शरीफ़)

करामात

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम की आवाज़ सुनी: उन की एक मशहूर करामत यह है कि उन्हों ने हज़रत जिब्रईल ﷺ की आवाज़ सुनी। इस का वाक़िआ यह है कि हज़रत अनस ﷺ रावी हैं कि हज़रत उबै बिन कअब ﷺ ने कहा कि मैं ज़रूर मस्जिद में दाख़िल होकर नमाज़ पढूँगा। और अल्लाह तआला की ऐसी तअरीफ़ करूँगा कि किसी ने भी ऐसी नहीं की होगी, चुनान्चे वह नमाज़ के बाद जब ख़ुदा की हम्द व तअ़रीफ के लिए बैठे तो उन्होंने एक बलन्द आवाज़ अपने पीछे सुनी कि कोई कह रहा है:- اللهم لک الحمد كله و لک الملک كله وبيدک الخير كله و اليک يرجع الامور كله علانيته وسره لک الحمد انک على كل شي قدير اغفرلي ما مضى من ذنوبي واعصمني فيما بقي من عمري وارزقني اعمالا زاكيته ترضى بها عني وتب علي.

(ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए तअरीफ़ है कुल की कुल और तेरे लिए बादशाही है तमाम की तमाम और तेरे ही लिए भलाई है सब की सब और तेरी ही तरफ़ तमाम मामलात लौटते हैं ज़ाहिरी भी और बातिनी भी। तेरे ही लिए तअरीफ़ है। यक़ीनन तू हर चीज़ पर कुदरत वाला है, मेरे उन गुनाहों को बख़्श दे जो हो चुके और मेरी उम्र के बाक़ी हिस्से में तू मुझे अच्छे अअ्माल की तौफ़ीक़ दे और तू उन अअ्माल के ज़रिइए मुझ से राज़ी हो जा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले)

हज़रत उबै बिन कअब मस्जिद से निकल कर रहमते आलम ﷺ के दरबार में हाज़िर हुए और माजरा सुनाया। आप ने फ़रमाया तुम्हारे पीछे बलन्द आवाज़ से दुआ पढ़ने वाले हज़रत जिब्राईल ﷺ थे। (किताबुज़्ज़िक्र लि इब्ने अबिद्दुनिया)

बदली का रूख़ फेर दिया: हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर ﷺ एक क़ाफ़िला के साथ मक्का मुकर्रमा जा रहे थे और मैं और हज़रत उबै बिन कअब ﷺ दोनों उस क़ाफ़िले के पीछे चल रहे थे। अचानक एक बदली उठी तो हज़रत उबै बिन कअब ﷺ ने फ़रमाया कि या अल्लाह! हम को उस बदली की तक्लीफ़ से बचा ले और उस बदली का रूख़ फेर दे, चुनान्चे बदली का रूख़ फिर गया और हम दोनों पर बारिश की एक बून्द भी नहीं गिरी। लेकिन जब हम दोनों क़ाफ़िले मे पहुँचे तो हम ने यह देखा कि लोगों की सवारियाँ और सब सामान भीगे हुए हैं। हम को देख कर हज़रत उमर ﷺ ने फ़रमाया कि क्या यह बारिश जो हम पर हुई है, तुम लोगों पर नहीं हुई? मैं ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! हज़रत उबै बिन कअब ने बदली देख कर ख़ुदा से दुआ मांगी कि हम इस बारिश की परिशानी से बच जाएँ, इस लिए हम पर बिल्कुल बारिश नहीं हुई और बदली का रूख़ फिर गया। यह सुन कर हज़रत उमर ﷺ ने फ़रमाया तुम दोनों ने हमारे लिए क्यों नहीं दुआ मांगी? काश तुम हमारे लिए भी दुआ मांगते ताकि हम लोग भी इस बारिश की तकलीफ़ से महफ़ूज़ रहते। (कंज़ुल उम्माल जि15, स 232)

बुख़ार में सदा बहार: एक दिन हुज़ूर सैय्यदे आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि बुख़ार के मरीज़ को अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा नेकियाँ अता फ़रमाता है। यह सुन कर हज़रत उबै बिन कअब ﷺ ने यह दुआ मांगी कि या अल्लाह! मैं तुझ से ऐसे बुख़ार की दुआ मांगता हूँ जो मुझे जिहाद और बैतुल्लाह शरीफ़ के सफ़र और मस्जिद की हाज़िरी से न रोके, आप की दुआ मक़बूल हुई। चुनान्चे आप के बेटों का बयान है कि मेरे बाप हज़रत उबै बिन कअब ﷺ को हर वक़्त

बुखा़र रहता था और बदन जलता रहता था, मगर उस हालत में भी वह हज व जिहाद के लिए सफ़र करते और मस्जिदों में भी हाज़िरी देते थे और इस क़दर जोश व ख़रोश के साथ उन कामों को करते थे कि कोई महसूस भी नहीं कर सकता था कि यह बुखा़र के मरीज़ हैं।

(कंजुल उम्माल जि15, स 234 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत अबू दरदा رضي الله عنه

यह क़बीला अन्सार में खा़नदान ख़ज़रज से नसबी तअल्लुक़ रखते हैं। उनका नाम अवेमर बिन आमिर अन्सारी है। यह बहुत ही इल्म व फ़ज़ल वाले फ़कीह और साहिबे हिकमत सहाबी हैं। और परहेज़गारी व इबादत में भी यह बहुत ही बलन्द मर्तबा हैं। हुजूरे अक़दस ﷺ के बाद उन्हों ने मदीना मुनव्वरा छोड़ कर शाम में सुकूनत इख़्तियार कर ली। और सन् 32 हिजरी में शहर दमश्क़ के अन्दर विसाल फ़रमाया। (अकमाल सफा 594 वग़ैरा)

करामत

हांडी और प्याले की तसबीह: एक मर्तबा आप अपनी हांडी के नीचे आग सुलगा रहे थे और हज़रत सलमान फ़ारसी رضي الله عنه भी उन के पास ही बैठे हुए थे। अचानक हांडी में से तसबीह पढ़ने की आवाज़ बलन्द हुई। फिर खुद बखुद वह हांडी चुलहे पर से गिर कर औंधी हो गई। फिर खुद बखुद ही चुलहे पर चली गई, लेकिन उस हांडी में से पकवान का कोई हिस्सा भी ज़मीन पर नहीं गिरा। हज़रत अबू दरदा رضي الله عنه ने हज़रत सलमान رضي الله عنه से कहा कि ऐ सलमान! यह तअज्जुब ख़ेज़ और हैरत अंगेज़ मामला देखो। हज़रत सलमान फ़ारसी رضي الله عنه ने फ़रमाया कि ऐ अबू दरदा! अगर तुम चुप रहते तो अल्लाह तआला की निशानियों में से बहुत सी दूसरी बड़ी बड़ी निशानियाँ भी तुम देख लेते। फिर यह दोनों एक ही प्याला में खाना खाने लगे तो प्याला भी तसबीह पढ़ने लगा और इस प्याला में जो खाना था उस खाने के दाने

दाने से भी तसबीह पढ़ने की आवाज़ सुनाई देने लगी।

(हुल्यतुल औलिया जि1,स224 ता289)

अक़्दे मुवाख़ात (भाईचारगी) में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम ने हज़रत अबू दरदा और हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ीअल्लाहो तआला अन्हु को एक दूसरे का भाई बना दिया था।

हज़रत अम्र बिन अबसा

उन की कुन्नियत अब नजीह है और यह क़बीला बनू सलीम में से थे। इस्लाम के शुरू ही में यह दौलते ईमान से माला माल हो गए थे। मुसलमान होने के बाद हुज़ूरे अकरम ने उन से फ़रमाया कि तुम अपनी क़ौम में जाकर रहो और जब तुम यह सुन लो कि मैं मक्का से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चला गया हूँ तो उस वक़्त तुम मेरे पास चले आना। यह अपनी क़ौम में ठहर गए। यहाँ तक कि जंगे ख़ैबर के बाद मदीना मुनव्वरा आए और उस मुक़द्दस शहर में बस गए। उन के शागिर्दों में बड़े बड़े बलन्द पाए मुहद्देसीन हैं। हज़रत अली के दौरे ख़िलाफ़त में उन्हों ने दुनिया से रिहलत फ़रमाई।

(अकमाल स 607)

करामत

अब्र (बादल) ने उन पर साया किया: हज़रत कअब के गुलाम का बयान है कि एक दिन सफ़र में हज़रत अम्र बिन अबसा जानवरों को चराने के लिए मैदान में चले गए। मैं दोपहर की धूप और गर्मी में उन्हें देखने के लिए जानवरों की चरागाह में गया तो क्या देखता हूँ कि हज़रत अम्र बिन अबसा एक जगह मैदान में सो रहे हैं और एक बादल का टुकड़ा उन पर साया किए हुए है।

मैं ने उन्हें बेदार किया तो उन्हों ने फ़रमाया कि ख़बरदार! ख़बरदार! जो कुछ तुम ने देखा है, हरगिज़ हरगिज़ किसी से मत कहना, वरना तुम्हारी ख़ैरियत नहीं रहेगी। हज़रत कअब के गुलाम

कहते थे कि ख़ुदा की क़सम जब तक उनकी वफ़ात न हो गई, मैंने किसी से उन की इस करामत का तज़्किरा नहीं किया।

(असाबा जि3, स6)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़रत

उन का ख़ानदानी तअल्लुक़ बनी अज़्द से है, इस लिए अज़्दी कहलाते हैं। ज़माना-ए-जाहिलियत में उन का नाम "**शैतान**" था। मुसलमान हो जाने के बाद नबी अकरम ने उन का नाम अब्दुल्लाह रख दिया। यह जंगे यरमूक और फ़तहे दमश्क़ की लड़ाइयों में बड़ी बहादुरी और जांबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने उन को दो मर्तबा "**हमस**" का हाकिम बनाया। फिर अमीरे मआविया की हुकूमत में भी यह "हमस" के हाकिम बनाए गए। उन का शुमार मुहद्देसीन की फेहरिस्त में होता है। और मुहद्देसीन की एक जमाअत ने उन के हलक़- ए-दर्स में हदीसों का पाठ पढ़ा है। सन् 56 हिजरी में रूम की ज़मीन में कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए शहादत से सरफ़राज़ हो गए।

(असदुल ग़ाबा जि०3, स०42 व अकमाल स०605)

करामत

मुस्तजाबुद्दअवात (दुआ): उन की एक करामत यह है कि उन की दुआएँ बहुत ज़्यादा और बहुत जल्द क़बूल हुआ करती थीं और उन का ब्यान है कि एक मर्तबा मैं बहालते सफ़र ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था, मगर अचानक मेरा ऊँट इस क़दर थक गया कि चलने के क़बिल ही न रहा, चुनान्चे मैं ने इरादा कर लिया कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद का साथ छोड़ दूँ, लेकिन फिर मैं ने अल्लाह तआला से दुआ मंगी तो बिल्कुल अचानक मेरा ऊँट तैयार होकर तेज़ी के साथ चलने लगा। (तबरानी)

हज़रत सायब बिन अक़रअ رضی اللہ عنہ

यह क़बीला बनू सक़ीफ़ की होनहार और नामवर शख़्सियत हैं, इस लिए "सक़फ़ी" कहलाते हैं। उन को वालिदा का नाम "मलीका" था। उनकी वालिदा उनकी बचपन ही में अपने साथ लेकर बारगाहे नुबूवत में हाज़िर हुई तो नबी करीम ﷺ ने उन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और उन के लिए दुआ फ़रमाई। यह बड़े मुजाहिद थे। निहावन्द की फ़तह में यह हज़रत नौमान बिन मक़रन رضی اللہ عنہ को झंडे के नीचे खुब जम कर कुफ़्फ़ार से लड़े। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने उन को "मदायन" का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था। "असफ़हान" में उन का इन्तक़ाल हुआ।

(असदुल ग़ाबा जि2, स 249)

करामत

तस्वीर ने ख़ज़ाना बताया: अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने उन को "मदायन" का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया। यह एक दिन "किसरा" के महल में बैठे हुए थे तो देखा कि महल में एक ऐसी तसवीर है जो उंगली से एक मक़ाम की तरफ़ इशारा कर रही है, चुनान्चे आप ने उस मक़ाम को खोदने का हुक्म दिया तो वहाँ से एक बहुत बड़ा ख़ज़ाना निकला जो वहाँ दफन था। आप ने मदीना मुनव्वरा बारगाहे ख़िलाफ़त में उस की इतलाअ देकर यह पूछा कि उस ख़ज़ाना को मुसलमानों ने जंग करके हासिल नहीं किया है, बल्कि मैंने उसको अकेले तलाश किया है तो मैं उस रक़म को क्या करूँ? हज़रत अमीरूल मोमिनीन رضی اللہ عنہ ने यह हुक्म सादिर फ़रमाया कि चूँकि तुम मुसलमानों के अमीर हो, इस लिए इस रक़म को मुसलमानों पर तक़सीम (बाँट) कर दो।

(रवाहुल ख़तीब कज़ा फ़िल कंज़ जि3, स 305)

हज़रत इरबाज़ बिन सारिया رضی اللہ عنہ

उनकी कुन्नियत "अबू नजीह" है और उन का ख़ानदानी तअल्लुक़ बनी सलीम से है, गरीब मुहाजिर थे, इस लिए मस्जिदे नबवी में असहाबे सुफ़्फ़ा के साथ रहते। आख़िर में मुल्के शाम चले गए और वहीं बस गये। हज़रत अबू अमामा और ताबईन की एक जमाअत ने उन से हदीसों की रिवायत की है। सन् 75 हिजरी में शाम में उन का विसाल हुआ। (असदुल ग़ाबा जि3, अमाल स 606)

करामत

फ़रिश्ते से मुलाक़ात और बात: एक दिन यह दमश्क़ की जामा मस्जिद में इस तरह दुआ मांग रहे थे कि या अल्लाह! अब मेरी उम्र बहुत ज़्यादा होगई है और मेरी हड्डियाँ बहुत ज़्यादा कमज़ोर हो चुकी हैं, लेहाज़ा अब तु मुझे वफ़ात दे दे। अचानक उन के पीछे से एक हरा कपड़ा पहने हुए नौजवान जो बहुत ही ख़ूबसूरत था बोल उठा, ऐ शख़्स! यह कैसी दुआ मांग रहा है? तुम्हें इस तरह दुआ करनी चाहिए कि या अल्लाह! मेरे अमल को अच्छा कर दे और मुझ को मेरी मौत की मुद्दत तक पहुँचा दे। यह नौजवान की डांट सुन कर चौंके और पुछा कि अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए आप कौन हैं? नौजवान ने कहा मैं "रीबाइल" फ़रिश्ता हूँ और ख़ुदा तआला की तरफ़ से मेरी यह डियोटी है कि मैं मोमिनीन के दिलों से रंज व ग़म को दूर करता हूँ। (क़ालश्शीमी जि 10, स 184)

तबसेरा: फ़रिश्ता का दीदार करना और उस से आमने सामने बात करना बिला शुबहा यह एक बड़ी करमात है जो शर्फ़े सहाबियत के तुफ़ैल में सहाबा किराम رضی اللہ عنہم को मिलती रही है।

वल्लाहु तआला अअ्लम।

हज़रत ख़ब्बाब बिन आरिस رضی اللہ عنہ

उन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। यह गुलाम थे, उन को क़बीला तमीम की एक औरत ने ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था, इस लिए यह तमीमी कहलाते हैं। शुरू ही में उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया था और कुफ़्फ़ारे मक्का ने हज़रत अम्मार व बिलाल رضی اللہ عنہما की तरह उन को भी तरह तरह के अज़ाबों में मुबतला किया। यहाँ तक कि उन को कोइलों के ऊपर लिटाते थे और पानी में इस क़दर डुबकी दिलाते थे कि उन का दम घुटने लगता और यह बेहोश हो जाते। मगर सब्र व इस्तक़ामत का पहाड़ बन कर यह सारी मुसीबतों और तकलीफ़ों को झेलते रहे और उन के इस्लाम में बाल बराबर भी तज़बज़ुब या ढ़ीलापन नहीं हुआ।

हुज़ूरे अक़दस ﷺ के विसाल के बाद मदीना मुनव्वरा से उन का दिल उठ गया और यह कूफ़ा में जाकर मुक़ीम हो गए और वहीं सन् 37 हिजरी में 73 बरस की उम्र में इन्तक़ाल फ़रमा गए।

(अकमाल स 592)

करामत

खुश्क (सूखा) थन दूध से भर गया: उन की एक करामत यह है कि यह एक मर्तबा जिहाद केलिए निकले, तो एक ऐसे मक़ाम पर पहुँच गए जहाँ पानी का नाम व निशान भी नहीं था। जब यह और उन के साथी प्यास की सख्ती से बेगैर पानी की मछली की तरह तड़पने लगे और बिल्कुल ही निढाल और बे ताब हो गए, तो आप ने अपने एक साथी की ऊँटनी को बैठाया और बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर उस के थन को हाथ लगाया, तो एक दम उस का सूखा हुआ थन इस क़दर दूध से भर गया कि फूल कर मश्क के बराबर हो गया। उस ऊँटनी का दूध दूह कर सब साथियों ने पेट भर कर पी लिया और सब की जान बच गई। (क़ाललहशीमी जि6, स 210)

हज़रत मिक्दाद बिन असवद कुंदी رضي الله عنه

उन के वालिद का नाम अम्र बिन सअ्लबा था। असवद के बेटे इस लिए कहलाने लगे कि असवद बिन अब्दे यगूस ज़हरी ने उन को अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था, इसलिए उस की तरफ़ मंसूब हो गए और चूँकि क़बीला बनी कुन्दा से उन्होंने दोस्ती कर लिया था और उन के क़रीबी बन गए थे। इसलिए इस निस्बत से अपने को कन्दी कहने लगे। उन की कुन्नियत "**अबू मुअबद**" या "**अबुल असद**" है और यह पहले इस्लाम लाने वालों में से हैं, मक्का मुअज़्ज़मा से हिजरत करके हबशा चले गए थे। फिर हबशा से मक्का मुकर्रमा वापस चले गए, मगर मदीना मुनव्वरा को हिजरत नहीं कर सके, क्योंकि कुफ़्फ़ार ने हर तरफ़ से घेर करके मदीना का रास्ता बन्द कर दिया था, यहाँ तक कि जब हज़रत उबैद बिन हारिस ﷺ एक छोटा सा लश्कर ले कर मदीना मुनव्वरा से अकरमा बिन अबू जहल के लश्कर से लड़ने के लिए आए तो यह और हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान ﷺ काफ़िरों के लश्कर में शामिल हो गए और भाग कर मुसलमानों से मिल गए और इस तरह मदीना मुनव्वरा हिजरत करके पहुँच गए। यह वही हज़रत "**मिक्दाद बिन असवद**" हैं कि जब रसूले अकरम ﷺ ने जंगे बद्र के मौक़अ पर **सहाबा-ए-किराम** से मश्वरा फ़रमाया तो उन्होंने ब आवाज़े बलन्द कहा कि या रसूलल्लाह! (ﷺ) हम बनी इस्राईल नहीं हैं जिन्हों ने अपने नबी हज़रत मूसा عليه السلام से जंग के वक़्त यह कहा था कि "आप और आप का ख़ुदा दोनों जाकर जंग करें हम तो अपनी जगह बैठे रहेंगे" बल्कि हम तो आप के वह जाँ निसार हैं कि अगर ख़ुदा की क़सम! हम को आप "**बरकुल ग़माद**" तक ले जाएँगे, तो हम आप के साथ चलेंगे और हम आप के आगे, आप के पीछे, आप के दाएँ, आप के बाएँ से उस वक़्त तक लड़ते रहेंगे जब तक कि हमारे बदन में ख़ून का आख़िरी क़तरा और ज़िन्दगी की आख़िरी सांस बाक़ी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه ने फ़रमाया कि मक्का मुकर्रमा में सात लोग ऐसे थे, जिन्हों ने मक्का मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार के सामने सब से पहले खुल्लम खुल्ला अपने इस्लाम का ऐलान किया। उन में से एक हज़रत "मिक़दाद बिन असवद" رضي الله عنه भी हैं। हुज़ूर अनवर ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हर नबी को सात जाँ निसार साथी दिए हैं। लेकिन मुझ को हज़रत हक़ जल मजदहू ने चौदह दोस्तों की जमाअत अता फ़रमाई है जिन की फेहरिस्त यह है।

(1) अबू बकर (2) उमर (3) अली (4) हमज़ा (5) जाफ़र (6) हसन (7) हुसैन (8) अब्दुल्लाह बिन मसऊद (9) सलमान (10) अम्मार (11) हुज़ैफ़ा (12) अबुज़र (13) मिक़दाद (14) बिलाल

रज़ियल्लाहु अन्हुम (رضي الله عنهم)

अहादीसे पाक में उन के फ़ज़ाइल व खूबियाँ बहुत ज्यादा हैं। यह तमाम इस्लामी लड़ाइयों में जिहाद करते रहे और फ़तह मिस्र की जंग में भी उन्होंने ने डट कर कुफ़्फ़ार से जंग की। सन् 33 हिजरी में हज़रत अमीरूल मोमिनीन हज़रत उस्मान رضي الله عنه की ख़िलाफ़त के दौरान मदीना मुनव्वरा से तीन मील दूर मक़ामे "जर्फ़" में सत्तर बरस की उम्र पाकर विसाल फ़रमाया और लोग पूरी अक़ीदत से अपने कंधों पर उन के जनाज़ा मुबारक को "जर्फ़" से उठा कर मदीना मुनव्वरा लाए और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किया।

(अकमाल स612 व असदुल ग़ाबा जिल्द 4, सफा 410)

करामत

चुहे ने सत्तरा अशर्फ़ियाँ नज़्र कीं: ज़बाआ बिन्ते जुबैर कहती हैं कि यह इस क़दर तंग दस्ती में मुब्तला थे कि पेड़ों के पत्ते खाया करते थे। एक दिन एक वीरान जगह में रफ़अ हाजत के लिए बैठे तो अचानक एक चुहा अपने बिल में से एक अशरफ़ी मुंह में ले कर निकला और उन के सामने रख कर चला गया। फिर वह इसी तरह बराबर एक एक अशरफी लाता रहा। यहाँ तक कि सत्तरा अशर्फ़ियाँ

लाया। यह सब अशरफियों को लेकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और पूरा माजरा अर्ज़ किया तो आप ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिए इस माल में कुछ सदक़ा करना ज़रूरी नहीं है। अल्लाह तआला तुम्हें इस माल में बरकत अता फ़रमाए। हज़रत ज़बाआ का बयान है कि उन में से आख़िरी अशरफ़ी अभी ख़त्म नहीं हुई थी कि मैं ने चाँदी के ढेर हज़रत मिक़दाद के घर में देख लिए।

(अबू नईम फ़िल दलाइल जिल्द 2,सफ़ा 396)

तबसेरा: इस क़िस्म का वाक़िआ दूसरे बुज़ुर्गों के लिए भी हुआ है, चुनान्चे हज़रत अबू बकर अलख़ाज़बा मुहद्दिस भी रात में कुछ लिख रहे थे तो चुहे का एक जोड़ा उछलता कूदता उन के सामने आया। उन्होंने एक को प्याले से ढंप दिया। उस के बाद दूसरे चुहे ने बार बार एक एक अशरफी लाकर उन के सामने रखना शुरू किया, यहाँ तक कि आख़िर में एक चमड़े की थैली उठा लाया जिस में एक अशरफी थी, उस से उन्होंने समझ लिया कि चुहे के पास अब कोई अशरफी बाक़ी नहीं रह गई है। फिर उन्होंने प्याला उठा लिया और चुहा निकल कर अपने जोड़े के साथ उछलता कुदता भाग निकला और उन अशरफ़ियों की बदौलत हज़रत अबू बकर बिन अल ख़ाज़बा की तंग दस्ती का दौर ख़त्म हो गया और वह ख़ुशहाल हो गए।

(तहतुल यमन वग़ैरा)

इस क़िसम के वाक़िआत को अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और उन बुज़ुर्गों की करामत के सेवा और क्या कहा जा सकता है? ان الله هو الرزاق ذو القوة المتين (यअनी अल्लाह तआला बहुत बड़ा रोज़ी देने वाला और बहुत बड़ी क़ुदरत और ताक़त का मालिक है)

उन बुज़ुर्गों ने शर्फ़े सहाबियत से सरफ़राज़ होकर ख़ुदा के महबूब की जिस जज़्बा और जाँ निसारी के साथ ख़िदमत गुज़ारी की और उस के सिला में हक़ जल्ल जलालहु ने दुनिया ही में उन शमए नुबुवत के परवानों को ऐसी ऐसी करामतें अता फ़रमाई हैं जो यक़ीनन हैरान करने वाले हैं और अभी आख़िरत में वह रहीम व करीम मौला

अपने फ़ज़ल व करम से उन आशिक़ाने रसूल को जो अजरे अज़ीम अता फ़रमाने वाला है उस को कोई सोच भी नहीं सकता कि उस की कमियत व कैफ़ियत (कैसा) की अज़मत का क्या आलम होगा। हदीस शरीफ़ की रोशनी में बस इतना ही कहा जा सकता है। لا عين رات ولا اذن سمعت و ما خطر على قلب بشر (यअनी उन नअमतों को न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी आदमी के दिल पर कभी उस का ख़्याल गुज़रा।)

हज़रत उरवा बिन अबी जुअद बारक़ी رضی اللہ عنہ

उन के मोरिसे आला का नाम "बारिक़" था। उस निसबत से उन को "बारक़ी" कहते हैं। उन को अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में कूफ़ा का क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमा दिया था। यह बरसों कूफ़ा ही में रहे, इस लिए कुफ़ा के मुहद्देसीन में शुमार होते हैं। और उनके शागिर्दों में बहुत ही मश्हूर व मुमताज़, और निहायत बलन्द पाया और नामवर मुहद्दिस हैं। (अकमाल स 606 वग़ैरा)

करामत

मिटटी भी खरीदते तो नफ़अ् उठाते: उन को रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दीनार दे कर हुक्म फरमाया कि वह एक बकरी खरीद लाएें उन्होने बाज़ार जाकर एक दीनार में दो बकरियाँ खरीदीं, फिर रास्ते में किसी आदमी के हाथ एक बकरी एक दीनार में बेच (फरोख़्त) करके दरबारे रिसालत में हाज़िर हुए और एक बकरी एक दीनार ख़िदमत अक़्दस में पेश कर दी और बकरी की खरीदारी का पूरा वाक़ेआ भी सुना दिया- हुज़ूर अकरम ﷺ ने खुश होकर उनकी खरीद व फ़रोख़्त में बरकत की दुआ फरमा दी और उस दुआऐ नबवी की बरकत का यह असर हुआ: فكان لو اشترى ترابا لربح فيه (यअनी अगर वह मिट्टी भी ख़रीदते तो उस में भी उन को नफ़अ ही नफ़अ होता)यह उनकी करामत थी।
(मिश्कात जि1 स254 बाबुश्शरकतु वल वकालत बहवाला बुख़ारी)

हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ि.

यह क़बीला अन्सार के खानदान बनू नज्जार में से थे। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. की वालिदा हज़रत बीबी उम्मे सलीम रज़ि. ने बेवा हो जाने के बाद उन से निकाह कर लिया था। यह बहुत ही मशहूर तीर अनदाज़ और निशाना बाज़ थे। उन के बारे में हुजूरे अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया था कि लश्कर में अबू तलहा की एक ललकार एक हज़ार सवारों से बढ़ कर है। यह हुजूरे अकरम ﷺ के हिजरत फ़रमाने से पहले ही हज के मौक़अ पर मिना की घाटी में अपने सत्तर साथियों के साथ हुजूरे अक़दस ﷺ से बैअते इस्लाम करके मुसलमान हो गए थे। फिर जंगे बद्र व जंगे उहुद और उस के बाद की तमाम इस्लामी लड़ाइयों में इन्तहाई जज़्बा- ए-ईमानी और जोशे इस्लामी के साथ जिहाद करते रहे और बड़े बड़े मुजाहिदाना कारनामों का मुज़ाहिरा करके और इस्लामी ख़िदमात के कारनामे पेश करके सन् 31 हिजरी में सतहत्तर (77) बरस की उम्र में वफात पा गये। (अकमाल स 601 व कंज़ुल उम्माल जि 12 पेज-277)

करामत

लाश ख़राब नहीं हुई: हज़रत अनस रज़ि. रावी हैं कि एक दिन बुढ़ापे में हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ि. सूरह बरात की तिलावत कर रहे थे। जब इस आयत पर पहुँचे "انفروا خفافا وثقالا" तो आप ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बच्चो! मुझे तुम लोग जिहाद का सामान दो, क्योंकि मेरा रब जवानी और बुढ़ापे दोनों हालतों में मुझे जिहाद का हुक्म फ़रमाता है। उन के बेटों ने कहा कि आप ने हुजूर ﷺ और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. के दौर में तमाम जिहादों में शिरकत की सआदत हासिल कर ली। अब आप बूढ़े हो चुके हैं, इस लिए अब जिहाद में न जाइए। हम लोग आप की तरफ़ से जिहाद कर रहे हैं और करते रहेंगे। मगर यह किसी तरह भी घर बैठने पर राज़ी नहीं हुए

और जिहाद का सामान जमा करके जिहाद में जाने वाली एक कश्ती पर सवार होकर जिहाद के लिए रवाना हो गए। ख़ुदा की शान कि उस कश्ती ही पर उन की वफ़ात हो गई। इत्तेफ़ाक़ से उन की क़ब्र के लिए समन्दर में कोई जज़ीरा भी नहीं मिला। सात दिनों तक कश्ती में आप की लाश मुबारक रखी रही। सातवें दिन समन्दर में एक जज़ीरा मिला तो आप उस जजी़रा में मदफून हुए। सात दिन गुज़रने के बावजूद आप के जिस्मे अतहर पर किसी क़िस्म का कोई बदलाव जाहिर नहीं हुआ था। **(इस्तीआब लिइब्ने अब्दुल बर जि1, स 550)**

तबसेरा: अल्लाहु अकबर! यह जज़्बा-ए-ईमानी और जोशे जिहाद ऐ आसमान बता! ऐ सूरज बोल! क्या तुम ने ज़मीन के बे शुमार चक्कर काटने के बावजूद उस की कोई मिसाल देखी है? यह है मेरे प्यारे रसूले अकरम ﷺ के प्यारे सहाबी का बे मिसाल कारनामा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश رضي الله عنه

कुरैश के एक खा़नदान "**बनू असद**" से उन का नसबी तअल्लुक़ है। यह हज़रत उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिन्ते हजश رضي الله عنها के भाई हैं। यह शुरू इस्लाम ही में ईमान की दौलत से माला माल हो गए थे और पहले हबशा फिर मदीना मुनव्वरा की दोनों हिजरतों के शर्फ़ से सरफ़राज़ होकर "**साहिबुल हिजरतैन**" का लक़ब पाया। जंगे बद्र में इन्तहाई जाँ बाज़ी और सरफ़रोशी के जज़्बे से जंग की और सन ३ हिजरी को जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए जामे शहादत नोश फ़रमाया।

उन की एक करामत यह भी है कि यह बहुत ही "मुस्तजाबुद्-अवात" थे यअनी उन की दुआएँ बहुत ज़्यादा और बहुत ही जल्दी मक़बूल हुआ करती थीं।

(अकमाल स 203 व असदुल ग़ाबा जि1, स 131)

करामत

अनोखी शहादतः आप ने जंगे उहुद से एक दिन पहले यह दुआ मांगी कि या अल्लाह! मैं तुझे तेरी क़सम देता हूँ कि जब कुफ़्फ़ारे मक्का से लड़ने के लिए कल मैदाने जंग में निकलूँ तो मेरे मुक़ाबले में ऐसा काफ़िर आए जो सख़्त हमला करने वाला और इन्तहाई जंग जू हो और मैं उस से लड़ते हुए बराबर ज़ख़्म खाता रहूँ यहाँ तक कि वह मुझे क़त्ल कर दे और कुफ़्फ़ार मेरा पेट फाड़ डालें और नाक, कान को काट कर मेरी सूरत बिगाड़ दें और मैं जब उसी हालत में क़यामत के दिन तेरे हुजूर खड़ा किया जाऊँ तो उस वक़्त तू मुझ से यह पूछे कि ऐ अब्दुल्लाह! किस वजह से और किस ने तेरी नाक और कान को काट डाला है? तो मैं यह जवाब में अर्ज़ करूँ कि ऐ अल्लाह! तेरे और तेरे रसूल के दुश्मनों ने तेरे रसूल के बारे में मुझे क़तल करके मेरी नाक और कान को काट कर मेरी सूरत व शकल बिगाड़ दी है। मेरा यह जवाब सुन कर फिर ऐ मेरे अल्लाह तू सिर्फ़ इतना फ़रमा दे कि ऐ अब्दुल्लाह! तू सच कहता है।

आप की यह दुआ हर्फ़ बहर्फ़ क़बूल हुई, चुनान्चे हज़रत सअ्द बिन अबी वक़ास का बयान है कि मैं ने ही उन की दुआ पर अमीन कही थी और मैं ने अपनी आँखों से देखा कि जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने उन को शहीद करके उन के पेट को फाड़ डाला और उन की नाक, कान और दूसरे हिस्से काट कर एक धागे में पिरो दिया था और उसी हालत में आप हज़रत हमज़ा ﷺ के साथ एक ही क़ब्र में दफ़न किए गए। **(कंज़ुल उम्माल जि०16 स०98व असदुलग़ाबा जि०3 स०131 वग़ैरा)**

तबसेराः अल्लाहु अकबर! किस क़दर उन शमए नुबुवत के परवानों को शौक़े शहादत था? इस ज़माने में उसे कोई सोच भी नहीं सकता, क्योंकि ईमानी हरारत की बे हद कमी हो गई है, वरना हक़ीक़त यह है।

शहादत है मतलूब व मक़सूदे मोमिन
न माले गनीमत न किशवर कुशाई

हज़रत बराअ् बिन मालिक रज़ि.

यह बहुत ही नामवर सहाबी और हुज़ूर सल्ल. के ख़ादिमे ख़ास हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. के भाई हैं। बहुत ही बहादुर और निहायत ही जंगजू और सरफ़रोश मुजाहिद हैं। मुस्लिमतुल कज़्ज़ाब से जंग के वक़्त जिस बाग़ में यह झूठ मुद्दई नुबुव्वत छुप कर अपनी फौजों की कमान कर रहा था उस बाग़ का फाटक किसी तरह फ़तह नहीं हो रहा था और वहाँ घमसान की जंग हो रही थी तो आप ने मुसलमान मुजाहिदीन से फ़रमाया कि तुम लोग मुझे उठा कर बाग़ की दीवार के उस पार फेंक दो। मैं अन्दर जा कर फाटक खोल दूँगा। चुनान्चे मुसलमान मुजाहिदों ने उन को उठा कर दीवार के उस पार डाल दिया और उन्हों ने बिल्कुल तन्हा दुश्मनों से लड़ते हुए बाग़ का फाटक खोल दिया और इस्लामी फौज बाग़ में दाख़िल हो गई। यह वाक़िआ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ि. की ख़िलाफ़त के दौरान हुआ, मगर बाग़ का फाटक खोलने की ज़बरदस्त लड़ाई में हज़रत बरा बिन मालिक रज़ि. के जिस्म पर तीर व तलवार और भालों के ज़ख़्म जब गिने गए तो अस्सी (80) से कुछ ज़ायद ज़ख़्म थे, चुनान्चे उन के एलाज के लिए अमीरे लश्कर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. को उस जगह एक महीने तक रूकना पड़ा।

उन की इसी दिलेराना जाँ बाज़ियों की बिना पर हज़रत उमर रज़ि. अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में फौजों को सख़्त हुक्म फ़रमाते रहते थे कि "ख़बरदार! बरा बिन मालिक को कभी फौज का कमान्डर न बानाया जाए, वरना वह सारी क़ौम को हलाकत में डाल देंगे, क्योंकि वह अन्जाम से बे परवा होकर दुश्मनों की सफ़ों में घुस जाते हैं। उन के बारे में हूज़ूरे अकरम सल्ल. ने इरशाद फ़रमाया कि "बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके बाल परागन्दा और वह गर्दो ग़ुबार में अटे हुए मैले कुचैले

रहते हैं और लोग उन की परवा भी नहीं करते, मगर यह लोग अल्लाह तआला के दरबार में इस क़दर महबूब व मक़बूल होते हैं कि अगर यह लोग किसी बात की क़सम खा लें तो अल्लाह तआला उन की क़सम को पूरी फ़रमा देगा। और बरा बिन मालिक उन्हीं लोगों में से हैं।'' यह बहुत ही खुश आवाज़ भी थे और बेहतरीन हुदी ख़्वाँ थे (अरब शुतुरबानों का नग़मा थ) जिन के गीतों के नग़मों पर ऊँट मस्त हो कर चला करते थे और शुतुर सवार भी मस्ती में रहा करते थे। उन की बहादुरी और जवांमर्दी के सिलसिले में यह रिवायत बहुत ही मशहूर है कि इराक़ की लड़ाइयों में यह अपने भाई हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ के साथ दुश्मनों के एक क़िला के घेराव किए हुए थे जो ''हरीक़'' में था। कुफ़्फ़ार गरम गरम ज़ंजीरों में लोहे के आंकुड़े लगा कर क़िला की दीवार से मुसलमानों पर डालते थे और उन की आंकुड़ों में फंसा कर अपनी तरफ़ खींच लेते थे। उन काफ़िरों ने हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ को भी आंकडों में फंसा लिया और खींचने लगे। जब हज़रत बरा बिन मालिक ﷺ ने यह मंज़र देखा तो तड़प कर उछले और क़िला की दीवार पर चढ़ कर जलती हुई ज़ंजीर को पकड़ा और फिर उसी रस्सी को काट दिया जिस में ज़ंजीर बन्धी हुई थी। इस लिए हज़रत अनस बिन मालिक की जान बच गई, मगर हज़रत बरा बिन मालिक ﷺ ने गरम ज़ंजीर को जो हाथ से पकड़ा तो उन की हथेलियों का पूरा गोश्त जल गया और सफ़ेद हड्डियाँ नज़र आ रही थीं। सन् 20 हिजरी जंगे तसतर में एक सौ काफ़िरों का अपनी तलवार से क़त्ल करके ख़ुद भी उरूसे शहादत से हमकनार हो गए।

(असदुल ग़ाबा जि॰1, स॰173 व असाबा जि॰1, स॰143)

करामत

फ़तह व शहादत एक साथः उन की एक ख़ास करामत दुआओं की मक़बूलियत है। मन्कूल है कि जंगे ''**तसतर**'' में जब लम्बी जंग के बावजूद मुसलमानों को फ़तह नसीब नहीं हुई तो मुजाहिदीने इस्लाम

ने जमा हो कर उन से गुज़ारिश की कि आप अपने रब की क़सम दे कर फ़तह की दुआ माँगिए। उस वक़्त आप ने इस तरह दुआ मांगी कि या अल्लाह! मैं तुझ को तेरी ही क़सम दे कर दुआ करता हूँ कि तू कुफ़्फ़ार के बाज़ू हम लोगों के हाथों में दे दे और मुझे अपने नबी करीम ﷺ के पास पहुँचा दे। फ़ौरन ही आप की दुआ मक़बूल हो गई और इस्लामी लश्कर फ़तहयाब हो गया और कुफ़्फ़ार मुसलमानों के हाथों में गिरफ़्तार हो गए और आप उसी लड़ाई में शहादत से सरफ़राज़ हो कर हुज़ूर रहमते आलम ﷺ के दरबार में पहुँच गए।

(असाबा जि॰1, स॰146)

हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه

यमन के क़बीला दोस से उन का ख़ानदानी तअल्लुक़ है। ज़मानए जाहिलियत में उन का नाम "**अबदे शमस**" था, मगर जब यह सन् 7हिजरी में जंगे ख़ैबर के बाद दामने इस्लाम में आ गए तो हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उन का नाम अब्दुल्लाह या अब्दुर्रहमान रख दिया। एक दिन हुज़ूर ﷺ ने उन की आसतीन में एक बिल्ली देखी तो आप ने उन को یا ابا ھریرہ(ऐ बिल्ली के बाप) कह कर पुकारा। उसी दिन से उन का लक़ब इस क़दर मशहूर हो गया कि लोग उन का असली नाम ही भूल गए। यह बहुत ही इबादत गुज़ार इन्तेहाई मुत्तक़ी और परहेज़गार सहाबी हैं।

हज़रत अबू दरदा رضي الله عنه का बयान है कि यह रोज़ाना एक हज़ार रकअत नमाज़े नफ़्ल पढ़ा करते थे। आठ सौ सहाबा और ताबईन आप के शागिर्द हैं। आप ने पाँच हज़ार तीन सौ चौहत्तर हदीसें रिवायत की हैं जिन में से चार सो छियालीस बुख़ारी शरीफ़ में हैं। सन ५९ हिजरी में अठहत्तर साल की उम्र पा कर मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़ून हुए।

(अकमाल स॰622 व क़सतलानी जि॰1, स॰212 वग़ैरा)

करामत

करामत वाली थैली: उन को हुज़ूरे अकरम ﷺ ने चन्द छोहारे अता फ़रमाए और हुक्म दिया कि "उन को अपनी थैली मे रख लो और जब जी चाहे तुम उस में से हाथ डाल कर निकाल लो और ख़ुद खाओ, दूसरों को खिलाओ, मगर ख़बर दार उस थैली को कभी ख़ाली कर के मत झाड़ना। यह छोहारे कभी ख़त्म न होंगे।"

सुब्हानल्लाह! यह थैली ऐसी बाबरकत हो गई कि तीस बरस तक हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه उस थैली में से छोहारे निकाल निकाल कर खाते रहे और लोगों को खिलाते रहे बल्कि कई मन उस में से ख़ैरात भी कर चुके, मगर छोहारे ख़त्म नहीं हुए, यहाँ तक कि हज़रत उस्मान ग़नी رضي الله عنه की शहादत के दिन हंगामों की भीड़ भाड़ में वह थैली कमर से कट कर कहीं गिर पड़ी जिस का उम्र भर हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه को बे इन्तहा सदमा और रंज व गम रहा। रास्तों में रोते हुए और निहायत रिक़्क़त अंगेज़ और दर्द भरे लेहजे में यह शेअर पढ़ते हुए घुमते फिरते थे:-

للناس هم ولى فى اليوم همان ☆ فقد الجراب وقتل الشيخ عثمان

(यानी सब को आज एक ही तो ग़म है मगर मुझे दो ग़म हैं। एक ग़म है थैली के गुम होने का, दूसरा ग़म हज़रत अमीरूल मोमिनीन उस्मान ग़नी رضي الله عنه की शहादत का)(अलकलामुल मबीन)

हज़रत उबाद बिन बशर رضي الله عنه

यह मदीना मुनव्वरा के रहने वाले अन्सारी हैं जो ख़ानदान "बनी अब्दुल असहल" के एक बहुत ही नामवर शख़्स हैं। हुज़ूर ﷺ की हिजरत से पहले ही हज़रत मुसअब बिन उमैर رضي الله عنه के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया। बहुत बहादुरी और जाँबाज़ सहाबी हैं। जंगे बद्र और जंगे उहुद वग़ैरा की तमाम लड़ाइयों में बड़ी जुराअत व बहादुरी के साथ कुफ़्फ़ार से जंग किए हुए।

"**कअब बिन अशरफ़**" यहूदी जो हुज़ूर ﷺ का बदतरीन दुश्मन

था आप हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लेमा व अबू अबस बिन जबर व अबू नाइला वग़ैरा चन्द अनसारियों को अपने साथ ले कर उस के मकान पर गए और उस को क़त्ल कर डाला। बड़े सहाबा में आप का शुमार है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा ﷺ का बयान है कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने हज़रत उबाद बिन बशर ﷺ की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया कि अल्लाह तआला हज़रत उबाद बिन बशर पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए। सन १२ हिजरी की जंगे यमामा में शहीद हो गए, जब कि आप की उम्र शरीफ सिर्फ़ पैंतालिस (45) साल की थी।

(अकमाल स॰605 व असदुल ग़ाबा जि॰3, स॰100)

करामात

लाठी रोशन होगई: एक मर्तबा यह और हज़रत उसैद बिन हज़ीर ﷺ दोनों दरबारे रिसालत से काफ़ी रात गुज़रने के बाद अपने घरों को रवाना हुए। अंधेरी रात में जब रास्ता नज़र नहीं आया तो अचानक उन की लाठी टार्च की तरह रोशन हो गई और यह दोनों उस की रोशनी में चलते रहे जब दोनों का रास्ता अलग अलग हो गया तो हज़रत उसैद बिन हज़ीर ﷺ की लाठी भी रोशन हो गई, और दोनों रोशनी में अपने अपने घर पहुँच गए। (असदुल ग़ाबा जि॰3, स॰101)

करामत वाला ख़्वाब: जंगे यमामा में जब कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ का लश्कर मुस्लिमतुल कज़्ज़ाब की फौज़ों के साथ मसरूफ़े जंग था और मुरतदीन बहुत ही बड़ी तअदाद में जमा हो कर बहुत सख़्त जंग कर रहे थे। हज़रत उबाद बिन बशर ﷺ ने फ़रमाया कि में ने रात में एक ख़्वाब देखा है कि मेरे लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए गए और जब मैं आसमान में दाख़िल हो गया तो दरवाज़े बन्द कर दिए गए। मेरे इस ख़्वाब की तअबीर यही है कि इन्शाअल्लाह तआला मुझे शहादत नसीब होगी। चुनान्चे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ का बयान है कि जंगे यमामा के दिन हज़रत उबाद

बिन बशर ज़ोर ज़ोर से यह ऐलान कर रहे थे कि मोमिनीन मेरे पास आजाएं उस आवाज़ पर चार सो अन्सारी उन के पास जमा हो गए।

फिर आप हज़रत अबू दुजाना और हज़रत बरा बिन मालिक رضی اللہ عنہ को साथ ले कर उस बाग़ के दरवाज़े पर हमला आवर हुए जहाँ से मुस्लिमतुल कज़्ज़ाब अपनी फौजों की कमान कर रहा था। उस हमला में इन्तहाई सख़्त लड़ाई हुई, यहाँ तक कि हज़रत उबाद बिन बशर رضی اللہ عنہ शहीद हो गए। उन के चेहरे पर तलवारों के ज़ख़्म इस क़दर ज़्यादा लगे थे कि कोई उन को पहचान न सका। उनके बदन मुबारक पर एक ख़ास निशान था, जिसको देख कर लोगों ने पहचाना कि यह हज़रत उबाद बिन बशर رضی اللہ عنہ की लाश है। (इब्ने सअद जि०3, स०441)

तबसेरा: अल्लाहु अकबर! जिहाद में यह जोशे ईमानी और यह जज़्बए सरफ़रोशी, मुश्किल ही से उस की मिसाल मिलेगी। इस क़िसम की जाँ निसारियाँ सिर्फ़ **सहाबा-ए-किराम** और अहले ईमान मुजाहिदीने इस्लाम ही का तरीका है। **सहाबा-ए-किराम** की उन्हीं क़ुरबानियों का सदक़ा है कि आज तमाम दुनिया में इस्लाम की रोशनी फैली हुई है। काश! दुश्मनाने सहाबा रवाफ़िज़ व ख़वारिज उन चमकती हुई हिदायत देने वाली रवायतों से ईमान का नूर हासिल करते।

हज़रत उसैद बिन अबी अयास अदव رضی اللہ عنہ

हज़रत सारिया बिन ज़नीम रज़ियल्लाहु अन्हु जिन को हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने मदीना मुनव्वरा में मस्जिदे नबवी के मिंबर से पुकारा था और वह निहावन्द में थे। यह उन्हीं के भतीजे हैं, यह शायर थे और हुज़ूर नबी करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की बुराई में अश्आर कहा करते थे। फ़तहे मक्का के दिन भाग कर ताइफ़ चले गए थे। यह उन इश्तिहारी मुजरिमों में से थे जिन के बारे में यह फ़रमाने नबवी था कि यह जहाँ और जिस हाल में मिलें क़त्ल कर दिए जाएँ। इत्तेफ़ाक़ से हज़रत सारिया رضی اللہ عنہ का ताइफ़ में गुज़र हुआ। जब मुलाक़ात हुई तो आप ने असीद बिन अबी अयास को बताया कि अगर तुम बारगाहे रिसालत

में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लो तो तुम्हारी जान बच जाएगी।

उसैद यह सुन का ताइफ़ से अपने मकान पर आए और कुरता पहन कर और अमामा बांध कर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गए और अर्ज़ किया कि क्या आप ने उसैद बिन अयास का ख़ून जाएज़ फ़रमा दिया है? आप ने फ़रमाया कि हाँ! उन्हों ने अर्ज़ किया कि अगर वह मुसलमान हो कर आप की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो जाए, तो क्या आप उस का कुसूर मआफ़ फ़रमा देंगे? इरशाद हुआ कि हाँ! यह सुन कर उन्होंने अपना हाथ हुज़ूरे अकरम ﷺ के हाथ अक़्दस में दे कर कलमा पढ़ा और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! उसैद बिन अबी अयास में ही हूँ हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़ौरन ही एक आदमी को भेज कर ऐलान करा दिया कि उसैद बिन अबी अयास मुसलमान हो गए हैं और सरकारे रिसालत ने उन को अमान का परवाना अता फ़रमा दिया है। फिर उन्हों ने हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की तअ़रीफ में एक क़सीदा पढ़ा। (असदुल ग़ाबा जि॰1, स॰89)

करामत

चेहरा से घर रोशन: जब यह मुसलमान हो गए तो हुज़ूरे अनवर ﷺ ने ख़ुश होकर करम करते हुए उन के चेहरे और सीने पर अपना हाथ फेरा जिस से उन को यह करामत नसीब हो गई कि यह जब किसी अंधेरे घर में क़दम मुबारक रखते थे तो उस घर में उन के नूरानी चेहरे की रोशनी से उजाला हो जाया करता था।

(कंज़ुल उम्माल जि॰15, स॰253)

तबसेरा:-सुब्हानल्लाह! जब तक सरकार रहमते मदार ﷺ उन से नाराज़ रहे उन का ख़ून मुबाह था और कहीं उन का ठिकाना नहीं था। भागते फिरते थे और जान की अमान नहीं मिलती थी और जब रहमतुल्लिल आलमीन ﷺ उन से ख़ुश हो गए तो उन को दुनिया में करामत और आख़िरत में जन्नत दोनों जहाँ की दौलत मिल गई। **यह सच है:**

जिस से तुम रूठो, वह सर गश्ता दुनिया हो जाए
जिस को तुम चाहो, वह क़तरा हो तो दरिया हो जाए

हज़रत बशर बिन मआविया बकाई رضی اللہ عنہ

यह अपनी क़ौम के वफ़द में अपने वालिद मआविया बिन सोर رضی اللہ عنہ के साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए। उन के वालिद ने उन से फ़रमा दिया था कि तुम बारगाहे रिसालत में तीन बातों के सिवा कुछ न कहना (1) अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह (2) या रसूलल्लाह! हम इस लिए हाज़िर हुए हैं ताकि हम इस्लाम क़बूल करके आप के फ़रमाँबरदार बन जाएँ (3) आप हमारे लिए दुआ फ़रमाएँ। उन की उन तीन बातों को सुन कर हुज़ूर रहमते आलम ﷺ ने खुश होकर मुहब्बत में उन के चेहरे और सर पर हाथ मुबारक फेरा और उन के लिए दुआ फ़रमाई। (असदुल ग़ाबा जि॰1, स॰190)

करामत

हाथ हर मरज़ की दवा: हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने जैसे ही अपना दस्ते मुबारक फेरा उन को दो करामतें मिल गईं। एक तो यह कि हमेशा के लिए उन का चेहरा रोशन हो गया और दूसरी करामत यह मिली कि यह जिस बीमार पर अपना हाथ फेर देते फ़ौरन ही शिफ़ायाब हो जाया करता था। (कंज़ुल उम्माल जि॰15,स॰267 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत बशर رضی اللہ عنہ के साहबज़ादे "मुहम्मद बिन बशर" फ़ख़र के तौर पर इस बारे में अशआर पढ़ा करते थे जिसका पहला शेअर यह है:-

و ابی الذی مسح النبی براسه	و دعاله بالخیر والبرکات

(यअनी मेरे बाप वह हैं जिन के सर पर हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने हाथ फेर कर ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाई है।)

(असदुल ग़ाबा जि॰1, स॰190)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद

यह हुजूरे अकरम ﷺ के आज़ाद किये हुए गुलाम मुँह बोले बेटे हज़रत "ज़ैद बिन हारिसा" के बेटे हैं। उन की माँ की कुन्नियत "उम्मे ऐमन" और नाम "बरका" था और हज़रत उसामा का लक़ब "महबूबे रसूल" है। वफ़ाते अक़दस के वक़्त उन की उम्र सिर्फ़ बीस साल की थी मगर हुजूर ﷺ ने उन को उस लश्कर का कमान्डर बनाया था जो रूमियों से जंग के लिए जा रहा था और जिस लश्कर में तमाम बड़े बड़े सहाबा-ए- किराम मौजूद थे। लेकिन हुजूर ﷺ की वफ़ाते अक़दस की वजह से यह लश्कर वापस आ गया। मगर फिर अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने दोबारा इस लश्कर को भेजा जो फ़तहयाब हो कर आया। चूँकि यह "महबूबे रसूल" थे, इसी लिए अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर उन का बे हद इकराम व एहतराम फ़रमाते थे। जब आप ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मुजाहिदीन की सैलरी मुक़र्रर फ़रमाइ तो उन की तनख़्वाह साढ़े तीन हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाई और अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह की तनख़्वाह सिर्फ़ तीन हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाई। बेटे ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! आप ने हज़रत उसामा की तन्ख़्वाह मुझ से ज़्यादा क्यों मुक़र्रर फ़रमाई जब कि वह किसी जिहाद में भी मुझ से आगे नहीं रहे उस के जवाब में अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया इस लिए ? उसामा के बाप "ज़ैद" तुम्हारे बाप "उमर" से ज़्यादा रसूले ख़ुदा ﷺ के महबूब थे और "उसामा" तुम से ज़्यादा हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ के महबूब हैं।

(कंज़ुल उम्माल जि०15, स०241 व अकमाल स०505)

बे अदबी करने वाले काफ़िर हो गए: हुज़ूरे अकरम ﷺ ने हज्जतुल विदाअ में तवाफ़े ज़ियारत को इस लिए कुछ लेट कर दिया कि हज़रत उसामा किसी जरूरत की वजह से कहीं चले गए थे। थोड़ी देर के बाद हज़रत उसामा वापस आए। लोगों ने देखा कि चिपटी नाक और

काले रंग का एक लड़का है, तो यमन के कुछ लोगों ने हिक़ारत के अन्दाज़ में यह कहा कि क्या उसी चिपटी नाक वाले काले लड़के की वजह से आज हम लोगों को हुज़ूर ﷺ ने तवाफ़े ज़ियारत से रोक रखा था? इस तरह उन यमन वालों ने हज़रत उसामा رضی اللہ عنہ की बे अदबी की !हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर कहते हैं कि उस बे अदबी करने ही का वबाल था कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की वफ़ात के बाद यमन के यह बे अदबी करने वाले लोग काफ़िर व मुरतद हो गए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की फ़ौजों ने उन लोगों से जिहाद किया, तो कुछ उन में से तौबा करके फिर मुसलमान होगए और कुछ क़त्ल हो गए।

(कंज़ुल उम्माल जि०15, स०243)

हज़रत नाबग़ा रज़ियल्लाहु अन्हु

"नाबग़ा" उन का लक़ब है, उन के नाम में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ उन का नाम "क़ैस बिन अब्दुल्लाह" और बाज़ ने "हब्बान बिन क़ैस" बताया है। यह ज़माना जाहिलियत में बहुत अच्छे शायर थे, मगर तीस बरस के बाद शेअर गोई बिल्कुल छोड़ दी। उस के बाद जब दोबारा शेअर कहना शुरू किया तो इस क़दर बलन्द मर्तबा और बाकमाल शायर हो गए कि उन के ज़माने वालो ने उन को "नाबग़ा" (बहुत ही माहिर) का लक़ब दे दिया। एक सौ अस्सी बरस की उम्र पाई। (हाशिया कंज़ुल उम्माल जि०16, स०211 मतबूआ हैदराबाद)

करामत

सौ बरस तक दाँत सलामत: उन्हों ने हुज़ूरे अकरम ﷺ को चन्द अशआर सुनाए जो आप को बहुत ही ज़्यादा पसन्द आए। आप ने खुश हो कर उन को यह दुआ दी। "अल्लाह तआला तेरे मुंह को न तोड़े" इस दुआए नबवी की बदोलत उन को यह करामत मिली कि तमाम उम्र उन के दाँत सलामत रहे और ओले की तरह साफ़ और चमकदार ही रहे। हज़रत अबू यअला رضی اللہ عنہ कहते हैं कि में ने हज़रत

नाबग़ा ﷺ को उस वक़्त देखा जब कि वह सौ बरस के हो गए थे मगर उन के तमाम दाँत सलामत थे। (बैहक़ी व अ़साबा जि०३, स०539)

हज़रत अम्र बिन तुफ़ैल दोसी ﷺ

यह अपने बाप हज़रत तुफ़ैल ﷺ के साथ मदीना मुनव्वरा में आकर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए और तमाम उम्र मदीना मुनव्वरा ही में रहे। अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ की ख़िलाफ़त में जब कि मुरतदीन से जिहाद के लिए मुसलमानों का लश्कर मदीना मुनव्वरा से रवाना हुआ, तो यह दोनों बाप बेटे भी उस लश्कर में शामिल हो कर जिहाद के लिए चल पड़े। चुनान्चे हज़रत तुफ़ैल ﷺ यमामा में शहीद हो गए और हज़रत अम्र बिन तुफ़ैल ﷺ का एक हाथ कट गया और सख़्त तौर पर ज़ख़्मी हो गए लेकिन सिहतयाब होगए।

फिर जब हज़रत उमर ﷺ के दौरे ख़िलाफ़त में जंग यरमूक की लड़ाई दर पेश हुई तो हज़रत अम्र बिन तुफ़ैल ﷺ उस जिहाद में मुजाहिदाना शान के साथ गए और कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए जामे शहादत से सैराब हुए। (असदुल ग़ाबा जि०4, स०115)

करामत

नूरानी कोड़ा: हुज़ूरे अनवर ﷺ ने उन को घोड़ा हांकने के कोड़े के बारे में दुआ फ़रमा दी, तो उन का कोड़ा रात के अंधेरे में इस तरह रोशन हो जाया करता था कि यह उसी की रोशनी में रातों को चलते फिरते थे। (कंज़ुल उम्माल जि०16, स०160 मतबूआ हैदराबाद)

हज़रत अम्र बिन मुर्रा जहनी ﷺ

यह ज़माना जाहिलियत में हज करने गए तो मक्का मुकर्रमा में एक ख़्वाब देखा और एक ग़ैबी आवाज़ सुनी जिस में उन को नबी आख़िरूज़्ज़मा ﷺ पर ईमान लाने पर उभारा गया। यह उस ख़्वाब से बे हद मुतअस्सिर हुए और नबी आख़िरूज़्ज़मा ﷺ के आने के इन्तेज़ार

में रहे, चुनान्चे हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने अपनी नुबुवत का ऐलान फ़रमाया तो उन्हों ने बारगाहे नुबुवत में हाज़िर होकर इस्लाम क़बूल कर लिया और फिर अपनी कौम में आकर इस्लाम की तबलीग़ करने लगे और उन की कौम के बहुत से लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर उन मुसलमानों को साथ लेकर बारगाहे नुबुवत में दोबारा हाज़िर हुए, बहुत ही बहादुर मुजाहिद भी थे और अकसर इस्लामी जिहादों में डट कर कुफ़्फ़ार से जंग भी की। आख़िर में मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम में जाकर बस गये और हज़रत अमीरे मआविया रज़ि. के दौरे हुकूमत में वफ़ात पाई।(अकमाल स०607 व कंज़ुल उम्माल जि०16 स०115)

करामत

दुश्मन बलाओं में गिरफ़्तार: उन की एक करामत यह है कि मुस्तजाबुद्दअवात थे, यअनी उन की दुआएं बहुत ज़्यादा और बहुत जल्द मक़बूल हुआ करती थीं। चुनान्चे मनकूल है कि जब अपनी क़ौम को इस्लाम की दअवत देने के लिए तशरीफ़ ले गए तो एक शख़्स ने उन की बहुत ज़्यादा बुराई और मज़म्मत की और उन की शान मे तौहीन वाले अलफ़ाज़ बकने लगा और आप को झूठा कहने लगा। उस वक़्त आप ने जख्मी दिल के साथ इस तरह दुआ मांगी। या अल्लाह! उस की ज़िन्दगी को तलख बना दे और उस की ज़बान को गुंगी और उस की आँखों को अंधी कर दे। आप की दुआ का यह असर हुआ कि यह शख़्स गुंगा और अंधा हो गया और इस क़दर बुढ़ा हो गया कि उस के दाँत टूट गए और ज़बान के बेकार हो जाने से उस को किसी चीज़ का मज़ा महसूस नहीं होता था।

हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजा अन्सारी रज़ि.

यह अन्सारी हैं और उन का वतन मदीना मुनव्वरा है। उन्हों ने क़बीला बनी हारिस बनी ख़ज़रज में अपना घर बना लिया था। यह बहुत ही परहेज़गार और इबादत गुज़ार सहाबी हैं। अमीरूल मोमिनीन

हज़रत उस्मान ﷺ की ख़िलाफ़त के दौरान आप ने दुनिया से रिहलत फ़रमाई। (बैहक़ी असदुल ग़ाबा जि०2, स०227)

करामत

मौत के बाद बात: हज़रत नुअमान बिन बशार ﷺ का बयान है कि हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजा सहाबी ﷺ मदीना मुनव्वरा के बाज़ रास्तों में ज़ुहर व असर के बीच चले जा रहे थे कि अचानक गिर पड़े और उन की वफ़ात हो गई। लोग उन्हें उठा कर मदीना मुनव्वरा लाए और उन को लिटा कर कमबल ओढ़ा दिया।

जब मग़्रिब व इशा के बीच कुछ औरतों ने रोना शुरू किया तो कमबल के अन्दर से आवाज़ आई। "ऐ रोने वालियो! ख़ामूश रहो।"

यह आवाज़ सुन कर लोगों ने उन के चेहरे से कमबल हटाया तो वह बेहद दर्द मन्दी से निहायत ही बलन्द आवाज़ से कहने लगे। "हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ नबीए उम्मी ख़ातिमुल नबीईन हैं और यह बात अल्लाह तआला की किताब में है।"

इतना कहकर कुछ देर तक बिल्कुल ही ख़ामूश रहे, फिर बलन्द आवाज़ से यह फ़रमाया। "सच कहा, सच कहा अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ ने जो नबीए अकरम ﷺ के ख़लीफ़ा हैं, क़वी हैं, अमीन हैं। जिस्म के हिसाब से कमज़ोर थे, लेकिन अल्लाह तआला के काम में क़वी थे। यह बात अल्लाह तआला की पहली किताबों में हैं।"

इतना फ़रमाने के बाद फिर उन की ज़बान बन्द हो गई। और थोड़ी देर तक बिल्कुल ख़ामूश रहे फिर उन की ज़बान पर यह कलमात जारी हो गए और वह ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। "सच कहा सच कहा बीच के ख़लीफ़ा अल्लाह तआला के बन्दे अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ ने जो अल्लह तआला के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत को ख़ातिर में नहीं लाते थे। न उस की कोई परवा करते थे और वह लोगों को इस बात से रोकते थे कि कोई ताक़तवर किसी कमज़ोर को खा जाए और यह बात

अल्लाह तआला की पहली किताबों में लिखी हुई है।''

इस के बाद फिर वह थोड़ी देर तक ख़ामूश रहे, फिर उन की ज़बान पर यह कलमात जारी हो गए और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। ''सच कहा सच कहा हज़रत उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ ने जो अमीरूल मोमिनीन हैं और मोमिनों पर रहम फ़रमाने वाले हैं। दो बातें गुज़र गई और चार बाक़ी है जो यह हैं।

1:- लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और उन के लिए कोई निज़ाम न रह जाए गा।

2:- सब औरतें रोने लगेंगी और उन की परदा दरी हो जाएगी।

3:- क़यामत क़रीब हो जाएगी।

4:- बाज़ आदमी बाज़ को खा जाएगा।

इस के बाद उन की ज़बान बिल्कुल बन्द हो गई। (तबरानी वल बदाया वन्निहाया जि॰2, स॰156 व असदुल ग़ाबा जि॰2, स॰227)

हज़रत राफ़िअ बिन ख़दीज رضی اللہ عنہ

उन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है और शजरए नसब यह है। राफ़िअ बिन ख़दीज बिन अदी बिन ज़ैद बिन जसम बिन हारिस बिन ख़ज़रज बिन अमर बिन मालिक बिन औस। यह अन्सारी हैं और उन का वतन मदीना मुनव्वरा है। यह जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार से लड़ने के लिए आए उन को कम उम्री की वजह से हुजूरे अक़्दस ﷺ ने लश्कर में शामिल करने से इन्कार कर दिया। लेकिन जंगे उहुद में इस्लामी फ़ौज में शामिल कर लिए गए और ख़ूब जम कर कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। फिर ख़ंदक़ वग़ैरा अकसर लड़ाइयों में यह जेहाद किए। उम्र भर मदीना मुनव्वरा ही में रहे और इस्लामी लड़ाइयों में डट कर और कफ़न बरदोश हो कर काफ़िरों से लड़ते रहे और अपनी क़ौम के सरदार और मुखिया भी रहे। सन 73 हिजरी या सन 74 हिजरी में छियासी बरस की उम्र पाकर मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई।

(अकमाल स॰594 व कंजुल उम्माल जि॰16 स़ 5 व असदुल ग़ाबा जि2, स 151)

करामत

बरसों गले में तीर चुभा रहा: सन् 3 हिजरी में जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने आप के गले पर तीर मारा और यह तीर आप के गले में चुभ गया। उन के चचा उन को हुज़ूरे अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में लाए। आप ने इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो हम उस तीर को निकाल दें और अगर तुम को शहादत की तमन्ना हो तो तुम उस तीर को न निकलवाओ। तुम जब भी और जहाँ कहीं भी वफ़ात पाओगे, शहीदों की सफ़ में तुम्हारा शुमार होगा। उन्हों ने शहादत की आरज़ू में तीर निकलवाना पसन्द नहीं किया और उसी हालत में सत्तर बरस तक ज़िन्दा रहे और ज़िन्दगी के तमाम मअमूलात पूरे करते रहे, यहाँ तक लड़ाइयों में कुफ़्फ़ार से जंग भी करते रहे और उन को किसी क़िस्म की उस तीर की वजह से तकलीफ़ भी नहीं होती थी, लेकिन सत्तर (70) बरस की मुद्दत के बाद सन ७३ हिजरी में तीर का यह ज़ख़्म खुद बख़ुद फटगया और उसी ज़ख़्म की हालत में उनका विसाल हो गया। बिला शुबहा यह उन की बड़ी करामत है जो बहुत ज़्यादा मश्हूर है।

(कंज़ुल उम्माल व हाशिया कंज़ुल उम्माल जि०16 स०5 व असदुल ग़ाबा जि०2, स०151)

हज़रत मुहम्मद बिन साबित बिन क़ैस رضي الله عنه

हज़रत मुहम्मद बिन साबित बिन क़ैस رضي الله عنه जब अपनी वालिदा जमीला बिन्ते अब्दुल्लाह बिन उबै के पेट में थे तो उन के वालिद ने उन की वालिदा को तलाक़ दे दी। उन की वालिदा ने गुस्सा में उन की पैदाइश के बाद यह क़सम खाली कि मैं इस बच्चे को हरगिज़ हरगिज़ दूध नहीं पिलाऊँगी। उस का बाप उस को दूध पिलाने का इन्तज़ाम करे। हज़रत साबित बिन क़ैस رضي الله عنه उस बच्चे को एक कपड़े में लपेट कर दरबारे नुबुवत में लाए और पूरा वाक़िआ अर्ज़ किया। हुज़ूर रहमते

आलमﷺने उस बच्चे को अपने गोद में लेकर पहले अपना मुक़द्दस लुआबे दहन (थुक) उस बच्चे के मुँह में डाला। फिर अजवा खुजूर चबा कर उस बच्चे के मुह में डाला और "मुहम्मद" नाम रखा और इरशाद फ़रमाया कि उस को घर ले जाओ अल्लाह तआला इस बच्चे को रिज़्क़ देने वाला है।

करामत

बच्चे को दुध कैसे मिला: हज़रत साबित बिन क़ैसرضي الله عنه को गोद में लिए हुए किसी दूध पिलाने वाली औरत की तलाश में घूम रहे थे मगर कोई दूध पिलाने वाली औरत नहीं मिली। यह उसी फ़िक्र में हैरान व परेशान फिर रह थे कि अचानक एक अरबी औरत उन से मिली और पूछा कि साबित बिन क़ैस कौन शख़्स हैं? और उन से कहाँ मुलाक़ात होगी? उन्हों ने पूछा! तुम को साबित बिन क़ैस से क्या काम है? औरत ने कहा कि मैं ने कल रात यह ख़्वाब देखा कि मैं साबित बिन क़ैस के बच्चे को दूध पिला रही हूँ। यह सुन कर हज़रत साबित बिन क़ैस رضي الله عنه ने फ़रमाया कि साबित बिन क़ैस मैं ही हूँ और मेरा लड़का "मुहम्मद" यही है जो मेरी गोद में है। औरत ने फ़ौरन बच्चे को गोद में ले लिया और दूध पिलाने लगी। मुहम्मद बिन साबित बिन क़ैसرضي الله عنه सन् 23 हिजरी में जंग हुर्रा के दिन मदीना मुनव्वरा में यज़ीद बिन मआविया की मनहूस फ़ौजों के हाथ से शहीद हो गए।

(कंजुल उम्माल व हाशिया कंजुल उम्माल जि०16 व असदुल ग़ाबा जि०4, स०313)

हज़रत क़तादा बिन मलहान رضي الله عنه

करामत

चेहरा आइना बन गया: हयान बिन उमैरرضي الله عنهका बयान है कि हुज़ूरे अनवरﷺने हज़रत क़तादा बिन मलहानرضي الله عنه के चेहरे पर एक मर्तबा

अपना हाथ मुबारक फेरा। उस के बाद उन को यह करामत मिल गई कि यह बहुत ही बूढ़े हो चुके थे और उन के बदन के हर हिस्से में कमज़ोरी के आसार ज़ाहिर थे। लेकिन उन के चेहरे पर बदस्तूर जवानी की ख़ूबसूरती बाक़ी थी और उन का चेहरा इस क़दर चमकता था कि मैं उन की वफ़ात के वक़्त उन की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो उस वक़्त एक औरत उन के सामने से गुज़री। उस वक़्त मैं ने उस औरत के अक्स उन के चेहरे में इस तरह देख लिया, गोया मैं आइना में उस का चेहरा देख रहा हूँ। (असाबा जि०3, स०225)

हज़रत मआविया बिन मक़रन رضي الله عنه

उन के वालिद के नाम में इख़्तिलाफ़ है। कुछ लोगों ने उन के वालिद का नाम "मआविया" और बाज़ ने "मक़रन" लिखा है इसी तरह उन के क़बीला के नाम में भी इख़्तिलाफ़ है कि यह 'मज़नी" या "लैसी" हैं। हज़रत अबू उमर ने इस क़ौल को दुरूस्त क़रार दिया है कि यह "**मआविया बिन मक़रन**" मज़नी हैं। हुज़ूरे अक़दस ﷺ जिस वक़्त ग़ज़वा-ए-तबूक में तशरीफ फ़रमा थे उन का विसाल हो गया।

करामत

दो हज़ार फ़रिश्ते नमाज़े जनाज़ा में: उन की यह मश्हूर करामत है कि जब मदीना मुनव्वरा में उन की वफ़ात हुई तो हज़रत जिब्राईल عليه السلام ने मक़ामे तबूक में उतर कर दरबारे रिसालत में अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! (ﷺ) मआविया मज़नी का मदीना मुनव्वरा में इन्तक़ाल हो गया है और हमारे लिए मुनासिब है कि हम लोग उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे। फिर हज़रत जिब्राईल عليه السلام ने इस क़दर ज़ोर से अपना बाज़ू ज़मीन पर मारा कि तमाम पेड़ पत्थर, टीले और पहाड़ियाँ हिलने लगीं और तमाम पर्दे इस तरह उठ गए कि उन का जनाज़ा हुज़ूरे अकरम ﷺ की निगाहों के सामने आ गया और जब हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई तो सहाबा-ए-किराम के तीस हज़ार मजमअ

के अलावा फ़रिश्तों की भी दो सफ़ें थीं और हर सफ़ (लाइन) में एक हज़ार फ़रिश्ते थे। एक रिवायत में है कि हर सफ़ में साठ हज़ार फ़रिश्ते थे। नमाज़ के बाद हुज़ूरे अकरम ﷺ ने हज़रत जिब्राईल علیہ السلام से पुछा कि अल्लाह तआला ने मेरे इस सहाबी को इतना बड़ा रूतबा कौन से अमल की वजह से अता फ़रमाया? तो हज़रत जिब्राईल علیہ السلام ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ यह शख़्स सूरह कुल हुवल्लाहु अहद से बे हद मुहब्बत रखता था और हर वक़्त उठते बैठते उस सूरह की तिलावत किया करता था। (असदुल ग़ाबा जि॰4, स॰389)

तबसेरा:अल्लाहु अकबर! सूरह इख़्लास (कुल हुवल्लाहु अहद) की तिलावत करने वालों की फ़ज़ीलत और उनके अजरो सवाब और फ़ज़्लो करम का क्या कहना? ख़ुदा वन्दे करीम عزوجل हम मुसलमानों को ज़्यादा से ज़्यादा उस मुक़द्दस सूरह की तिलावत का शर्फ़ अता फ़रमाए। (आमीन)

हज़रत अहबान बिन सैफ़ी ग़िफ़ारी رضی اللہ عنہ

उन की कुन्नियत अबू मुस्लिम है, उन की बेटी हज़रत अदीसा رضی اللہ عنہا कहती हैं कि जब अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली व हज़रत अमीरे मआविया رضی اللہ عنہما के बीच जंग की नोबत आ पड़ी तो अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली رضی اللہ عنہ मेरे वालिद के मकान पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि तुम इस जंग में मेरा साथ दो और अब तक तुम को कौन सी चीज़ मेरी हिमायत से रोके हुए है? तो मेरे वालिद हज़रत अहबान बिन सैफ़ी رضی اللہ عنہ ने कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! बस सिर्फ़ यही एक रोकावट है कि नबीए अकरम ﷺ ने मुझे यह वसियत फ़रमाई थी कि ऐ अहबान! जब मुसलमान आपस में एक दूसरे से जंग करने लगें तो तुम उस वक़्त लकड़ी की तलवार बना लेना, चुनान्चे मैं ने इरशादे नबवी के मुताबिक़ लकड़ी की तलवार बना ली है। आप देखिए वह लटक रही है। अब लकड़ी की तलवार से भला मैं किस तरह जंग कर सकता हूँ यह कह कर वह बिल्कुल ही उस लड़ाई में ग़ैर जानिब दार

(Impartial)बन गए।

करामत

क़ब्र से कफ़न वापस: यह साहिबे करामत सहाबी थे, चुनान्चे उन की एक मश्हूर करामत यह है कि उन्हों ने वसियत फ़रमाई थी कि मेरे कफ़न में सिर्फ दो ही कपड़े दिए जाएँ, मगर लोगों ने उनकी वसियत पर अमल नहीं किया, और उनके कफ़न मे तीन कपड़े शामिल करके उन को दफ़न कर दिया। घर वाले जब सुबह की नींद से बेदार हुए तो यह देख कर हैरान रह गए कि तीसरा कपड़ा क़ब्र से वापस हो कर खूंटी पर लटक रहा है। (असदुल ग़ाबा जि०1, स०138)

हज़रत नज़ला बिन मआविया अन्सारी رضی اللہ عنہ

करामत

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सहाबी:- हज़रत नज़ला बिन मआविया رضی اللہ عنہ जंगे क़ादसिया में अमीरे लश्कर हज़रत सअद बिन अबी वक़ास رضی اللہ عنہ के मातहत में जिहाद के लिए तशरीफ़ ले गए। अचानक अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर رضی اللہ عنہ का फ़रमान आया कि हज़रत नज़ला बिन मआविया رضی اللہ عنہ को **"हलवानुल इराक़"** में जिहाद के लिए भेज दिया जाए। चुनान्चे हज़रत सअद बिन अबी वक़ास رضی اللہ عنہ ने उन को तीन सौ मुजाहिदीन का अफ़सर बना कर भेज दिया और उन्हों ने मुजाहिदाना हमला करके "हलवानुल इराक़" की बहुत सी बस्तियों को फ़तह कर लिया और बहुत ज़्यादा माले ग़नीमत ले कर वहाँ से रवाना हुए।

बीच राह में एक पहाड़ के पास नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया। हज़रत नज़ला बिन मआविया رضی اللہ عنہ ने अज़ान पढ़ी और जैसे ही **अल्लाहु अकबर-अल्लाहु अकबर** कहा तो पहाड़ के अन्दर से किसी जवाब देने वाले ने बलन्द आवाज़ से कहा لقد كبرت كبيرا يانضله इसी तरह

आप की पूरी अज़ान के हर हर कलमा का जवाब पहाड़ के अन्दर से सुनाई देता रहा। आप हैरान रह गए कि आखिर इस पहाड़ के अन्दर कौन है जो मेरा नाम लेकर अज़ान का जवाब दे रहा है। फिर आप ने बलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ शख़्स! खुदा तुम पर रहम फ़रमाए तू कौन है? तू फ़रिश्ता है या जिन्न या रिजालु ग़ैब में से है ? जब तू ने अपनी आवाज़ हम को सुना दी है तो फिर अपनी सूरत भी हम को दिखा दे क्योंकि हम लोग और हज़रत उमर के साथी हैं। आप के यह फ़रमाते ही पहाड़ फट गया और उस के अन्दर से एक निहायत ही बूढ़े और बुजुर्ग आदमी निकल पड़े और उन्हों ने सलाम किया। आप ने सलाम का जवाब दे कर पूछा आप कौन हैं? तो उन्हो ने जवाब दिया मैं हज़रत ईसा का सहाबी और उन का वसी हूँ। मेरे नबी हज़रत ईसा ने मेरे लिए लम्बी उम्र की दुआ फ़रमा दी है और मुझे यह हुक्म दिया कि तुम मेरे आसमान से उतरने के वक़्त तक इसी पहाड़ में ठहरे रहना। चुनान्चे मैं अपने नबी हज़रत ईसा के आने के इन्तज़ार में यहाँ ठहरा हुआ हूँ। आप मदीना मुनव्वरा पहुँच कर हज़रत उमर से मेरा सलाम कह दें और मेरा यह पैग़ाम भी पहुँचा दें कि ऐ उमर! सीधे रास्ते पर रहो और खुदा का कुर्ब ढूंडते रहो। फिर चन्द दूसरी नसीहतें फ़रमा कर वह बुजुर्ग एक दम उसी पहाड़ में ग़ायब हो गए।

हज़रत नज़ला बिन मआविया ने यह सारा वाक़िआ हज़रत सअद बिन अबी वक़ास के पास लिख कर भेजा और उन्हों ने उस की खबर दरबारे ख़िलाफ़त में भेज दी तो अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ने हज़रत सअद बिन अबी वक़ास के नाम यह फ़रमान भेजा कि तुम अपने पूरे लश्कर के साथ "हलवानुल इराक़" में उस पहाड़ के पास जाओ, अगर तुम्हारी उन बुजुर्ग से मुलाक़ात हो जाए तो उन से मेरा सलाम कह देना। चुनान्चे हज़रत सअद बिन अबी वक़ास अपने चार हज़ार सिपाहियों के साथ उस मक़ाम पर पहुँचे और चालिस दिन तक ठहरे रहे, मगर फिर भी वह बुजुर्ग न ज़ाहिर हुए, न

उनकी आवाज़ किसी ने सुनी।

(अज़ालतुल ख़िफ़ा मक़सद 2, स०167 ता 168)

तबसेराः वह बुज़ुर्ग भला क्योंकर और किस तरह फिर ज़ाहिर हुए? उन से मुलाक़ात और बात करने की करामत तो हज़रत नज़्ला बिन मआविया ﷺ के नसीब में लिखी हुई थी जो उन्हें मिल गई। मसल मश्हूर है। لكل رجال نصيب و النصيب يصيب (यअनी हर आदमी का अपना नसीब है जिसको वह पा लेता है।)

हज़रत उमेर बिन सअ्द अन्सारी ﷺ

अनसार के क़बीला औस से उन का ख़ानदानी तअल्लुक़ है। और उन का असली वतन मदीना मुनव्वरा है। मुल्के शाम की फ़तूहात के सिलसिले में जितनी लड़ाइयाँ हुई उन सब जंगों में उन्हों ने बड़े बड़े बहादुराना कारनामे अन्जाम दिए। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ ने अपने ज़माने ख़िलाफ़त में उन को मुल्के शाम में हमस का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था। यह इस क़दर इबादत गुज़ार व ज़ाहिद थे कि उन की इबादत व रियाज़त और उन का ज़ुहद व तक़्वा हद्दे करामत को पहुँचा हुआ था, यहाँ तक कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ फ़रमाया करते थे कि काश! "उमेर बिन सअद" जैसे चन्द लोग मुझे मिल जाते जिन को मैं मुसलमानों पर हाकिम बनाता।

(हाशिया कंजुल उम्माल जि०16, स०162 बहवाला इब्ने असअद)

करामत

ज़ाहिदाना ज़िन्दगीः उन की ज़ाहिदाना व आबिदाना ज़िन्दगी बिलाशुबहा एक बहुत बड़ी करामत है, जिस का एक नमूना मुलाहिज़ा फ़रमाइए।

मुहम्मद बिन मज़ाहिम कहते हैं कि जिन दिनों हज़रत उमेर बिन सअद ﷺ "हमस" के गवर्नर थे, अचानक उन के पास अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ का एक फ़रमान पहुँचा जिस का मज़मून

यह था।

''ऐ उमेर बिन सअद! हम ने तुम को एक अहम ओहदा सुपुर्द करके ''हमस'' भेजा था, मगर कुछ पता नहीं चला कि तुम ने अपने उस उहदा को अच्छी तरह से संभाला है या नहीं, इस लिए जिस वक़्त मेरा यह फ़रमान तुम्हारे पास पहुँचे, फौरन जिस क़दर माले ग़नीमत तुम्हारे ख़ज़ाना में जमा है, सब को ऊँटों पर लाद कर और अपने साथ लेकर मदीना मुनव्वरा चले आओ और मेरे सामने हाज़िर हो जाओ।''

दरबारे ख़िलाफ़त का यह फ़रमान पढ़ का फौरन ही आप उठ खड़े हुए और अपनी लाठी में अपनी छोटी सी मश्क और खुराक की थैली और एक बड़ा प्याला लटका कर लाठी कंधे पर रखी और मुल्के शाम से पैदल चल कर मदीना मुनव्वरा पहुँचे और दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हो गए और अमीरूल मोमिनीन को सलाम किया। अमीरूल मोमिनीन ने उन को उस बुरी हालत में देखा, तो हैरान रह गए और फ़रमाया: क्यों ऐ उमेर बिन सअद! तुम्हारा हाल इतना ख़राब क्यों है? क्या तुम बीमार हो गए थे? या तुम्हारा शहर, बहुत बुरा शहर है? या तुम ने मुझे धोका देने के लिए यह ढोंग रचाया है? अमीरूल मोमिनीन के उन सवालों को सुन कर उन्हों ने निहायत ही सुकुन और सन्जीदगी के साथ अर्ज़ किया:

ऐ अमीरूल मोमिनीन! क्या अल्लाह तआला ने आप को मुसलमान के छुपे हुए हालात की ''जासूसी'' से मना नहीं फ़रमाया? आप ने यह क्यों फ़रमाया कि मेरा ख़राब हाल है? क्या आप देख नहीं रहे हैं कि मैं बिल्कुल तन्दुरूस्त व तवाना हूँ और अपनी पूरी दुनिया को अपने कंधों पर उठाए हुए आप के दरबार में हाज़िर हूँ! अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया ऐ उमेर बिन सअद! दुनिया का कौन सा सामान तुम ले कर आए हो? मैं तो तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं देख रहा हूँ। आप ने अर्ज़ किया: ऐ अमीरूल मोमिनीन! देखिए यह मेरी ख़ुराक की थैली है, यह मेरी मश्क है जिस से मैं वुज़ू करता हूँ और

उसी में अपने पीने का पानी रखता हूँ और यह मेरा प्याला है और यह मेरी लाठी है जिस से मैं अपने दुश्मनों से ज़रूरत के वक़्त जंग भी करता हूँ और साँप आदि ज़हरीले जानवरों को भी मार डालता हूँ। यह सारा सामान मेरी दुनिया नहीं है तो और क्या है? यह सुन कर अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमया: ऐ उमेर बिन सअद! खुदा तुम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए, तुम तो अजीब ही आदमी हो।

फिर अमीरूल मोमिनीन ने अवाम का हाल पूछा और मुसलमानों की इस्लामी ज़िन्दगी और ज़िम्मियों (वह काफिर जो मुस्लिम देश में अमान ले कर रहते हों) के बारे में पुछ गछ फ़रमाई, तो उन्हों ने जवाब दिया कि मेरी हुकूमत का हर मुसलमान अरकाने इस्लाम का पाबन्द और इस्लामी ज़िन्दगी के रंग में रंगा हुआ है और मैं ज़िम्मियों से टेक्स लेकर उन की पूरी पूरी हिफ़ाज़त करता हूँ और मैं अपने उहदे की ज़िम्मेदारियों को निभाने की भर पूर कोशिश करता रहा हूँ।

फिर अमीरूल मोमिनीन ने खज़ाना के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि खज़ाना कैसा? मैं हमेशा माल दार मुसलमानों से ज़कात व सदक़ात वसूल करके गरीबों व मसाकीन में तक़सीम (बाँट) कर दिया करता हूँ। अगर मेरे पास कुछ माल बचता, तो मैं ज़रूर उस को आप के पास भेज देता।

फिर अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ उमेर बिन सअद! तुम **"हमस"** से मदीना मुनव्वरा तक पैदल चल कर आए हो। अगर तुम्हारे पास कोई सवारी नहीं थी, तो क्या तुम्हारी सलतनत की सरहद में मुसलमानों और ज़िम्मियों में भला आदमी कोई भी नहीं था जो तुम को सवारी का एक जानवर दे देता। आप ने अर्ज़ किया: ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से यह भी सुना है कि मेरी उम्मत में कुछ ऐसे हाकिम होंगे कि अगर रेआया खामूश रहेगी, तो यह हुक्काम उन को बरबाद करेंगे और अगर रिआया फ़रियाद करेगी, तो यह हुक्काम उन की गर्दनें उडादेंगे और मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से यह भी सुना है कि तुम लोग अच्छी बातों का हुक्म देते रहो और बुरी

बातों से मना करते रहो, वरना अल्लाह तुम पर ऐसे लोगों को कब्ज़ा अता फ़रमा देगा जो बदतरीन इंसान होंगे। उस वक़्त नेक लोगों की दुआएँ मक्बूल नहीं होंगी। ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं उन बुरे हाकिमों में से होना पसन्द नहीं करता इस लिए मुझे पैदल चलना गवारा है, मगर अपनी रिआया से कुछ तलब करना या उन के तोहफों को क़बूल करना हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं है।

उस के बाद अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया: ऐ उमेर बिन सअद! मैं तुम्हारी कार गुज़ारियों से बेहद खुश हूँ, इस लिए तुम अपनी गवर्नरी के उहदा पर बहाल हो कर फिर हमस जाओ और वहाँ जाकर हुकूमत करो। आप ने निहायत ही नर्मी के साथ गिड़ गिड़ा कर अर्ज़ किया: ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं आप को ख़ुदा का वासता देकर अब उस उहदा को क़बूल करने से मआफ़ी का तलब गार हूँ और अब मैं हरगिज़ हरगिज़ कभी भी उस अहम उहदा को क़बूल नहीं कर सकता, इस लिए आप मुझे मआफ़ फ़रमा दीजिए।

यह सुन का अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया कि अच्छा अगर तुम इस उहदा को क़बूल नहीं कर सकते हो, तो फिर मेरी तरफ़ से इजाज़त है कि तुम अपने घर वालों में जाकर रहो, चुनान्चे यह मदीना मुनव्वरा से तीन दिन की दूरी पर एक बस्ती में जहाँ उन के अहलो अयाल रहते थे, जाकर बस गए।

इस वाक़िआ के कुछ दिनों के बाद अमीरूल मोमिनीन ने एक सौ अशर्फ़ियाँ की एक थैली अपने एक साथी को जिस का नाम **"हबीब"** था यह कहर कर दी कि तुम उमेर बिन सअद के मकान पर जाकर तीन दिन तक मेहमान बन कर रहो। फिर तीसरे दिन यह थैली मेरी तरफ़ से उन की ख़िदमत मे पेश करके कह देना कि वह इन अशर्फ़ियों को अपनी ज़रूरियात में ख़र्च करें।

चुनान्चे हज़रत हबीब ﷺ अशर्फ़ियों की थैली ले कर हज़रत उमेर बिन सअद ﷺ के मकान पर पहुँचे और अमीरूल मोमिनीन का सलाम अर्ज़ किया। आप ने सलाम का जवाब दिया और अमीरूल मोमिनीन

की ख़ैरियत पूछी और उन की हुक्मरानी की कैफ़ियत के बारे में सवाल किया। फिर अमीरूल मोमिनीन के लिए दुआएँ कीं।

हज़रत हबीब तीन दिन तक उन के मकान पर ठहरे रहे और हर दिन खाने में दोनों वक़्त एक एक रोटी और ज़ैतून का तेल उन को मिलता रहा। तीसरे दिन हज़रत उमेर बिन सअ्द ने फ़रमाया: ऐ हबीब! अब तुम्हारी मेहमानी की मुद्दत ख़त्म हो गई, इस लिए आज अब तुम अपने घर जा सकते हो। हमारे घर में बस इतना ही ख़ुराक का सामान था जो हम ने ख़ुद भूके रह कर तुम को खिला दिया। यह सुन कर हज़रत हबीब ने अशर्फ़ियों की थैली पेश कर दी और कहा कि अमीरूल मोमिनीन ने आप के ख़र्च के लिए इन अशर्फ़ियों को भेजा है। आप ने थैली हाथ से लेकर यह इरशाद फ़रमाया।

"**ऐ हबीब!** मैं रसूलुल्लाह की सोहबत से सरफ़राज़ हुआ, लेकिन उस वक़्त दुनिया की दौलत से मेरा दामन कभी दाग़दार नहीं हुआ। फिर मैं ने हज़रत अमीरूल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ की सोहबत पाई लेकिन उन के दौर में भी दौलते दुनिया की गन्दगी से मैं महफ़ूज़ ही रहा, लेकिन यह ज़माना मेरे लिए बद तरीन दौर साबित हुआ कि मैं अमीरूल मोमिनीन के हुक्म से मजबूर होकर ना चाहते हुए "**हमस**" का गवर्नर बना और अब अमीरूल मोमिनीन ने यह दुनिया की दौलत मेरे घर में भेज दी है।"

इतना कहते कहते उन की आवाज़ भर्रा गई और चीख़ मार कर ज़ार ज़ार रोने लगे और उन के आँसुओं की धार उन के रूख़्सार (गाल) पर तेज़ बारिश की तरह बहने लगी और उन्हों ने अशर्फ़ियों की थैली वापस कर दी। यह देख कर घर में से उन की बीवी साहिबा ने कहा कि आप उस थैली को वापस न कीजिए, क्योंकि यह जानशीने पैग़म्बर हज़रत उमर का तोहफा है। उस को रद कर देने से हज़रत अमीरूल मोमिनीन की बहुत बड़ी दिल शिकनी (दिल टुटना) होगी और यह आप की शान के लाइक़ नहीं है कि आप हज़रत अमीरूल मोमिनीन के दिल को सदमा पहुँचाएं इस लिए आप

इस थैली को ले कर गरीबों को दे दीजिए। बीवी साहिबा के मुख्लिसाना राय को क़बूल करते हुए आप ने थैली अपने पास रख ली और फ़ौरन ही गरीबों व मसाकीन को बुला कर तमाम अशर्फ़ियों को बाँट दिया और उस में से एक पैसा भी अपने पास नहीं रखा।

हज़रत हबीब ﷺ इस मंज़र को देख कर हैरान रह गए और मदीना मुनव्वरा पहुँच कर जब हज़रत अमीरूल मोमिनीन से सारा माजरा अर्ज़ किया तो अमीरूल मोमिनीन पर भी रिक़्क़त तारी हो गई और फूट फूट कर रोने लगे और देर तक रोते रहे। फिर जब उन के आँसू थम गए, तो फ़ौरन ही उन की तलबी के लिए एक फ़रमान लिखा और एक क़ासिद के ज़रिए यह फ़रमान उन के घर भेज दिया।

हज़रत उमेर बिन सअ्द ﷺ ने फ़रमान पढ़ कर इरशाद फ़रमाया कि अमीरूल मोमिनीन के हुक्म को मानना मुझ पर जरूरी है, यह कहा और फ़ौरन पैदल मदीना मुनव्वरा के लिए घर से निकल पड़े और तीन दिन का सफ़र करके दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हो गए।

अमीरुल मोमिनीन ने फरमाया कि ऐ उमेर बिन सअ्द! जो अशरफियाँ मैंने तुमहारे पास भेजी थीं: उनको तुमने कहाँ कहाँ खर्च किया? अर्ज़ किया! ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैंने उसी वक्त उन सब अशरफियों को ख़ुदा की राह में खर्च कर दिया।

अमीरूल मोमिनीन हैरत में उन का मुंह देखते रह गए। फिर अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से फ़रमाया कि तुम बैतुल माल में से दो कपड़े लाकर उमेर बिन सअ्द को पहना दो और एक ऊँट पर खुजूरें लाद कर उन को दे दो।आप ने अर्ज़ किया: ऐ अमीरूल मोमिनीन! कपड़ों को तो मैं क़बूल कर लेता हूँ, क्योंकि मेरे पास कपड़े नहीं हैं, मगर खुजूरें मैं हरगिज़ न लूँगा क्योंकि मैं एक साअ् खुजूरें अपने मकान पर रख कर आया हूँ जो मेरी वापसी तक मेरे अहलो अयाल के लिए काफ़ी हैं। फिर हज़रत उमेर बिन सअ्द ﷺ अमीरूल मोमिनीन से रूख़्सत होकर अपने मकान पर चले आए और उस के चन्द ही दिनों बाद उन का विसाल हो गया।

जब अमीरूल मोमिनीन को आप की रिहलत की ख़बर पहुँची, तो आप बे इख़्तियार रो पड़े और दरबार में मौजूद लोगों से फ़रमाया कि अब तुम सब लोग अपनी अपनी बड़ी ख़्वाहिशों को मेरे सामने बयान करो। फौरन ही तमाम हाज़िरीन ने अपनी अपनी बड़ी से बड़ी तमन्नाओं को ज़ाहिर कर दिया। सब की तमन्नओं का ज़िक्र सुन कर आप ने फ़रमाया लेकिन मेरी सब से बड़ी तमन्ना यह है कि काश!उमेर बिन सअद जैसे अन्दर से साफ व पाक और पैकरे अख़्लाक़ चन्द मुसलमान मुझे मिल जाते, तो मैं उन से मुसलमानों के कामों में मदद लेता।

इस के बाद आप ने हज़रत उमेर बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए दुआए मग़्फ़िरत फ़रमाई और यह कहा कि अल्लाह तआला उमेर बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए।

(कंज़ुल उम्माल जि०16, स०162 ता 166 मुख़्तसरन)

हज़रत अबू क़रसाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु

उन का असली नाम जन्दरा बिन ख़ेशना है, मगर यह अपनी कुन्नियत "अबू क़रसाफ़ा" से ज़्यादा मशहूर हैं। यह कुरैश नसल से हैं। यह शुरू इस्लाम में यतीम बच्चे थे और उन की वालिदा और ख़ाला दोनों ने उन की परवरिश की। यह बचपन में बकरियाँ चराने जाया करते थे और उन की वालिदा और ख़ाला उन को सख़्त ताकीद किया करती थीं कि ख़बरदार! तुम मक्का में कभी उन की सोहबत में न बैठना जिन्हों ने नुबुवत का दअवा किया है। मगर यह बकरियाँ चरागाह में छोड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हर दिन चले जाया करते और बकरियों के चराने पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते थे। धीरे धीरे बकरियाँ कमज़ोर हो गईं और उन के थन सूख गए।

उन की वालिदा और ख़ाला ने जब इस मामला के बारे में उन से सख़्त पूछ ताछ की तो उन्होंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने उस का तज़्किरा किया, तो आप ने उन की बकरियों के खुश्क (सूखे) थनों पर

अपना दस्ते मुबारक लगा दिया तो सब बकरियों के ख़ुश्क थन दूध से भर गए। जब उन की वालिदा और ख़ाला ने उस का सबब पूछा तो उन्हों ने हुज़ूरे अकरम ﷺ के दस्ते मुबारक लगा देने का वाक़िआ और हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की मुक़द्दस तअलीम और मुअजिज़ात का तज़करा कर दिया।

यह सुन कर उन की वालिदा और ख़ाला ने कहा, ऐ मेरे प्यारे बेटे! तुम हम को भी उन के दरबार में ले चलो। चुनान्चे उन की वालिदा और ख़ाला ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गईं और जमाले नुबुवत देखते ही कलमा पढ़ कर इस्लाम की दौलत से माला माल हो गईं और अपने घर पहुँच कर उन दोनों ने यह कहा कि हम ने अपनी आँखों से देखा कि जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ कलाम फ़रमाते थे तो उन के मुँह मुबारक से एक नूर निकलता था और हम ने हुस्ने अख़लाक़ और जमाले सूरत व कमाले सीरत के ऐतबार से किसी इंसान को हुज़ूर ﷺ से बेहतर और अच्छा नहीं देखा।

यह आख़िरी उम्र में मुल्के शाम के शहर फ़िलसतीन में बस गए थे और शाही मुहद्दसीन उन के हलक़ा-ए- दरस में शामिल हुआ करते थे। इमाम तबरानी ने उन की निस्बत के ऐतबार से "लेसी" तहरीर फ़रमाया है कि उन को "बनी लेस बिन बकर" का आज़ाद करदा गुलाम लिखा है।? (वल्लाहु तआला अअ्लम)

(कंज़ुल उम्माल जि॰16, स॰229 मतबूआ हैदरा बाद व असदुल ग़ाबा जि॰1, स॰307)

करामत

सैंकड़ों मील दूर आवाज़ पहुँचती थी: उन की यह करामत थी कि रूमी कुफ़्फ़ार ने उन के एक बेटे को गिरफ़्तार करके जेल ख़ाना में बन्द कर दिया था। हज़रत अबू क़रसाफ़ा ؓ जब नमाज़ का वक़्त आता तो असक़लान की चार दीवारी पर चढ़ते और बलन्द आवाज़ से पुकार कर कहते कि ऐ मेरे प्यारे बेटे! नमाज़ का वक़्त आ गया है और

उन की इस पुकार को हमेशा उन के साहबज़ादे सुन लिया करते थे हालाँकि यह सैकड़ों मील की दूरी पर रूमियों के क़ैदख़ाना में क़ैद थे। (तबरानी)

तबसेरा: यह करामत अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर और दूसरे बुजुर्गों से भी मनकूल है। और यह करामत भी इस बात की दलील है कि महबूबाने ख़ुदा हवा पर भी हुकूमत फ़रमाया करते हैं, क्योंकि आवाज़ को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना हवाओं ही का काम है, जिस पर पहले भी हम रोशनी डाल चुके हैं।

इस क़िसम की करामतों से पता चलता है कि ख़ुदा वन्दे कुदूस ने अपने औलियाए किराम को दुनिया में तसर्रूफ़ात की ऐसी हुक्मरानी व बादशाही बल्कि शहंशाही अता फ़रमाई है कि वह दुनिया की हर हर चीज़ पर अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हुकूमत करते हैं।

हज़रत हस्सान बिन साबित

यह क़बीला अन्सार के ख़ा़नदान ख़ज़रज के बहुत ही नामी गिरामी शख़्स हैं और दरबारे रिसालत के बहुत खास शायर होने की हैसियत से तमाम सहाबा-ए-किराम में एक ख़ुसूसी दर्जे के साथ मुमताज़ हैं। आप ने हुजूरे अकरम की तअ़रीफ में बहुत से क़सायद लिखे और कुफ़्फ़ारे मक्का जो शाने रिसालत में बुराई लिख कर बे अदबियाँ करते थे। आप अपने अशआर में उन का मुँह तोड़ जवाब दिया करते थे। हुजूर शहंशाहे मदीना उन के लिए ख़ा़स तौर पर मस्जिदे नबवी में मिंबर रखवाते थे, जिस पर खड़े हो कर यह रसूलुल्लाह की शाने अक़दस में नअत ख़्वानी करते थे।

उन की कुन्नियत "अबूल वलीद" है और उन के वालिद का नाम "साबित" और उन के दादा का नाम "मंज़र" और पर दादा का नाम "हराम" है और उन चारों के बारे में एक तारीख़ी लतीफ़ा यह है कि उन चारों की उम्रें एक सौ बरस हुई जो दुनिया की अजीब चीजों में से एक अजूबा है।

हज़रत हस्सान बिन साबित رضي الله عنه की एक सौ बीस बरस की उम्र में से साठ बरस जाहलियत और साठ बरस इस्लाम में गुज़रे।सन ४० हिजरी में आप का विसाल हुआ।

(अकमाल स०560 मिश्कात बाबुल बयान वश्शुअरा स०410 व हाशिया बुख़ारी बहवाला किरमानी जि०2, स०594)

करामात

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम मददगार: उन की एक ख़ास करामत यह है कि जब तक यह नअत ख़्वानी फ़रमाते रहते थे, हज़रत जिब्राईल عليه السلام उन की इमदाद व नुसरत के लिए उन के पास मौजूद रहते थे। क्योंकि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने उन के बारे में इरशाद फ़रमाया है: ان الله يؤيد حسان بروح القدس مانا فح اوفاخرعن رسول الله ﷺ (यअनी जब तक हस्सान मेरी तरफ़ से कुफ़्फ़ार को डेफ़ेन्सीव जवाब देते और मेरे बारे में इज़्हारे फ़ख़्र करते रहते हैं, हज़रत जिब्राईल عليه السلام उन की मदद फ़रमाते रहते हैं।) **(मिश्कात बाबुल बयान वश्शुअर स०410)**

करामत वाली कुव्वते शामा:-(सुंघने की ताक़त) जबला ग़सानी जो ख़ानदाने जुफ़ना का एक शख़्स था। उस ने हज़रत हस्सान رضي الله عنه के लिए तोहफ़ा के तौर पर कुछ सामान हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर رضي الله عنه को तोहफ़ा सुपुर्द करने के लिए बुलाया।हज़रत हस्सान बारगाहे ख़िलाफ़त में पहुँचे तो चौखट पर खड़े हो कर सलाम किया और अर्ज़ किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! मुझे ख़ानदाने जुफ़ना के तोहफ़ों की ख़ुश्बू आ रही है जो आप के पास हैं। आप ने इरशाद फ़रमाया कि हाँ जबला ग़स्सानी ने तुम्हारे लिए हदिया भेजा है जो कि मेरे पास है, इसी लिए मैं ने तुम को तलब किया है।

इस वाक़िआ को नक़्ल करने वाले का बयान है कि ख़ुदा की क़सम! हज़रत हस्सान رضي الله عنه की यह हैरत अंगेज़ व तअज्जुब ख़ेज़ बात से कभी भी भूल नहीं सकता कि उन्हें इस हदिया की किसी ने पहले से कोई ख़बर नहीं दी थी। फिर आख़िर उन्हें चौखट पर खड़े होते ही

इस हदिया की ख़ुश्बू कैसे और क्योंकर महसूस हो गई? और उन्हों ने इस चीज़ को कैसे सूंघ लिया कि वह हदिया ख़ानदाने जुफ़ना से यहाँ आया है। (शवाहिदुन्नबूवा स०232)

तबसेरा: बिला ख़ुश्बू वाले सामानों को सूंघ कर जान लेना और फिर यह भी सूंघ लेना कि हदिया देने वाला किस ख़ानदान का आदमी है? ज़ाहिर है कि यह चीज़ें सूंघने की नहीं हैं, फिर भी उन को सूंघ लेना उस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है?

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा رضی اللہ عنہ

यह हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के गुलाम थे, लेकिन आप ने उन को आज़ाद फ़रमा कर अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था और अपनी बांदी हज़रत उम्मे यमन رضی اللہ عنہا से उनका निकाह फ़रमा दिया था जिन के पेट से उनके साहबज़ादे हज़रत उसामा बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ पैदा हुए। उन की एक बड़ी ख़ास ख़ुसूसियत यह है कि उन के सिवा क़ुरआन मजीद में दूसरे किसी सहाबी का नाम ज़िक्र नहीं है। यह बहुत ही बहादुर मुजाहिद थे। गुलामों में सब से पहले उन्हों ने ही इस्लाम क़बूल किया। "जंगे मौता" की मश्हूर लड़ाई में जब आप तमाम इस्लामी फ़ौजों के कमान्डर थे सन् 8 हिजरी में कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए जामे शहादत नोश फ़रमाया। (अकमाल स०595 व असदुल ग़ाबा जि०2, स०224 ता 227)

करामत

सातवें आसमान का फ़रिश्ता ज़मीन पर: आप की एक करामत बहुत ज़्यादा मश्हूर और मुस्तनद है कि एक मर्तबा आप ने सफ़र के लिए ताइफ़ में एक ख़च्चर केराया पर लिया। ख़च्चर वाला डाकू था। वह आप को सवार करके ले चला और वीरान व सुनसान जगह पर लेजाकर आप को ख़च्चर से उतार दिया और एक ख़ंजर लेकर आप की तरफ़ हमला के इरादे से बढ़ा। आप ने यह देखा कि वहाँ हर तरफ़ लाशों के ढांचे बिखरे पड़े हुए हैं। आप ने उस से फ़रमाया कि ऐ

शख़्स! तू मुझे क़त्ल करना चाहता है तो ठहर! मुझे इतनी छूट दे दे कि मैं दो रकअत नमाज़ पढ़ लूँ। उस बदनसीब ने कहा कि अच्छा तू नमाज़ पढ़ ले। तुझ से पहले भी बहुत से मक़्तूलों ने नमाज़ें पढ़ी थीं, मगर उन की नमाज़ों ने उन की जान न बचाई।

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा رضی اللہ عنہ का बयान है कि जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हो गया तो वह मुझे क़त्ल करने के लिए मेरे क़रीब आ गया तो मैं ने दुआ मांगी और (یا ارحم الراحمین) कहा ग़ैब से यह आवाज़ आई कि ऐ शख़्स! तू इन को क़त्ल मत कर। यह आवाज़ सुन कर वह डाकू डर गया और इधर उधर देखने लगा। जब कोई नज़र नहीं आया तो वह फिर मेरे क़तल के लिए आगे बढ़ा तो मैं ने फिर बलन्द आवाज़ से (یا ارحم الراحمین) कहा और ग़ैबी आवाज़ आई। फिर तीसरी मर्तबा जब मैं ने (یا ارحم الراحمین) कहा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स घोड़े पर सवार है और उस के हाथ में नेज़ा है और नेज़े की नोक पर आग का एक अंगारा है। उस शख़्स ने आते ही डाकू को सीने में इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि नेज़ा उस के सीने को छेदता हुआ उस की पीठ के पार निकल गया और डाकू ज़मीन पर गिर कर मर गया। फिर वह सवार मुझ से कहने लगा कि जब तुम ने पहली मर्तबा या अरहमर्रहिमीन (یا ارحم الراحمین) कहा, तो मैं सातवें आसमान पर था और जब दूसरी मर्तबा तुम ने या अरहमर्रहिमीन (یا ارحم الراحمین) कहा, तो मैं आसमाने दुनिया पर था और जब तीसरी मर्तबा तुम ने या अरहमर्रहिमीन (یا ارحم الراحمین) कहा, तो मैं तुम्हारे पास इमदाद व नुसरत के लिए हाज़िर हो गया।

(इस्तियाब जि॰1, स॰548)

तबसेरा: इस से सबक़ मिलता है कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के असमाए हुसना (नामे पाक) और मोमिन की दुआओं से बड़ी बड़ी बलाएं टल जाती हैं और ऐसी ऐसी इमदाद और आसमानी नुस्रतों का ज़ुहूर हुआ करता है जिन को ख़ुदावन्दे करीम के फ़ज़्ल के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता, मगर अफ़सोस कि आज कल के मुसलमान मुसीबतों

के हुजूम में भी दुनियावी वसीलों की तलाश में भागे भागे फिरते हैं और लीडरों, हाकिमों और दौलत मंदों के मकानों का चक्कर लगाते रहते हैं मगर (ارحم الراحمين) और (احكم الحاكمين)के दरबारे अज़मत में : ड़ गिड़ा कर अपनी दुआओं की अर्ज़ी नहीं पेश करते और अल्लाह जल्ल जलालहू से इमदाद व नुसरत की भीक नहीं मांगते, हालांकि ईमान यह है कि बेग़ैर फ़ज़्ले रब्बी के कोई इंसानी ताक़त किसी की भी कोई इमदाद न नुसरत नहीं कर सकती। अफ़सोस! सच कहा है किसी हक़ीक़त पहचानने वाले ने।

इस तरफ़ उठते नहीं हाथ जहाँ सब कुछ है
पावों चलते हैं उधर को कि जहाँ कुछ भी नहीं

हज़रत उक़बा बिन नाफ़िअ फ़हरी ﷺ

हज़रत अमीरे मआविया ﷺ ने अपने दौरे हुकूमत में उन को अफ़्रीक़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था और उन्हों ने अफ़्रीक़ा के कुछ हिस्सों को फ़तह कर लिया और बरबरी लोग जो इस मुल्क के अस्ली रहने वाले थे, उन के बहुत से बाशिन्दे दामने इस्लाम में आ गए। उन्हों ने इस मुल्क में इस्लामी फौजों के लिए एक छावनी बनाने और एक इस्लामी शहर आबाद करने का इरादा फ़रमाया, लेकिन इस मक़सद के लिए आबादकारी के माहीरीन ने जिस जगह का चुनाव किया, वहाँ एक निहायत ही ख़ौफ़नाक और गुनजान जंगल था जो जंगली दरिन्दों और हर क़िस्म की तक्लीफ पहुँचाने वाले और ज़हरीले कीड़ों और जानवरों का गढ़ था। उस मौक़ा पर हज़रत उक़बा बिन नाफ़िअ ﷺ की एक अजीब करामत का ज़ुहूर हुआ।

करामत

एक पुकार से दरिन्दे फ़रार:-मरवी है कि हज़रत उक़बा बिन नाफ़िअ ﷺ के उस लश्कर में अट्ठारा सहाबी मौजूद थे। आप ने उन मुक़द्दस सहाबियों को जमा फ़रमाया और उन बुज़ुर्गों को अपने साथ

ले कर उस ख़ौफ़नाक और घने जंगल में तशरीफ़ ले गए और बलन्द आवाज़ से यह ऐलान फ़रमाया।

"ऐ दरिन्दो! और हलाक करने वाले जानवरों! हम रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा हैं और हम इस जगह अपनी बस्ती बसा कर आबाद होना चाहते हैं, इस लिए तुम सब यहाँ से निकल जाओ वरना उस के बाद हम तुम में से जिस को यहाँ देखेंगे क़त्ल कर देंगे।"

इस ऐलान के बाद उस आवाज़ में ख़ुदा ही जानता है कि क्या असर था कि सब दरिन्दों और कीड़ों में हल चल मच गई और ग़ोल दर ग़ोल उस जंगल के जानवर निकलने लगे। शेर अपने बच्चों को उठाए हुए, भेड़ अपने पिल्लों को लिए हुए साँप अपने संपोलियों को कमर से चिमटाए हुए जंगल से बाहर निकले जा रहे थे और यह एक अजीब हैबत नाक और दहशत अंगेज़ मंज़र था जो न उस से पहले देखा गया न यह किसी के वहम व गुमान में था। यहां तक कि पूरा जंगल जानवरों से ख़ाली हो गया और साहाबा-ए-किराम और पूरे लश्कर ने उस जंगल को काट कर सन् 50 हिजरी में एक शहर आबाद किया, जिस का नाम "क़ैरवान" है। यह शहर इसी लिए मुसलमानों में बहुत ज़्यादा क़ाबिले एहतराम शुमार किया जाता है कि । इस शहर की आबादी में सहाबा-ए-किराम के मुक़द्दस हाथों का बहुत ज़्यादा हिस्सा है और यही वजह है कि हज़ारों बड़े बड़े उलमा व मशाइख़ उस सर ज़मीन की आग़ोशे ख़ाक से उठे और फिर इसी मुक़द्दस ज़मीन की आग़ोशे लहद में दफ़न होकर उस ज़मीन का ख़ज़ाना बन गए। (मुअजमुल बलदान तज़करहु क़ैरवान)

घोड़े की टाप से चश्मा जारी: हज़रत उक़्बा बिन नाफ़िअ رضی اللہ عنہ की यह करामत भी बहुत हैरत अंगेज़ और इबरत खेज़ है कि अफ़्रीक़ा के जिहादों में एक मर्तबा उन का लश्कर एक ऐसे मक़ाम पर पहुँच गया, जहाँ दूर दूर तक पानी नहीं था। जब इस्लामी लश्कर पर प्यास का ग़लबा हुआ और तमाम लोग प्यास से परीशान हो कर बे पानी की मछली की तरह तड़पने लगे तो हज़रत उक़्बा बिन नाफ़िअ رضی اللہ عنہ ने दो

रकअत नमाज़ पढ़ कर दुआ मांगी। अभी आप की दुआ ख़त्म नहीं हुइ थी कि आप के घोड़े ने अपने खुर से ज़मीन को कुरेदना शुरू कर दिया। आप ने उठ कर देखा, तो मिट्टी हट चुकी थी और एक पत्थर नज़र आ रहा था। आप ने जैसे ही उस पत्थर को हटाया तो एक दम उस के नीचे से पानी का एक चश्मा फूट निकला और इस क़दर पानी बहने लगा कि सारा लश्कर सैराब हो गया और तमाम जानवरों ने भी पेट भर कर पानी पिया और लश्कर के तमाम सिपाहियों ने अपनी अपनी मश्कों को भी भर लिया और उस चश्मे को बहता हुआ छोड़ कर लश्कर आगे रवाना हो गया।

(मुअजमुल बलदान तज़करहु क़ैरवान)

हज़रत अबू ज़ैद अन्सारी

अबू ज़ैद उन की कुन्नियत है। उन के नाम में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ का क़ौल है कि उन का नाम सईद बिन उमेर'' है और बाज़ कहते हैं कि उन का नाम क़ैस बिन सकन'' है। उन का ख़ानदानी तअल्लुक़ क़बीला अन्सार से है और उन का वतन मदीना मुनव्वरा है। यह उन सहाबा-ए-किराम में से हैं जो हुज़ूर की मौजूदगी में हाफ़िज़े क़ुरआन हो चुके थे।

करामत

सौ (100) बरस का जवान:- हुज़ूरे अक़दस ने अपना दस्ते मुबारक एक मर्तबा उन के सर पर फेरा और उन को यह दुआ दी कि या अल्लाह इस के हुस्न व खूबसूरती को हमेशा क़ायम रख। रावी का बयान है कि सौ बरस के कुछ ज़ायद उम्र के हो गए थे, लेकिन उन के सर और दाढ़ी का एक बाल भी सफ़ैद नहीं हुआ था, न उन के चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी थीं। वफ़ात के वक़्त तक उन के चेहरे पर जवानी का जमाल बर क़रार रहा जो बिला शुबहा उन की एक करामत है। (दलाइलुन्नबुवा लिअबी नईम स॰166)

हज़रत औफ़ बिन मालिक رضی اللہ عنہ

उन की कुन्नियत के बारे में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ का क़ौल है कि उन की कुन्नियत "अबू अब्दुर्रहमान" है। और बाज़ के नज़दीक "अबू हम्माद" और कुछ लोगों ने कहा कि "अबू उमर" है।

इस्लाम लाने के बाद सब से पहला जिहाद जिस में उन्होंने शिरकत की, वह जंगे ख़ैबर है। यह बहुत ही जाँबाज़ और मुजाहिद सहाबी थे। फ़तहे मक्का के दिन क़बीला अशजअ का झण्डा उन्हीं के हाथ में था। मुल्के शाम में सुकूनत कर ली थी। और हदीस में कुछ सहाबा और बहुत से ताबईन उन के शागिर्द हैं। शहरे दमश्क में सन् 73 हिजरी में उन का विसाल शरीफ़ हुआ।

(असदुल ग़ाबा जि॰4, स॰156)

करामत

पुकार पर जानवर दौड़ पड़े: हज़रत मुहम्मद बिन इसहाक़ का बयान है कि हज़रत औफ़ बिन मालिक رضی اللہ عنہ को कुफ़्फ़ार ने गिरफ़्तार करके उन्हें तांतों से बांध रखा था। उन के वालिद मालिक अशजई رضی اللہ عنہ हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और माजरा अर्ज़ किया। आप ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपने बेटे औफ़ के पास किसी क़ासिद के ज़रिए यह कहला दो कि वह बकसरत पढ़ते रहें।:

(لاحول ولا قوة الا بالله العلى العظيم)

चुनान्चे हज़रत औफ़ बिन मालिक رضی اللہ عنہ यह वज़ीफ़ा पढ़ने लगे। एक दिन अचानक उन की तमाम तातें टूट गईं और वह आज़ाद होकर कुफ़्फ़ार की क़ैद से निकल पड़े और एक ऊँटनी पर सवार होकर चल पड़े। रास्ता में एक चरागाह के अन्दर कुफ़्फ़ार के सैकड़ों ऊँट चर रहे थे। आप ने उन ऊँटों को पुकारा, तो वह सब के सब दौड़ते भागते हुए आप की ऊँटनी के पीछे चल पड़े। उन्होंने मकान पर पहुँच कर अपने वालिदैन को पुकारा तो वह सब उन की आवाज़ सुन कर माँ बाप

और नौकर दौड़ पड़े और यह देख कर हैरान रह गए कि हज़रत औफ़ बिन मालिक رضی اللہ عنہ ऊँटों के ज़बरदस्त रेवड़ के साथ मौजूद हैं सब खुश हो गए।

उन के वालिद हज़रत मालिक अशजई رضی اللہ عنہ ने बारगाहे नुबुवत में पहुँच कर सारा क़िस्सा सुनाया और ऊँटों के बारे में भी अर्ज़ किया तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि उन ऊँटों को तुम जो चाहो करो, तुम्हारा बेटा उन ऊँटों का मालिक हो चुका, में उन ऊँटों में कोई दखल नहीं करूँगा। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से एक रिज़्क़ है जो तुम्हें अता किया गया।

रिवायत है कि उसी मौक़अ पर यह आयत नाज़िल होई।

ومن يتق الله يجعل له مخرجا و يرزقه من حيث لا يحتسب ومن يتوكل على الله فهو حسبه

(सूरा तलाक़ पारा 28)

तर्जमा: और जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है, अल्लाह तआला उस के लिए नुकसान की चीजों से निजात की शकल निकाल देता है और उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचाता है जहाँ उस को गुमान भी नहीं होता और जो शख़्स अल्लाह तआला पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआला उस के लिए काफ़ी है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब जिल्द 3, सफा 105 व तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द4, सफा 380)

हज़रत फ़ातिमतुज्ज़हरा رضی اللہ عنہا

यह हुज़ूर शहंशाहे दो आलम ﷺ की सब से ज़्यादा प्यारी बेटी हैं। उन का लक़ब (سیدہ نساء العالمین) (सारे जहाँ की औरतों की सरदार हैं। हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन के बारे में इरशाद फ़रमाया कि फ़ातिमा मेरी बेटी मेरे बदन का हिस्सा है। जिस ने उस का दिल दुखाया, उस ने मेरा दिल दुखाया और जिस ने मेरा दिल दुखाया उस ने अल्लाह तआला को तक्लीफ दी। उन के फ़ज़ाइल व खूबियों में बहुत सी अहादीस वारिद हुई हैं। रमज़ान सन् 2 हिजरी में मदीना मुनव्वरा में उन का निकाह हज़रत अली बिन अबी तालिब رضی اللہ عنہ के साथ हुआ और

ज़िलहिज्जा सन २ हिजरी में रूख़सती हुई। उन के पेट से हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन और इमाम मुहसिन तीन साहबज़ादगान और हज़रत ज़ैनब व रोक़य्या व उम्मे कुलसूम तीन बेटियाँ पैदा हुईं। हुज़ूरे अक़दस ﷺ के बाद सिर्फ़ छः माह ज़िन्दा रहीं। 28 बरस की उम्र में आलमे फ़ानी से आलमे जावदानी (आख़िरत) की तरफ़ रिहलत फ़रमा हुईं।

हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रात को सुपुर्दे ख़ाक की गई। मज़ार मुबारक मदीना मुनव्वरा में है।

(अकमाल स़ 613 वग़ैरा)

करामात

बरकत वाली सेनी: आप की करामतों मे से एक करामत यह है कि आप एक दिन एक बोटी और दो रोटियाँ ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं। रहमते आलम ﷺ ने अपनी प्यारी बेटी के उस तोहफ़े को क़बूल फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ लख़्ते जिगर! तुम उस सेनी को अपने ही घर में ले कर चलो। फिर ख़ुद हुज़ूर सैय्यदे आलम ﷺ ने हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ होकर उस सेनी को खोला, तो घर के तमाम लोग यह देख कर हैरान रह गए कि वह सेनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई थी। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया(انی لک هذا)(ऐ बेटी! यह सब तुम्हारे लिए कहाँ से आया?)तो हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا ने अर्ज़ किया,(هو من عند الله ان الله يرزق من يشاء بغير حساب)(यअनी यह अल्लाह तआला की तरफ़ से आया है, वह जिस को चाहता है, बे शुमार रोज़ी देता है।)

फिर हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा व हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन और दूसरे अहले बैत رضی اللہ عنہم को जमा फ़रमा कर सब के साथ सेनी में खाना खाया। फिर भी उस खाने में इस क़दर हैरत नाक और तअज्जुब ख़ेज़ बरकत ज़ाहिर हुई कि सेनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई रह गई और उस को हज़रत बीबी

फ़ातिमा ने अपने पड़ोसियों और दूसरे फकीरों को खिलाया।

(रूहुल बयान आले इमरान स०323)

शाही दअवत: रिवायत है कि एक दिन हज़रत उस्मान ग़नी ने शहंशाहे मदीना हुजूर नबीए करीम की दअवत की। जब दोनों आलम के मेज़बान, हज़रत उस्मान के मकान पर गए तो हज़रत उस्मान ग़नी आप के पीछे चलते हुए आप के क़दमों को गिनने लगे और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर कुरबान! मेरी तमन्ना है कि हुजूर के एक एक क़दम के बदले में आप की तअज़ीम व तकरीम के लिए एक एक गुलाम आज़ाद करूँ चुनान्चे हज़रत उस्मान ग़नी के मकान तक जिस क़दर हुजूर के क़दम पड़े थे, हज़रत उस्मान ग़नी ने इतनी ही तअदाद में ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

हज़रत अली ने उस दअवत से मुतअस्सिर होकर हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा से कहा: ऐ फ़ातिमा! आज मेरे दीनी भाई हज़रत उस्मान ने हुजूरे अकरम की बड़ी ही शान दार दअवत की है और हुजूरे अकरम के हर हर क़दम के बदले एक गुलाम आज़ाद किया है। मेरी भी तमन्ना है कि काश! हम भी हुजूर की इसी तरह शान दार दअवत कर सकते। हज़रत फ़ातिमा ने अपने शौहर हज़रत अली दुलदुल के सवार के उस तअस्सुर से मुतअस्सिर होकर कहा बहुत अच्छा जाइए। आप भी हुजूर को उसी क़िस्म की दअवत दे आइए। इन्शाअल्लाह तआला हमारे घर में भी उसी क़िस्म का सारा इन्तेज़ाम हो जाएगा।

चुनान्चे हज़रत अली ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर दअवत दे दी और शहंशाहे दो आलम अपने सहाबा-ए-किराम की एक बडी जमाअत को साथ लेकर अपनी प्यारी बेटी के घर में तशरीफ़ फ़रमा होगए। हज़रत सैय्यदा ख़ातूने जन्नत अकेले में तशरीफ़ ले जाकर ख़ुदावन्दे कुद्दूस की बारगाह में सर बसुजूद हो गईं और यह दुआ मांगीं।

"या अल्लाह! तेरी बन्दी फ़ातिमा ने तेरे महबूब और महबूब के असहाब की दअवत की है। तेरी बन्दी का सिर्फ़ तुझ ही पर भरोसा है। लेहाज़ा ऐ मेरे रब! तू आज मेरी लाज रख ले और इस दअवत के खानों का तू ग़ैब से इन्तज़ाम फ़रमा।"

यह दुआ मांग कर हज़रत बीबी फ़ातिमा ने हांडियों को चूल्हों पर चढ़ा दिया। ख़ुदावन्दे तआला का दरियाए करम एक दम जोश में आ गया और उस रज़्ज़ाक़े मुतलक़ ने एक ही पल में उन हांडियों को जन्नत के खानों से भर दिया।

हज़रत बीबी फ़ातिमा ने उन हांडियों में से खाना निकालना शुरू कर दिया और हुज़ूर अपने सहाबा-ए -किराम के साथ खाना खाने से फ़ारिग़ हो गए, लेकिन ख़ुदा की शान की हांडियों में से खाना कुछ भी कम नहीं हुआ और सहाबा-ए-किराम उन खानों की ख़ुश्बू और लज़्ज़त से हैरान रह गए। हुज़ूरे अकरम ने सहाबा -ए-किराम की हैरत देख कर फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि यह खाना कहाँ से आया है? सहाबा-ए-किराम ने अर्ज़ किया कि नहीं या रसूलल्लाह! आप ने इरशाद फ़रमाया कि यह खाना अल्लाह तआला ने हम लोगों के लिए जन्नत से भेज दिया है।

फिर हज़रत फ़ातिमा अकेले में सजदा रेज़ हो गईं और यह दुआ मांगने लगीं कि या अल्लाह! हज़रत उस्मान ने तेरे महबूब के एक एक क़दम के बदले एक एक ग़ुलाम आज़ाद किया है, लेकिन तेरी बन्दी फ़ातिमा को इतनी हैसियत नहीं है। इस लिए ऐ ख़ुदावन्दे करीम! जहाँ तू ने मेरी ख़ातिर जन्नत से खाना भेज कर मेरी लाज रख ली है, वहाँ तू मेरी ख़ातिर अपने महबूब के उन क़दमों के बराबर जितने क़दम चल कर मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं अपने महबूब की उम्मत के गुनहगार बन्दों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे।

हज़रत फ़ातिमा यूं ही इस दुआ से फ़ारिग़ हुई एक दम अचानक हज़रत जिब्राईल यह ख़ुशख़बरी ले कर बारगाहे रिसालत में उतर पड़े कि या रसूलल्लाह! हज़रत फ़ातिमा की दुआ बारगाहे इलाही में

मक़बूल हो गई। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि हम ने आप के हर क़दम के बदले मे एक एक हज़ार गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया। (जामिउल मुअजिज़ात मिस्री स॰ 65 बहवाला सच्ची हिकायात)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा

यह अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं और हुज़ूरे अकरम ﷺ की अज़्वाजे मुतह्हरात में सब से ज़्यादा आप को महबूब हैं। उन से बहुत ज़्यादा अहादीस मरवी हैं। फ़िक़ही मालूमात में भी उन का दर्जा बहुत ही बलन्द है। बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम उन से मसाइल पूछा करते थे। रोज़ा व नमाज़ और दूसरी इबादतों व रियाज़तों में भी आप अज़्वाजे मुतह्हरात में ख़ुसूसी इम्तियाज़ के साथ मुमताज़ थीं।

सन् 57 हिजरी या सन् 58 हिजरी में मदीना मुनव्वरा में दुनियाए फ़ानी से आलमे आख़िरत की तरफ़ उनकी रेहलत हुई और जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़ून हुईं। (अकमाल स॰612)

करामत

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम उन को सलाम करते थे: उनकी एक करामत यह है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम उन को सलाम करते थे, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में एक हदीस है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि आइशा! यह हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं जो तुम को सलाम कहते हैं, तो आप ने जवाब में अर्ज़ किया وعليه السلام ورحمة الله وبركاته वअलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि बरकातहू (बुख़ारी जि॰1, स॰ 532)

उन के लिहाफ़ में वही उतरी: हुज़ुर ﷺ ने फ़रमाया कि आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के सिवा मेरी किसी दूसरी बीवी के कपड़ों में मुझ पर वही नहीं उतरी और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं और रसूलुल्लाह ﷺ एक

लिहाफ़ में सोए रहते थे और आप पर ख़ुदा तआला की वही नाज़िल हुआ करती थी।

(मिश्कात जि०2, स०573 व कंज़ुल उम्माल जि16, स०207)

आप के वसीले से बारिश: एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा में बारिश नहीं हुई और लोग सख़्त क़हत (सूखे) में मुब्तला होकर बिलबिला उठे। जब लोग क़हत की शिकायत ले कर हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा की ख़िदमते अक़दस में पहुँचे, तो आप ने फ़रमाया कि मेरे कमरे में जहाँ हुज़ूरे अनवर की क़ब्रे अनवर है, उस हुजरे मुबारका की छत में एक सूराख़ कर दो ताकि हुजरा (कमरा) मुनव्वर से आसमान नज़र आने लगे, चुनान्चे जैसे ही लोगों ने छत में सुराख़ बनाया, फ़ौरन ही बारिश शुरू हो गई और मदीना मुनव्वरा के इर्द गिर्द की ज़मीन हरी भरी हो गई और उस साल घास और जानवरों का चारा भी इस क़दर ज़्यादा हुआ कि कसरते (ज़्यादा) ख़ुराक से ऊँट मोटे हो गए और चरबी की ज़्यादती से उन के बदन फूल गए।

(मिश्कात जि०2, स०545)

हज़रत उम्मे ऐमन

उन का नाम "बरका" है यह हुज़ूरे अक़दस के वालिद माजिद हज़रत अब्दुल्लाह की बांदी थीं जो हुज़ूरे अकरम को आप के वालिद माजिद की वरासत में से मिली थीं। उन्हों ने हुज़ूरे अकरम की बचपन में बहुत ज़्यादा ख़िदमत की है। यही आप को खाना खिलाया करती थीं, कपड़े पहनाया करती थीं, ऐलाने नुबुवत के बाद जल्द ही उन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर आप ने अपने आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा से उन का निकाह कर दिया। उन के पेट से हज़रत उसामा पैदा हुए जिन से रसूले अकरम इस क़दर ज़्यादा मुहब्बत फ़रमाते थे कि आम तौर पर सहाबा-ए-किराम हज़रत उसामा को "महबूबे रसूल" कहा करते थे।

करामत

कभी प्यास नहीं लगी: हज़रत उम्मे ऐमन رضي الله عنها का बयान है कि जब मैं मक्का मुकर्रमा से हिजरत करके रवाना हुई तो मेरा खाना पानी रास्ता में सब ख़त्म हो गया और मैं जब "**मक़ामे रोहा**" में पहुँची तो प्यास की सख़्ती से बे क़रार हो कर ज़मीन पर लेट गई, इतने में मुझे महसूस हुआ कि मेरे सर के ऊपर कुछ आहट हो रही है। जब मैं ने सर उठा कर देखा तो यह नज़र आया कि पानी से भरा चमकदार रस्सी में बंधा हुआ आसमान से ज़मीन पर एक डोल उतर रहा है, मैंने लपक कर उस डोल को पकड़ लिया और ख़ूब जी भर कर पानी पी लिया। उस के बाद मेरा यह हाल है कि मुझे कभी प्यास नहीं लगी। मैं सख़्त गरमियों में रोज़ा रखती हूँ और रोज़ा की हालत में सख़्त चिलचिलाती हुई धूप में कअबा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ करती हूँ ताकि मुझे प्यास लग जाए लेकिन उस के बावजूद मुझे कभी प्यास नहीं लगी। (हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि०2, स०874 बहवाला बैहक़ी)

हज़रत उम्मे शरीक दोसिया رضي الله عنها

यह क़बीला दोस की एक सहाबिया हैं जो अपने वतन से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चली आई थीं।

करामात

गैबी डोल: यह अपने क़बीला दोस से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा जा रही थीं और रोज़ादार थीं शाम को एक यहूदी के मकान पर पहुँचीं ताकि पानी पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लें। दुश्मने इस्लाम यहूदी को जब उन के मुसलमान और रोज़ादार होने का इल्म हुआ तो उस ज़ालिम ने उन को मकान की एक कोठरी में बन्द कर दिया ताकि उन को एक क़तरा पानी न मिल सके जिस से यह रोज़ा इफ़्तार कर सकें। हज़रत उम्मे शरीक رضي الله عنها अन्हा बन्द कोठरी में लेटी हुई थीं और

बेहद फ़िक्र में थीं, सूरज डूब चुका है और कोठरी में खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद नहीं है। आख़िर मैं किस चीज़ से रोज़ा इफ़्तार करूँ? इतने में बन्द और अंधेरी कोठरी में अचानक किसी ने उन के सीने पर ठंडे पानी से भरा हुआ डोल रख दिया और उन्हों ने उस पानी को पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लिया।

(हुज्जतुल्लाह जि॰2, स॰875)

ख़ाली कुप्पा घी से भर गया: रिवायत है कि हज़रत उम्मे शरीक दोसिया के पास चमड़े का एक कुप्पा था जिस को वह अक्सर लोगों को उधार दे दिया करती थीं। एक दिन उन्होंने उस कुप्पा में फूंक मार कर उस को धूप मे रख दिया तो वह घी से भर गया। फिर हमेशा उस कुप्पा में से घी निकलता रहा। इस बात का पूरे शहर और इलाकों में इस क़दर चरचा हो गया था कि लोग आम तौर पर यह कहा करते थे कि हज़रत उम्मे शरीक का कुप्पा ख़ुदा की निशानियों में से एक बहुत बड़ी निशानी है।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि॰2, स॰875 बहवाला इब्ने सअद)

हज़रत उम्मे सायब

यह एक बुढ़िया नाबीना सहाबिया थीं जो अपने वतन से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चली आई थीं।

करामत

दुआ से मुर्दा ज़िन्दा हो गया: हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि हज़रत उम्मे सायब का बेटा नव उम्री में अचानक इन्तक़ाल कर गया। हम लोगों ने उस लड़के की आँखों को बन्द करके उस को एक कपड़ा उढ़ा दिया और उस की माँ के पास पहुँच कर लड़के की मौत की ख़बर सुनाई और तअज़ियत व तसल्ली के कलमात कहने लगे। हज़रत उम्मे सायब अपने बेटे की मौत की ख़बर सुन कर चौंक गई, और रोने लग गई। फिर उन्हों ने अपने दोनों हाथों को उठा

कर इस तरह दुआ मांगी।

"या अल्लाह! मैं तुझ पर ईमान लाई और मैं ने अपना वतन छोड़ कर तेरे रसूल की तरफ़ हिजरत की है, इस लिए ऐ मेरे ख़ुदा! मैं तुझ से दुआ करती हूँ कि तू मेरे लड़के की मुसीबत मुझ पर मत डाल।"

यह दुआ ख़त्म होते ही हज़रत उम्मे सायब का मुर्दा बेटा अपने चेहरे से कपड़ा उठा कर उठ बैठा और ज़िन्दा होगया।

(इब्ने अबिद्दुनिया व बैहक़ी वल बदाया वन्नहाया जि०6, स०154 ता 259)

तबसेरा: इस क़िस्म की करामत बहुत से बुज़ुर्गाने दीन ख़ुसूसन हज़रत सैय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी वग़ैरा औलिया-ए-उम्मत से बारहा ज़ुहूर में आ चुकी हैं। क्योंकि अल्लाह तआला अपने महबूब बन्दों की दुआओं और उन की ज़बान से निकले हुए अलफ़ाज़ को अपने फ़ज़्ल व करम से रद नहीं फ़रमाता, चुनान्चे किसी सच्चे ने कहा है।

जो वज्द के आलम में निकले लबे मोमिन से
वह बात हक़ीक़त में तक़दीरे इलाही है

हज़रत ज़नीरा

करामत

अंधी आँखें रोशन हो गईं:- यह हज़रत उमर के घराने की लौंडी थीं। इस्लाम की सच्चाई उन के दिल में घर कर गई। हज़रत उमर उस वक़्त मुसलमान नहीं हुए थे, जैसे ही हज़रत ज़नीरा ने अपने इस्लाम का ऐलान किया तो हज़रत उमर आपे से बाहर हो गए और उन्हों ने ख़ुद भी उन को ख़ूब ख़ूब मारा और उन के घर के लोग भी बराबर मारते रहे, यहाँ तक कि मक्का के कुफ़्फ़ार ने सरे बाज़ार उन को इस क़दर मारा कि मार से उन की आँखों की रोशनी जाती रही

और यह अंधी हो गईं।

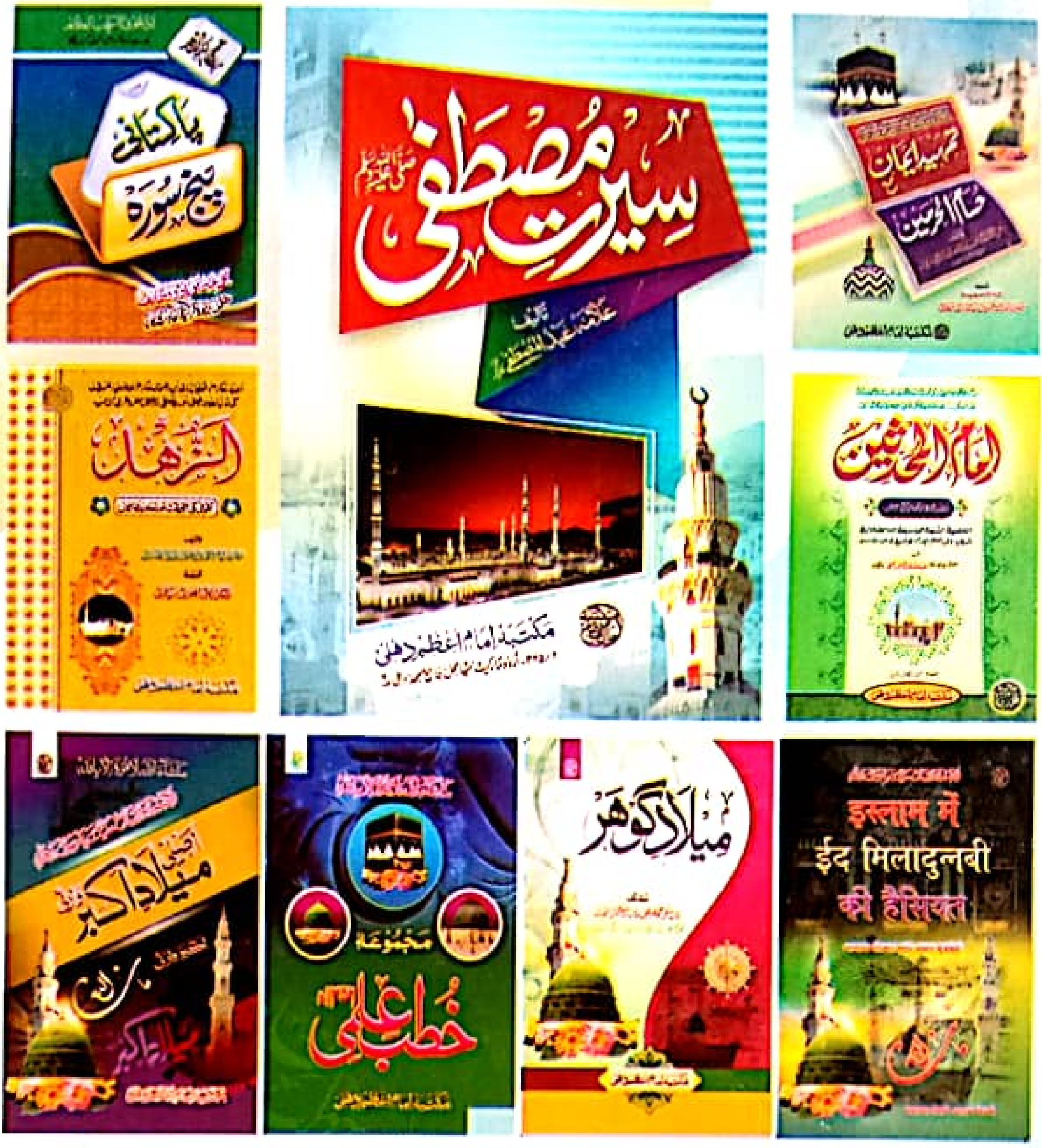
इस के बाद कुफ़्फ़ारे मक्का ने तअना देना शुरू किया कि ऐ ज़नीरा! चूँकि तुम हमारे मअबूदों यअनी लात व उज़्ज़ा को बुरा भला कहती थीं, इस लिए हमारे उन बुतों ने तुम्हारी आँखो की रोशनी छीन ली है। यह खून खौला देने वाला तअना सुन कर हज़रत ज़नीरा ؓ की रगों में इस्लामी ख़ून जोश मारने लगा और उन्हों ने कहा:-

"हरगिज़ हरगिज़ नहीं! ख़ुदा की क़सम तुम्हारे लातु-उज़्ज़ा में हरगिज़ हरगिज़ यह ताक़त नहीं है कि वह मेरी आँखों की रोशनी छीन सकें। मेरा अल्लाह जो वहदहु ला शरीक लहु है, वह जब चाहेगा, मेरी आँखों में रोशनी आजाएगी।"

उन अलफ़ाज़ का उनकी ज़बाने मुबारक से निकलना था कि बिल्कुल एक दम ही अचानक उन की आँखों में रोशनी वापस आगई।

(हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन जि॰2, स॰876 हवाला बैहक़ी व ज़रक़ानी अलल मवाहिब जि॰1, स॰ 270)

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ



MAKTABA IMAM-E-AZAM
PRINTER - PUBLISHER - BOOKSELLER
425/2, Gali Panne Wali, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Mob.: +91-9958423551, +91-9560054375, +91-9958724473
E-mail : maktabaimameaazam@gmail.com, nizamuddinnizami@gmail.com
Design & Printed by.: NIZAMI GRAPHICS DELHI - 6 , Mob .: 9582458244

Rs.
140/-